तरुण भारत-ग्रन्थावली सं० २६

कान के रोग और उनकी चिकित्सा

प्रकाशक
तरुण-भारत-ग्रन्थावली-कार्यालय
दारागंज, प्रयाग

प्रथम आवृत्ति] सं० १९९० [मूल्य ।) आने

भूमिका
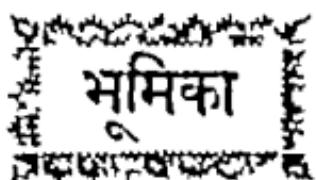
श्रीयुत जे० सी० बसक महाशय ने स्वास्थ्य पर अंगरेज़ी में कई छोटी-मोटी पुस्तकें अपने अनुभव से निकाली हैं। सबसाधारण को आरोग्यता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ऐसी पुस्तकों की हिन्दी में भी बहुत आवश्यकता है। पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि बसक महाशय ने अपनी इन सभी उपयोगी पुस्तकों को हिन्दी में निकालने के लिए हमको आज्ञा दे दी है, जिसके लिए हम आपके बड़े कृतज्ञ हैं।

प्रस्तुत पुस्तक बसक महाशय की "Care of the Ear" नामक पुस्तक का अनुवाद है। कानों के विषय में बहुत ही उपयुक्त ज्ञान और कर्णरोगों की अनुभवयुक्त घरेलू ओषधियाँ भी इसमें दे दी गई हैं। आशा है कि स्वास्थ्य के जिज्ञासु पाठकगण इस पुस्तिका से पूरा पूरा लाभ उठावेंगे।

प्रकाशक

अनुक्रमणिका

अध्याय		पृष्ठ
१	कान के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातें	१
२	कान की बनावट	९
३	कान को स्वस्थ रखने के नियम	११
४	कान की बीमारियाँ और उनका इलाज	१४
५	कान के रोगों के कुछ देशी नुस्खे	३०
६	कान की बीमारियों की होमियोपैथिक दवायें	३१

पहला अध्याय

कान के रोग और उनकी चिकित्सा

कान के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य बातें

१—अगर कोई बच्चा दूसरों की आवाज नहीं सुन सकता तो वह स्वयं बोलना भी नहीं सीख सकता। इसी लिए जन्म से बहरा आदमी अवश्य ही गूंगा होता है।

२—विशेष शिक्षा प्रणाली द्वारा अधिकांश गूंगे बच्चों को बात करना सिखलाया जा सकता है, यद्यपि वे श्रवण-शक्ति रखने वालों की तरह सहज में और स्पष्ट नहीं बोल सकते।

३—जो बच्चे पूर्णतया बहरे और गूंगे होते हैं उनकी मानसिक शक्ति तीव्र होती है और वे विशेष खोज-बीन करनेवाले होते हैं।

४—साधारण बच्चे के पढ़ाने की अपेक्षा एक बहरे बच्चे को पढ़ाने में दसगुना खर्च होता है। बहरे बालक को शिक्षा देना अन्धे बालक को शिक्षा देने की अपेक्षा अधिक कठिन है।

५—ऐसे बालकों को या तो जबानी (होठों के हिलने द्वारा) या अँगुलियों द्वारा अथवा दोनों विधियों को संयुक्त करके शिक्षा दी जा सकती है। इस कार्य में प्राय ८ वर्ष का समय लगता है और ३ ४ साल की उम्र से ही शिक्षा आरम्भ करना उचित है।

६—जो शब्द मनुष्य के कान से एक गज की दूरी से बोला जायगा वह एक इंच की दूरी से बोले गये शब्द की अपेक्षा १२९६ गुना अधिक सुनाई पड़ेगा।

७—भारतवर्ष में बहरों और गूंगों की संख्या १ लाख ५५ हजार है। जिनमें से ९३००० पुरुष और ६२००० स्त्रियाँ हैं। देश भर में गूंगों को शिक्षा देनेवाले ३० या ४० स्कूल हैं, जिनमें थोड़े से विद्यार्थी पढ़ते हैं। अन्धों की अपेक्षा बहरों की संख्या कहीं अधिक है।

८—कान का भीतरी पर्दा लिखने के कागज के बराबर मोटा है और उसमें सहज ही में खराबी पैदा हो सकती है।

९—मनुष्य का कान साधारणतया प्रति सेकण्ड ३२ से ४०००० तक कम्पनों (लहरों) को ग्रहण कर सकता है।

१०—इन कम्पनों को नियमित रखने का काम दो महीन पेशियाँ करती हैं, जो आवश्यकतानुसार कान के पर्दे को ढीला या सिकोड़ सकती हैं। जब कभी ऐसा भीषण शब्द होता है जिससे कान के पर्दे के फट जाने की सम्भावना हो, तो ये महीन पेशियाँ उसे बहुत अधिक सिकोड़ देती हैं।

११—शब्द की लहरें ६४ फीट लम्बी होती हैं। साधारण शोर की लहरें अनियमित होती हैं और संगीत की लहरें नियमित। शब्द की लहरें तीन माध्यमों द्वारा अग्रसर होती हैं—हवा, द्रव और ठोस।

१२—कुछ लोग अपने एक या दोनों कानों को हिला सकते हैं। इस काम को करनेवाली तीन पेशियाँ सब मनुष्यों में होती हैं।

✓१३—अपनी हथेलियों को मोड़कर कान के पीछे लगाने से श्रवण-शक्ति बढ़ सकती है। ऐसा करने से कान शब्द की लहरों को अधिक संख्या में ग्रहण करने लगता है।

✓ १४—बाहर से आनेवाले शब्द की लहरें सुननेवाली नसों तक दो तरह से पहुँच सकती हैं। अगर हम किसी ठोस वस्तु की लहरों को सुनना चाहें तो उसे खोपड़ी की हड्डी से लगाकर सुन सकते हैं। अगर हम किसी घड़ी को कनपटी के ऊपरवाले मस्तक के भाग से लगायें या उसे दाँतों में पकड़ लें, या दाँतों में एक धातु की पटरी पकड़कर उस पर घड़ी को रख दें तो उसकी टिकटिक आवाज हम को सुनाई दे सकती है। पानी द्वारा भी दूर का शब्द सुना जा सकता है। पर हम प्रायः हवा द्वारा ही सब प्रकार के शब्द सुनते हैं। शब्द की लहरें हवा में प्रति सेकिण्ड ११२५ फीट और पानी में ५००० फीट की चाल से चलती हैं।

✓ १५—मधुर सङ्गीत द्वारा विषधर सर्पों और हिंसक जन्तुओं को वशीभूत किया जा सकता है। प्राचीन काल के शिकारी पहले वंशी-ध्वनि द्वारा हिरणों को मोहित कर देते थे और तब उनको बाण द्वारा मारते थे।

१६—चतुर संगीतज्ञ अनेक सम्मिलित गाने या बजानेवालों में से किसी एक के तनिक भी बेसुरे हो जाने पर उसे भाँप लेते हैं।

✓ १७—ध्यानपूर्वक मधुर सङ्गीत श्रवण करने से मनुष्य कुछ समय के लिये अपने शारीरिक और मानसिक कष्टों को भूल

सकता है। चिन्ताओं से बचने के लिये सङ्गीत एक प्रभावशाली साधन है।

१८—युद्ध-सङ्गीत श्रवण करके समर-यात्रा को जानेवाले सिपाहियों का साहस बढ़ जाता है और युद्धक्षेत्र में वे धीरता-पूर्वक शत्रु का आघात सहन करते हैं।

१९—सुमधुर सङ्गीत को निरन्तर ध्यानपूर्वक सुनने से चित्त ही प्रसन्न नहीं होता, वरन् एक प्रकार की मस्ती उत्पन्न हो जाती है। सङ्गीत की मंत्र-मुग्ध करनेवाली शक्ति के उदाहरण सब कालों और सब देशों में मिलते हैं।

२०—श्रेष्ठ गायक और वाद्यकला-निपुण अपने तथा श्रोताओं के मस्तिष्क, ज्ञानतन्तुओं और हृदय में नवजीवन का संचार करते हैं।

२१—जिन व्यक्तियों की गान विद्या-सम्बन्धी अभिरुचि भली प्रकार विकसित हो जाती है वे सङ्गीत द्वारा परमानन्द की प्राप्ति करते हैं।

२२—सर राबर्ट बोडन पावल ने अपनी पुस्तक 'स्काउट सहायक' में इस बात के भिन्न-भिन्न उदाहरण दिये हैं कि स्काउटिङ्ग के कार्य में कान का किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है। वे लिखते हैं—"रात्रि के समय जब सन्नाटा हो जाता है तो घोड़ों की टाप का शब्द अथवा मनुष्यों की बातचीत दिन की अपेक्षा बहुत अधिक दूरी तक सुनाई देती है। अगर तुम अपना कान जमीन से लगाओ, अथवा जमीन पर एक डंडा [illegible]

कान लगाओ तो तुम घोड़े की टाप का शब्द या मनुष्यों की पद ध्वनि और भी दूरी से सुन सकते हो। एक बार किसी मैदान में बने हुए बाड़े में कुछ फौजी सिपाही सो रहे थे। रात में उनको घोड़े की टाप का शब्द दूर से अपनी तरफ आता सुनाई दिया। वे जल्दी से तैयार होकर बाहर निकले, पर वहां किसी तरह की आवाज सुनाई न दी। किसी तरफ शत्रु का चिन्ह न देखकर वे फिर बाड़े में चले गये, पर वहां फिर उनको बहुत से घोड़ों का सड़क पर चलने का शब्द स्पष्ट सुनाई देने लगा। वे फिर बाहर आकर सुनने लगे और अन्त में बहुत अधिक दूरी से आता हुआ कुछ शब्द सुनाई दिया। थोड़ी देर में घुड़सवारों का एक दल उनके पास आ पहुँचा। इस अवसर पर बाड़े ने भूमि द्वारा शब्द को ग्रहण करके बढ़ा दिया और इससे गारद के सिपाहियों को समय पर चेतावनी मिल गई। अफ्रीका के जुलू-संग्राम में मैं इसी उपाय द्वारा शत्रु की ठीक-ठीक स्थिति का पता लगा लेता था और सहज ही उनकी चौकियों के बीच होकर भीतर घुस जाता तथा बाहर निकल आता। कुत्तों के एकाएक जोर से भूकने से विदित होता है कि उनके आसपास कोई घूम रहा है। स्काउटों को उचित है कि रात के समय बाहर घूमकर शब्द सुनने और उसका आशय जानने का अभ्यास करें। साथ ही अन्धकार में उनको अपने नेत्रों तथा घ्राण-शक्ति का उपयोग भी करना चाहिये। इस प्रकार तुम अपनी श्रवण-शक्ति द्वारा कितनी ही बातों का ठीक-ठीक पता लगा सकोगे। यद्यपि यह शक्ति विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त

करने का प्राकृतिक साधन है, पर अभ्यास की कमी से हम इससे बहुत कम लाभ उठाते हैं।"/—

(१) बहरा और गूंगापन

जब कोई बालक जन्म से बहरा होता है अथवा बोलना सीखने के पहले बहरा हो जाता है तो वह गूंगा भी होता है। कभी-कभी बालक किसी बीमारी के कारण भी गूंगा हो जाता है पर अधिकांश में गूंगा होने का कारण यही होता है कि किसी प्रकार का शब्द कभी उसके सुनने में नहीं आता। ऐसा बालक कभी यह जान ही नहीं पाता कि भाषा क्या चीज है। पहले यह ख्याल किया जाता था कि गूंगे व्यक्ति जन्म से ही बहरे होते हैं, पर एक स्कूल में जाँच करने से पता चला कि उसके गूंगे छात्रों में से आधे ऐसे थे जो बाल्यावस्था में सुन सकते थे। बहरा और गूंगापन खानदानी भी हो सकता है। एक परिवार में जिसकी माता बहुत बहरी थी, तमाम बच्चे बहरे उत्पन्न हुए।

(२) बहरे-गूंगों की शिक्षा

बहरे और गूंगों का शिक्षा या तो हाथ के इशारों, जिसे 'अँगुलियों की भाषा' भी कहते हैं, अथवा होठों के हिलने द्वारा दी जाती है। हमारा उद्देश्य इन दोनों में से किसी एक प्रणाली का समर्थन करना नहीं है क्योंकि दोनों में कुछ बातें लाभदायक और कुछ हानिकारक हैं। इङ्गलैण्ड के मूक-बधिर विद्यालयों में प्रायः हाथ के इशारों द्वारा शिक्षा दी जाती है। निरीक्षण करने से विदित हुआ है कि जहाँ इस प्रकार की शिक्षा-प्रणाली

प्रचलित है वहां उसके साथ किसी अन्य प्रणाली से काम नहीं लिया जा सकता। दूसरी प्रणाली में बहरा और गूंगा व्यक्ति बोलने वाले के होठों के हिलने को ध्यानपूर्वक निरीक्षण करके उसका आशय जान लेता है। इस प्रणाली का प्रचार विशेषतया जर्मनी में है। इस प्रणाली द्वारा गूंगों को बोलना भी सिखलाया जा सकता है। यद्यपि ऐसे लोगों का उच्चारण हम लोगों की तरह नहीं होता, वरन् एक विशेष प्रकार का अस्वाभाविक सा होता है, तो भी वह भलीभाँति समझ में आ जाता है। बालक चाहे कैसा भी बहरा क्यों न हो, जब एक बार उसको बोलना आ जाय तो उसे इशारों द्वारा अपना मनोभाव प्रकट करने से रोकना चाहिये, जिससे उसकी वाक्‌शक्ति की वृद्धि हो। जिस बहरे और गूंगे बालक को होठों के हिलने द्वारा शिक्षा देना हो उसे सात वर्ष की उम्र से पहले ही पढ़ाना आरम्भ करना चाहिये। इस प्रणाली में पूर्ण निपुणता प्राप्त करने में ८ वर्ष से कम समय नहीं लगता। पर उसके पश्चात् वह प्राय हर एक आदमी से बातचीत करने में समर्थ हो जाता है। बहुत से बहरे बालक ऐसे भी होते हैं जिनकी श्रवणशक्ति बोलना आरम्भ करने के पश्चात् नष्ट होती है। यदि बालक एक बार बोलने लग जाय, तो फिर चाहे वह कितना भी बहरा क्यों न हो जाय, अपने मित्रों और सम्बन्धियों के साथ उसे इशारे करने के बजाय बोलने के लिये ही उत्साहित करना चाहिये। इसका सहज उपाय यह है कि उसके इशारों का कोई उत्तर ही न दिया जाय।

(३) सुनने के कृत्रिम उपाय

साधारण बहरे लोगों के लिए रबड़ की नली या लकड़ी का चोंगा सुनने का सबसे सुगम उपाय है। बहरे मित्रों के लिए सैल्यूलाइड का बना नकली कान उपयोगी सिद्ध हुआ है। कितनी ही स्त्रियाँ एक पंख की शक्ल का यंत्र, जिसका एक भाग दाँतों के नीचे दबाकर रखा जाता है, काम में लाती हैं।

कान के मध्य-भाग के पर्दे में छिद्र हो जाने पर यदि उसमें से किसी प्रकार का मवाद न निकलता हो तो कागज़ की छोटी सी गोली बनाकर छिद्र में रख देने से बहुत लाभ होता है। प्रारम्भ में इसकी क्रिया किसी डाक्टर से कराई जा सकती है बाद में चतुर मनुष्य स्वयं ही कई बार रख और निकाल सकता है।

बहरे लोग प्रायः टेलीफ़ोन की घण्टी सुन लेते हैं। इस आधार पर कुछ चिकित्सक 'सिर्फ़ टेलीफ़ोन' के उपयोग की सलाह देते हैं।

दूसरा अध्याय

कान की बनावट

मनुष्य की श्रवणेन्द्रिय बाह्य, मध्य और अन्तरस्थ—तीन भागों में विभाजित है। कान का बाहरी भाग (Pinna) जो हमारी आँखों से दिखाई पड़ता है, प्राय एक इञ्च लम्बी नली द्वारा भीतर की झिल्ली (Tympanum) से संयुक्त होता है। इस नली में कड़े बाल और मोम के सदृश्य पदार्थ, जिसका स्वाद कड़वा होता है, रहता है। इनके कारण हानिकारक कीड़े-मकोड़े कान के भीतर नहीं घुस सकते। बाहरी भाग का कार्य शब्द की लहरों को संग्रह करना होता है। कान के भीतर की झिल्ली बहुत पतली होती है और बालों में लगाने के पिन या पेंसिल द्वारा सहज में उसे छेदा जा सकता है। यह निरन्तर फैलती और सिकुड़ती रहती है और एक सेकिण्ड में ३२ से लेकर ४०००० तक शब्द लहरों को ग्रहण कर सकती है। इस झिल्ली के पीछे का भाग कान का मध्य भाग कहा जाता है, जो प्राय आधा इंच लम्बा तथा इञ्च के आठवें भाग के बराबर चौड़ा होता है। इसके अन्त में बटन की शकल की कोई चीज रहती है। मध्य भाग का एक दो इञ्च लम्बी नली (Eustachian Tube) द्वारा गले से सम्बन्ध होता है, जिसमें होकर हवा बराबर आती रहती है। यदि यह नली किसी कारण बन्द हो जाय तो मनुष्य बहरा हो जाता

है। मध्य भाग की नली के बाहरी तरफ एक बड़ा पर्दा (Drum) और भीतर की तरफ दो छोटे पर्दे, जिनमें से एक अण्डाकार होता है और दूसरा गोल, रहते हैं। शब्द-लहर इन्हीं पर्दों से टकराकर कम्पन उत्पन्न करती हैं। इस भाग में तीन हड्डियाँ (Ossicles) भी होती हैं, जिनसे ध्वनि की यथार्थता का निश्चित रूप से बोध होता है। अगर ये हड्डियाँ न रहें तो भी मनुष्य कुछ सुन सकता है।

अण्डाकार पर्दे के पीछे की तरफ एक और छोटी सी नली (Vestibule) होती है, जो कान का अन्तरीय भाग है। इसमें विशेष प्रकार का रस भरा रहता है और एक रस से भरी थैली भी रहती है। इस थैली में कुछ नोकदार कण रहते हैं, जो अण्डाकार पर्दे की कम्पन से निरन्तर हिलते रहते हैं और श्रवण-तन्तुओं के सिरों को ठोकर लगाते रहते हैं। अन्तरीय भाग में इन्हीं कणों के हिलने से शब्द-लहर की मात्रा या मन्दता का पता चलता है। यहाँ से ये लहरें उस भाग में पहुँचती हैं, जहाँ वे ध्वनि या भाषा के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं।

तीसरा अध्याय

कान को स्वस्थ रखने के नियम

१—कान में समय-समय पर ग्लिसरीन या सरसों के तेल की दो-चार बूँदें डालते रहने से भीतरी भाग नम बना रहता है।

२—पानी में नहाने के लिये डुबकी लगाते समय दोनों कानों को अँगुलियों से बन्द कर लेना लाभजनक है। इससे पानी कान के भीतर नहीं घुस सकता।

३—कानों को खींचना या मरोड़ना, जैसा कि प्रायः हमारे यहाँ के पुराने ढर्रे के पण्डित तथा मौलवी किया करते हैं, बड़ा हानिकारक है। कानों के मरोड़ने से कितनी ही बार भीतरी भाग में खराबी उत्पन्न हो जाती है और बालक बहरा हो जाता है।

४—कान का मैल कभी किसी नुकीली या तीक्ष्ण वस्तु से नहीं निकालना चाहिये। इसका एक मात्र उपाय कान को पिचकारी से धो देना है।

५—धड़ाके का शब्द अथवा तीव्र कर्कश ध्वनि कानों को अप्रिय जान पड़ती है, इसलिये यथासम्भव उससे बचना चाहिये।

६—सङ्गीत की ध्वनि मस्तिष्क को शान्त और चित्त को आनन्दित करती है। सुन्दर राग-रागनियों द्वारा कितनी ही प्रकार की बीमारियां दूर हो जाती हैं।

का बहुत हानि पहुंचती है।

√१३—बहुत गर्म या ठण्ढ वायु तेज हवा, गन्गुयार, रेल या कारखानों की बहुत तेज सीटी, गर्जने कीआयाज आदि से कानों के भीतरी भाग की रक्षा करने के लिये साफ रुई को कान के बाहरी छेद में इस तरह रखना चाहिये जिससे उस सहज में निकाला जा सके।

√ १४—कठोर शीत या गर्मी से कानों की रक्षा न करने, अधिक कुनैन खाने, गले के बैठ जाने, बहुत अधिक जुकाम होने, मैल निकालने के लिये कान के छेद को प्रायः छेड़ते रहने, मजा लेने के लिये कान में किसी पक्षी का पङ्ख डालकर हिलाने और किसी नाई आदि के हाथ से मैल निकलवाने से अनेक बार अस्थायी बधिरता, कर्णपीड़ा और कान बहने आदि की व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं।

१५—छोटे बच्चे को चुप करने या सुलाने के लिये उसके कान के छेद को सहलाना अच्छा नहीं है। जब उसे इसकी आदत लग जायगी तो वह स्वयं अँगुली या लकड़ी का टुकड़ा डालकर ऐसी ही चेष्टा करेगा, जिससे कान को हानि पहुँचने की बहुत कुछ सम्भावना है।

———

दबाव पड़ने से कान का पर्दा फट जाने की सम्भावना रहती है, जिससे मनुष्य बहरा हो सकता है। लाल ज्वर, चेचक, टाइफस और मलरिया ज्वर से उत्पन्न विष के नाड़ियों में फैल जाने से भी मनुष्य बहरा हो सकता है। बहुत अधिक मानसिक उत्तेजना अथवा अधिक मात्रा में लगातार कुनैन के सेवन से श्रवणशक्ति को हानि पहुँच सकती है। शारीरिक निर्बलता अथवा वार्द्धक्य के परिणाम स्वरुप जो बधिरता उत्पन्न होती है उसमें प्राय कान के भीतर बजने का, गाने का, फुसकारने का या कोई अन्य प्रकार का अस्वाभाविक शब्द होता जान पड़ता है। इन तमाम कारणों के अतिरिक्त किसी मस्तिष्क-सम्बन्धी बीमारी से भी सुनने की शक्ति अधिकांश में या पूर्णतया नष्ट हो सकती है।

चिकित्सा—सबसे मुख्य बात बधिरता के वास्तविक कारण का पता लगाना है। अस्थायी बधिरता का साधारण उपाय कान के पीछे की तरफ टिंक्चरआईडीन या कोई ऐसा लेप लगाना है जिससे फफोला पड़कर विषैला पदार्थ निकल जाय। यदि बहरापन कान के बंद आने से उत्पन्न हुआ हो तो किसी डाक्टर द्वारा शस्त्रक्रिया कराना आवश्यक है। शारीरिक निर्बलता से उत्पन्न बधिरता का उपाय कोई पौष्टिक औषधि और सारयुक्त आहार ग्रहण करना है।

३—कान में मैल जमा होना

मैल के कारण भी प्राय लोग ऊँचा सुनने लगते हैं। ऐसी दशा में कान की परीक्षा एक विशेष यंत्र (Ear speculum) द्वारा करनी चाहिए। इस यंत्र का भीतरी भाग अत्यन्त

दाँत के कमजोर पड़ जाने, बच्चों के दाँत निकलने, दूध के दाँत गिर कर नवीन दाँत आने और बड़ी उम्र के लड़कों को ज्ञान-दाढ़ निकलने पर भी कर्ण-पीड़ा होती है। यह बीमारी बड़ी कष्ट दायक होती है और मस्तक में प्राय टीसी सी चलती रहती है। मुँह खोलने या भोजन चबाने से कर्ण पीड़ा बढ़ जाती है। कान की सूजन से उत्पन्न होनेवाले दर्द की अपेक्षा इसमें यह विशेषता होती है कि यह पीड़ा अकस्मात् उत्पन्न होती है, इसमें ज्वर नहीं होता और कान के भीतर धड़कन भी नहीं जान पड़ती।

चिकित्सा—ठण्ड से उत्पन्न कर्णपीड़ा में रुई का एक फाहा गर्म जैतून के तेल तथा लौडेनम (Laudanum) में डुबोकर कान के छेद में भर देने से बहुत आराम मिलता है। कान क पीछे थाड़ी सी अलसी की पुल्टिस बाँधने से भी लाभ होता है। कान को नमक की पोटली या गर्म पानी के पानी या भूने हुए प्याज की पोटली से सेकना भी बहुत हित कारी है। इन चीजों को इतना ही गर्म रखना चाहिये जितना कान सहज में सहन कर सके।

५—कान में कीड़े-मकोड़ों या अन्य वस्तु का घुस जाना

ऐसी अवस्था में किसी डाक्टर द्वारा कान की परीक्षा करानी आवश्यक है, जिससे मालूम हो सके कि वास्तव में कान के भीतर कोई चीज घुसी है या नहीं और यदि घुसी है तो उसका क्या आकार है और किस जगह अटकी हुई है। अगर वह चीज

६—कान में फोड़ा-फुन्सी

कान में फोड़ा उत्पन्न होने का कारण प्राय कान को सींक से खोदना या ठण्ड लगना होता है। कभी कभी स्वास्थ्य खराब हो जाने से भी ऐसा होता है। इन कारणों से कभी कभी फोड़ा न होकर केवल कान में सूजन आ जाती है। चेचक, लाल बुखार और चोट लगने से भी फोड़ा या सूजन होती है। ऐसी अवस्था में कान में दर्द होने लगता है, मुँह चलाने से पीड़ा बढ़ जाती है श्रवणशक्ति घट जाती है, और शोर-गुल बुरा लगता है। कान में देखने से सूजन या फोड़ा दिखलाई देता है और उसके आसपास की खाल लाल जान पड़ती है। अगर केवल सूजन ही होती है तो कान की नली लालिमा-युक्त तथा फूली हुई दिखलाई देती है। कान से पीब निकलने लगता है, जो प्राय एक या दो सप्ताह तक बहता रहता है। यदि बीमारी पुरानी पड़ जाय तो पीब अधिक काल तक निकलता रहेगा। फोड़ा होने की दशा में उसके फूट जाने पर बहुत आराम जान पड़ता है। अधिक दिनों की सूजन से दर्द तो कम होता है, पर प्राय कुछ बधिरता उत्पन्न हो जाती है। इसका मुख्य लक्षण कान में निरन्तर एक प्रकार की नमी मालूम होते रहना है।

चिकित्सा—कान के ऊपर और सिर की तरफ बगल में गर्म पुल्टिस लगानी चाहिये। कान में पिचकारी द्वारा गर्म तेल या ग्लिसरीन डालने से भी बड़ा आराम जान पड़ता है। अगर मवाद निकलता दिखलाई दे तो गर्म पानी में १५ बूँद लाइसाल (Lysol)

हल का शब्द होता जान पड़ता है। यदि इस बीमारी की उचित चिकित्सा न की जाय तो मनुष्य सदा के लिये बहरा हो सकता है।

चिकित्सा—कान के पीछे की तरफ गर्म पुल्टिस बाँधना और कान के भीतर गर्म मेंथल ग्लिसरीन डालना चाहिये।

८—कान के मध्य-भाग की सूजन

यह कई तरह की होती है और इसके फल से प्राय: बधिरता उत्पन्न हो जाती है। इसकी आरम्भिक अवस्था में दर्द होना ही मुख्य लक्षण होता है। चक्कर आना और निर्बल हो जाना भी प्राय देखा जाता है। कभी-कभी अज्ञान अवस्था में बकना और हाथ पैर ऐंठ जाना आदि लक्षण भी प्रकट हो जाते हैं। बीमारी के पुरानी पड़ जाने पर दर्द प्राय मिट जाता है पर मवाद सदा बहता रहता है।

चिकित्सा—दर्द की अवस्था में बीमार को शान्त कमरे में बिस्तर पर पड़े रहना चाहिये। मस्तक की तरफ कान की बगल में गर्म पुल्टिस बांधने से लाभ होता है। मवाद बहने की दशा में कान को सदा पिचकारी से धोकर साफ रखना चाहिये।

९—कर्णशूल

कभी-कभी कान के सब तरह ठीक होने पर भी उसमें दर्द उत्पन्न हो जाता है। ऐसी अवस्था में दाँतों, नाक और गले की परीक्षा करनी चाहिये। अगर दाँतों में कीड़ा लगा हो तो उससे प्राय कान में दर्द उत्पन्न हो जाता है, यद्यपि दाँतों में किसी

तेल गर्म करके कुछ बूँद कान में डालने से भीतर घुसा हुआ कीड़ा-मकोड़ा बाहर चला आता है अथवा मर जाता है और तब सहज में निकाला जा सकता है।

११—कान के पर्दे में चोट लगना

इसका कारण प्रायः मैल निकालने के लिये किसी नोकदार चीज को कान में बहुत दूर तक घुसा देना होता है। तोप चलने के भीषण शब्द या गहरे पानी में डुबकी मारने से भी कान का पर्दा फट जाता है। ऐसी दशा में कान के भीतर की हवा अकस्मात् घनीभूत होकर पर्दे पर दबाव डालती है। जब कभी ऐसी दुर्घटना होती है तो कान के भीतर जोर का शब्द होता है, तीव्र पीड़ा होने लगती है, चक्कर आ जाता है और कोलाहल सा होता जान पड़ता है। तुरन्त ही बधिरता का आक्रमण होता है और कभी-कभी कान से कुछ खून भी निकल आता है।

चिकित्सा—कान को साफ रुई (कान्न सुत) से बन्द कर देना चाहिये। जब तक सूजन न हो तब तक कुछ न करना चाहिये। सूजन होने पर उसका उपाय नं० ८ में लिखे अनुसार करना चाहिये।

ऊपर लिखे कर्ण रोगों के अतिरिक्त आतशक, यक्ष्मा रक्तज्वर आदि के कारण कान में खुजली, फोड़ा ही तरह की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ... अत्यन्त कष्टसाध्य होती हैं। ऐसी अवस्था में ...

तेल गर्म करके कुछ बूँद कान में डालने से भीतर घुसा हुआ कीड़ा-मकोड़ा बाहर चला आता है अथवा मर जाता है और तब सहज में निकाला जा सकता है।

११—कान के पर्दे में चोट लगना

इसका कारण प्राय मैल निकालने के लिए किसी नोकदार चीज़ को कान में बहुत दूर तक घुसा देना होता है। तोप चलने के भीषण शब्द या गहरे पानी में डुबकी मारने से भी कान का पर्दा फट जाता है। ऐसी दशा में कान के भीतर की हवा अकस्मात् घनीभूत होकर पर्दे पर दबाव डालती है। जब कभी ऐसी दुर्घटना होती है तो कान के भीतर ज़ोर का शब्द होता है, तीव्र पीड़ा होने लगती है, चक्कर आ जाता है और कोलाहल सा होता जान पड़ता है। तुरन्त ही बधिरता का आक्रमण होता है और कभी-कभी कान से कुछ खून भी निकल आता है।

चिकित्सा—कान को साफ रुई (काटन वुल) से बन्द कर देना चाहिये। जब तक सूजन न हो तब तक कुछ न करना चाहिये। सूजन होने पर उसका उपाय नं० ८ में लिखे अनुसार करना चाहिये।

ऊपर लिखे कर्ण-रोगों के अतिरिक्त आतशक, यक्ष्मा रक्तज्वर आदि के कारण कान में सुजाकी, फोड़ा आदि कितनी ही तरह की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनकी चिकित्सा अत्यन्त कष्टसाध्य होती है। ऐसी अवस्था में किसी सुयोग्य

उत्पन्न होती है और इस प्रकार की आशंका होने पर स्टथोस्कोप (Stethoscope) से सिर की परीक्षा करनी उचित है।

कान में शब्द होने, और मतिभ्रम हो जाने के कारण शब्द सुनने, की कल्पना के अन्तर को भी समझ लेना आवश्यक है। मतिभ्रम की दशा में मनुष्य अस्पष्ट ध्वनि के बजाय स्पष्ट बात चीत सुनता है। यह लक्षण मानसिक व्याधि का है, जिसकी चिकित्सा कठिन है।

बन्द और गन्दी हवावाले कमरों में अथवा शोर की आवाज करनेवाली मशीनों के पास काम करने, अधिक शराब पीने, अधिक धूम्रपान करने से कान पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जो लोग टेलीफोन द्वारा निरन्तर बात करते रहते हैं उनको भी कान में शब्द होने की बीमारी हो सकती है। ऐसे लोगों का कर्ण पीड़ा और कुछ बधिरता भी होती है और ऐसी अवस्था को 'टेलीफोन की बीमारी' के नाम से पुकारा जाता है। मलेरिया ज्वर में भी ऐसा हो जाता है, पर उसका कारण प्रायः अधिक परिमाण में कुनैन खाना होता है। अन्य औषधियों से भी—जैसे एण्टीपाइरन (Antipyrin) क्लोरोफार्म आदि—इस प्रकार की अवस्था उत्पन्न हो सकती है।

१२—मस्तिष्क में शब्द होना

यह शिकायत दो विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों को हुआ करती है, जिनको निम्न-लिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—
(१) विकृत मस्तिष्क (२) अविकृत मस्तिष्क।

(१) विकृत मस्तिष्क—ऐसे व्यक्तियों के मस्तिष्क में जो शब्द होता है वह प्रायः अस्पष्ट और अनिश्चित ढङ्ग का होता है। अधिकांश अवस्थाओं में इसके साथ ही गूंजने, गाने, दहाड़ने, चिल्लाने की ध्वनि भी मालूम पड़ती है, जो मस्तिष्क की विकृत अवस्था के कारण मनुष्यों की बोल चाल का रूप ग्रहण कर लेती है। अगर रोगी व्यक्ति बिना किसी के बोले हुए ही इस प्रकार के शब्द सुनता हो तो चिकित्सक को उचित है कि विक्षिप्तता के अन्य लक्षणों की भी खोज करे। इस प्रकार की परीक्षा उचित ढङ्ग से कोई अनुभवी मनोविज्ञानवेत्ता ही कर सकता है। इस प्रकार की आवाज कभी तो रोगी को अपने मस्तिष्क के भीतर ही होती जान पड़ती है और कभी बाहर से आई जान पड़ती है। कितने ही व्यक्ति इस प्रकार की आवाज को अपने किसी मृत सम्बन्धी, किसी देवता अथवा अपने इष्टदेव की बतलाते हैं। कभी उनको ऐसा प्रतीत होता है कि उनका कोई दूर-स्थित परिचित व्यक्ति या कोई बिछुड़ा हुआ मित्र या स्नेहमयी माता उनको पुकार रही है। ये आवाजें विभिन्न समयों में विभिन्न बातें कहती हैं अथवा एक ही बात को दुहराया करती हैं। रोग की भीषण अवस्था में ये रोगी व्यक्ति में किसी तरह का काम करने को विशेष कर आत्महत्या अथवा दूसरे की हत्या करने को कहती हैं। जब इस प्रकार के लक्षण दिखलाई देने लगें तो विकृत मस्तिष्कता में किसी तरह का सन्देह नहीं रहता।

(२) अविकृत मस्तिष्क—कभी कभी सर्वथा स्वस्थ

अथवा समान व्यक्तियों को मस्तिष्क के भीतर तरह-तरह के भय ङ्कर शब्द होते जान पड़ते हैं। ऐसे शब्द रेल के इञ्जिन से भाफ निकलने, दहाड़ने, कराहने, फुफकारने और गूंजने आदि की तरह प्रतीत होते हैं। कभी कभी यह शब्द तालयुक्त भन्नान, किलकिलाने, सैकड़ों ढोलों के एक साथ बजने, गजने अथवा हथौड़ा से पीटने के समान जान पड़ता है। यदि रोगी से प्रश्न करके भली प्रकार जाँच की जाय तो इस बीमारी को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। (१) एक वह जिसमें शब्द यद्यपि निरन्तर बना रहता है, पर अल्दी-जल्दी घटता-बढ़ता रहता है। इस न्यूनाधिकता में तालयुक्त सङ्गीत का भाव रहता है, जो नाड़ी की गति से मिलता हुआ होता है और (२) दूसरा वह जिसमें इस प्रकार का संगीत का भाव नहीं रहता, वरन् केवल अन्तरस्थ कोलाहल सा अनुभव होता है।

कारण—प्रथम प्रकार के लक्षणों से संयुक्त बीमारी के प्राय ये कारण होते हैं—घोर रक्त-हीनता, काग, जननेन्द्रिय और दाँत-सम्बन्धी दोष, अत्यधिक मदिरापान, कुनैन संखिया, अफीम, कोकीन आदि का सेवन कोयले, काक और चूने की भट्टी से निकला हुआ गैस का साँस द्वारा शरीर के भीतर जाना कान के ऊपर चोट लगना, कान में मैल जमा हो जाना घोर कर्कश ध्वनिवाले पेशों को करना जैसे लोहे में छेद करने और रिवेट करने का काम, गोताखोर आदि का पेशा, जिसमें समस्त शरीर पर और विशेष कर कानों पर अत्यन्त दबाव पड़ता है,

बहुत गहरी खानों में काम करना आदि। इसके अतिरिक्त जिन अवस्थाओं में हवा का दबाव बहुत कम हो जाता है—जैसे ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ना, गुब्बारे या हवाई जहाज द्वारा आकाश में अधिक ऊँचाई पर जाना आदि—उनमें भी इस प्रकार के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

चिकित्सा—कान और मस्तिष्क में होनेवाले शब्द को दूर करने का उपाय जहाँ तक सम्भव हो, उसकी तरफ़ ध्यान न देना है। इस व्याधि का विशेष प्रकोप उस समय होता है जब रोगी अकेला या बेकार होता है। डाक्टर लोग इसके लिए क्वीनीन और आयोडीन के मिश्रणों को सेवन करने की सलाह देते हैं। कारोसिव सब्लीमेट (Corrosive Sublimato) की $\frac{1}{60}$ ग्रेन की गोलियाँ बनाकर सुबह-शाम भोजन के पश्चात् एक मास तक सेवन करने से लाभ होता है।

१४—सिर में चक्कर आना

कर्ण-रोगों में सिर में चक्कर आना एक साधारण बात है और इससे विदित होता है कि कान की भीतरी नली में किसी तरह का दोष उत्पन्न हो गया है। कान के मध्य और अन्तरस्थ भाग की परीक्षा करने से इस रोग का पता लग सकता है। ऐसी अवस्था में सिर को घुमाने या अकस्मात् मोड़ने से सिर में चक्कर आता है। कितनी ही अवस्थाओं में सदैव कम या ज्यादा चक्कर आता रहता है, पर ऐसी दशा में रोग का आक्रमण विशेष भयंकर नहीं होता।

चिकित्सा—इस बीमारी में प्राय उन्हीं दवाओं का उप योग किया जाता है जो सिर और कान में शब्द होने के लिये काम में पाई जाती है।

पाचवा अध्याय

कान के रोगों की कुछ देशी दवायें

इस पुस्तक में कर्ण-रोगों की जो दवायें दी गई हैं यद्यपि वे सहज ही में मिल सकती हैं और उनका प्रयोग भी कठिन नहीं है, तो भी डाक्टरी दवाओं का मूल्य प्रायः अधिक रहता है और उनके लिये किसी अस्पताल या दवाखाने में दौड़ना आवश्यक होता है। ऐसे दवाखाने छोटे स्थानों में प्रायः होते ही नहीं। इसलिये वहां के निवासियों को इन उपायों से कोई लाभ नहीं हो सकता जब तक वे दस-पाँच कोस दूर से दवा न मँगा सकें। ऐसी दशा में कर्ण रोगों की कुछ सरल दवाओं का ज्ञान साधारण लोगों के लिये होना आवश्यक है। नीचे हम वैद्यक ग्रन्थों में लिखे तथा अनुभवी लोगों के बतलाये कुछ नुसखे देते हैं —

(१) सुदर्शन या तुलसी के पत्ते का रस गरम करके कान में डालने से कान पीड़ा बन्द हो जाती है।

(२) अदरक का रस, शहद, सेंधा नमक, तिल का तेल ये सब बराबर बराबर मिलाकर गुनगुना करके कान में डालने से दर्द दूर होता है।

(३) आक (मदार) के पीले पत्ते पर घी या कड़वा तेल चुपड़ कर आग पर सेंक कर रस निकाल ले। इस रस के दो चार बूंद कान में डालने से दर्द जाता रहेगा।

(४) लहसुन, अदरक, सहजना, मूली, केले की डण्डी, इन चीज़ों में से किसी एक चीज का रस दो-तीन रत्ती समुद्रफेन में मिलाकर गुनगुना करके कान में डालने से दर्द बन्द हो जाता है।

(५) सँभालू के पत्ते का रस गरम करके उसमें एक रत्ती अफीम घोलकर कान में डालने से दर्द बन्द होता है।

(६) शहद को गुनगुना करके एक बूँद कान में डालने से सब प्रकार का दर्द जाता रहता है।

(७) यदि कान बहता हो तो उसे बबूल की छाल अथवा नीम के पत्तों के काढ़े से धोना लाभकारी है।

(८) बबूल की सूखी फलियों का बहुत बारीक चूर्ण थोड़ा थोड़ा कान में डालने से पीप बहना बन्द होता है। कान को सदैव पिचकारी द्वारा धोते रहना भी आवश्यक है।

(९) समुद्रफेन, सुपारी की राख और कत्था इन सबको बारीक पीस लें। कान को धोकर इस चूर्ण को नली द्वारा फूंक मार कान में डाल दें। इससे कान का बहना बन्द हो जायगा।

(१०) मोर के पङ्ख की हड्डी अथवा सूअर के कान की हड्डी जल में घिसकर कान में डालने से दर्द और बहना बन्द होता है।

(११) यदि कान के भीतर घाव हो गया हो तो धतूरे के पत्तों का रस गर्म करके कान के बाहर लेप करना चाहिये और नीम के पत्तों का रस गर्म करके थोड़ा थोड़ा दिन में दो-तीन बार डालना चाहिये।

(१२) सज्जी खार, सूखी मूली, हींग, सोंठ, पीपल, साखा के राज—इन सब को समान मात्रा में मिलाकर पाव भर खार पानी के साथ पीसकर लुगदी बना ले। इसमें चार सेर काँजी और सेर भर तिल का तेल डालकर फलइ के बरतन में पकाय। जब तेल बाकी रह जाय तो छानकर रख ले। इस तेल का कान धोकर प्रतिदिन चार-पाँच बूँद डालने से पुरानी पीब, दर्द, और कान म शब्द होना आदि रोग आराम होते हैं।

छठा अध्याय

कान की बीमारियों की होमियोपैथिक दवायें

१—विशेष जलन के साथ सूजन—बैलाडाना। रक्त इकट्ठा होकर लाली उत्पन्न हो जाना—फरम फास।

२—मवाद और खून बहना—हापर सल्फेट। मरेश के समान चिपकने वाला मवाद—मर्किटिस।

३—कान के पीछे की तरफ सूई सी चलने का दर्द और चिल कन का दर्द—बैलाडोना। सिकुड़न का दर्द, विशेषत ठण्ड लगने पर और रात के समय—डुलकामारा। बारबार होनेवाले और सन्ध्या के समय बढ़नेवाला दर्द—सल्फर।

४—खसरे के पश्चात् कान बहने पर—पल्सटिला। रक्तज्वर के पश्चात् कान बहने पर—बैलाडोना। चेचक के पीछे कान बहने पर—मरक्यूरियस। कान बहने की पुरानी बीमारी पर—हीपर सल्फर।

५—कान में ठण्ड लगने से मिनमिनाहट का शब्द होने पर—डुलकोमारा। बजने या गाने का शब्द—चाइना आफीसिनली। घोर का शब्द होने पर—कार्बो वेजीटेबिलीज।

६—मैल की अधिकता से उत्पन्न होने वाला बहिरापन—मैल को पिचकारी द्वारा कान से निकालना और उसके ५२

पल्सटिला। कान की रूक्षता के कारण उत्पन्न बहिरापन—कार्बो वजाटेबिलीज। यथासौर के दबाव जाने के कारण उत्पन्न होने-वाला बहिरापन—नक्स वामिका। ठण्ड लगने से उत्पन्न बहिरापन—पुलकोमारा। पुरानी सूजन के कारण उत्पन्न बहिरापन—म्रोनिया। गठिया से उत्पन्न बहिरापन—रस्स टाक्स। चोट लगने से उत्पन्न बहिरापन—आर्निका।

७—मैल जमा हो जाने के कारण कान में मवाद पड़ जाने और दर्द आने पर—कानियम ३ या कार्बो वजी० ३०। कान में बहुत खुश्की होने पर—सैकलिम ६ या म्यूरियटिक एसिड ६ या ग्रैफिटिस ६।

८—कान और सिर में गूंजन अथवा गर्जने का शब्द होना—एसिड फास० ३०। कुनैन के अधिक सेवन से भिनभिनाहट का शब्द—एसिड नाइट्रिक ६, या चाइना २००। दौड़न या गूंजन का शब्द—ग्रैफोमिला ६। अगर ऐसा शब्द मस्तक में खून इकट्ठा हो जाने से होता हो—बैलाडोना ६। अगर साथ में चक्करी भी हो—पेट्रोम एलयग ३। भिनभारी का शब्द—टिजोटेलिस ६।

—o—

Printed by P. Badri Prasad Pandey at the Narayan Press, Allahabad

LIST OF BOOKS

		pages	Rs.	A.
1	Care of the Nose	32	0	4
2	Care of Ear	39	0	3
3	Care of the Teeth	72	0	4
4	Right Breathing	86	0	7
5	Personal Hygiene and Care of the Skin	340	1	8
6	Diet of the Indians (Reprint of a portion of book No 5)	100	0	8
7	Care of the Eyes	156	0	12
8	Indigestion and Constipation			
9	Tree of Lust (a picture)		0	2
10	Chart of Lust		0	1

Postage Extra Read the following popular Books and preserve your Health They are favourably reviewed by Doctors and the Press

J C BASAK
363, Upper Chitpore Road,
P O Beadon Street,
CALCUTTA
or
P O Dayal Bagh (Agra)

सस्ता साहित्य मण्डल
सर्वोदय साहित्य माला इक्यासीवाँ ग्रंथ

[८१]

विनाश या इलाज

[यूरोप में सत्य और अहिंसा के कुछ प्रयोग]

लेखिका

कुमारी म्यूरियल लेस्टर

अनुवादक

श्रीरामनाथ 'सुमन'

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली

प्रकाशक —
मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री,
सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली

पहली बार ११००
अगस्त सन् १९३८
मूल्य
बारह आना

मुद्रक
हरनामदास गुप्त,
[illegible] भारत प्रिंटिंग प्रेस
चाँदनी चौक दिल्ली

क्षमा-प्रार्थना

ऐसे समय में, जबकि दुनिया में आग और अशान्ति है और युद्ध के बादल मण्डरा रहे हैं समाचार-पत्र युद्ध की आशंकाओं और खतरों के सनसनी भरे समाचारों से भरे रहते हैं और हमारे दिमागों को परेशान करते रहते हैं हम मिस म्यूरियल लैस्टर की यह छोटी-सी पुस्तक पाठकों को भेंट कर रहे हैं। हमें आशा है कि पाठक इस पुस्तक को पढ़कर इसपर विचार करेंगे।

लेकिन हमें यह लिखते हुए दुख और ग्लानि होती है कि जितनी उच्च और महत्वपूर्ण यह पुस्तक है उतनी ही छापे-सम्बन्धी गम्भीर भूलें इसमें रह गई हैं। इसमें एक बड़े अंश तक प्रेस भी दोषी है लेकिन हम भी इस जिम्मेदारी से बरी नहीं हो सकते। कई कारण और कठिनाइयाँ ऐसी थीं जिनके कारण हम स्वयं इसकी छपाई और प्रूफ़ संशोधन की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दे सके। आशा है उदार पाठक हमारी ग़लती को क्षमा करेंगे और इसको अपना लेंगे।

पुस्तक हमारे पास छपने के लिए बहुत पहले आगई थी लेकिन बीच में ऐसी कई जरूरी पुस्तकें हमें प्रकाशन के लिए हाथ में लेनी पड़ गईं कि जिससे इसके प्रकाशन में काफ़ी देरी होगई। इसके लिए भी हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं।

—मंत्री

कुछ शब्द

यह पुस्तक उन लोगों के लिए नहीं है जो केवल मनोरंजन की भूख मिटाने के लिए पुस्तकें पढ़ने के आदी है। यह उन लोगों के लिए है जो जीवन को अन्तर्मुखी बनाने में प्रयत्नशील हैं—जो जीवन में आध्यात्मिकता और मानवता के ऊँचे आदर्शों से अनुप्राणित हैं अथवा कम-से-कम अनुप्राणित हो उठने के लिए जिनमें व्याकुलता और लीन हैं। यह उन लोगों के लिए है जिनका स्वाद चटपटी चीजें खाने से विकृत नहीं हो गया है और जो स्वास्थ्यकर सात्त्विक भोजन साहित्य में चाहते हैं। यह उन लोगों के लिए है जो गांधीजी तथा अन्य लोगों द्वारा होनेवाले उस महान प्रयोग की ओर आशा के साथ देख रहे हैं जिसने विनीत पर निश्चय एवं दृढ़ता के स्वर में जगत् के सामने यह बात रख दी है कि जहाँ हिंसा है वहाँ स्थायी रूप से समाज का कल्याण सम्भव न होगा और यह कि समाज के मूल में जो हिंसा है वह हिंसा से दूर न हो सकेगी, फिर चाहे वह कोई 'वाद' हो और आज कितना ही सुभावना प्रतीत होता हो।

× × × ×

आज संसार भयानक वेग से विनाश की ओर दौड़ा जा रहा है। प्रत्येक देश की सरकार शान्ति और सभ्यता की बातें करती है पर शस्त्रीकरण का काम एक मिनट के लिए बन्द नहीं है। संसार एक विराट पर महान ध्वंसस्तंभ की तयारी में लगा हुआ है। मनुष्य का सभ्य और उन्नत वैज्ञानिक मस्तिष्क ऐसे अन्वेषणों को परिपूर्ण करने में लगाया जा रहा है जिससे कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक प्राणी सहूलियत से मारे

इस दुःखदायी और भयकर स्थिति से दुनिया को ऊपर उठना होगा। युद्ध की दवा युद्ध नहीं और न हिंसा की आग प्रतिहिंसा से बुझ सकती है। रक्तबीज की तरह हिंसा सदैव हिंसा से बढ़ती रहेगी। वस्तुतः मनुष्य अथवा समाज के सुधार या संस्कार का यह तरीका ही गलत है। हिंसा का सबसे बड़ा दुर्गुण यह है कि वह प्रयोगकर्ता के दिमाग पर हावी हो जाती है और उसे एक उन्मत्त, अचेत अस्त्र के रूप में काम करने को बाध्य करती है। फिर प्रत्येक नशे की तरह जब यह टूटती है तो तीव्र विषाद, अवसाद, क्षीभ, शिथिलता और अपनी असमर्थता का भाव मनुष्य में छोड़ जाती है। इसलिए स्थायी शान्ति के साधन के रूप में इसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह तो जगत् की नैतिक शक्ति, मानवता के आत्म-विश्वास को संगठित करके अभय के वातावरण में ही सम्भव है।

और यह कोई अव्यावहारिक कल्पना नहीं है। जो सिद्धान्त मनुष्य की अन्तःप्रकृति पर आश्रित है जो प्रत्येक अवस्था में मानव-प्रकृति की श्रेष्ठता में विश्वास रखना सिखाता है वह अव्यावहारिक कैसे कहा जा सकता है। आज की विपरीत परिस्थितियों सैनिक चालों झूठे एवं कुतर्कों से भरे प्रचार तथा पाशविक हिंसापूर्ण कार्यक्रमों के बीच भी दुनिया की आशा उन लोगों पर लगी है जो प्रत्येक देश में अहिंसा को अपनाकर मनुष्य की क्षुद्र प्रवृत्तियों पर विजय पाने के प्रयोग में लगे हुए हैं।

कुमारी म्यूरियल लेस्टर शान्ति एवं अहिंसा के ऐसे ही व्रती लोगों में से है। अहिंसा की उनकी साधना जीवनव्यापी और आध्यात्मिक भावों को लेकर है। लन्दन में उनका आश्रम (किंग्सले हाल) गरीबों के बीच नैतिक जागरण का जो काम कर रहा है उससे उत्साहित होकर ही

महात्मा गांधी ने दूसरी गोलमेज-परिषद् के समय, वहीं पहला पड़ाव किया था। पश्चिम में होनेवाले अहिंसा प्रचार एवं शान्ति के प्रत्येक आन्दोलन से उनका सम्बन्ध रहा है। उनका सारा जीवन नैतिक साहसिकता की प्रतिमूर्ति रहा है। उनकी अहिंसा का स्रोत गांधीजी की भांति प्रभु में उनकी अटल निष्ठा और उसके प्रति आत्मार्पण का भाव है।

उनकी प्रस्तुत पुस्तक (Kill or Cure ?) उन प्रयोगों का एक सजीव चित्र है जो यूरोप के विभिन्न भागों में होते रहे हैं। सबसे अच्छी बात तो यह है कि मिस लेस्टर ने इसमें साधारण आदमियों और कार्यकर्ताओं को लिया है और यह दिखाया है कि जब हमारे पंडित राजनीतिज्ञ शंका एवं भय से भरे हुए मनुष्य की निम्नवृत्तियों को उभाड़ रहे हैं तब सामान्य आदमियों का हृदय किस प्रकार काम कर रहा है। इस पुस्तक से मानव प्रकृति के मूल में शान्ति सहयोग और बंधुत्व का जो भाव है उसका बड़ा ही स्पष्ट एवं मन को मुग्ध कर लेने वाला चित्र हमारे सामने खड़ा हो जाता है।

मैं मानता हूँ कि जो लोग आज भारत में अहिंसा की साधना में लगे हुए हैं उनको इस पुस्तक से बल मिलेगा और यह मालूम होगा कि गांधीजी के या उनके प्रयोग एकाकी नहीं हैं। आज दुनिया में सहस्रों आदमी ऐसे हैं जो अपने वैयक्तिक अनुभव से अहिंसा की [illegible] [illegible] में विश्वास स्थापित करने को बाध्य हुए हैं। यह ठीक है कि ऐसे लोगों की संख्या कम है पर सत्य के अन्वेषण का साहस [illegible] थोड़ों में होता है। उनकी शक्ति उनकी संख्या में नहीं [illegible] [illegible] और मानव प्रकृति की स्वाभाविक सच्चाई में है। इसलिए [illegible] [illegible] जो पढ़ेंगे [illegible] और [illegible] मिलेगी ही यह विश्वास [illegible] जायगा। अपनी प्रवृत्ति के कारण [illegible] एवं [illegible] [illegible]

अन्त में मनुष्यों को ऊबकर और थककर शाश्वत प्रेम और अहिंसा की शरण में आना पड़ेगा।

इस दृष्टि से यह पुस्तक हिंदी में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दुःख यही है कि प्रकाशक इसे जल्दी प्रकाशित नहीं कर सके।

पढ़ने में यह कहानी की भांति रोचक और आकर्षक है और मुझे आशा है कि इसकी हिन्दी में अच्छी बिक्री होगी और पाठक इसे खरीद कर और पढ़कर ही न रह जायेंगे वरन् जीवन में इसकी नैतिक भावना को स्थान देंगे।

c/o हरिजन-सेवक-संघ,
किंग्सवे दिल्ली

श्रीरामनाथ 'सुमन'

विषय-सूची

विनाश या इलाज

रैल 'मां' के इस ऊपर एवं गहरे विस्तार में पकनेवाली कारखानों में काम करनेवाली लड़कियों श्रमिकों एवं माताओं के सम्बन्ध में मुझे कैसे जानकारी हुई और कैसे मेरे हृदय में उनके लिए आदर का भाव उत्पन्न हुआ, यह एक अलग ही कथा है। यहां इतना ही कहना काफी होगा कि मैंने जीवन को देखने के उनके ढंग में उनके आचरण के नियमों में तथा उनके साहस, उदारता एवं हास्य में भिन्न की इतनी बातें पाई हैं कि अमीरों में उनकी नैतिक उच्चता तक नहीं पहुंच सकी और न उनसे उऋण ही हो पाई हूं। पहले मैंने अपने एक श्रमिक मित्र के मकान में एक कमरा लिया फिर कई कमरे, उसके बाद आधा मकान तथा आगे पांच कमरे का एक पूरा मकान किराये पर लिया जहां मैं आगे आनेवाले दिनों में अपनी कुछ सहेलियों के साथ बस गई—पूर्वी लन्दन की एक जिम्मेदार नागरिक और उसके फलस्वरूप बाद में 'एल्डरमैन' (नगर-सभा की सदस्य) बनने के लिए।

जहांतक यूरोप का सम्बन्ध था, अधिकांश भागों में शांति थी। इंग्लैंड में लोग दिन-दिन धनवान और आलसी हो रहे थे और धर्म पुस्तक (गास्पेल) के धनिक मूर्ख के इस मनोभाव की प्रतिध्वनि उनमें सुनाई पड़ती थी—"हे मन, तेरे पास तेरे भर को बहुत-सी अच्छी चीजें, बहुत काफी दिनों के लिए, हैं। शांति के साथ रह और खा, पी तथा मौज उड़ा।"* पार्टियां (दावतें) अधिक-से अधिक खर्चीली,

---

*"Soul, thou hast gotten to thyself plenty of good things for many days to come. Take thine ease eat drink, and be merry"

The stranger

बहुरंगी पार्टियाँ, कृत्रिम आयोजनों के साथ होतीं, पर उनमें प्रकट होने वाला आनन्द सदा सच्चा न मालूम होता था। प्रतिथि आनन्द का अनुभव न करते थे और फलतः जीवन को अविश्वास-पूर्वक देखने लगे थे। उनके मन में यह प्रश्न उठने लगा था, कि क्या यह जीवन सचमुच ही जीने लायक है!

जिन्होंने ज़रा सतह के नीचे देखने की चेष्टा की उन्होंने उसे पाया जिसका प्रत्येक सन्तति, प्रत्येक पीढ़ी को अपने लिए पुनः अन्वेषण करना अत्यन्त आवश्यक है और यह कि केवल सेवा में, किसी सत्कार्य में अपनेको खो देने में, अपनी इच्छा के स्थान पर प्रभु की इच्छा को स्थापित करने में ही आनन्द है। ऐसे लोगों को उनके जीवन का कार्य बिलकुल चिन्हित और तैयार मिल गया।

सामाजिक और औद्योगिक स्थितियों के अध्ययन ने सैकड़ों युवा व्यक्तियों को 'सोसायटी' (समाज) की चमक-दमक से दूर, निर्जन साहसिक मार्गों पर डाल दिया।

ओलिवर श्रीनर का 'स्वप्न' (Dreams)—नामक एकग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इसने अपनी शक्तिमान भावनाओं के द्वारा हज़ारों के मन में वैभव के लिए अभिमान की जगह लज्जा की अनुभूति पैदा की।

कितनों ने संसार के उस रूप का स्वप्न देखना शुरू किया जो 'सब मनुष्यों का सम्मान करो' उक्ति के अनुसार आचरण करने पर होता—एक ऐसी दुनिया जहाँ वर्ग, जाति, राष्ट्र और धर्म की दीवारें नहोंगी और जहाँ—

"अपरिचित, अपरिचित में अपने बन्धु को पायेगा और आँखों में उसे अपनी बहन दिखाई देगी।" *

जिन लोगों को यह प्रकाश मिला था, उन्होंने अपने मार्गों को विभिन्न रूपों में कार्यान्वित करने की चेष्टा की। अनेक अपने उच्च वर्गों को त्याग कर दीन दुखियों और अकिंचन लोगों के बीच चले गये। कितने ही अपने दिलों में मित्रता की आग लिये हुए पृथ्वी के कोनों तक पहुँचे—दया के वश नहीं, लोगों को सिखाने और उपदेश करने के अहंकार की तृप्ति के लिए भी नहीं, वरन् अपने नये पड़ोसियों से कुछ सीखने और जो कुछ वे जानते हों उनमें उनके साथ हिस्सा लेने के लिए।

इस अवधि में बहुत-से गिर्जाघर शुष्क और नीरस अवस्था में थे। उनके सम्बन्ध में समझा तो यह जाता था कि वे विश्व के समक्ष क्राइस्ट को प्रकट कर रहे हैं, पर वस्तुतः उनके द्वारा असंख्य सभाएँ की जाती थीं तथा स्कूल, क्लब और साधारण ढंग के अन्य कितने ही कार्य किये जाते थे। उनके सुगठित और क्रमबद्ध कार्य-क्रम में व्यथा या भक्ति की मौज से शायद ही कभी व्याघात होता था। यदि किसी दूसरे ग्रह से आनेवाला कोई आगंतुक इन चर्चों में से किसी एक में पूरा दिन धर्माध्यक्ष के उपदेश ग्रहण करने में बिताता तो भी संभव यही था कि वह अर्द्धरात्रि तक भी ईसु मसीह (जीसस क्राइस्ट) के ओजस्वी व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कुछ भी न जान सकता।

---

* Shall see in the stranger his brother atlast
And his sister in eyes that were strange"

इस बीच रूस में एक आवाज़ उठी। उसने दुनिया को पुकार कर कहा कि भजनों, मंत्रों एवं अंग-संचालन द्वारा क्राइस्ट की पूजा करना छोड़ो और उनकी शिक्षाओं को गंभीरतापूर्वक जीवन में ग्रहण करके उनका सम्मान करो।

टालस्टाय‡ ने सबसे अपील की कि हम एक दूसरे के बारे में निर्णय और निन्दा करना छोड़ दें दूसरों पर प्रभुत्व एवं अधिकार जमाने की बात का त्याग करें और कहीं भी किसीको शत्रु के रूप में देखना छोड़ दें। उसने हमें, क्राइस्ट की भाँति, सेवा का जीवन बिताने तथा 'ऊ ' के अप्रतिरोध में किसी भी, भूत या वर्तमान, साम्राज्य की तलवार से अधिक विश्वसनीय एक नई शक्ति देखने—अनुभव करने की चुनौती दी।

ज़ार के अधिकारियों—द्वारा रूस में टालस्टाय के अनुयायी सतत उत्पीड़ित किये गये उनका स्थान-स्थान पर पीछा किया गया और उनपर मुकदमे चलाये गये। स्वयं स्वतन्त्र रहकर सैकड़ों सीधे-सादे लोगों को पीड़ित होता देखने तथा कष्ट और मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार होने का दुःख टालस्टाय को सहना पड़ा। फलतः उसने ज़ार के नाम एक सार्वजनिक अपील, एक खुली चिट्ठी, प्रकाशित की, जिसे समा

---

‡ देखिए 'टालस्टाय की २३ कहानियाँ' (Twenty three Tales of Tolstoy) World classics series और 'स्वर्ग का राज्य तुम्हारे अन्दर है' (The kingdom of Heaven is with within you)। टालस्टाय की कई श्रेष्ठ पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद सस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित हुए हैं)।

चारपत्रों ने मूल स्थान दिया, और उनसे प्रार्थना की कि वे निर्दोष किसान छोड़ दिये जायँ और सारी प्रतिक्रिया मुख़्तसर युद्ध की जाय।

नार्मल एंजेल ने 'दि ग्रेट इल्यूज़न' (भारी भ्रम) और रैम्जे मैक्डानल्ड ने 'टेन इयर्स ऑफ़ सीक्रेट डिप्लामैसी' (कूटनीति के दस वर्ष) नामक पुस्तकें लिखीं। दोनों पुस्तकों ने लोगों की आत्मा को सजग किया और कितने ही आदमियों के विवेक को बल दिया, जिसके फल स्वरूप अधिकाधिक लोगों ने महायुद्ध के विषय में बुद्धिपूर्वक शांति के साथ विचार करना शुरू किया।

क्या यह ढंग जीर्ण और शोचनीय तथा इस वैज्ञानिक युग के लिए अयोग्य था ? अलजीसिरस की संधि (Treaty of Algeciras) की भांति, सर्वशक्तिमान प्रभु का नाम लेकर, शांति के समझौते पर हस्ताक्षर करने से क्या फायदा, जबकि हस्ताक्षरकर्ताओं में से तीन-चार को, जैसा कि असल में हुआ, समझौते की सार्वजनिक शर्तों को निस्सार करनेवाली निजी शर्तों और गुप्त नियमों के ठहराव से रोकने का कोई उपाय नहीं है ?

स्त्रियों ने मताधिकार आन्दोलन (suffrage campaign) में संगठित होकर अद्‌भुत कर्तृत्व और साहस के साथ अपना उद्धार किया। आश्चर्य-चकित विश्व के सामने फूट पड़नेवाला यह एक बिलकुल नूतन दृश्य था। संसार अभीतक अनुभव नहीं कर सका है कि इसके कारण वे बातें और अवस्थायें फिर हर्गिज नहीं आ सकतीं।

---

* इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद भी रामदासजी गौड़ ने 'भारी भ्रम' के नाम से किया है, जो बहुत दिन पहले मद्रास से प्रकाशित हुआ था।

स्त्रियों ने कतिपय प्राचीन प्रथाओं के जारी रहने के अधिकार का साहसपूर्वक विरोध किया। उन्होंने गुप्त बुराइयों—गोरे गुलामों के व्यापार, वेश्यावृत्ति के आर्थिक पहलू इत्यादि—की ओर ध्यान दिया। उन्होंने वेश्याओं के साथ मित्रता स्थापित की, तथा कुछ न तो अपने पतियों द्वारा उत्पन्न अवैध संतति और परित्यक्ता तथा ठुकराई हुई स्त्रियों के अधिकारों का भी समर्थन किया। अपनी उमंग, व्यवहार बुद्धि तथा सामान्य विवेक के साथ उन्होंने कारागारों, शुश्रूषा-गृहों, कारखानों, सुधार-गृहों तथा अनाथालयों—मतलब कि सामाजिक जीवन के प्रत्येक भाग में प्रवेश किया।

उन्होंने युद्ध को उसके चकाचौंध, उसकी युग-युगव्यापी मर्यादा, और उसके विस्तृत गौरव से रहित करके देखा और लोभ, अहंकार, वासना, घृणा, झूठ, जासूसी, अज्ञान, गलतफहमी, भय, धनैषणा, वणिक वृत्ति, पक्षपात एवं महत्त्वाकांक्षा इत्यादि परस्पर विरोधी भावनाओं के भीम भँवर के रूप में उसका दर्शन किया।

अपने सम्पूर्ण इतिहास में इंग्लैंड युद्धों में संलग्न रहा है और आज यह मान लिया गया है कि इनमें से अनेक स्पष्टतः अन्यायमूलक थे। फिर भी सैनिक संघर्षों से इतना अधिक साहस एवं भक्ति जाग्रत होती थी कि उसकी स्वाभाविक बुराई पर आसानी के साथ कलई चढ़ गई थी। किन्तु अब इस बीसवीं शताब्दी में, इस वैज्ञानिक युग में, क्या हम राष्ट्र की रक्षा के उसी जर्जर एवं आत्मघाती उपाय का प्रयोग करते रहेंगे?

स्त्रियों ने कहा—"चाहे कोई शत्रु हो, हमारे बच्चे आगामी यु[द्ध] में लड़ने के लिए न जायेंगे। हम जानती हैं कि उनके जीवन"

बलिदान व्यर्थ होगा। युद्ध कोई हल नहीं हुआ करता। विजय के गर्भ में आगामी समर के बीज होते हैं। कोई देश न तो कभी बिलकुल गलत हो सकता है, न बिलकुल ठीक हो सकता है। प्रत्येक राष्ट्र में भले-बुरे दोनों होते हैं। आप एक सम्पूर्ण राष्ट्र के विरुद्ध कोई दोषारोपण नहीं कर सकते। आप एक सम्राट् के अहंकार का दण्ड उसके बहुसंख्यक कृषक-जनों को मारकर नहीं दे सकते। हम, इसलिए, गर्भावस्था के महीनों के बीच से गुजरने एवं प्रसव-पीड़ा बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हैं कि सिर्फ तोपों के लिए खुराक पैदा करें।"

'पर्सिफल' × के केवल बेरूथ में खेलने का जो स्वत्वाधिकार श्रीमती वैगनर के पास था, उसकी अवधि समाप्त होगई और यह नाटक सम्पूर्ण यूरोप में खेला गया और इससे नवीन आन्दोलन को सहायता मिली। इसने श्रवण और दर्शन-द्वारा, विशाल जन-समूहों के सामने, यह बात प्रकट की कि मनुष्य-जाति के माता को निःस्वार्थ, साहसी, जन-सेवक एवं हरि-जन होना चाहिए।

एक नाटक प्रकाशित हुआ, जिसमें एक 'परिपूर्ण ईसाई' का चित्रण किया गया था। इसमें फियार्डन नामक एक समुद्री डाकू (Viking) † अपने मित्र, बन्धु एवं प्रेमिका द्वारा बुरी तरह विश्वासघात का शिकार होता है; फिर भी वह उन लोगों को

× एक नाटक।

† उत्तरवासी जो आठवीं, नवीं एवं दसवीं शताब्दियों में पश्चिमी यूरोप के समुद्र-तटों पर डाका डालते फिरते थे।

मारकर अपनी रक्षा करने की अपेक्षा, यह कहते हुए उनके हाथ मारा जाता है—

"बन्धु, तेरे हाथों द्वारा मेरा क़त्ल होना अच्छा है।
इसकी अपेक्षा कि मेरे हाथों तू मृत्यु को प्राप्त हो॥"†

इन शब्दों के द्वारा जो म्याइमलीयस्* के विरुद्ध गीता के रूप में, शताब्दियों से जीवित चले आरहे हैं कियाटन ने मानों देश में ईसाई-धर्म का प्रारम्भ किया।

लोग अब महसूस करने लगे कि कंस्टैन्टाइन ने ईसाई-धर्मा वलम्बियों पर होनेवाले दमन को रोककर और उसे राजधर्म बनाकर वस्तुतः ईसाई-धर्म को अपरिमित हानि पहुंचाई।‡

लोगों ने अपनी पूजा में प्रयुक्त प्रार्थनाओं और भजनों की छान बीन शुरू की और जिन वाक्यों या भजनों को वे दिल में नहीं मानते थे उन्हें गाने या दुहराने से इन्कार किया। क्या हम उस युग-प्रवृत

---

† "Brother by thy hand liefer were I slain
Than bid thee die by mine"
—Kiartan the galander by Newman
Howard (प्रकाशक—J. M. Dent & Co.)

* एक प्रदेश। अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक हालकेन यहाँ बहुत दिनों तक गवर्नर थे और उन्होंने अपने कई उपन्यासों में यहाँ के जीवन के बहुत सुंदर चित्र खींचे हैं।

‡ लेखिका का कहना है कि जबतक दमन होता रहा ईसाई-धर्म का अन्तस्तेज चमकता रहा। राज-रक्षण से वह मुर्दा-सा होगया।

भजन— 'हमारे प्रभु, अतीत युगों के हमारे भ्राता" (O God, c
help in ages past)—था, जिसमें निम्नलिखित कड़ियाँ इ
हुई हैं गाने के अधिकारी हैं !—

"केवल तेरी भुजायें पर्याप्त हैं
और हमारी रक्षा निश्चित है।"

[Sufficient is Thine arm alone
And our defense is sure ?]

क्या हम सचमुच इसे मानते थे ! यदि उत्तर 'हाँ' में हो त
हमें सारी स्थल सेना, सारी जल तथा वायु सेना को तोड़ देना चाहिए
यदि नहीं तो हमें इसे गाना बन्द कर देना चाहिए। क्योंकि ऐसा भाव
जो सुन्दर लगता है और सुन्दर वाक्यों से पूर्ण है पर व्यवहार में जिस
कोई अर्थ नहीं है, प्रभु और मनुष्य के प्रति एक अपराध है।

इस समय दुनिया को यह बात बताई गई कि १९०२ ई॰
कैसे 'अपरिहार्य'—अनिवार्य—युद्ध अर्जेण्टाइन और चाइल के बी
टाला जा सका। केवल एक आदमी† के प्रयत्न ने, जिसका ईश्वर, अप
पड़ोसियों और अपने शत्रुओं' में अगाध विश्वास था मनोवैज्ञानि
स्थिति बदल दी और क्रूर राजनीति में एक नये उपकरण—एक न
अध्याय का समावेश हुआ।

---

† "The christ of the Andes" by Ernest Taylo
(TheFriends Book Shop Euston, London) परिशिष
नं॰ १देखिए।

इंग्लैण्ड की एक ग्राम्य पाठशाला में पढ़नेवाले माली के १२ वर्ष के एक लड़के को छात्रवृत्ति मिली और उसने शिक्षक बनने की शिक्षा प्रारम्भ की। वह प्रार्थना-मन्दिर में नियमित रूप से जाता। पर ज्यों-ज्यों वह पढ़ने लगा त्यों-त्यों गैलिली के कृषक (ईसामसीह) के प्रासाद एवं उत्पादक जीवन से धर्मोपदेशक की शुष्क, नीरस और परम्परापूर्ण पूजा के वैराग्य की बात उसके दिमाग में आने लगी।

धर्म-मन्दिर में जानेवालों के आरामदेह और यान्त्रिक जीवन के साथ 'पार्वतीय धर्मोपदेश' (Sermon on the Mount) मेल न खाता था। एक दिन तो मिनिस्टर (धर्मोपदेष्टा, पुजारी) ने मञ्च पर स्पष्ट कह दिया कि इसके अनुसार आचरण करना असंभव है। युवक ने इस 'नकार' के विरुद्ध विरोध किया और अपने इस नये व्यवहार के कारण किस प्रकार उसे अपनी प्रतिष्ठा, अपने मताधिकार (वोट), अपनी जीविका और अपनी आज़ादी से हाथ धोना पड़ा, यह आगे के अध्याय में बताया गया है।

स्वीज़रलैण्ड में एक ग्रामीण स्कूल मास्टर था जो स्थानीय बैरकों में आकर प्रति वर्ष दो सप्ताह सेना में अपनी सेवायें देने की सूचना करता था। महाद्वीप (यूरोप) में अनिवार्य सैनिक सेवा ('कान्सक्रिप्शन') का नियम इतना व्यापक है कि उस बेचारे को कभी इस नियम के नैतिक आधार की जाँच करने अथवा इसके मूल तात्पर्य को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हुई। किन्तु चूँकि वह ईसा का एक सरल एवं श्रद्धालु अनुयायी था, किसी अन्तःप्रेरणा के कारण सदा वह अपनी सैनिक सेवा की अवधि में अपने कोट के भीतर बाइबिल को छिपा रखता था। अज्ञान में

दी गयी । उसने शांति के राजकुमार (ईसा) की कथा और कवायद एवं गोलंदाजी के अभ्यास का मिश्रण नहीं किया और प्रतिवर्ष कम से कम एक मास तक वह बाइबिल को कभी न खोलता, यद्यपि वह सर्वदा सर्वत्र उसके पास रहती थी। यह व्यक्तिगत मानसिक संघर्ष कैसे एक व्यापक सार्वजनिक सेवा एवं हित के कार्य में बदल गया, यह बाद में बताया जायगा।

लन्दन के कारखाने में काम करनेवाली एक लड़की ने जिसका सारे दिन का काम ताश के गत्ते से टिन के डब्बों को भरना था उन डब्बों पर 'लेबल' लगाना था संसार को नवीन दृष्टि से देखना शुरू किया। उसके मन में एक ऐसा विचार आया जिसने उसके जीवन में उथल पुथल-क्रांति-करदी। उसके पड़ोसियों और उनके कुटुम्ब का सम्बन्ध सदा से सैनिकों एवं नाविकों से था। उनकी पोशाक चुस्त, जीवन स्वस्थ और वेतन नियमित था और उनमें शामिल होने से कोई 'दुनिया को भी देख सकता था।' उसके सिर पर यह भूत सवार हुआ कि देखें उसके ये आदमी दरअसल क्या करते हैं। वे हत्या करने का अभ्यास कर रहे थे और यही उनका सारे समय का काम था। फिर भी रविवार के दिन वे अपने अफसरों-द्वारा उस प्रभु के यशोगान के निमित्त गिर्जे में ले जाये जाते जिसने आकाश के नीचे स्थित सम्पूर्ण राष्ट्रों को एक ही रक्त से बनाया है। इस नये विचार ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी।

एक दिन मैंने, पाट्सडम में कैसर द्वारा सेना के निरीक्षण का समाचार (अखबारों में) पढ़ा। इस सेना में ज्यादातर नये रंगरूट थे

-कुछ तो बिलकुल ही नौसिखुए थे। कैसर का भाषण बहुत स्पष्ट था। उन्होंने उनसे कहा—"अब तुम हमारे सैनिक हो। हमारे आदमी हो। तुम्हारा कर्त्तव्य अब केवल मुकीतक है। पूर्ण निर्बाध आज्ञा-पालन तुम्हारा काम है। तुम भूलना मत कि मैं तुम्हारे भाग्य का विधाता हर्ता-कर्ता हूँ। अपने लिए स्वयं सोचना तुम्हारा काम नहीं है। वात्सल्य-सम्बन्ध के किसी रसीले या कोमल भाव के कारण तुम्हारी पूर्ण आज्ञाकारिता में कोई बाधा नहीं पड़नी चाहिए। सम्भव है, तुम्हें तुम्हारे ही पिताओं और भाइयों पर गोली चलाने की आज्ञा मुझे देनी पड़े। यदि यह दिन आवे, तो मेरी आज्ञा पर कोई हिचकिचाहट—मीन मेख—नहीं होनी चाहिए। तुम्हें गोली मारनी पड़ेगी।"

° • ° •

१९१४ ई० का अगस्त नज़दीक आरहा था। समाचार आया कि जर्मन सैनिक अधिकारी आगामी युद्ध की प्यास से छटपटा रहे हैं और फ़रासीसी सैनिक ने 'बर्लिन के लिए' प्रतिज्ञाबद्ध होरहे हैं। अंग्रेज़ सैनिक नेता भी अन्य देशों के सैनिक नेताओं के ही समान है, क्योंकि किसी पेशे में कुशलता प्राप्त करके फिर बेकार बैठे रहना और उसका व्यावहारिक प्रयोग न करना अनिवार्यतः ऊबा देनेवाला होता है। सैनिकों के लिए युद्ध-काल के सिवा शीघ्र उन्नति की आशा एक स्वप्न-मात्र है।

युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाली कम्पनियाँ विदेशों में अपनी शाखायें खोल रही थीं और ऐसी चातुर्यपूर्ण तैयारियाँ कर रही थीं कि चाहे कोई पक्ष विजयी हो पर उनकी चाँदी रहे। इसी नीति का फल था

कि ब्रिटिश कम्पनियां ने युद्ध का तोप के गोले पहुँचाकर प्रथम द्विसेव को खूब मुनाफा लौटा और उधर ये ही गोले गैलीपोली की रणभूमि में हमारे युवकों का विनाश, पंगु तथा कुरूपुख करने के काम लाये गये।

इसमें स बहुतांन किसी शांति-समिति का आवेदन-पत्र ले लोगों क हस्ताक्षर क लिए चक्कर लगाना शुरू किया। इस आवेदन पत्र में अधिकारियों से प्रार्थना की गई थी कि वे तोपों के बिरूद्ध पै की जगह बातचीत और समझौते की आधुनिक विधियों का इस्तैमाल करें।

— • —

२

शस्त्रों का सङ्घर्ष

अकस्मात् यूरोप युद्ध की अग्नि में कूद पड़ा। इसमें लोगों को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए था, पर अब भी मनुष्य बौद्धिक प्राणी नहीं बन सका है, इसलिए लोग चकित हुए। स्कूल, कारखाने, दूकान एवं मिलों से निकलकर ताज़ा आये हुए हज़ारों किशोरों ने अपनेको फ्रांस की खाइयों में लड़ने की धुन एवं गहरी सैनिक शिक्षा लेते हुए पाया। इस जीवन में उनको एक नई मित्रता व बन्धुता, एक नई जीवन-शक्ति, एक नई सिहर का अनुभव हुआ। इन युवकों में से बहुतों ने तो शायद जीवन में पहली ही बार यह जाना कि निश्चित समय पर मिलने वाले पेटभर अच्छे भोजन, स्वच्छ ताज़ी हवा, स्वास्थ्यप्रद स्थान, दाँतों की परीक्षा, तैराकी, स्नान और विस्तृत क्रीड़ा-स्थलों की सुविधा क्या चीज़ है! इसके अलावा दूसरा कारण जिससे इस नई परिस्थिति में सुख का अनुभव हुआ, यह था कि ग़रीबी और बेकारी के साथ जुड़ी हुई अनेक छोटी बहुरङ्गी दुःखप्रद चिन्ताओं से अकस्मात् मुक्ति मिली।

परन्तु बहुत जल्द उनका स्वप्न भङ्ग होगया और उन्होंने अपने को ज़मीन के अन्दर, चूहों, बदबू, खून और कीचड़ के बीच पाया। यह 'अनावृत नरक' (Hell With the lid off) था, फिर भी

इसने इन बहुत साधारण आदमियों में, जो शायद अपनी महानता की बात सुनकर आश्चर्य करते, एक विनोद-वृत्ति, एक सहिष्णु प्रसन्नता और एक अकथनीय साहस को जन्म दिया। उनकी यह वीरता अब गद्य और काव्य में अमर होगई है।

• • • ०

कुछ ही महीने बाद, युद्ध-क्षेत्र में, 'बड़ा दिन' (क्रिसमस) का आगमन हुआ। दोनों ओर के सैनिकों के मन में एक ही विचार थे। वर्ष के सब ईसाई-त्योहारों में यह सबसे लोकप्रिय है। पतित-से-पतित पापी भी सांता क्लाज़ † और 'क्रिसमस ट्री' * की याद करके किंचित् नम्र और कोमल बन जाता है। ग़रीब-से-ग़रीब भी इस दिन अच्छे भोजन का इन्तज़ाम करते हैं। हफ्तों पहले से गृहपत्नियें (*House wives*) दूकानों की शीशेदार आलमारियों के अन्दर सजे हुए सूखे अँगूरों, बेदाना दाड़िमों तथा मीठे नींबू के मुरब्बा को, उनकी बेहद बढ़ी हुई क़ीमत के विचार के साथ, निहारा करती हैं। जब फल मांस, आटे एवं मसाले में मिलाकर कड़ाई में तला जाता है तब भी जो कोई इस कार्य

† सांता क्लाज़—एक गौरवर्णा मोटी बुढ़िया, जो बड़े दिन की पूर्व रात्रि को छोटे बच्चों को नाना प्रकार के उपहार देती है।

* 'क्रिसमस ट्री'—मकान के एक कमरे में मुख्यतः 'फर' जाति का एक वृक्ष लगाया जाता है और क्रिसमस के लिए आये हुए उपहारों से उसे लाद दिया जाता है। यह दृश्य दिवाली के दिनों में अन्नकूट के लिए बनाये जाने वाले मन्दिरों, वृक्षों इत्यादि से मिलता-जुलता है।

में हाथ लगाता है वह भाग्यवान समझा जाता है। प्रत्येक को चुपचाप कोई कामना करनी चाहिए और इस बात का विश्वास होना चाहिए कि हमारी कामना अवश्य पूरी होगी। सैनिकों को भी सब बातें याद आ रही थीं और वे सोचते थे कि क्या हमें इस मैदानेजंग में गुलगुले और पकौड़ियाँ चखने को मिलेंगी? और फिर वे क्रिसमस के भजन और गाने!

क्रिसमस की पूर्व-संध्या को एक-दो अंग्रेज टामियों (सैनिकों) ने भजनों की पुरानी कड़ियाँ गुनगुनाना शुरू कीं। धीरे-धीरे आवाज़ ऊँची होने लगी, और आश्चर्य के साथ उन्होंने सुना कि 'शत्रु'-सेना की ओर के सैनिक भी उनके साथ ही गा रहे हैं। अवश्य ही शब्द भिन्न थ पर उनके अर्थ एक ही थे। ये आदमी जो एक-दूसरे को मारने के लिए यहाँ लाये गये थे, जब साथ-साथ स्वर-सामञ्जस्यपूर्वक गा रहे थे, तो उनके दिल युद्ध-भूमि से बहुत दूर थे। प्रत्येक की आँखों में उसका घर, उसकी पत्नी, उसकी माँ, प्रेमिका एवं बच्चे नाच रहे थे। इसके बाद वे एक-दूसरे को 'सिगनल' (इशारा) करने लगे। बधाई-सूचक संदेश भेजने लगे। वे इसका क़ायदा ('कोड') जानते थे। लकड़ी के एक छोटे टुकड़े-द्वारा 'लड़ाई बन्द' (Cease fire) का भाव प्रदर्शित किया गया। तब उन्होंने सिगनल किया कि "हम सब घर क्यों न चले जायँ?" फिर उधर से प्रश्न हुआ—"सिगरेट लेना पसन्द करेंगे?" और उसका यह उत्तर—"हाँ, हाँ, हमारे ख़त्म होगये हैं। यद्यपि हमारे पास चाकलेटें—एक मिठाई—के ढेर पड़े हैं। थोड़ा लेना।" इस तरह बम फेंकने की जगह वे एक-दूसरे पर उपहारों की वर्षा करने लगे। उन्होंने खाइयों से सिर बाहर निकाले कि ज़रा एक-दूसरे की शक्ल अच्छी तरह देखें,

और जो कुछ उन्होंने देखा उससे उनको बड़ी खुशी हुई, क्योंकि दोनों तरफ के ज्यादातर सैनिक मुक्त, नीलाक्ष एवं स्वस्थ तथा प्रसन्नवदन युवक थे। वे आगे बढ़े और सीमा के पास जिसपर किसी पक्ष का अधिकार न था (No man s land), एकत्र होकर बातचीत करने लगे।

प्रधान छावनी को खबर लगी। 'भ्रातृत्व का प्रदर्शन!' उनके मुख से निकला और ओठों पर यह शब्द अत्यन्त घृण्य और भयानक रूप में प्रतिध्वनित हुआ। जिन अफ़सरों के बारे में यह खयाल किया जाता था कि वे ऐसी वाहियात भाव-प्रवणता को नहीं बर्दाश्त कर सकते, वे भेजे गये। ये सैनिक भिन्न तुरन्त अपनी-अपनी खाइयों में बुलाये गये। सैक्सन सैनिक दूसरी जगह भेज दिये गये और उनका स्थान 'प्रशन' सैनिकों ने लिया और बड़े दिन का अन्त होते-होते तक चतुर्दिक घृणा के गीत का तारडव होने लगा

"ईसा–क्राइस्ट–में ही हमारी शांति है, जिसने हम दोनों का एक बनाया और जिसने उन सब बन्धनों को तोड़ दिया है जो हमको अलग किये हुए थे।"*

बाइबिल की यह भविष्यवाणी एकाएक सत्य सिद्ध हुई पर सत्य को तुरन्त दबा दिया गया।

° • • •

---

* "*Christ is our peace who has made both of us one and destroyed the barriers which kept us apart.*
[Eph. 2 14]

उधर देश में हजारों नवयुवकों को सैनिक शिक्षण दे-देकर, युद्ध में आहत लोगों का स्थान लेने के लिए तैयार किया जा रहा था। इन रंगरूटों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही थी। नये रंगरूट किरचें चलाने का अभ्यास कर रहे थे। ड्रिल सार्जेन्ट ने भूसे के कसे हुए बड़े-बड़े बण्डल सामने एक कतार में लटका रक्खे थे जो शत्रुओं की तोंद के भद्दे नमूने थे। इन लड़कों को सिखाया जा रहा था कि कैसे किरचों को भोंकना और उसके बाद कलाई को तेज़ी से घुमाना चाहिए ताकि पेट की आँतों को फाड़ती हुई किरच बाहर आजाय। कुछ लड़के दृढ़ निश्चय पर क्षीण उत्साह से आज्ञा का पालन कर रहे थे। सार्जेन्ट उत्साहित करता हुआ बोला—"हाँ, ज़रा बढ़कर! अरे, ज़रा अपने अन्दर जीव न डालो जीवन! बस ख्याल करो कि तुम एक पाजी जर्मन को मार रहे हो!" लड़कों ने अपने ओठ ज़ोर से चबाये और फिर प्रयत्न किया।

° ° • •

क़ैसर के एक चैपलेन (पादरी) का मन फ्रांस और इंग्लैण्ड के मित्रों की ओर, जिनमें सब क्राइस्ट के सच्चे प्रेमी थे, दौड़ रहा था। वह कैसे उन्हें घृणा करे! क्राइस्ट के प्रति बेवफ़ा होकर पितृभूमि (फ़ादर लैण्ड) के प्रति वफ़ादारी दिखाना कैसे सम्भव हो सकता है! उसने अपने दिल की बातें ज़ोरों के साथ कहीं। उसकी घोषणा की प्रतिध्वनि, उसके देश की अपेक्षा, अन्य देशों और अन्य पीढ़ियों में अधिक हुई।

• • • •

लन्दन में १६ वर्ष का एक लड़का था। अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत लम्बा था। इंग्लैण्ड ने उसे जीवन में कोई विशेष सुविधा

नहीं प्रदान की थी। जब यह बच्चा था, उसके पिता असाध्य रोगों के अस्पताल में भेज दिये गये थे और उसकी माता उसका भार सम्हालने में असमर्थ थी। उसकी बूढ़ी दादी उसे अपने घर ले गई और उसके पालन पोषण में अपनी परवा न की। अब यह काम करनेलायक होगया था। उसने युद्ध की खबर पढ़ी। सरकार-द्वारा प्रचार-कार्य का संगठन किया जा रहा था और मित्र-राष्ट्रों के सामरिक उद्देश्य पर लोकप्रिय व्याख्यान देनेवालों को काफ़ी पुरस्कार दिया जा रहा था। इन व्याख्यानों में जर्मन सैनिकवाद के विरुद्ध मित्र-राष्ट्रों के युद्ध में शरीक होने के महान् आदर्शों और धार्मिक रूप की चर्चा होती थी। २गस्ट भरती करने के लिए भी जगह-जगह व्याख्यान कराये जा रहे थे। सरकारी विभागों-द्वारा धर्मोपदेश के खाके तैयार कराके सब प्रकार के पादरियों, धर्मोपदेशकों के पास भेजे जाते थे और उन्हें बताया जाता था कि किस प्रकार युद्ध-ऋण में रुपया लगाने के लिए वे अपने श्रोताओं पर प्रभाव डाल सकते हैं। बहुतेरे धर्मोपदेशकों को, अपने श्रोताओं को समझाने के लिए, इस सरकारी आश्वासन की आवश्यकता न थी कि युद्ध प्रभु के राज्य के लिए लड़ा जा रहा है।

इस लड़के को भी विश्वास होगया कि यह युद्ध पवित्र एवं धार्मिक है और उसे ऐसा जान पड़ा मानों वह इससे अलग नहीं रह सकता। वह भरती-कार्यालय में गया और (चूँकि उसकी उम्र कम थी) ज्यादा उम्र बताकर सैनिक बन गया। सैनिक शिक्षण के बाद वह लड़ाई पर भेजा गया और वहाँ घायल हुआ। उसके आदर्श भूल गये पर चूँकि अपनेको शान्त एवं विश्वसनीय रख सका, उसे एक खास तरह के काम

पर तैनात किया गया। उसे सैनिक पुलिस का कार्य दिया गया। इस काम के सिलसिले में उसे सेना के उपयोग के लिए रक्खी गई वेश्याओं के आसपास निगरानी रखनी पड़ती थी और यह देखना पड़ता था कि सैनिक ज्यादा देर तक अन्दर (वेश्याओं के साथ) न ठहरें। अगर वे देर करें तो उसका कर्तव्य था कि अन्दर जाकर उन्हें बाहर घसीट लाये। इन दृश्यों को देखते रहने के कारण पवित्र एवं धार्मिक युद्ध की उसकी भावना में परिवर्तन हो गया।

° ° ° •

एक दिन एक जर्मन नगर में भीड़ लगी हुई थी। लोग आकाश की ओर प्रसन्नता से देख रहे थे। बात यह थी कि एक अंग्रेजी हवाई जहाज रास्ता भूलकर इधर आ निकला था और अपने विनाश की ओर अग्रसर हो रहा था। जर्मन जहाज उसे चारों ओर से घेर रहे थे और ज्यों-ज्यों यह अकेला हवाई जहाज उनके चंगुल में फँसता जा रहा था त्यों-त्यों लोगों की उत्कण्ठा बढ़ती जाती थी। इसी भीड़ में एक अधेड़ जर्मन सौदागर भी था।

अन्त में, लोगों की तीव्र हर्षध्वनि के बीच, वह जहाज गिरफ्तार करके नीचे लाया गया। किन्तु यह अधेड़ जर्मन सौदागर खुशी न जाहिर कर सका। वह उस उड़ाके को इंसान के रूप में देख रहा था, शत्रु के नहीं। उड़ाके की वायुयान-कला-कुशलता के लिए उसमें सम्मान का भाव था और उसका शान्त, निरुद्वेग साहस देखकर उसे खुशी थी। जब नागरिकों की भीड़ से हर्ष पर हर्ष प्रकट किया जा रहा था तब इस अधेड़ के दिल की गहराई से आवाज निकली—"वीर

आदमी !" उसने इसे दोहराया । पास खड़े भीड़ के लोगों ने आने के अपमानित समझा और वे क्रोध में भर गये । वह बेचारा जासूस समझा जाकर, जाँच के लिए, पुलिस स्टेशन लेजाया गया ।

जैक और बिल दोस्त थे । दोनों सेना में थे । इनमें से एक युद्ध-सम्बन्धी भगदड़ में काँटेदार तारों से उलझ गया । उसके मित्र ने हाथ और घुटनों के सहारे घिसटते हुए वहाँ जाकर उसे निकाल लाना चाहा, पर उसके अफ़सर ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया। उस बेचारे ने बड़ी आरज़ू मिन्नत की कहा, 'मैं अपने मित्र को छोड़ नहीं सकता, वह खून से लथपथ होरहा है और मर जायगा । हम दोनों की प्रतिज्ञा है कि अगर एक मुसीबत में फँस जाय तो दूसरा उसका साथ देगा ।' पर अफ़सर ने उसे ज़बरदस्ती रोका । कहा— 'वहाँ जाने से क्या फ़ायदा होगा ? इसका मतलब सिर्फ़ मृत्यु है । और बिल तो मर ही रहा है । एक सिपाही का धर्म लड़ना है, जान-बूझ कर मर जाना नहीं । अपनी ज़िन्दगी का इस तरह नष्ट करना एक सैनिक अपराध है ।' इत्यादि-इत्यादि ।

पर ज्यों ही अफ़सर वहाँसे हटा जैक निकल भागा । चारों ओर गोलियों की भयानक वर्षा होरही थी । उसे भी गोली लगी, पर उसने इसकी परवा न की । अन्त में वह बिल के पास पहुँच ही गया । पर उसे उलझे तारों से निकालना कठिन काम था । उसने जान हथेली पर रखकर काम शुरू किया । किसी तरह तारों से उसे निकाला और पीछे हटा कि दूसरी गोली लगी । दोनों मित्र पास पास पड़े थे । बिल के प्राण निकल रहे थे, पर उसने यत्नपूर्वक

सी हँसते हुए कहा—"मैं जानता था कि तुम आओगे।" और
कड़ा होगया।

° • • °

किरचों की लड़ाई के पहले नियमित रूप से और बड़ी उदारता
पूर्वक सैनिकों को 'रम' (किशमिश से बनाई जानेवाली एक प्रकार की
शराब) पिलाई जाती थी। उनमें कोई साहस या स्फूर्ति लाने के लिए
नहीं। इसका प्रयोग इसलिए किया जाता था कि उनकी अनुभव शक्ति
कम होजाय जिससे वे आदमियों के मारने के बारे में कुछ विचार न
करें। शराब न पीने वालों की बुरी दशा थी। उनमें से बहुतों ने केवल
आत्मरक्षा के खयाल से अपना सिद्धान्त छोड़ दिया उन्होंने सोचा
पागल हो जाने से तो शराब पी लेना ही अच्छा है।

आक्सफर्ड स्ट्रीट में एक बूढ़ी महिला छुट्टी पर घर आये हुए
एक सैनिक से मिली। सैनिक ज्यादा पिये था इससे बुढ़िया को चाव
लगी। घर के लोग तो यह समझते थे कि हमारे सब सैनिक उतने ही
उत्साहप्रद और महामना हैं जैसे जर्मन पशु और क्रूर हैं। बेचारी उस
सैनिक के पास गई और बोली—"नवयुवक, तुम इतने थोड़े दिन के लिए
इंग्लैण्ड आये हो। मैं तुम्हें इस बुरी हालत में देखना पसन्द नहीं
करती।" सैनिक ने उस महिला की ओर देखा। महिला के उसकी
ओर देखने के ढंग में कुछ ऐसी बात थी कि उसने सैनिक का
विवेक जाग्रत कर दिया। उसने कहा—"श्रीमतीजी, क्या आप जानती हैं
कि पाँच ही दिन हुए होंगे जब मेरी किरच की नोक पर एक मनुष्य झूल
रहा था? और आप जानती हैं पाँच दिन बाद शायद मुझे दूसरे आदमी

क कलेजे में किरच भोंकनी पड़े ! अब मुझे बताइए, क्या आप इस
का काम होश हवास दुरुस्त रहते हुए करने की आशा मुझसे करती हैं ?"

° ° ° •

निम्नलिखित शब्द एक पत्र से उद्धृत किये गये हैं, जो फ्रान्स
रेड क्रास का अक्तूबर १९१४ ई० में एक मृत जर्मन सिपाही के पास
मिला था —

"मेरे प्रियतम प्राण, जब छोटे बच्चों ने प्रार्थना करली है
अपने प्रिय पिता के लिए प्रभु से प्रार्थना करने के बाद सो गये हैं,
तब मैं बैठी हुई तुम्हारे बारे में सोच रही हूँ। मैं हम लोगों के आनन्द
पूर्ण विवाहित जीवन के बारे में सोचती हूँ। ऐ लुडविग, मेरी आत्मा के
प्यारे, लोग एक-दूसरे से क्यों युद्ध करते हैं ? मैं यह नहीं सोच सकती
कि परमात्मा इसे चाहता होगा।"

° ° ° •

उत्तरी फ्रांस के एक नगर के समीप पड़ाव डाले हुए एक जर्मन
सेना में एक युवक जर्मन रसायनशास्त्री काम करता था। उसका
काम यह था कि अगले आक्रमण में जिस विषैली गैस की संभावना हो
उसकी प्रतिकारक चीज़ ढूंढकर तैयार रक्खे। इस प्रकार विज्ञान की सब
प्रकार की सुविधाओं का इस्तैमाल वह जर्मन सैनिकों का दुःख-दर्द दूर
करने में करता था। ऐसे उपयोगी काम में लगा रहने में उसे सुख था।
किन्तु जब महीने पर महीने बीतने लगे, उसे दो बातों का अनुभव हुआ।
एक तो यह कि जिन आदमियों की मैं रक्षा करता हूँ, उन्हें चंगा करता
है वे पुनः उसी प्रकार की पीड़ा बर्दाश्त करने को भेजे जाते हैं।

यदि मैं अपनी बुद्धि उनको चंगा करने में न लगाता तो वे घायल या असमर्थ हो जीवन भर घर रहते। दूसरी बात यह कि जब मैं एक खाँसते हुए पीड़ित गरीब जर्मन के पास बैठा हुआ जो कुछ सुख उसे पहुँचा सकता हूँ, वह पहुँचा रहा हूँ तब मेरी ही वैज्ञानिक चिकित्सा के प्रत्यक्ष फल स्वरूप कितने ही अज्ञात फरासीसी सैनिक इसी प्रकार के दु:ख-दर्द से विकल अस्पतालों में पड़े अपने फेफड़ों के खराब हो जाने से साँस रहे हैं। यह युवक रसायनशास्त्री जितना ही इसपर विचार करता गया उतना ही उसका हृदय अवसादयुक्त एवं गंभीर होता गया और उतना ही वह अपनेको सूना और इकला अनुभव करने लगा। १५ वर्ष बाद, अहिंसा आन्दोलन के एक सदस्य की हैसियत से वह उस नगर म गया और वहाँके निवासियों के सामने अपने अपराध कबूल किये।

• • • •

चिन्ताशीलता, विचार, ध्यान इत्यादि को युद्ध में उत्तेजन नहीं दिया जाता। यद्यपि यह बात वाहियात मालूम होगी, पर यह सच है कि इनसे युद्ध खतरे में पड़ जाता है। ये बातें राष्ट्रीय अभिप्राय को विशृंखल कर देती हैं। परन्तु बुरा हो उस राष्ट्र का जिसका अभिप्राय ऐसा हो कि वह स्पष्ट, खुले आम, प्रकट किये जानेवाले विचार का गला घोंट दे। कोई भी बंदूक का घोड़ा चढ़ा सकता है, बम चला सकता है या विषैली गैस छोड़ सकता है। पर दूसरों के जीवन पर, तथा हमारे ही देश में और प्रकार के क्षेत्रों पर, ऐसे कार्य का क्या असर पड़ता है, इसे देखना हमारा कर्त्तव्य है। इन बातों पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होजाता है कि केवल ईश्वर का ही नियम चल सकता है।

३

स्वदेश में

अहिंसा सत्य पर आश्रित है। उसे सचाई से अलग नहीं कि

जा सकता। यह ज़बरदस्ती नहीं प्राप्त की जा सकती और न इसका ए

किया जा सकता है। जबतक संघर्ष, वेदना और आत्मोत्सर्ग-शा

आपके व्यक्तित्व में मिलकर आपके अस्तित्व का ही अंग न बन

तबतक यह चल नहीं सकती। नीति (पालिसी) या क्षणिक उपा

रूप में अथवा उपयोग के लिए पड़े अनेक अस्त्रों में से एक अस्

रूप में इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता।

जिन्होंने मन से हिंसा का त्याग नहीं किया है, वरन् केवल

को *निःशस्त्र बना लिया है* और समझते हैं कि *हम अहिंसा का* उ

कर रहे हैं, वे अपनेको बड़ा धोखा दे रहे हैं। जबतक असंतोष,

द्वेष, उपेक्षा, दंभ अथवा कटुता विद्यमान है, आपके कार्य में अ

का केवल आभास रहेगा, उसकी विजय नहीं हो सकती। यह तो

करके 'लांगिनस के भाले' (Longinus Spear) † की तरह

---

† पौराणिक गाथाओं के अनुसार यह भाला सलवात पर्वत

मने रक्त भाजन (Holy Grail—वह प्लेट जिसमें अंत में अ

जो अपवित्र है उसके हाथ में आकर यह बेकार हो जाती है। अत्यन्त वीर ही इसका उपयोग कर सकते हैं।

ज्योंही महायुद्ध छिड़ा, सत्य आहतों की सूची में प्रकट हो गया। और ऐसा सदा ही होता है। यह हमारी मानव-प्रकृति की तात्विक कल्याण शीलता का एक प्रमाण है कि लड़ने वाले, युद्ध जारी रखने के लिए असत्य की शरण लेते हैं। बिना इसके एक सम्पूर्ण राष्ट्र की जनरुचि अथवा मस्तिष्क, समय, धन एवं प्रार्थना का सामूहिक संगठन युद्ध के लिए किया ही नहीं जा सकता।

सन् १९१४ ई० में झूठ का व्यापार शत्रु-द्वारा की जाने वाली काल्पनिक क्रूरताओं से आरम्भ हुआ। यह प्रचार किया गया कि बच्चा

ने भोजन किया था और जिसमें क्रूस पर चढ़ने के बाद जोसेफ़ ने उनका रक्त एकत्र किया था) के मन्दिर के भाण्डार का एक मूल्यवान संग्रह था। क्रूस-स्थित ईसा के बगल में यह भाला मारा गया था। उससे यह वहीं घायल कर सकता था जहाँ पाप हो। यह असल में ग्रेल के बादशाह के पास था, पर एक बार उसकी असावधान अवस्था में जादूगर क्लिंगसर ने उसे उड़ा लिया। इसने वर्षों तक बड़े अभिमान पूर्वक इस शस्त्र के स्वामित्व का प्रदर्शन किया था। इसी समय पर्सीफ़ल नामक युवक क्षेत्र में आया। इसी वीर के द्वारा जादूगर के लोभी अपवित्र हाथों में पड़ी हुई जीवन की सुन्दर एवं लाभप्रद वस्तुओं का उद्धार होना था। जादूगर ने इसे दूर खड़े देखा और अपने क़िले की मीनार पर खड़े होकर उसने यह भाला ज़ोर से पर्सीफ़ल पर

के हाथ कतर लिये जाते हैं, भिक्षुणियों (Nuns) का सतीत्व ह
किया जाता है; आदमी सूली पर चढ़ाये जाते हैं; एक जहाज़ के
गोल में छिद्रमय करके पनडुब्बी (सबमेरीन) के खलासी सागर में
डूबते उपरान्त तथा अपनी जान के लिए व्याकुल होकर चेष्टा करते
हुए आदमियों का तमाशा देखते, हँसते, उनका मज़ाक उड़ाते हैं।
युद्ध की समाप्ति के बाद कहीं इन बातों के संदेहजनक स्रोत का पता
लगा। पर युद्ध के समय तो लोग इन्हें ही धार्मिक सत्य की तरह
मान लेते थे। अखबार इन्हें निश्चित एवं अगाध सत्य के रूप में प्रकट
कर लेते थे। जाली फ़ोटोग्राफ़ तक बनाये जाते थे, जिनमें पीड़ित का
नाम एवं जातीयता को स्वेच्छानुकूल भरने के लिए जगह खाली
रक्खी जाती थी।

सामरिक प्रचार-कार्य तो एक लाभप्रद व्यापार बनगया था।

भलाया। पर पर्सीफ़ल को तो इस आक्रमण की खबर भी न थी।
वह लुभाने के लिए आई सुन्दरी मायाविनी की ओर पीठ किये अपनी
तलवार की क्रूसनुमा मूठ पर झुका हुआ था अपनी वासनाओं पर
क़ाबू पाने का प्रयत्न कर रहा था; क्योंकि वह जानता था कि इसीमें
उसका एवं उस स्त्री का भी कल्याण है। अमीतक क्रास लिये हुए
प्रत्येक आदमी तथा प्रत्येक कल्याणकारी चीज़ की वह हँसी उड़ाती
थी। शताब्दियों से वह मनुष्यों के स्वास्थ्य, यश और विवेक का हरण
कर रही थी। इस प्रकार अपने दुर्भाग्य से थकी हुई उस स्त्री की न तो
मौत होती थी और न तबतक वह शान्ति ही प्राप्त कर सकती थी जबतक

कर्नल रेपिंगटन अपनी पुस्तक 'महायुद्ध की डायरी' (Diary of the Great War) के भाग २ पृष्ठ ४४० पर लिखते हैं —

"मुझसे कार्डिनल गैस्के (Cardinal Gasquet) ने कहा कि पोप ने वादा किया है कि बेलजियन भिक्षुणियों के साथ बलात्कार करने या बच्चों के हाथ काटने का यदि एक भी उदाहरण साबित कर दिया जाय तो मैं संसार के समक्ष इसका प्रबल विरोध करूँगा। फलतः जाँच कराई गई और बेलजियम के कार्डिनल मर्सर की सहायता से अनेक केसों की छानबीन कीगई, पर एक उदाहरण भी सत्य सिद्ध न किया जासका।"

श्रीयुक्त निट्टी, जो महायुद्ध के समय इटली के प्रधान मन्त्री थे, अपने संस्मरणों में लिखते हैं —

कोई ऐसा आदमी पैदा न हो जिसके सदाचरण में उसकी बुराइयों से अधिक शक्ति हो—ऐसा आदमी जो उसके प्रलोभनों एवं आकर्षणों को कुचलकर ऊपर उठ सके। अस्तु, जादूगर का चलाया हुआ भाला आकाश में झपटता है पर पर्सीफाल के पास जाकर अधर में लटक जाता है। पर्सीफाल हाथ फैलाकर उसे ले लेता है। बस बुराई (evil) का सारा इन्द्रजाल नष्ट होजाता है और जादू के क़िले की नींव टूट जाती है। सच पूछो तो बुराई की शक्ति तो अक्सर दिखावट एवं छिछलेपन, संदेह एवं असत् और मिथ्या में ही रहती है। यह उसके प्रति हमारा दुष्ट भय है जिसके कारण उसका हमपर इतना अधिकार होजाता है।

"दुनिया वर्तमान् यूरोपीय दुरावस्था का ठीक-ठीक इसके लिए यह जरूरी है कि सामरिक प्रचार द्वारा फैलाई हुई ण्य विषैली कहानियों का बार-बार खण्डन किया जाय। युद्ध के ि मोग ने, अन्य मित्र-राष्ट्रों के साथ मिलकर, जिनमें इटली की ि सरकार भी शामिल थी, हमारे देशवासियों में युद्ध या बदले का जाग्रत करने के लिए बिलकुल बाहियात कल्पित बातें फैला जर्मनों के अत्याचार की ऐसी-ऐसी कहानियाँ गढ़कर फैलाई गर सुनकर हमारा खून खौल उठ। हमने सुना कि हूणों—जर्मनों— छोटे, कमसिन बेलजियन बच्चों के हाथ काट लिये जाते हैं। महायुद्ध बाद एक धनी अमरिकन ने जो फ्रांसीसी प्रचार से भड़का ही और द्रवित हुआ था, बेलजियम में एक अपना प्रतिनिधि लि भेजा कि जिन बच्चों के हाथ काट लिये गये थ उनकी आजीविका प्रबन्ध मरी ओर से यह करे। पर वहाँ एक भी ऐसा लड़का न मिल भी लायड जार्ज और इटली की सरकार का प्रधान मन्त्री रहने मैंने इन भयानक दोषारोपणों की अच्छी तरह जाँच करवाई कुछ केसों में तो नाम और स्थान का भी उल्लेख किया गया था जितने मामलों की जाँच की गई उनमें से अनेक कोरी गप एवं के सिवा और कुछ न निकला।"*

---

* लार्ड आर्थर पानसनबी-लिखित 'युद्ध-काल में असत्य' (False hood in War Time) 216 George Allen & Union देखिए पृष्ठ ९।

सरकार की ओर सब प्रकार के स्वच्छ मनवृत्ति वाले लोगों को आकर्षित करने के लिए कुछ लोगों ने जमनी को राक्षसों की भाँति सींग, पूँछ और चंगुल से विभूषित करना शुरू किया। यदि शत्रु का क्राइस्ट-विरोधी रूप दिखाया जासके तो सम्पूर्ण राष्ट्र में सामरिक मनोवृत्ति पैदा करदेना सरल होजायगा। जब सेंट पाल (इग्लैंड का महान् गिर्जाघर) के डीन (आचार्य) और उनकी सभा ने, गिर्जे के भीतर, 'शान्ति के राजकुमार' (क्राइस्ट) की वेदी के सामने ही एक बड़ी तोप लगाने की आज्ञा देदी तो युद्ध-ज्वर की शक्ति और विस्तार की चरमसीमा होगई। इससे यह मालूम हुआ कि यह रोग अपने आसामियों पर अकस्मात् आक्रमण करके उन्हें कुछ समय के लिए ऊँचा बना देता है और उनकी विवेक एवं विनाद-वृत्ति का हरण कर लेता है।

परन्तु शताब्दी के प्रथम चौदह वर्षों में जो जागृति हुई थी, उसमें कुछ सचाई थी। सारे देश में ऐसे अनेक स्त्री पुरुष थे जो जानते थे कि अखबार सदा सच नहीं लिखते। एक राष्ट्रीय आपदा के समय भी, ऐसे आदमी अकस्मात् अपने बहुत दिनों के पाले हुए विश्वासों का त्याग नहीं कर सके। युद्धकाल में 'पार्वतीय उपदेश' (Sermon on the Mount) को स्थगित करने से उन्होंने इन्कार कर दिया। धर्म को इस प्रकार तोड़-फोड़कर स्वार्थ के अनुकूल बना लेने की अपेक्षा वे उसका त्याग ही कर देना ज्यादा पसन्द करते। वे धर्म का उपयोग चाेगे की तरह नहीं कर सकते थे कि मौके के अनुसार जब चाहे पहन लिया और जब चाहे उतार कर रख दिया। उन्होंने पहले से ही समझ लिया था कि चाहे क्राइस्ट को खाकी (वर्दी) के साथ जोड़ देना सरल

हो, पर यहाँसे हटा देना अत्यन्त कठिन होगा। उनके लिए मानवीय भ्रातृत्व का भाव केवल उपदेश या भजन में प्रयुक्त होनेवाले कोरे जबानी जमाखर्च की तरह नहीं था, वरन् यह एक सचाई थी—एक सच्ची चीज थी।

एक आदमी किसी नदी या समुद्रखण्ड अथवा कृत्रिम रूप से ठहराई हुई सीमा के उसपार पैदा होने के कारण ही अकस्मात् हमारा शत्रु कैसे हो सकता है? दूसरे देश की सरकार के नाम दी जानेवाली चुनौती (Ultimatum) पर, परराष्ट्र-विभाग में बैठे हुए एक आदमी के हस्ताक्षर करदेने मात्र से चिरंतन रुचि-वैचित्र्य में कैसे अन्तर पड़ सकता है? दोनों देशों के सर्वसाधारण का एक-दूसरे से कोई झगड़ा नहीं था। इस प्रकार का दृष्टिकोण रखनेवाले लोग दिसम्बर सन् १९१४ ई० में एकत्र हुए और उन्होंने ('फैलोशिप ऑफ़ रिकन्सिलियेशन' [1] नाम की) एक संस्था बनाई। इस सभा की नींव में यह विश्वास है कि क्राइस्ट की शिक्षा, जीवन एवं मृत्यु में प्रकाशित प्रेम ही संसार की शांति का निश्चित आधार हो सकता है। इसके सदस्य युद्ध के स्थान पर क्राइस्ट के प्रेमपूर्ण उपायों की स्थापना की चेष्टा करते हैं।

यद्यपि युद्ध-विभाग द्वारा पर्याप्त रूप में पुरस्कृत अनेक व्याख्याता ऐसे थे जिनके व्याख्यानों में, किसी भी प्रार्थनाकाल में, अपार जन-समूह देखा जा सकता था और जो लोगों को बताते थे कि जर्मनी जूडा (जूडा—जिसने क्राइस्ट को फँसाया) की भाँति यहूदियों का देश है और गोला-बारूद ही इन लोगों के लिए उचित उपहार हैं और प्राचीन

[1] 'फैलोशिप ऑफ़ रिकन्सिलियेशन' १७ रेडलाइन स्क्वायर, लन्दन।

धर्मोपदेश (Old Testament) के अनुसार जर्मन सीमा पर हमारे जहाजों से आक्रमण करना न्यायपूर्ण है तथा यह कि ईश्वर की माँग के अनुसार जर्मनों को मानवीय न्यायालय के सामने झुकाना ही पड़ेगा; परन्तु डाक गेट्स (धक्के के दरवाज़ों) तथा विभिन्न गलियों के नुक्कड़ों पर तथा बगीचों में भी, प्रति सप्ताह उन अपुरस्कृत व्याख्याताओं को सुनने के लिए अच्छी संख्या में लोग एकत्र होते थे जो मानवीय प्रकृति में निहित मूल सार्वदेशिक और चिरंतन तत्वों का अपील करते थे।

• • ◦ ◦

लड़ाई में शामिल होने की लार्ड किचनर की अपील का सर्वव्यापी प्रभाव हुआ। हरेक जगह सुदर्शन रंगों में छपे हुए अच्छे-से-अच्छे 'डिजाइन' के पोस्टर चिपकाये गये थे कि जिसने अमीतक सैनिक पोशाक न धारण की वह भी जल्द-से-जल्द करले एक निश्चिन्त, प्रसन्न और पूर्ण स्वस्थ सैनिक की तस्वीर दीवारों, बसों एवं अन्य प्रमुख स्थानों से लोगों को आकर्षित करती थी। इसके नीचे ये शब्द होते थे—"यह आराम से और प्रसन्न है क्या तुम भी ऐसे हो?" दूसरी आकर्षक तस्वीर ४० वर्ष के एक अधेड़ चिन्ताग्रस्त आदमी की थी जिसका छोटा लड़का अपनी इतिहास की पुस्तक से सिर उठाकर भोलेपन से पूछता है—"बाबू जी, आपने महायुद्ध में क्या किया था?" इन सब प्रलोभनकारी प्रचारों के होते हुए भी युद्ध से अलग रहनेवाले लोग भी थे।

अनिवार्य सैनिक सेवा का नियम (Conscription) हमारे सिर पर मँडरा रहा था। हमारे संस्कार सब इसके विरुद्ध हैं, क्योंकि सदियों से स्वयं सेवा हमारे जीवन की कुञ्जी रही है। इसलिए इस

क़ानून के विरुद्ध लार्ड और किसान, खनिक और अध्यापक, दूकानदार और बुद्धिमान, कारखाने में काम करनेवाली लड़की और शिक्षार्थी सब अपनी एक सभा (No Conscription Fellowship—अनिवार्य सैनिकता विरोधी भ्रातृसंघ) बनाकर उठ खड़े हुए।

एक आदमी द्वारा दूसरे भाई का मारा जाना कुछ लोगों को ऐसा ही लगा जैसे लाखों में ज़बर्दस्ती वेश्या-वृत्ति जारी की जाय। इस प्रकार की ज़बर्दस्ती का क़ानून व्यक्तित्व का विनाशक था, जिसका परिणाम नागरिकता की श्रेणी का पतन और जीवन के मूल्य का विनाश छोड़कर और क्या होता?

पर, इन विरोधों के होते हुए भी सन् १६१६ ई० में अनिवार्य सैनिक सेवा (Conscription) का क़ानून जारी कर ही दिया गया। यह घटना ब्रिटेन के इतिहास में बड़े मार्के की है। इस नये क़ानून के मुताबिक न्याय-समितियाँ (ट्रिब्यूनल्स) बैठाई गईं जिनके सामने युद्ध-विरोधी लोग भरती से इन्कार करने के कारणों का उल्लेख कर सकते थे। यदि उनके बताये कारण काफ़ी वज़नदार समझे जाते थे तो उन्हें आंशिक या पूर्ण छूट देदी जाती थी। इन समितियों (ट्रिब्यूनल्स) पर बैठनेवाले सिविलियनों के सामने एक अजीब समस्या थी। उनसे आशा कीजाती थी कि वे सच्चे युद्ध-विरोधियों (युद्ध के प्रति आत्मिक या धार्मिक अविश्वास रखनेवालों) एवं बहाना करनेवालों को अलग छाँट सकेंगे परन्तु होता यह था कि वे इस बात में ज़्यादा समय गँवाना पसन्द न करते थे। सेना के एक-दो प्रतिनिधि हमेशा वहाँ प्रश्न पूछने के लिए तैयार रहते थे। वे प्रायः सब युद्ध-विरोधियों से एक ही प्रश्न करते

थे—"कल्पना करो कि तुम एक जर्मन को अपनी दादी पर आक्रमण करते देख रहे हो क्या तुम अलग खड़े तमाशा देखते रहोगे ?"

इन समितियों के सामने लाये जानेवाले आदमियों में से कुछ के मनोभाव के साथ अधिकारियों की रूढ़, अनुदार एवं पारस्परिक मनोभावनाओं की तुलना असाधारण रूप से मनोरंजक प्रतीत होती थी। अधिकारी समझते थे कि ये गहरे विचारशील, अत्यन्त अनुभवी और आध्यात्मिक मनोवृत्तिवाले युद्ध-विरोधी सब बातों एवं स्थितियों को न समझ सकने के कारण ही ऐसा (युद्ध-विरोधी) रुख ग्रहण कर रहे हैं।

(उन्हें जानना चाहिए था कि) स्त्री-पुरुष अपने साथी नागरिकों से अलग होकर बाहर आने के प्रश्न को हँसी-खेल नहीं समझते, वे खूब विचार के बाद ही, जब वैसा करने के गंभीर कारण होते हैं तभी, ऐसा करते हैं। अपनी प्यारी-से-प्यारी वस्तुओं को छोड़कर, लोगों की उपेक्षा एवं संदेह, घृणा एवं सामाजिक बहिष्कार का शिकार होना तथा अपने मताधिकार, अपनी जीविका और अपनी स्वतन्त्रता का त्याग करना हँसी-खेल नहीं है, न सबका काम है, और इसके पीछे ही गम्भीर कारण हुआ करते हैं।

कभी-कभी सारे नगर में केवल एक ही युद्ध-विरोधी होता था—एक गरीब अशिक्षित आदमी, जिसके लिए टाउनहाल या पुलिस कोर्ट में अधिकारियों एवं जन-समूह के सामने खड़े होकर यह बताना कि क्यों वह एक नगण्य आदमी सम्पूर्ण चर्च, राष्ट्र तथा साम्राज्य के संगठन के विरुद्ध अपनी निजी सम्मति लेकर खड़ा हुआ है, अत्यन्त कठिन काम था। इसकी अपेक्षा अपने सिद्धान्तों को छोड़कर धारा का साथ देना

'तुममें हम भी हैं' कहना और बहुमत के बंधुत्व का आनन्द लेना भी सरल था। पर वे बराबर अपने मन में प्रश्न करते थे कि क्या हमारे राष्ट्र के इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब में थोड़े-से व्यक्तियों को दृढ़तापूर्वक अत्याचारी एवं दंभी के मुकाबले खड़ा होना पड़ा था। क्या हुआ यदि चार्ल्स प्रथम के समय में की साधारण सभा (हॉउस-ऑफ कामन्स) में अध्यक्ष (स्पीकर) उसके आसन पर रखनेवाले चार भी अच्छे एवं सच्चे आदमी मिले थे।

चाहे कितना ही खराब समय हो, कितना ही अँधेरा कास और कितना ही शिथिल विश्वास हो, क्राइस्ट (ईसा) के इतिहास में ऐसे एक-न-एक आदमी हमेशा निकलते आये हैं जि अपनी दृष्टि को स्वच्छ रक्खा, अपने धर्म-विश्वास और में समानता रक्खी। पीटर ने तीन बार साथ छोड़कर भी क्राइस्ट का मृत्यु तक अनुगमन करने का निश्चय किया था।

इस प्रकार जिन युद्ध-विरोधियों को छूट न मिलती फिर अपने विश्वास के विरुद्ध चलना पसन्द न करते, वे पहले के सैनिक छावनियों में भेजे जाते और फिर वहाँ से सिविल जेल में जाते थे। स्त्रियाँ रेकर्ड-विवरण-रखतीं; ऐसे कैदियों की पत्नियों उनके कुटुम्बों को देखने जातीं; खुली जगहों में सभायें करतीं जब जेल की कोठरियों से या सेना के सन्तरियों से छनकर कोई खबर आती तो उसकी छानबीन करतीं, बीच में पड़कर उसका करातीं। प्रथम अध्याय में जिस माली के लड़के का ज़िक्र किया

उसे यह साफ़-साफ़ कह दिया गया कि तुम अंग्रेज़ स्कूली बच्चों को श्रम शिक्षा नहीं देसकोगे। वह ऐसा आदमी न था कि अपने विश्वास एवं कर्तव्य को छोड़कर सैनिक यंत्र का पुर्ज़ा बनजाता। वह जाँच-समिति (ट्रिब्यूनल) के सामने पेश किया गया और समिति ने यह निर्णय किया कि उसे छूट नहीं दी जासकती। फलतः वह पहले बैरक में लेजाया गया और वहाँ से जेल भेज दिया गया। वहाँ उसने जेल जीवन का इस विचार से मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया कि पीछे अपने ही जैसे अन्य राजनैतिक क़ैदियों के साथ शामिल होकर जेल-सम्बंधी सुधारों में शीघ्रता करने का आन्दोलन किया जाय।

एक दिन मुझे एक अपरिचित प्राइवेट सैनिक का एक पोस्टकार्ड मिला। उसपर निम्नलिखित शब्द लिखे थे—"कुमारी, यदि तुम इस ए० बी० क़ैदी को जानती हो जो हमारे पास है, तो ईश्वर के नाम पर उसके लिए कुछ करो। वे (अधिकारी) उसके साथ रोमांचकारी व्यवहार कर रहे हैं।" इस क़ैदी की बँधी कलाइयों में एक बड़ी बालटी बाँध दी गई थी, जिसमें २८ सेर रेत भरदी जाती थी और उसे पत्थर की सीढ़ियों से नीचे लेजाने का हुक्म होता था। अपनी खतरनाक उतराई को आरंभ करने के लिए उसे एक ठोकर दीजाती थी। यह क़ैदी प्रथम अध्याय में उल्लिखित 'बैट फैक्टरी' का श्रमिक था।

इसी प्रकार दस आदमियों को मृत्यु-दण्ड देकर गोली से मार देने के लिए फ्रांस भेजा गया, पर समय पर जनता में आन्दोलन होने के कारण यह दुर्घटना न हो सकी।

कोई इन छोटे-छोटे कष्टों की युद्धक्षेत्र में वीरता-पूर्वक सहन किये जानेवाले कष्टों से तुलना करने की कल्पना न करेगा, किन्तु स्वयं

टामियों (अंग्रेज सैनिकों) ने किंचित् अत्युक्ति और अपनी स्व उदारता के साथ अनेक बार कहा है—"मैं! मैं तो इन सब बातों विरुद्ध खड़ा होने का साहस कभी न कर सकता। मैं चाहता हूँ मुझमें इतना साहस होता। ये आदमी मुझसे कहीं ज्यादा वीर हैं।"

पुरुषों की तरह स्त्रियां भी जेल गईं। साम्राज्य-रक्षा क़ानू (Defence of Realm Act) के अनुसार सैनिकों को ऐसे प पहुँचाना जिससे भरती को धक्का पहुँचे, जुर्म था। बाइबिल के उद्धरण को भी कुछ लोग शांति सम्बन्धी (युद्ध-विरोधी) खतरनाक प्रचार समझ थे। हमें खुशी थी कि यह बात प्रगट हो गई। जिनके हाथ में अधिक था, वे हमारे लगातार प्रतिरोध को पसंद नहीं करते थे। सर आर्किबाल्ड बाडकिन ने, जो इस समय सम्राट्-सरकार के एक प्रधान क़ानू अधिकारी थे, विशेष रूप से तैयार की हुई एक पत्रिका दी। पर जि वह सबसे प्रभावशाली भाग समझते थे उसकी शब्दावली उन्हीं के मतलब के लिए बिलकुल अभागी—खराब—सिद्ध हुई। उल्टे उलटा हम लोगों का उद्देश्य सधा। इसलिए हम लोगों ने पोस्टरों में बड़े-बड़े अक्षरों में उसे छापा और स्थान-स्थान पर उसका प्रदर्शन किया। उनके शब्द ये थे—"यदि व्यक्ति लड़ने से इन्कार करना शुरू करते हैं तो युद्ध असंभव हो जायगा।" एक सरकारी अधिकारी के लिए इस तरह की गलतियों से बच जाना बड़ा ही कठिन है। जो आदमी सबके विरुद्ध किसी खास बिन्दु पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित करने को मजबूर हो वह चारों तरफ़ से ठीक-ठीक किसी बात को देखने का अवसर कैसे पा सकता है! ऊँचे क्षितिज पर से देखने पर

आदमी को उसकी, चारों ओर की, परिस्थिति उतनी सच्ची नहीं दिखाई देती। उस अवस्था में जो विरोध मालूम पड़ता है वह अग्रभूमि एवं पार्श्वभाग दोनों का स्पष्ट कर देता है। सेना के प्रतिनिधि जब पादरी पर आक्रमण होने की बात पूछते हैं तब अर्जेन हमारे ध्यान में आता है। महीने-पर-महीना, साल-पर-साल बीतता है, पर सैनिक अधिकारी इसी प्रश्न को उस बच्चे की तरह बार-बार पूछता है जिसने किसी प्राचीन समस्या का उत्तर देना अभी अभी सीखा हो। इतने पर भी बहुत संभवत इस प्रकार का अधिकारी कभी-कभी, जैसे हफ्ते में एक बार, तो अपनेको ऊंचे क्षितिज से देखने का अवसर देता ही है। वह एल्डर,* डीकन†या रविवार-पाठशाला के अध्यापक में से कोई भी हो सकता है। वह क्राइस्ट का सम्मान करता है, जिसने एक दिन कहा था कि क्रूस पर चढ़ने के बाद मैं सबको अपनी ओर आकर्षित करूँगा— जिसने सिखाया था कि प्रेम, सच्चे, स्थायी, निष्ठायुक्त प्रेम का, जो क्षमा करना ही जानता है और जो यह नहीं गिनता कि मेरे विरुद्ध कितने पाप किये गये हैं, ऐसे प्रेम की शक्ति का प्रतिरोध अधिक काल तक

---

* एल्डर—प्रेस बाईटेरियन चर्च (ईसाइयों का एक उपासना सम्प्रदाय, जिसमें सब पादरी बराबर समझे जाते हैं और चर्च का शासन इसी सिद्धान्त पर चलाते हैं) में एक प्रकार के पादरी या धर्मोपदेशक।

† डीकन—एपिस्कोपल (बिशपों द्वारा निर्मंत्रित) चर्च में पुजारी के नीचे कार्य करने वाले पादरी। प्रेसबाईटेरियन चर्च में एल्डर से भिन्न एक अफ़सर जो पैस्टर को सलाह देता तथा प्रसाद वितरण करता है।

काई नहीं कर सकता—और जिसने कहा था कि मेरे अनुयायि मेरे ही समान होना चाहिए और एक-दूसरे की सेवा-सहायता चाहिए, न कि एक-दूसरे पर अधिकार जमाना चाहिए। तुम मेरे अनुयायी हो, इसका पता लोग इसीसे लगायेंगे कि तुममें आपस में दूसरे के लिए कितना प्रेम है और 'याद रक्खो कि तुम अपने किसी को चाहे खिला रहे हो या वस्त्र पहना रहे हो, उसकी प्यास बुझा या उसे नंगा भूखा और प्यासा रख रहे हो,—जो कुछ तुम उसके कर रहे हो, वह असल में मेरे साथ ही कर रहे हो।'

यह संभव है कि इन सैनिक प्रतिनिधियों में से किसीकी से ये पृष्ठ गुजरें। यदि ऐसा हो तो मैं चाहती हूँ कि मैं उन्हें सकती कि दासियों तथा अन्य स्त्रियों की रक्षा असल में किस बात हम लोग इस प्रश्न को अंग्रेज़, जर्मन, फ्रेंच या आस्ट्रियन नागरिक हैसियत से नहीं देखतीं हैं, वरन् स्त्री की हैसियत से देखतीं हैं जानती हैं कि अन्य युद्धों की भाँति इस युद्ध में भी मनुष्य-जाति अकथनीय हानि की है। व्यभिचार-दोष से फैलने वाले घाव-विकार के रोगों की बाढ़ आगई। इनमें से बहुतेरे रोगों ने तो बाद में ईसाइ के घरों में अड्डा जमा लिया। गर्भ-स्थित बच्चों को इस पाप का बोझ ढोना पड़ा। युद्ध के पहले अनेक आदमी वेश्या-वृत्ति से बचे हुए थे,

* "And whatever you do to your brothe whether it is feeding him giving him drink clothin him or leaving him naked and hungry and thirsty remember you are really doing it all the time to Me."

युद्धकाल में तो वेश्या-वृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ गई। जो आदमी इस चक्कर में पड़ा वह फिर अपने पहले जीवन के आत्म-गौरव और आत्म सम्मान को न प्राप्त कर सका। सेनाओं के लिए सामान्य सार्वजनिक वेश्या होती थी और ऐसी भी स्त्रियाँ होती थीं जिनके द्वारा शत्रु के सैनिक एवं राजनैतिक भेदों को प्राप्त करने की आशा की जाती थी। शान्ति का समझौता होने पर समझौते की शर्तों के अनुसार फ्रांस की काली पलटनों (black troops) के लिए स्थापित किये गये चकलों में भरती होने को जर्मनी की अनेक स्त्रियाँ आर्थिक कारणों से विवश हुईं। राइन-प्रान्त के नगरों में पहले एक चकले का भी पता न था, पर बाद में वे चकले क़ायम करने पर मजबूर किये गये। इन नगरों में से एक के नगराधिपति (मेयर) किसी तरह अपनेको यह बीभत्स कार्य करने के लिए तैयार न कर सके। उन्होंने तद्विषयक आवश्यक काग़ज़-पत्रों पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। तब उन्हें बताया गया कि ऐसा न करने पर सख्त जुर्माना किया जायगा और चाहे वह हस्ताक्षर करें या न करें चकले तो क़ायम होंगे ही। तब उन्होंने विवशतापूर्वक हस्ताक्षर कर दिये।

युद्ध स्त्रियों की रक्षा करता है, इस बात को टूक-टूक कर देने के लिये क्या इतनी बातें काफ़ी नहीं हैं?

साधारण जीवन में भी शारीरिक बल या खूबसूरत छोटे पिस्तौलों की चमक से स्त्री की पवित्रता की रक्षा नहीं होती। हम जहाँ-जहाँ जाती हैं वहाँ-वहाँ अपनी रक्षा के लिए नौकर, बन्धु या पति को साथ नहीं ले जातीं। यदि ऐसा करना पड़े तो हमारा जीवन कितना

दूभर और दुखदायी हो जाय ! और जब पति वृद्ध होजाते हैं या
पड़ जाते हैं, या पंगु हो जाते हैं, तब क्या उपाय हो सकता है ! हम
पवित्रता, हमारा सतीत्व या हमारा जीवन हिंसा के ऊपर निर्भर करे
हमारी रक्षा की संभावना कितनी शिथिल एवं कमज़ोर होगी !

फिर नित्य हम लोग खतरे से घिरी रहती हैं । संभवतः
भी हम अकेली गाँवों या निर्जन स्थलों की ओर घूमने जाती हैं
हमें अनेक कुत्तों, साँडों, बाघ चोरों, शराबियों या दुर्जनों के पास
गुज़रना पड़ता है, जो यदि वैसा निश्चय ही करलें तो हमें आघा
से दबा सकते हैं ।

पर हमारी मुक्ति या रक्षा तो लोगों के विवेक तथा पारस्परि
विश्वास एवं इस धारणा में है कि ईश्वर ने संसार को एक अच
स्थान बनाया है । जहाँतक हमारे वैज्ञानिक खोज कर सके हैं, वहाँत
पता चलता है कि जिन मूलभूत नियमों से संसार शासित है
सामञ्जस्य, नियमितता सुघड़ता, सुशीलता, सौंदर्य और उदारता
व्यक्त करते हैं ।

विश्व के उपकरणों—तत्वों में ही कोई ऐसी चीज़ है
विश्वास, निश्चय एवं सदिच्छा को बढ़ाती एवं उसका स्वागत
करती है ।

मेरे या मेरे मित्रों के साथ बार-बार ऐसी घटनायें घटित हुई
जब हमपर किये जानेवाले किसी आकस्मिक आक्रमण से बचने
कोई सूरत न थी और हम निर्जन स्थान में अकेली थीं । यदि हम
चीखतीं, डर जातीं या अपनी रक्षा के लिए सामान्य चेष्टा करतीं, तो

संभव है कोई दुर्घटना होजाती और इसमें तो कोई संदेह नहीं कि कम-से कम, मानसिक उत्तेजना तो बहुत अधिक बढ़ जाती। परन्तु हम शान्त रहीं, प्रभु की शरण ली, केवल उस माता की रक्षा करनेवाली शक्ति का ध्यान किया और अपनी सारी शक्ति एक शक्तिमान् सर्वव्यापक चेतना पर केन्द्रित की। परिणाम यह हुआ कि आक्रमणकारी भाग गया अथवा स्वतः दूर होगया।

ऐसी घटनायें कोई अद्भुत् कहानियाँ नहीं हैं। ये तो केवल सामान्य विधान का प्रकाशित करती हैं। जब-जब मनुष्य ने अपनी शंका और भय की केंचुल उतारकर, बिना किसी हिचकिचाहट के निर्भय होकर, अपनी नाव छोड़ दी है और स्वयं अपना पथ-प्रदर्शन करने का साहस न उठाकर अपनेको निश्चिन्ततापूर्वक प्रभु की दया धारा पर छोड़ दिया है, तब-तब ऐसी बातें प्रत्येक देश में और प्रत्येक युग में उसे अनुभव हुई हैं।[‡]

---

‡ यहाँ लेखिका ने अपनी कापी में एक सुन्दर प्रार्थना अंग्रेज़ी में दी है जो मुद्रित संस्करण में नहीं है। वह यहाँ दी जाती है—

"Flood thou my soul with thy great quietness.
O let thy wave
of silence from the deep
Roll in on me the shores of sense to leave
so doth thy living water softly creep
Into each cave
And rocky pool, where ocean creatures hide

'प्राचीन धर्म पुस्तक' (Old Testament) की एक कथा में यह विचार बड़े सुन्दर दृष्टान्त-रूप से लिखा है। इलिशा एक शान्तिवादी था तथा सम्राट् के आसपास रहनेवाले इसराईल राजनीतिज्ञों व सेनानायकों से कहीं अधिक व्यावहारिक था। उसके कारण ही, सीरिया की आक्रमणकारी सेनाओं की सुव्यवस्थित युद्ध-कला असफल होती थी। पछाड़ पर पछाड़ पीटने लगे, पर सीरियनों को विजय न मिली, जिसकी आशा करने के उसके पास यथेष्ट कारण थे। तब उन्होंने समझा कि यह इलिशा, यह हरिजन, ही जो न तो डराया या धमकाया जा सकता है, न उसे किसी प्रकार की घूस दी जा सकती है, हमारा प्रधान शत्रु है।

Far from their home, yet nourished of thy tide
Deep-sunk the wait
The coming of the great
Inpouring stream that shall new life communicate,
The, starting from beneath some shadowy ledge
Of the heart's edge
Flash sudden coloured memories of the sea
Whence they were born of thee
Across the mirrored surface of the mind.
Swift rays of wondrousness
They seem
And rippling thoughts arise
Fan-wise
From the quick-darting passage of the dream
To spread and find

...तक इसे दूर न किया जायगा, हमारी इच्छा पूरी न होगी। इसलिए ...री सैनिक शक्ति लगाकर उसीको गिरफ़्तार करने और ऐसी जगह ...र रखने की व्यवस्था की गई जहाँसे वह साम्राज्य-विस्तार की उनकी ...रवपूर्ण महत्वाकांक्षाओं में विघ्न न डाल सके।

प्रातःकाल का समय है। सेवक पर्वत-शृंग पर बनी इलिशा की ...टिया की सफ़ाई कर रहा है। अकस्मात् उसकी दृष्टि पहाड़ी की तलहटी ...आती है और वह चिन्ता के साथ देखता है किसी रियन सेनायें चारों ...र से पहाड़ी को घेरे हुए हैं निकल भागने का कोई मार्ग नहीं है।

Each creviced narrowness
Where the dark waters dwell
Mortally still,
Until
The Moon of Prayer
That by the invincible sorcery of love
God's very self can move
Draws thy life giving flood
E'ven there
Then the great swell
And urge of grace
Refresh the weary mood
Cleansing anew each sad and stagnant place
That seems shut off from thee
And hardly hears the murmur of the sea.

वह कहता है—"हाय मेरे स्वामी, अब हम क्या करें !" इलिशा य
हैं—"निर्भय रहो उनके पास जितने आदमी हैं उससे कहीं ज्यादा ह
पास हैं।" परन्तु सेवक को विश्वास कैसे हो, वह तो सब कुछ क
आँखों से देख रहा है : 'यहाँ केवल हम दो आदमी हैं, शत्रु
असंख्य है।' पर इलिशा उससे बातें करने में अधिक शब्दों
अपव्यय नहीं करते। एक भीत आदमी के लिए उससे कहीं अ
उपाय हैं। वह प्रार्थना करते हैं—"हे प्रभु, इस युवक की
खोलदे, जिससे यह देख सके।"

अकस्मात् वह युवक सेवक सत्य को प्रत्यक्ष करता है। य
पर्याप्त है। यह अकल्पनीय है कोई चिन्ता नहीं कोई भय नहीं, आक्र
कारी शत्रु की विराट सैन्य-गणना का कोई विचार नहीं, आत्म
अनिवार्यता की कोई भावना नहीं !

अब वह युवक स्पष्ट देख रहा है। उसके और उसके स्वामी
चारों ओर, ऊपर-नीचे, इधर उधर अग्नि के रथ हैं। इलिशा
प्रार्थना के कारण अकस्मात इनका प्रादुर्भाव नहीं हुआ। यह सामा
विधान है। सनातन प्रभु ही हमारा आश्रय-स्थल है और उस
नीचे अनन्त सैन्य एवं शक्ति है।

• • • •

"आज आधुनिक ईसाइयत (क्रिश्चियानिटी) के लिए सबसे ब
आवश्यकता यह है कि वह 'पार्वत्य उपदेश' (सरमन ऑन
माउण्ट') का जीवन-यापन की एक व्यावहारिक विधि के रूप में पु
अन्वेषण एवं ग्रहण करे। आज हममें संदेह एवं भय है कि शाय

यह व्यावहारिक नहीं। मानव-प्रकृति को ऐसे रूप में ढालने की चेष्टा करना जिसे यह ग्रहण नहीं करेगी, हम थकानेवाला कार्य लगता है। मानव प्रकृति जिसके लिए नहीं बनाई गई है उसे लादना व्यर्थ है। हाउसमैन ने इसी बात को कहा है —

> And since my soul we can not fell
> To Saturn or to Mercury
> Keep we must and keep we can
> Those foreign laws of God and man.

(और, हे मेरे प्राण, चूंकि हम उड़कर शनि या बुध ग्रहों तक नहीं पहुँच सकते इसलिए हमें ईश्वर एवं मनुष्य के,विदेशी-अप्राकृतिक कानूनों को सुरक्षित रख देना चाहिए और हम उन्हें सुरक्षित रख सकते हैं।)

क्या 'पार्वत्य उपदेश' (सर्मन ऑन् दि माउण्ट) में निश्चित किये सिद्धान्त विदेशी-अप्राकृतिक, अमानवीय-नियम हैं ? क्या उनमें कोई ऐसी बात है जिसके लिए हमारा निर्माण नहीं हुआ है ? पहली बार देखने से संभव है, ऐसा मालूम पड़े। चेस्टरटन कहता है कि पहली बार पढ़ने पर ऐसा मालूम पड़ता है कि यह सब वस्तुओं को उलट देता है, पर जब दूसरी बार आप इसे पढ़ते हैं तो आपको पता चलता है कि यह प्रत्येक वस्तु को सीधा कर देता है। जब पहली बार आप इसे पढ़ते हैं तो आपको अनुभव होता है कि यह असंभव है, पर जब दूसरी बार पढ़ते हैं तो अनुभव होता है कि इसके अतिरिक्त और कोई बात संभव ही नहीं है। मैंने जीवन की इस विधि पर जितना ही विचार किया है

उतना ही मेरा निश्चय दृढ़ होता जाता है कि इस (सर्मन ऑन दि माउण्ट) में जो हम सब नैतिक असंभाविताओं की कल्पना करते हैं वह सब गलत है। तथ्य यह है कि सब नैतिक संभावितायें यहीं हैं और सब असंभावितायें इसकी परिधि के बाहर हैं।

"पार्वत्य उपदेश (सर्मन ऑन् दि माउण्ट) असंभव मालूम पड़ सकता है पर केवल हमारे अत्यंत बुरे क्षणों में ही। हमारे उन्नत क्षणों में—और वे ही हमारे असली क्षण हैं—हम अनुभव करते हैं कि और सब कुछ अविश्वसनीयतापूर्वक असंभव तथा मिथ्या है।" †

• • • •

---

† ई॰ स्टेनली जोन्स कृत 'दि क्राइस्ट ऑन् दि माउण्ट' पुस्तक से। प्रकाशक—एबिंगडन प्रेस।

: ४ :

युद्धकाल में हमारा जीवन

पिछले अध्यायों में मुझे, स्थानाभाव-वश, जीवन के इतिहास का एक पैरे में और एक व्यक्तित्व का कतिपय वाक्यों में वर्णन करना पड़ा है।

और इस अध्याय के बाद वाले अध्यायों में मैं यूरोप के विभिन्न अहिंसावादी समाजों एवं समूहों के कार्यों का निर्देश करूँगी और इनमें से प्रत्येक ने सैनिकवाद तथा उसके अभिन्न उपकरण ग़रीबी और पीड़ा से मुकाबला करने के कार्य में जो क्रियात्मक योजना ग्रहण की है उसका खाका खींचने की भी कोशिश करूँगी।

इस अध्याय में लन्दन के पूर्वीय भाग (ईस्ट एण्ड) की कुछ पार्श्ववर्त्ती गलियों में बसे हुए मनुष्यों के दैनिक जीवन का गम्भीर अध्ययन किया गया है। यह अभिनय ५-६ गलियों से निर्मित एक संकुचित मञ्च पर होता है। प्रत्येक गली में प्रायः ४० छोटे मकान हैं प्रत्येक मकान में दो या तीन कुटुम्ब—अर्थात् १२ से १५ आदमी—बसते हैं। इनमें प्रत्येक मनुष्य के अपने अलग विचार हैं और यह अपने व्यक्तित्व की पवित्रता की रक्षा करता है और हमारी अंग्रेज़ी प्रकृति के अनुकूल वह इस विषय में बड़ा कट्टर होता है। यदि कोई अन्वेषणकर्त्ता

मानव-प्रकृति, ईश्वर और शस्त्र-युद्ध के नैतिक समवर्ती साधन (moral equivalent) का अध्ययन करना चाहे तो उसके लिए इस भाग (बोटास्फ रोड, बो) में पर्याप्त सामग्री मिल सकती है।

जब इस नगर-भाग (बोटास्फ रोड) में युद्ध का प्रवेश हुआ तब मैं 'बो' को पिछले ११ वर्षों में बहुत अच्छी तरह जान चुकी थी। गली के कोने में 'किंग्सले हाल'‡ था और उसके सामने एक चकला था। रोज़, क्राउन तथा 'ब्लैक स्वान' इसके बिलकुल नजदीक थे और एक अन्य मद्यालय तथा जुएखाने तीन मिनट के रास्ते पर थे। सट्टेबाज़ तथा रेस सम्बन्धी खबरें इधर से उधर पहुँचानेवाले हमेशा इन स्थानों में मौजूद रहते थे। छोटे-छोटे बच्चे भी रेस सम्बन्धी समाचार पहुँचाकर तथा गलियों के नुक्कड़ों पर खड़े रहकर एवं किसी पुलिस सिपाही को आते देख इशारा कर देने के बदले कुछ कमा लेते थे।

जब शाम को ज्यादा गर्मी पड़ती तो इन मकानों में रहनेवाले अपने दर्वाज़ों के सामने, गलियों में, अपनी पुरानी लकड़ी की कुर्सियाँ डालकर बैठते। ११ १४ वर्ष के बच्चे नीचे पत्थर के फ़र्श पर ही मकान की दीवारों का सहारा लेकर बैठ जाते और कौड़ियों के लिए ताश खेलते। लड़कियाँ म्युनिसिपैलिटी के लैम्प के खम्भों से बाँधकर रस्सियों के झूले बनातीं। कुछ दूसरे लोग, अपने छोटे पड़ोसियों को एकत्र कर

‡ 'किंग्सले हाल'—यह एक प्रकार का सेवाश्रम है, जिसे मिस म्यूरियल लस्टर ने स्थापित किया और जहाँ वह तथा उनके साथी रह कर जन-सेवा का कार्य करतीं एवं जीवन को अहिंसा की भित्ति पर ढालने का प्रयत्न करती हैं।

उनके सामने एक चौड़ा काली पट्टी रखकर, स्कूल अध्यापक का पार्ट अदा करते। बहुत छोटे बच्चे, पत्थर की पटरी पर बैठकर, गटर-नाले में पाँव डाले, कीड़ों से भरे हुए कीचड़ के खेल करते थे।

किंग्सले हाल खुलने के बाद स्थानीय जीवन में ज्यादा जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। किंग्सले हाल सर्वसाधारण का घर है, जिसका संचालन स्वयं पड़ोसी बंधु करते हैं और जहाँ स्त्री-पुरुष, अंग्रेज और विदेशी, चालाक और सीधे ईसाई (आस्तिक)और नास्तिक सभी लोग सेवा और भ्रातृत्व के द्वारा अपनी मुक्ति को ढूँढ़ते हैं।

दयालुता, साहस और विनोद समीपवर्ती गलियों में बसनेवालों की मुख्य विशेषतायें हैं और इसीलिए, अगस्त १६१४ ई० (युद्ध के आरंभ) के कुछ दिनों बाद तक भी जर्मन और आस्ट्रियन वंश के ४-५ दूकानदार शांति एवं संतोषपूर्वक अपना व्यापार करते रहे। यद्यपि अखबार अपनी सारी अक्ल खर्च करके युद्ध-सम्बन्धी प्रचार कर रहे थे, पर 'बो' के निवासियों के शांतिमय कार्यक्रम में, कुछ दिनों तक, कोई अन्तर न पड़ा। उन्होंने पिछले सालों में इन अखबारों में बन्दरगाहों के श्रमिकों की महान् हड़ताल तथा बेकार एवं भूखे आदमियों की यात्राओं (hungermarches) की मनगढ़ंत रिपोर्टें पढ़ी थीं और वे जानते थे कि 'ये लोग ऐसी चालाकी से भरे वाक्य लिखते हैं कि जो बातें हुई ही नहीं वे भी सच्ची-सी मालूम होने लगती हैं। इसमें उनका दोष नहीं है। उन्हें इसीके लिए वेतन मिलता है। उनको जीभ को मरोड़कर उच्चारण किये जानेवाले ऐसे लम्बे शब्दों की जानकारी रखनी पड़ती है जिनका खंडन तुम तबतक नहीं कर सकते जबतक तुमने

कालेज की शिक्षा न पाई हो। वे प्रायः अच्छे एवं सज्जन पुरुष अथवा कुटुम्बों के पिता होते हैं और अपने बच्चों को रोटी जुटाने के लिए उनको मजबूर होकर यह सब करना पड़ता है। उनको अपने मालिकों की आज्ञा माननी पड़ती है। और सुन्दर फ्रेमका चश्मा लगाने वाला सम्पादक जो आधी रात आफिस-डेस्क पर बैठा रहता है, वह भी तो आखिर तनख्वाह पानेवाला एक गुलाम ही है। शेयर होल्डर, जो उसे तनख्वाह देते हैं, जो कुछ पढ़ना चाहते हैं वैसा ही उसको लिखना पड़ता है। यदि वह एक शब्द ज्यादा लिखे तो उसे काम छोड़ना पड़ता है।"

यों तो ईस्ट एण्ड के निवासियों में से हजारों आदमी युद्धक्षेत्र में थे। पर वे साधारण ढंग से इसमें शामिल हुए थे और जानते थे कि 'धर्म-युद्ध की लम्बी-चौड़ी बातों में कोई तथ्य नहीं है।' वे यह भी जानते थे कि हमारे आदमी कोई फरिश्ते नहीं हैं और जुलाई १९१४ में युद्ध आरम्भ होने के पूर्व, वे टाम, डिक और हेरी (साधारण आदमी) थे; किसी कारखाने में मजूरी करते थे और शनिवार की रात को पी-पी कर गालियाँ बकते थे और बुरी हरकतें करते थे। और आज वहीं के साथ भी वे वही टाम, डिक, हेरी हैं। यदि गोली के शिकार न हुए तो एक दिन किसी अच्छी लड़की के साथ विवाह-बंधन में बंधकर वे गृहस्थ हो जायेंगे।

• • • •

चूँकि किंग्सले हाल का उद्देश्य और कार्यक्रम जाति, समूह एवं राष्ट्र के बंधनों को तोड़ना था, इसलिए वह युद्ध का समर्थन नहीं कर सकता था।

पर दुनिया में ऐसे आदमी सर्वत्र मिलते हैं जिनको शरारत में ही मजा आता है। मनोविज्ञानवादियों ने ऐसे आदमियों की अचेत मनःस्थिति एवं तात्पर्य के विषय में बहुत-कुछ लिखा है। यह जानने के लिए विशेष अध्ययन की आवश्यकता नहीं है कि 'बो' के एक बहुत नाकीर्ण घर में, जहाँ कभी-कभी १२ १२ आदमी तक रहते, सोते, भोजन बनाते, खाते, कपड़े धोते, पढ़ते, प्रेमालाप करते, एक तंग कोठरी में संतान उत्पन्न करते और एक दिन मर जाते हैं, वहाँ 'शरारत करना' ही लोगों का ध्यान आकर्षित करने का एकमात्र उपाय है। हाँ, मरना जरूर एक बात है जिससे लोग चर्चा करते हैं, पर उस हालत में मरनेवाले को कोई खबर नहीं रहती कि उसके कारण लोगों में क्या हलचल पैदा हो रही है।

अतः शीघ्र ही चारों ओर तरह-तरह के संदेह लोगों में फैलाये जाने लगे और 'रोज एण्ड क्राउन' मद्यविक्रेता की कलवरिया में यह बात दो हराई गई कि किंग्सले हाल देशद्रोहियों (ट्रैटर्स) का अड्डा है। इन मद्यविक्रेताओं के लिए ऐसी बातों का प्रचार करना व्यापारिक दृष्टि से लाभप्रद था, क्योंकि किंग्सले हाल ने बहुत-से ऐसे आदमियों को भी आकर्षित कर अपने अंदर शरीक कर लिया था जो पहले अपना समय और धन इन शराब बेचनेवालों की जेब भरने में खर्च करते थे। शीघ्र ही इन शराबियों का यह भी पता चल गया कि किंग्सले हाल वालों ने अपनी रविवार की उपासना से विजय की प्रार्थना को निकाल दिया है। इससे भी बढ़कर उत्तेजक एक बात यह फैलाई गई कि ये लोग तो जर्मनों के जासूस हैं। संभवतः एक भी आदमी ने इन बातों में दिल से विश्वास

नहीं किया होगा, पर उन्हें दोहराने और श्रोता पर हाने वाले उनके प्रभाव को देखने में एक मज़ा तो आता था।

एक रात को हम लोगों ने सुना कि 'बो' की एक विख्यात महिला जो बड़ी मद्यप थी, 'रोज़ एण्ड क्राउन' की कलवरिया में प्रत्येक आगन्तुक को मुफ़्त में शराब पिला रही है और इसके बाद वे लोग किंग्सले-हाल पर धावा बोलेंगे। सार्वजनिक घरों के निवासी मुझे होशियार रहने और पुलिस बुला लेने की सलाह देने को आये और ज़रूरी सूचना देकर उन्होंने अपना रास्ता नापा। उनमें से एक ने कहा—"मैं किसी झगड़े में पड़ना नहीं चाहता, अतः सीधे घर जाकर बिस्तर की शरण लूँगा। अब तुम व्यर्थ समय न खोओ। वे किसी समय यहाँ आ सकते हैं। वे कह रहे थे कि तुमपर गंधक का तेज़ाब फेंकेंगे ओह, शर्म! ऐसा कृत्य!"

उस संध्या को हाल में एक ज़बर्दस्त, आनन्द में किलकारियाँ मारने और अट्टहास करनेवाली मंडली जुटी थी। बिलियर्ड, ताश, अन्य खेलों तथा संगीत के क्रम चल रहे थे। ऐसी हालत में शायद उत्साही युवकों का यह दल बिना आशा के हाल में घुस आनेवालों के झुण्ड से दो-दो हाथ हो जाने को संभवतः पसंद करता। एकत्र स्त्री-पुरुषों में सिर्फ़ चंद आदमी ही 'अहिंसा-दल' के थे अन्य साधारण सदस्य प्रभु की उस सतत उपस्थिति के अभ्यास[1] की आध्यात्मिक

[1] देखिए ब्रदर लारेंस-लिखित 'ईश्वरीय उपस्थिति का अभ्यास', The Practice of the Presence of God) पुस्तक। मूल्य १ पेंस या १ शिलिंग। मैंक्स बुकशाप, यूस्टन रोड, लंदन।

साधना के लिए तैयार न थे जिसके कारण मनुष्य पुलिस की अपेक्षा अदृश्य (ईश्वरीय) शक्ति पर अधिक भरोसा रखना सीखता है। मैंने उन कतिपय विश्वसनीय आदमियों को अलग बुलाया। इनमें प्रथम अध्याय में उल्लिखित लोगों के लिए खाद्य सामग्री बनानेवाला श्रमिक, एक डाक (भक्के) का मजूर, और दूसरे ८ ६ आदमी थे। मैंने इन्हें सब बातें समझा दीं कि क्या होनेवाला है। इसके बाद फिर हम अन्य लोगों के साथ शामिल होकर व्यस्त तथा नृत्य में लग गये और अपनी आध्यात्मिकता को आक्रमण सहन करने लिए जाग्रत करते रहे। धीरे-धीरे समय बीतने लगा; यहांतक कि हाल बंद करने का—१ बजे का—समय होगया और कोई घटना नहीं घटी। नाच-गान बंद हुए और, जैसा कि किंग्सले हाल का कायदा है, वृत्ताकार खड़े होकर हम लोगों ने शान्ति के साथ प्रार्थना की। अन्त में दुआ-सलाम और शुभाकांक्षाओं तथा विदाई के विनोदों के साथ लोग विदा हुए। किंग्सले हाल के सदस्य सब शारीरिक श्रम स्वयं करते हैं। छोटा-सा 'अहिंसा वादी' दल उस रात को वहीं ठहर गया। ज्यों ही हम लोग झाड़ू-बुहारू करके और प्रातःकाल के लिए सब चीजें यथास्थान रखकर फारिग हुए कि मकान के दरवाज़े पर एक आकस्मिक थाप सुनाई पड़ी। दरवाजा खुल गया और उस स्त्री-नेता के पीछे शराब में चूर स्त्री-पुरुषों की भीड़ अन्दर घुस आई। बड़ी शान के साथ, जो शराबी का एक विशेष सनाथ-पोस-ह, वह स्त्री अनुयायियों के संग हाल को पार कर उधर घूमी जिधर हम लोग खड़े थे। मैंने अपने आदमियों से कह दिया कि मेरे पीछे हो जाओ और प्रतीक्षा करने लगे कि क्या होता है। एक

विचित्र तमाशा था। मेरी प्रतिद्वन्द्विनी अद्भुत मालूम पड़ती थी। व आहत निर्दोष व्यक्ति का अभिनय बड़ी परिपूर्णता के साथ कर रही थी वह तोंदीली स्त्री, बाँहें फैलाये हुए, नाटकीय चाल से आगे बढ़ी। मैं प्रभु का स्मरण किया, और चुप खड़ी रही। जब उसका हाथ मेरी नाक से एक इंच दूर था, वह रुक गई और उसने भाषण देना शु किया। जब वह साँस लेने के लिए रुकती तो उसके पीछे खड़े कम दर्शन व्यक्ति उसके निकृष्ट वाक्य को टूटी और शिथिल आवाज़ दोहरा देते अथवा ग्रीक कोरस की भाँति उसपर अपनी सहमति कुछ शब्द बुदबुदाते थे। शाफ्ट में काम करनेवाले श्रमिक को ऐसा जान पड़ा कि हम लोग पर्याप्त मात्रा में आध्यात्मिक शक्ति नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, अतः वह चुपचाप प्रार्थना द्वारा प्रभाव डालने के लिए उपासना-मंदिर में चला गया। बहुत शीघ्र ही उस मोटी स्त्री के व्याख्यान पर उसके साथियों में से एक कह उठा—"मिसेज़ राबिन्सन ईश्वर तुम्हारे कष्ट में तुम्हारी सहायता करेगा।" (Gawd wi elp you through your trouble Mrs. Robinson." यही मेरे लिए अवसर था।

मैंने शीघ्रता और दृढ़ता से कहा—"निःसन्देह, प्रभु सहायता करेंगे। आओ, हम सब प्रार्थना करें।"

जान पड़ता है, उन लोगों को किसी तरह मालूम था कि किंग्सले हाल में प्रार्थना किस तरह होती है क्योंकि लोगों ने अपनी चिकनाहट से भरी टोपियाँ उतार दीं और वृत्ताकार खड़े होगये। मैंने हम लोगों में से प्रत्येक के हृदय की इस आकांक्षा को प्रार्थना के रूप

में प्रकट किया कि यह दुःखदायी प्रसङ्ग टल जाय और मिसेज राबिंसन का घर पड़ोस के घरों में एक अत्यन्त सुखी गृह बन जाय तथा हम सब लोग अपनी शक्ति-भर स्वर्ग-राज्य के नियमों का पालन एवं प्रचार करने की कोशिश करें जिससे इस मुहल्ले में भी स्वर्ग की स्थापना हो सके।

सहमति-सूचक हर्ष-ध्वनि के साथ प्रार्थना समाप्त हुई और इसके पहले कि उसे कोई दूसरी बात सूझे, मैंने आगे बढ़कर मिसेज़ राबिंसन को नमस्कार किया और अपना हाथ, सहारे के लिए, बढ़ा दिया। उसने गम्भीरता और उदारतापूर्वक मेरी बाँह का सहारा लिया। भीड़ छँट कर दोनों तरफ़ होगई और बीच में उसने रास्ता कर दिया, जिससे हम दोनों इस तरह निकलीं जैसे किसी बड़े गिर्जाघर से, ब्याह के बाद, पति-पत्नी निकलते हैं। मैं उसे उसके घर ले गई। रास्ते में रात की शीतल वायु ने उसे और चेतना प्रदान की। विदा होने के लिए जब मैं उसके साथ उसकी देहली पर खड़ी थी तब उसने कहा कि मुझे बड़ा पश्चात्ताप है और मैं तुम लोगों के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ। तबसे यह महिला किंगडम के कट्टरतम समर्थकों में है।

• • • •

लुसीटानिया (जहाज़) के डूबने के बाद जर्मनों के विरुद्ध अकस्मात् आग भड़क उठी और दङ्गे शुरू होगये। एकाएक न जाने कहाँ से, गुण्डों का एक दल निकला और बारी-बारी से पुराने जर्मन तथा आस्ट्रियन पड़ोसियों की नानबाई की दुकानों को तोड़ फोड़ डाला और लूट की सामग्री आपस में बाँट ली।

यह एक घृणाजनक दिवस था। आक्रमण अकस्मात् हुआ था और पुलिस इस मामले में कुछ न कर सकी। एक दूकान से एक अधेड़ जर्मन महिला भागने की कोशिश कर रही थी और जो लोग उसे घेरे हुए थे वे कभी उसका बटुआ छीनते, कभी उसका हैट छोड़ते, कभी अन्य प्रकार के निन्दनीय बर्ताव करते थे। पर ये कुल दो-तीन आदमी थे, इसलिए उनका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करना और इस बीच हमारे किसी आदमी के साथ जर्मन स्त्री का वहाँ से निकल जाना बड़ा सरल था। ऐसा ही किया गया। अभीतक कोई पुलिस का आदमी हमारी सहायता करने नहीं आया था, यद्यपि मैं देख रही थी कि एक सिपाही नीबू चूसते हुए इधर उधर चहल-कदमी कर रहा है। जब मामला निबट गया तो उसने देखा कि अपना रङ्ग जमाने का यह उचित अवसर है। वह आया और मेरा कंधा पकड़कर बोला—"शान्ति भङ्ग करने की जिम्मेदारी तुम्हींपर है" और मुझे पकड़ ले गया।

• • • •

हमारे पड़ोस में एक नाई—हज्जाम—रहता था। हम लोग प्रायः उसकी दूकान के बरामदे में चाय पीते थे। वहाँ दीवार में एक आईना लगा था और यदि कोई ग्राहक कुछ खरीदने आता तो हमें मालूम हो जाता और हममें से कोई दौड़कर, हेयरपिन का पैकेट या वेसलीन की शीशी, मसलन जिस चीज की आवश्यकता होती, उसे दे आते। जिस युवक की यह दूकान थी, वह अकेला रहता था। उसकी बैठक की दीवारें तस्वीरों तथा बाइबिल, कवियों तथा उसके विशेष श्रद्धा-भाजन मीर लिंकन, केयरहार्डी, शेक्सपियर इत्यादि की (कागज पर लिखी)

सूक्तियों से भरी हुई थीं। इन कागज़ों पर कहीं धूल का एक कण भी नहीं दिखाई पड़ता था। वह मकान को खूब स्वच्छ रखता था। वह एक गृहस्थ धर्मोपदेशक (Evangelist) भी था और ग्राहकों को उनके व्यक्तिगत जीवन को सुन्दर बनाने के लिए यथोचित सलाह दिया करता था। ग्राहक चाहे दो ही पैसे की चीज़ ले, पर वह उस चीज़ को सदा एक ट्रैक्ट (पुस्तिका) में लपेट कर देता था। वह ऐसा प्रसन्न और हँसमुख तथा यथोचित उत्तर से सब को सन्तुष्ट रखनेवाला था और उसका मन इतना निर्मल एवं शान्त था तथा संसार के साथ उसका ऐसा शान्तिमय एवं सुखद सम्बन्ध था कि ग्राहक उसे चाहते थे। उसने अपने जीवन का कार्यक्रम बना लिया था और उसीके अनुसार चलता था। १६ वर्ष की अवस्था में ही, जब पहली बार उसे ईसा का अनुसरण करने क आनन्द का अनुभव हुआ, उसने निश्चय किया था कि पाँच वर्ष तक न्यूज़ीलैंड जाकर खेती और साथ में प्रभु-सेवा करूँगा उसके बाद लंदन में किसी गरीब मोहल्ले (स्लम एरिया) में रहकर पाल* की नाईं अपने हाथ से श्रम करके अपनी जीविका कमाऊंगा। पर मेरा असली काम प्रभु की सेवा और उससे मिलनेवाले आनन्द का दूसरों से परिचय कराना होगा। इसके बाद पाँच वर्ष के लिए मैं भारत जाऊँगा और वहाँ भी अवैतनिक एवं सरल धर्म-कार्य करूँगा। उसे यह मालूम न था कि भारतवासी उससे हजामत बनवाने में कोई आपत्ति करेंगे या नहीं। उसनेसोच लिया था कि यदि वे खुद हजामत न बनाने देंगे तो मैं उनकी सेवा का कोई दूसरा ज़रिया ढूँढ लूँगा और उन्हें ईसा का ज्ञान कराऊँगा।

---

* ईसा के प्रसिद्ध अनुयायी।

जब युद्ध आरंभ हुआ तो वह अपने इस जीवन-क्रम की दूसरी अवधि के मध्य में था। जब अनिवार्य सैनिक सेवा का कानून (Conscription) जारी किया गया तब भी वह शान्त रहा। उसका काम प्रभु और अपने साथी प्राणियों की सेवा करना था। उन्हीं मनुष्यों की हत्या करने के लिए युद्ध में जाने की वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। इसका जो परिणाम होना था वही हुआ। न्याय-समिति (ट्रिब्यूनल) के सम्मुख उसका मुकदमा हुआ और उसके बाद वह जेल की एक कोठरी में डाल दिया गया। जब मैं उससे मिलने गई तो उसने केवल एक ही अनुरोध किया, और वह यह कि मुझे मेरा हिंदुस्तानी व्याकरण और कोश मिल जाय तो अच्छा हो। अभीतक अधिकारी उसके इस अनुरोध की पूर्ति करने से इन्कार करते रहे थे। उधर वह अपने सेवामय जीवन क्रम की तीसरी अवधि के लिए तैयारी करना चाहता था। युद्ध का विरोध करनेवाले जितने लोगों से मैं जेल में मिली उनमें से जेल की स्थिति के कारण होनेवाली मानसिक शिथिलता इस आदमी में सबसे अधिक दिखाई पड़ी। अक्सर देखा जाता है कि चंद महीनों के जेल जीवन के बाद, कैदी विचारों से ठीक-ठीक काम लेने की शक्ति खो बैठते हैं। बलात् मौन रहने के कारण अपने भावों को व्यक्त करने का माद्दा उनमें नहीं रह जाता। वे बड़ी उत्सुकता के साथ कोई प्रश्न पूछना, जेल की किसी घटना का वर्णन करना अथवा किसी समस्या पर बहस करना शुरू करते हैं और एक-दो वाक्यों के बाद विचारों का सिलसिला टूट जाता है और उनके वाक्य अधूरे बेमतलब रह जाते हैं। इसमें आशा की बात इतनी ही है कि यह कमजोरी थोड़े ही दिन रहती है। महायुद्ध का

अंत हो जाने के बाद जब यह नाई जल से मुक्त हुआ तो उसे अपनी तन-स्थिति को दुरुस्त करने और पूर्व-निश्चित कार्यक्रम का अनुसरण करने में सालभर लग गया।

युद्ध की भयंकरता बढ़ती गई। जेपलिन (एक प्रकार के जर्मन सैनिक वायुयान) हमारे मुहल्ले (बो) के ऊपर मँडराने लगे। हम लोग पूर्वीतट और लंदन तथा उनके विशेष लक्ष्य ऍनफील्ड के छोटे शस्त्र बनानेवाले कारखाने के ठीक रास्ते में पड़ते थे। इसके पहले कभी हम लोगों ने सांध्य-गगन की ओर इतने ध्यान से नहीं देखा था, न पहले कभी इतनी सावधानता से पूर्णिमा किस दिन पड़ेगी इसका पता लगाने के लिए पंचांग देखा था। प्राय ब्राह्म मुहूर्त में चेतावनी का घंटा सुनाई देता। माताएँ तुरंत बिस्तर छोड़ देतीं, चिल्लाकर लड़कों को जगातीं और उन्हें कोट से ढककर तथा बच्चों को गोद में लेकर 'बो' के गिरजा के पूरबी और बने 'सामान्य आवास (Common Lodging House) के गहरे, मजबूत एवं ठोस तहखानों में आश्रय पाने के लिए दौड़तीं। यहाँ हम लोग सैकड़ों की संख्या में एकत्र होते और गन्दी जगह में सभी प्रकार के बच्चों और स्त्रियों को घण्टों आश्रय लेना पड़ता। सोते हुए बच्चे, टूटे-फूटे टेबुलों पर पंक्तिबद्ध सुला दिये जाते और शिशुओं की दूसरी कतार उनके नीचे जमीन पर लगा दी जाती।

हमारा काम भजन गाना, कोरस बोलना, कहानियाँ कहना और लोगों से 'सोलो' † गवाना था। एक बार अपने साथ हमें हालैण्ड में 'डच अहिंसा-दल' के संस्थापक कार्नेलियस बोमके (Cornelius

† गीत या बाजा जो एक ही आदमी गाता या बजाता है।

Boeke) को भी सुन पाने का मौका मिला। उन्होंने ऐसे मधुर एवं मनह रंग में वसा बजाया एवं इतनी अच्छी तरह से बोले कि हम सब बाहर फूटने वाले बमों के धड़ाकों का सुनना भूल गये। †पाँचवर्ष छः-छः रातों तक लगातार, चेतावनी का घंटा हमें अपने घरों से भाग यहाँ आश्रय लेने को बाध्य करता। पड़ोस की स्त्रियों के दिल तोड़ देने का यह काफी था पर उन्होंने अपनी प्रफुल्लता कायम रक्खी। यहाँ कि वे इन बातों को लेकर परस्पर विनोद भी करती थीं।

° •

धीरे धीरे खाद्य-सामग्री की कमी पड़ती जारही थी। इसका मतल असली थकान और कष्ट का आरम्भ था। स्त्रियाँ दुकानों के सामने पंक्तिय एक के पीछे एक, खड़ी रहतीं कि बारी आवे तो आलू, तेल इत्यादि ल

यह जाड़े का मौसम था और कड़ी सरदी पड़ रही थी। उ कड़ाके की सरदी में मातायें बच्चों को गोद में लेजाती थीं क्योंकि अब चीज़ की खरीदारी चंद मिनटों की बात नहीं थी वरन् उसमें तीन-तीन चार-च घंटे तक लग जाते थे। हमारी एक पड़ोसिन को एक बार पंक्ति में च घंटे तक खड़ा रहना पड़ा और जब राम-राम करके उस बेचारी की बारी आई और उसने ज़रूरी चीज़ों के लिए अपना झोला आगे फैला तब उसे मालूम हुआ कि सब चीज़ें खतम हो गई हैं।

पर आपदाएँ यहीं तक न थीं। एक दिन ज़ेप्पलिन से एक ब सामने ही 'ब्लैक स्वान' पर गिरा और उसमें कई व्यक्ति मारे गये

† हवाई आक्रमणों के समय इन तहखानों में कितने ही बच्चे पैदा हुए थे।

दूसरा बम पिछले हाल पर गिरा; उसकी छत चूर-चूर होगई, परन्तु ईश्वर की कृपा से किसी आदमी को चोट न लगी। इस घटना का लोगों पर अच्छा ही असर हुआ। शरारती और बेबुनियाद बात फैलानेवालों के भाव बदल गये। अब हमारा साथ देने और हमारी सहायता करने में ही उनकी नामवरी थी। बम की दुर्घटना से यह स्पष्ट होगया था कि हम लोग जर्मनों से मिले हुए नहीं होसकते, क्योंकि ऐसा होता तो वे 'हाल' पर बम क्यों गिराते! अब तो युद्ध-पीड़ित आदमियों में हमारी गिनती होने लगी थी और हम लोग लोकप्रिय हो उठे।

घटना के दूसरे दिन प्रात काल जब पुलिस लोगों को एक-एक करके ध्वंस को देखने की आज्ञा देरही थी तब एक आदमी ने कहा— "क्या ऐसे धार्मिक स्थान पर बम गिराने का काम बिलकुल बूढ़े कैसर-जैसा ही नहीं है?"

° ° • °

पर दुर्दशा का अंत यहींतक नहीं हुआ। इसके बाद दिन को भी आक्रमण होने लगे। ये पहले से भी बुरे और कष्टप्रद सिद्ध हुए। एक बार की बात है कि एक नाटक (नौटंकी) के टिकट हमारे पास आये और मैं अपने साथ बच्चों का एक प्रसन्न दल लेकर 'वेस्ट एण्ड' (लंदन का धनी पश्चिमी भाग) गई। हम लोग चेयरिंग क्रास रोड (लंदन के मुख्य रेल स्टेशन के सामने से जानेवाली सड़क) तक पहुँचे थे कि सुदूर आकाश में अत्यन्त सुंदर और प्रकाशमान चीज़ दिखाई पड़ी, जो बड़े रजत-पक्षियों-सी हमारी ओर उड़ती आ रही थी। हम

लोगों में तो कोई घायल नहीं हुआ, पर बाद में हमारे एक स्थानीय स्कूल पर एक बम गिरा और फलतः पंद्रह लड़कियाँ-लड़के मारे गये।

• ° ° °

इतने कठिन और कष्टप्रद समय में भी पड़ोसियों ने अपनी शांति और धीरज को क़ायम रक्खा और यथाशक्ति घटनाओं पर उदार भाव से विचार करते रहे। एक दिन मैं, एक पड़ोसिन के साथ, उसके भोजनालय में बैठी बातें कर रही थी। मैं ऐसे समय उसके घर पहुँची थी जब इस श्रमिक स्त्री को अपने निरंतर श्रमपूर्ण कार्यक्रम के बीच दम मारने की ज़रा-सी फ़ुर्सत मिली थी, अतः हम दोनों फ़ुर्सत की इस बीच अवधि का आनंद ले रही थीं। मज़दूरी करनेवाले मर्द अभी घर न लौटे थे और बच्चे भी स्कूल में ही थे। हम दोनों शान्तिपूर्वक चाय और बिस्कुट का स्वाद ले रही थीं। कुछ देर चुप रहने के बाद मेरी मेज़बान बहन ने कहा— "बहन, अगर तुम ज़रा सहानुभूति से, ज़ेपलिन में बैठे इन आकाशचारी आदमियों का विचार करोगी तो मानना पड़ेगा कि हम उन्हें दोष नहीं दे सकतीं। उन बेचारों को भी, हमारे आदमियों की तरह, मजबूर होकर यह सब करना पड़ता है।"

इसी प्रकार के एक दूसरे अवसर पर एक दूसरी स्त्री ने वैसे ही शान्त स्वर से कहा—"बहन, यह ठीक है कि जर्मन हमारे आदमियों की हत्या कर रहे हैं पर यह भी तो सच है कि हमारे आदमी भी जितना अधिक जर्मनों को मार सकते हैं, मार रहे हैं और प्रत्येक जर्मन, जिसे हमारे आदमी मारते हैं, किसी गरीब माँ का दुलारा बेटा होता है!"

इस अनुभव के बाद से मैं बराबर आशावादी रही हूँ।

निस्सन्देह यही वह शिला है जिसपर विश्वशान्ति का निर्माण किया जा सकता है। इस सज्जनता, युद्ध के तथ्यों के इस सच्चे स्थिति दर्शन तथा इस सहिष्णुतापूर्ण सद्भाव और दूसरों की स्थिति एवं विवशता को समझने की भावना के अलावा इसके लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

पिछले महीनों में मैं संसार की यात्रा करती रही हूँ। मैंने इसी भावना का सर्वत्र अनुभव किया है। हमें इस दबी हुई भावना को विकसित करना होगा। यह अखबारों के कालमों में व्यक्त नहीं होती। इसमें कोई 'समाचारत्व' नहीं है। आदमी, साधारण आदमी, काम करनेवाले आदमी, विवेकवान एवं दूरदर्शी माता पिता अभी तक जिह्वा-हीन—मूक—हैं। एक दूसरी घटना के द्वारा इनका चित्रांकण किया जा सकता है। बात उसी 'मो' 'मोटाल्सतोक' की है। एक मामूली मकान में एक दिन मैंने एक स्त्री को हाथ में दैनिक पत्र लिये पाया। मुझे तारीख याद नहीं आती है, पर उस अखबार में सबसे ताजी खबर यह थी कि कल रात भर में कई हजार वर्ग मील भूमि छीनकर—विजय करके ब्रिटिश साम्राज्य में मिला ली गई है। मेरे अंदर प्रवेश करते ही, उसने पत्र रख दिया और मेरा स्वागत किया और नाश्ते के लिए चाय बनाने में लग गई। गैस के चूल्हे पर चायपात्र रखने के लिए दिया सलाई जलाती हुई, कुछ आत्म-निमग्न अवस्था में वह बोली—"मैं ताजा खबर पढ़ रही हूँ। मेरा विश्वास है कि इंग्लैंड लोभी होगया है, क्या आप ऐसा नहीं समझतीं ?"

५

कुछ पथ-प्रदर्शक

युद्ध के कारण, स्वीज़रलैण्ड के एक मामूली गाँव के स्कूल मास्टर जान बूदराज़ (John Baudraz) को, जिसका उल्लेख प्रथम अध्याय में किया जा चुका है, दो या तीन सप्ताह के बजाय तीन महीने के लिए अपनी सैनिक टुकड़ी (रेजीमेंट) में सम्मिलित होने की आज्ञा मिली। स्वीज़रलैण्ड महायुद्ध के भँवर में नहीं पड़ा था। स्वीज़रलैण्ड से लेने जैसा कुछ नहीं है। कोई भी राष्ट्र, चाहे कैसी भी विजय प्राप्त करले, इसके पहाड़ों एवं घाटियों को जुदा नहीं कर सकता। किन्तु इतने पर भी इसकी सेना, अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ, तैयार रक्खी गई थी।

जान बूदराज़ को इतने लम्बे समय तक पाकेट में बाइबिल को पड़े रखना अच्छा न लगा। उसके लिए यह असह्य हो उठा। वहाँ पर रहते हुए बाइबिल न पढ़ने की उसकी पुरानी आदत शायद निभ जाती, परन्तु एक दिन अपनी प्रार्थना में उसे कोई आवाज़-सी सुनाई पड़ी। उसने कहा कि यह आवाज़ ईसा की थी और उसने मुझे बाइबिल निकाल कर पढ़ने की आज्ञा की। तब उसको चेतना हुई कि मुझे स्थिति का मुकाबला करना चाहिए। उसने साप्ताहिक (Week-end) छुट्टी

ली, भर गया और अपनी पत्नी को बताया कि मुझे क्या करना है। उसने देखा कि पत्नी समझती है। छुट्टी के बाद वह अपनी सैनिक छावनी में लौटा, अपने अधिनायक (आफिसर कमाण्डिंग) के पास गया, अपनी टोपी और कमरबन्द उतारी और राइफल के साथ इन चीज़ों को उसके चरणों पर रख दिया और कहा कि मैंने जीसस (ईसा) की आवाज़ सुनी है और अब मैं सैनिक नहीं रह सकता।

कैप्टन ने क्षण-भर उसकी ओर देखा फिर अपनी जेब-घड़ी निकाली, उसे देखा और बोला—"इस वक्त ६ बजने में ५ मिनट हैं। ६ बजते ही गार्ड तुमको कैदखाना लेजाने के लिए यहाँ आयगा।,यदि तुम इन चीज़ों को धारण करके सैनिक नहीं बने रह सकते तो उसके साथ कैद में जाना पड़ेगा।"

खान पाँच मिनट तक उस लम्बे जवान अफ़सर के सामने खड़ा रहा और उसके बाद हवालात भेज दिया गया। सैनिक अधिकारियों ने निर्णय किया कि 'आदमी निश्चय ही पागल है। क्योंकि उसके सैनिक सेवा से इन्कार करने का और क्या कारण हो सकता है ? यह तो हो नहीं सकता कि वह कायर या डरपोक हो, क्योंकि युद्ध का कोई खतरा नहीं है और स्विस सेना तो कभी लड़ती नहीं। इसमें रहना तो एक आदर की बात है, इस भाग्यवान् देश में सैनिकों को सम्मान और प्रशंसा का पात्र समझा जाता है। इसलिए अकारण खान का ऐसा करना अवश्य ही उसके पागल होने का प्रमाण है। ' इस प्रकार के विचार के बाद खान बूदराज पागलखाने भेज दिया गया। परन्तु वह पागल तो था नहीं उसके होश-हवास इतने दुरुस्त थे और उसकी शान्ति एवं प्रसन्नता

इतनी प्रकट थी कि महीने के अन्त में उसे पागलखाने के बाहर करना पड़ा, क्योंकि पागलखाने के अधिकारियों ने देखा कि अधिक समय तक यहाँ रखने से उसकी तो कोई हानि है नहीं, हाँ अपनी मूलता सि होगी। इसलिए वह फिर सैनिक अदालत (कोर्ट मार्शल) के सामने भेजा गया। लुज़ान के टाउनहाल में अदालत बैठी। सारा हाल ऐसे आदमियों से भरा था जो मुकदमे की तफ़सील को देखने, सुनने और उसको हृदयङ्गम करने को उत्कण्ठित थे। जान ने अपनी बात बड़े सादे ढङ्ग से सुना दी। स्वीजरलैंड के एक प्राचीन सैनिक कुटुम्ब के सदस्य तथा सेना के पब्लिक प्रासीक्यूटर मेजर अर्नाल्ड सेरीसोल के अनुरोध पर उसे क़ैद की सज़ा दी गई। मेजर सेरीसोल के चचेरे भाई लम्बे-तगड़े जवान पीरी सेरीसोल † ने, जिनके पिता सरकार के मन्त्री रह चुके थे और जो स्वयं भी एक अच्छे इंजीनियर थे, इस मुकदमे का विवरण सुना। वर्षों से उनके हृदय में संघर्ष चल रहा था कि सैनिक आर्थिक शक्ति और एक सहायता-प्राप्त राजकीय चर्च के बीच समझौता कैसे हो सकता है और उसके फंदे से कैसे छूटा जा सकता है। जब उन्होंने इस मुकदमे की कथा सुनी तो उनके मन में बैठ गया कि जान बूदराज़ ने रास्ता दिखा दिया है और स्वीजरलैंड के युवकों को उसी इस सच्चे मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। थोड़े ही समय बाद लाट ने पीरी सेरीसोल को भी, जान की तरह, सैनिक सेवा अस्वीकार करने के

† बिहार भूकम्प के बाद के निर्माण-कार्य में इन्होंने बड़ी सहायता की और अभीतक (२७ मई, १९३७) इसी सिलसिले में बिहार में हैं।

अपराध में, अदालत के सामने खड़े हुए पाया। समाचारपत्रों ने इस मुकदमे के विवरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

जेल में बैठे-बैठे पीरी सेरीसोल ने भविष्य के कार्य की योजना बनाई। वह स्वभावतः कर्मठ व्यक्ति हैं। अतः केवल लड़ने से इन्कार कर देने से ही उन्हें संतोष न हुआ। उन्होंने सोचा—'एक सैनिक जो सेवा करता है उससे अधिक उत्तम, अधिक स्थायी तथा गुटों, समझौतों, संधिपत्रों एवं राजनैतिक दलबंदियों के वातावरण से मुक्त स्वास्थ्यप्रद एवं सुखप्रदायक, जीवनदायी एवं शान्तिप्रद सेवा जबतक हम न कर सकें तबतक केवल नकारात्मक प्रवृत्ति व्यर्थ-सी है।'

सेना में परस्पर भ्रातृत्व का जो अद्भुत भाव होता है उसको वह समझते थे। वह यह भी जानते थे कि सेना में सैनिक जिस आनन्द का अनुभव करते हैं, वह कोई उनके युद्ध करने के अन्दर निहित नहीं है वरन् एकसाथ खतरे में पड़ने, साथ-साथ कठनाइयां एवं मुसीबतें झेलने तथा एक दूसरे के लिए और एक ही उद्देश्य के लिए एक प्रकार की रहस्यमय वफ़ादारी निभाने में है। इसलिए पीरी ने एक नये ही ढङ्ग की सेना संगठित करने का निश्चय किया। इस सेना का वर्णन अगले (छठें) अध्याय में किया जायगा।

° ° • °

वेलाधारी डच कार्नेलियस बोयके को विवश होकर इंग्लैण्ड छोड़ना पड़ा, क्योंकि युद्ध के लिए सज्जित एवं संगठित एक राष्ट्र की इस विकट परिस्थिति में इसपर कौन विश्वास करता कि विदेशी, और फिर युद्ध से अलग एवं उदासीन रहने वाले एक देश का निवासी, केवल

सच्चे प्रेम एवं श्रद्धा के वशीभूत होकर अवैतनिक रूप से ईसाई धर्म
नाओं का प्रचार कर रहा है ! क्राइस्ट के प्रति ऐसी भक्ति की बात श
अधिकारियों के दिमाग़ में घुसना कठिन है। इस श्रद्धा का उनकी सि
लगाने एवं पंच (छिद्र) करके फ़ाइलों की सूची में डाल देने की
भाषा में अनुवाद कैसे किया जा सकता है ! इसलिए बेचारा, अपने
अभिन्न पत्नी के साथ, हालैण्ड लौट गया और वहाँ अपना धार्मिक
सेवा-कार्य आरम्भ कर दिया। बहुत शीघ्र दोनों (पति-पत्नी) ने अपने का
समान विचार के कितने ही लोगों को एकत्र कर लिया और किसानों
मज़दूरों एवं सुशिक्षितों सबसे मित्रता बढ़ानी शुरू की। उन्होंने यहां
जंगली ज़मीन के एक टुकड़े को साफ़ किया और (फ़ारेस्ट की सीमा पर
लाल, नीले और हरे रंग में रंगा हुआ एक बड़ा ही सुंदर 'भ्रातृत्व-भवन'
(ब्रदरहुड हाउस) निर्माण किया।

कार्नेलियस ने भ्रातृत्व के भावों के प्रचारार्थ सड़कों के मो
पर व्याख्यान देना शुरू किया। जब कुछ भीड़ एकत्र हो जाती तब व
लोगों से शंकायें निवारण करने एवं प्रश्न पूछने के लिए कहता और
स्थिति पर सर्वसम्मत दृष्टियों से विचार करता। किन्तु उसतक हालैण्ड
में लोगों का वाणी की स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त न था, इसलि
अधिकारियों की ओर से उसे सभायें न करने की चेतावनी दी गई और
जब उसने उनकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया तो गिरफ़्तार कर
पुलिस अदालत के सामने पेश किया गया और उसे जेल की सज़
मिली। पर इस प्रकार के उत्पीड़न से उसके दिल में धधकती ज्वाला
की ज्योति कैसे बुझ सकती थी ! जिस दिन वह जेल से छूटा उसी दि

उसी पहले स्थान पर आकर उसने दूसरी सभा आरम्भ की। बार-बार इसी कार्यक्रम पर अमल किया गया। क्योंकि बिना सतत प्रयत्न संघर्ष और कष्ट-सहन के कोई भेष्ठ कार्य सम्पन्न नहीं होता। इसका परिणाम यह हुआ कि अधिकारी अन्त में थक गये और उन्होंने उसके भाषणों पर ध्यान हीन देने का ढंग इख्तियार किया। इस प्रकार सत्य की विजय हुई।

जब महायुद्ध समाप्त हुआ और संधि हो गई तब अहिंसावादी हम सब लोग, जो भावनाओं में एक होते हुए भी बहुत दिनों से राष्ट्रीय सीमाओं एवं बंधनों के कारण एक-दूसरे से बिछुड़े हुए थे, पाँच वर्ष की लम्बी अवधि के बाद इसी अहिंसा-दल के 'भ्रातृत्व-भवन' (Brotherhood House) में एकत्र हुए। बेलजियम, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, स्वीडन, डेनमार्क, नार्वे, भारत, अमेरिका और इग्लैण्ड इत्यादि विभिन्न देशों एवं जातियों के भाई यहाँ आमने-सामने, वृक्षों के नीचे लगे हुए लम्बे टेबुलों पर, साथ-साथ खाना खाने बैठे। यहीं 'अन्तर्राष्ट्रीय मैत्रीवर्द्धक भ्रातृसंघ' (International Fellowship of Reconciliation) ‡ की स्थापना हुई और तब से बराबर वर्ष में दो-तीन बार उसका अधिवेशन होता रहता है।

---

‡ इस अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व संघ का केंद्रीय कार्यालय समय-समय पर लंदन, आस्ट्रिया और फ्रांस में रहता है। इस समय इसके मन्त्री एक फरासीसी श्री आँरी रोज़र (Henri Roser), और उनके सहायक अंग्रेज श्री राबर्ट डेनियल हाग हैं। पता—Rue de Provence Paris IX, France इस विषय में शिलियन स्टीवेंसन-लिखित 'टुवर्ड्स ए क्रिश्चयन इण्टरनेशनल' (उपर्युक्त अथवा १७, रेड लायन स्क्वायर, लंदन के पते पर प्राप्य) पुस्तक भी देखिए।

'हुलहाउस' शिकागो (अमेरिका) की मिस जेन आदम्स ने अतलांत (अटलांटिक) महासागर के उस पार, अमेरिका में, 'स्त्री शांति आंदोलन' चलाया। यूरोप के प्रत्येक देश की कतिपय सर्वो[illegible] चरित्रवाली महिलाओं ने उनके इस सत्कार्य में योग दिया। ब्रिटे[illegible] प्रधान प्रतिनिधि मिसज़ (श्रीमती) स्वानविक थीं। ये महिलायें [illegible] सभी देशों की सरकारों के प्रधानों से मिलीं और उनसे यह अनुनय [illegible] की अपील की कि यह युद्ध आत्म-संहारक है और चाहे विजयी कोई [illegible] पर विजेता एवं पराजित दोनों को, समान रूप से, लम्बी अवधि [illegible] कष्ट भोगना पड़ेगा और संसार के सभी राष्ट्रों के निवासियों की सम्[illegible] जीवन-चर्या वर्षों के लिए त्रस्त एवं छिन्न-भिन्न होजायगी। [illegible] अलावा युद्ध में अनिवार्यत हमारे सामान्य मानव स्वभाव की सभी [illegible] एवं निकृष्ट प्रवृत्तियों को उत्तेजना मिलेगी और युद्ध को जारी रखने [illegible] मानवीय शुभेच्छा एवं निर्मलता के मूल के ही नष्ट होजाने का खतरा [illegible]

• • • •

इस बात का पता लगाने के लिए हमारे पास कोई विश्व[illegible] साधन नहीं है कि इन अपीलों, प्रार्थनाओं एवं अनुरोधों का [illegible] राष्ट्रों की सरकारों के प्रधानों पर क्या असर पड़ा; किन्तु इस प्रयत्न से [illegible] दूसरा शुभ परिणाम यह निकल आया कि स्त्रियों की शांति-वर्द्धन [illegible] आकांक्षा से 'शांति एवं स्वतन्त्रतावर्द्धक महिला अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] Women s International league for peace and Freedo[illegible]

† The womens International League 55 Go[illegible] Street London

का रूप धारण किया। यह संस्था आज प्राय: सभी स्वाभिमानी देशों में उत्साहपूर्वक काम कर रही है।

• ० ० ०

"अपने शत्रुओं का प्रेम करो।

"जो तुम्हें शाप दें उनकी मङ्गल-कामना करो।

"जो तुम्हारे प्रति द्वेषपूर्वक आचरण करें उनके लिए प्रार्थना करो।

"भलाई से बुराई को विजय करो।"

ये क्राइस्ट (ईसा) के प्रवचन हैं। क्या उसके बताये जीवन के नियमों का पालन करना सभी के लिए कठिन नहीं है? इस प्रश्न के उत्तर में मुसलमान कहते हैं—'हां, ये नियम कठिन हैं। और इस अन्तर के कारण ही अपने पथ-प्रदर्शक को हमारे मार्ग-दर्शक से अच्छा एवं बुद्धिमान मानते हैं। मुसलमान कहते हैं कि मुहम्मद ने हमें ऐसे नियम बताये जिनका हम पालन कर सकते हैं, पर ईसा के नियमों का कोई पालन नहीं करता। इतनाही नहीं, ईसाई स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि उनका पालन करना असम्भव है। 'कैसे दोषपूर्ण कानून हैं। कैसा उदासीन यह नियम-प्रणेता है। आह यह जीसस क्राइस्ट कितना असफल सिद्ध हुआ है! इस प्रकार वे तर्क करते और अपने निश्चयको प्रकट करते हैं।

क्या कभी ईशा के उपदेशों पर अमल हुआ है? "पिता, उन्हें क्षमा कर वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।" यह क्रास ही था जिसने प्रेम और क्षमा की प्रबल शक्ति का प्रदर्शन किया।* अपने प्रभु

*The atonement and Non Resistance, by William E. Wilson. 1/ Friends Book shop Euston Road, London

(ईसा) से प्रभावित स्टीफेन जब साल (Saul) तथा अन्य हत्यारों के हाथ से कत्ल किया गया तब गिरते हुए बोला—"प्रभु, इस पाप का आरोप इनपर न करना।" घृणा का इस प्रकार सामना करने का यह परिणाम हुआ कि पीड़ाकारी साल एकदम बदल गया और बाद में लोगों ने उसे विशाल हृदय एवं उदार पाल के रूप में देखा।

एक कार्निश ग्राम में एक खुली प्रार्थना-सभा हो रही थी। जब प्रार्थना पूरी हो चुकी तो धार्मिक नेता से पूछा गया कि "क्या हम लोग जर्मनों के लिए भी प्रार्थना नहीं कर सकते हैं?" यह केवल काल्पनिक प्रश्न न था। अपने शत्रुओं को प्यार करना और उनके लिए प्रार्थना करना कोई आसान काम नहीं है। फिर यदि शत्रु हजारों मील दूर हों तो यह हो भी सकता है, पर जब शत्रु बिलकुल नजदीक पड़ोस में हो तब तो यह अत्यन्त दुष्कर है। प्रार्थना गाँव की एक सड़क पर हुई थी। उसके सामने ही कार्निश समुद्र-तट था, जहाँ आकाश और अतलांत (अटलांटिक) महासागर एक-दूसरे को आलिंगन किये हुए-से प्रतीत होते हैं। क्षितिज के ऊपर एक बड़ा जहाज दिखाई पड़ रहा था, पर ग्रामवासियों ने देखा कि वह अकस्मात् गायब होगया है पर उस विस्तृत नील-प्रवाह में वही रंग है, वही सौन्दर्य है; यह जरा भी कम नहीं हुआ है। ग्रीष्म-दिवस की व्यापक सरल शान्ति ज्यों-की-त्यों है, परन्तु कितने ही मकान तहस-नहस होगये हैं। जर्मन पनडुब्बियाँ (Submarines) अपना काम बड़ी होशियारी से कर रही थीं।

प्रार्थना करानेवाले पुरोहित ने कहा कि मेरी समझ से इस गाँव में शत्रुओं के लिए प्रार्थना करना मूर्खतापूर्ण होगा, पर जि

लड़की ने उसके सामने जाने और प्रश्न पूछने का साहस किया था, फिर उसने पूछा—"ऐसा क्यों ?"

उसे जवाब मिला—"यदि तुम इसका यत्न करोगी तो तुम्हारी हड्डी-पसली कुछ न बचेगी।"

उस लड़की को भी खुली सभाओं का कुछ अनुभव था, इसलिए उसने पादरी की इस बात पर एतराज किया। पुरोहित चिढ़ गया और उसने अपनी बात फिर दोहराई।

पर जान पड़ता है लड़की बड़ी नटखट थी, क्योंकि उसने अपना रुख बदलकर कहा—"सम्भव है, ऐसा ही हो; पर जब पाल[1] को कुछ अप्रिय बातें कहनी थीं तब वह मौन नहीं रहा। उसने हड्डी-पसली टूटने का खतरा उठाकर भी उन्हें कहा, पर उसे कुछ न हुआ।"

पादरी इतना झल्ला गया था कि उसकी पत्नी को इस अवसर पर आकर उसे अपने साथ ले जाना पड़ा, पर जाते-जाते भी वह हाथ के इशारे से तथा मुँह से विरोध प्रकट करता ही गया।

• • • •

पर सभी मिनिस्टर ऐसे न थे। कितने ही मिनिस्टरों एवं चर्च के सदस्यों की प्रार्थना के सम्बन्ध में दूसरे ही प्रकार की अनुभूति थी। इन लोगों ने अनुभव किया कि प्रार्थना ही एक ऐसा राज्य है जहाँ कोई बाहरी शक्ति हस्तक्षेप नहीं कर सकती। इस बीसवीं शताब्दी में प्रभु के प्रति मनुष्य की प्रार्थनाओं को कोई भी साम्राज्य-शक्ति अपनी इच्छानुकूल

---

[1] ईसा का एक प्रधान अनुयायी और ईसाई धर्म का एक मुख्य संत।

दवा नहीं सकती। यहाँतक कि सैनिक अधिकारी भी, जो अपनी अदू
दर्शिता के लिए प्रसिद्ध होते हैं, स्वीकार कर चुके थे कि विभिन्न देशों
के इसाइयों को, जो स्टाकहाल्म में एकत्र होकर सामूहिक प्रार्थना कर
चाहते थे, पासपोर्ट देने से इन्कार नहीं किया जायगा। समग्र यूरोप
इस प्रकार का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन करने के प्रयत्न किये जा
थे। स्वीडन के विशप साडरब्लाम इस सम्मेलन के संयोजक थे। पर
अन्त में, महीनों की लिखा-पढ़ी के बाद, लोगों को पासपोर्ट देने
इन्कार कर दिया गया और हम सबको अपने ही घरों पर रुकना पड़ा
कौन कह सकता है, पर संभव है इस प्रकार प्रभु ने अधिक पूर्ण
ध्यानमग्न प्रार्थना का अवसर हमें दिया हो। क्योंकि प्रार्थना तो प्रभु
कामना-पूर्ति की भिक्षा माँगने का नाम नहीं है; वह तो प्रभु के सम
स्थिर और शान्त मन के केंद्रीकरण अथवा निमज्जन का नाम है, जि
से प्रार्थी के अन्तर में स्वतः ईश्वरीय विवेक, ईश्वरीय शक्ति और ई
रीय धैर्य आंशिक रूप में प्रकट होता है।

हमें ईश्वर की भाँति सोचने का अभ्यास डालना चाहिए, त
हम मानव प्रकृति के महत्त्व एवं मर्यादा के अनुकूल श्रेष्ठ कार्य करने
आशा कर सकते हैं।

अकेले इंग्लैंड में ही लगभग पंद्रह हजार आदमी सैनिक से
से इन्कार करने के कारण सरकारी अधिकारियों के सामने उपस्थित किये
और भी कितने ही लोगों ने ऐसा रुख इख्तियार किया था पर, किसी-
किसी कारण-वश वे अधिकारियों के सामने नहीं लाये गये इसलि
सरकारी सूची में उनकी गिनती नहीं की गई। यह न तो संभव

ौर न शोचनीय ही है कि इसका विश्लेषण किया जाय कि कितने
। धार्मिक विश्वास के कारण इसमें आये थे और कितने अन्य कारणों
। इस निश्चय पर पहुँचे थे।

° ° ° °

महायुद्ध के समय यूरोप के दूसरे किसी देश में कोई संगठित
युद्ध-विरोधी आन्दोलन नहीं किया गया, इसलिए यूरोप के अन्य देशों के
उस समय के युद्ध-विरोधियों के सम्बन्ध में कोई आँकड़े प्राप्त नहीं हैं।
श्री डब्ल्यू० जे० चेम्बरलेन ने अपनी पुस्तक 'शांति के लिए युद्ध'
(*Fighting for Peace*) में लिखा है—"यह मालूम है कि जर्मनी,
आस्ट्रिया, हंगरी, रूस, बोहेमिया, अमेरिका, यहाँतक कि फ्रांस में भी
बहुतेरे आदमियों ने युद्ध में भाग लेने से इन्कार किया था और ब्रिटिश
युद्ध विरोधियों की भाँति ही वे भी दंडित हुए थे। हंगरी में, नाजरीनो
की एक बड़ी संख्या थी जिन्होंने सेना में काम करने से इन्कार कर दिया
था। वे बेचारे, सब-के-सब, गालियों से भून दिये गये थे। बोहेमिया में
भी युवक चेकों (Czechs) द्वारा सैनिक सेवा का काफी विरोध
किया गया और यहाँ भी जिन्होंने लड़ने से इन्कार किया उनको गोली
मार दी गई।"

बहुत जल्द यह बात स्पष्ट होगई कि पूर्ण शारीरिक और मान
सिक निःशस्त्रीकरण (अहिंसा) अपरिग्रह की ओर लेजाता है। अहिंसा
के साधक को किसी जगह या कुटुम्ब में सिर्फ जन्म लेने के कारण
मिली हुई सुविधाओं तथा धन-सम्पत्ति को छोड़कर दरिद्रनारायण की
सेवा में निमग्न होना पड़ता है। शताब्दियों पूर्व ईसा तथा उनके धर्म

ने हमें शिक्षा दी थी—"जब तुम्हारे ही भाई जीवन की आवश्यक वस्तुओं से रहित हैं तब यदि तुम आवश्यकता से अधिक, अनावश्यक चीज़ें रखते हो तो तुम वस्तुतः दूसरों की चीज़ पर कब्ज़ा किये हुए हो और इसलिए चोरी कर रहे हो।" पहली शताब्दी से ही अपनी सुविधाओं का त्याग क्राइस्ट के अनेक भक्तों का साधारण जीवन-क्रम रहा है। त्याग ही सबसे सच्ची सम्पत्ति है, यह बात उन अगणित प्राणियों, मानवता के उन अज्ञात सेवकों के जीवन में बार-बार प्रदर्शित और प्रमाणित हो चुकी है जिन्होंने यश और प्रदर्शन के वातावरण से दूर रहकर चिकित्सालयों, दीन-दुखिया जनों की झोंपड़ियों दूरस्थ गाँवों एवं प्रवासगृहों में केवल अपने पवित्र मानसिक संतोष को लिए हुए ही जीवन बिता दिया है।

• ° • •

कतिपय अहिंसावादी व्यक्तियों के मन में यह बात अब दिन-दिन स्पष्ट होती जा रही थी कि हमारे पास सम्पत्ति जितनी ही कम होगी, सेना समर्थित पुलिस की हिंसक शक्ति पर हम उतना ही कम निर्भर करेंगे। सम्पत्ति की वृद्धि के कारण ही उसकी रक्षा के लिए पुलिस और बाद में पुलिस की सहायता के लिए सेना की आवश्यकता होती है। इसलिए पुलिस एवं सेना की हिंसा से समाज को छुड़ाने के लिए भी अपरिग्रह की, त्याग की, आवश्यकता है।

इसलिए ऐसे कुछ साधकों ने, अपनी सुविधाओं का त्याग कर ग़रीबी को स्वेच्छा से अपना लिया। और इस सिद्धान्त की व्यावहारिकता के प्रयोग भी आरंभ किये कि यदि हम समाज की सेवा करते हैं और स्वयं अनिवार्यतः आवश्यक चीज़ों को लेकर ही जीवन निर्वाह करते हैं तो

अपनी चीजें अपने वस्त्र, अपनी सामग्री या धनराशि, बिना ताला बंद किये, खुले आम निर्भय एवं निश्चिन्त होकर छोड़ सकते हैं या नहीं। क्योंकि पास-पड़ोस के अपराधी मनोवृत्ति वाले लोग (क्रिमिनल्स') भी यह तो चाहते ही हैं कि हम उनके बीच वास करते रहें।

इन प्रयोगों के, व्यवहार में, सदैव आशानुकूल परिणाम तो नहीं निकले, परन्तु कई बार ऐसी मनोरंजक परिस्थितियाँ पैदा हुईं तथा ऐसी घटनायें हुई जिनका वर्णन आगे अवश्य करना पड़ेगा।

० ० • ०

हमारे सदस्यों में से एक वल्लानियामी श्री जार्ज डेवीस † ने जेल से बाहर आने के बाद अपने सम्पूर्ण वैभव एवं अधिकारों का त्याग कर दिया, जिन्हें उनका कुटुम्ब एक युग से भोगता चला आरहा था। उसने एक गाँव में अपना डेरा डाल दिया और गाँवों में घूम घूमकर किसानों एवं श्रमिकों से परिचय एवं मित्रता करने लगा। उसने उन ग्रामवासियों से उनकी सरल एवं सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार-बुद्धि (कामन सेंस) का ग्रहण किया। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, उसकी शांति प्रियता की प्रसिद्धि चारों ओर फैलती गई। उसने अहिंसा के लिए निरंतर जो परिश्रम एवं महान् कार्य किया था उसके लिए नहीं, वरन् इसलिए कि ग्रामवासियों एवं एक ही कुटुम्ब के विभिन्न सदस्यों में होने वाले कटु झगड़ों की तह तक पैठकर वह उनकी जड़ को पकड़ता था।

---

† देखिए जार्ज डेवीस-लिखित दो पुस्तकें 'Direct Action, और 'The Politics of Grace The Epworth Press मेयहस बुक शाप यूस्टन रोड लंदन से प्राप्त।

औद्योगिक झगड़ों में भी उसको भमिकों का मामला मालिकों के स रखने के लिए बराबर बुलाया जाने लगा। खानों में काम करने मजूर और खानों के मालिक दोनों ने ही उससे बार-बार प्रार्थना की यह उनके बीच ही स्थायीरूप से बस जाय। वह सदा मनुष्य की प्र की तह में पैठकर उसे देखता था, इसलिए उसे वहाँ कोई सद्गुण, अच्छाई मिल ही जाती थी। वह कभी न भूलता था कि वहाँ भी का, ईश्वर का, वास है।

उसके साहसपूर्ण कार्यों की कहानी बाइबिल के एक न अध्याय की भाँति मालूम पड़ती है पर उसे कहने का यह स्थान नहीं यहाँ तो सिर्फ उसकी आयर्लैण्ड-यात्रा का ज़िक्र कर देना काफ़ी होग यह यात्रा उसने उस समय की जब उत्तर और दक्षिण, प्रॉटेस्टेंट व कैथलिक* के बीच का झगड़ा इतना बढ़ गया था कि शांति की संभावना न थी। पर जार्ज डेवीस ने दोनों पक्षों के प्रमुख व्यक्तियों से की और उन्हें, ईश्वर के नाम पर, शांति का एक ही संदेश सुनाया।

एक बार एक जगह उसे यह जवाब मिला—"आपकी ब ठीक है। मैं जानता हूँ, आप ठीक कहते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप बताये रास्ते पर चल सकता तो अच्छा होता। किन्तु दुर्भाग्य-वश मैं नहीं कर सकता। मैं अल्स्टर के राष्ट्र का प्रतिनिधि नहीं हूँ।"

राजनीतिज्ञ को दुःखपूर्वक विदा होना पड़ा, क्योंकि जन-मत पूर्णतः आयरा क्रिश्चियन उदार भावना न थी। इस प्रश्न को समझ

*जैसे हिन्दुओं में सनातनी और आर्यसमाजी हैं वैसे ही ईसाइ में कैथलिक एवं प्रोटेस्टेण्ट हैं।

वाले जागरूक सावधान लोग न तो पर्याप्त संख्या में थे, न संगठित रूप में। प्राय धार्मिक जन राजनीति से दूर भागते हैं और मदिरा बनानेवालों, बैंकरों तथा शस्त्रास्त्र के महाव्यापारियों के पुरस्कार एजेण्टों के हाथ में यह क्षेत्र उनके नाजायज फायदा उठाने के लिए खुला छोड़ देते हैं।

• • • ०

१६१७ ई० में लार्ड लैंसडौन ने शांति की बात भी न चलाई। जनता को इस सम्बन्ध में बहुत ही कम खबरें मिलती थीं, पर हमने सुना कि जो शर्तें सुझाई गई थीं वे दोनों पक्षों के लिए उचित थीं, उनसे किसी पक्ष में नाराजी या बदले की भावना को उत्तेजना नहीं मिलती थी। पता नहीं इस प्रयत्न में सफलता क्यों नहीं हुई, पर लार्ड रिडेल की एक नव प्रकाशित जीवनी का देखने से इसपर कुछ प्रकाश पड़ता है। इसमें लिखा है कि यह प्रश्न उन लोगों के सामने आया था जो उस समय हमारे भविष्य के कर्ता-धर्ता थे पर सर बेसिल जोहराफ़ युद्ध जारी रखने के पक्ष में थे। [1]

लार्ड लैंसडौन के प्रयत्नों को कोई प्रबल रूप प्राप्त न हो सका, क्योंकि जन-साधारण को इस बात का कुछ पता न था कि अन्दर क्या हो रहा है। इतने पर भी जो कुछ मालूम हुआ उसके बलपर, मताधिकार आन्दोलन की नेत्री श्री मती सिलविया पैंकहर्स्ट ने, जो 'आोस्ट

---

[1] पेरिस-स्थित तात्कालिक ब्रिटिश राजदूत लार्ड बर्टी ने अपनी २५ जन १६१७ की डायरी में, इस सम्बन्ध में, सूचना की थी—"जोहराफ़ पूर्णतः युद्ध जारी रखने के पक्ष में हैं।" देखिए परिशिष्ट ४।

फरथा' के श्रमिकों के बीच सेवा का जीवन व्यतीत करती थी, सरकार का ध्यान शांति के इस सुअवसर की ओर आकृष्ट करने के लिए एक जुलूस एवं प्रदर्शन का संगठन किया। किन्तु यह घटना एक स्वल्प प्रदर्शन के रूप में ही रह गई, यद्यपि इसमें प्रधान सेनापति सर जान फ्रेंच की बहन श्रीमती डेस्पार्ड, 'टाम ब्राउंस स्कूलडेज' नामक प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक जज ह्यूजेज की पुत्री मेरी ह्यूजेज, कुमारी मरियन एलिस (अब लेडी पारमूर), 'शिशु उत्पीड़न निवारक संघ' ('सोसाइटी फार दि प्रिवेंशन आफ क्रूअल्टी टु चिल्ड्रेन') के जन्मदाता की बेटी रोजा वाघ हाघहाउस जैसी सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित स्त्रियाँ सम्मिलित थीं। यह अल्पसंख्यक जुलूस देखने में अवश्य ही हास्यास्पद लगा होगा, पर हम लोगों ने अपना काम किया। जुलूस विक्टोरिया पार्क, जहाँ सभा होने को थी, पहुंचा गया तो अधिकारियों ने बड़ी आसानी से सभा को छिन्न-भिन्न कर दिया। उपनिवेशों से आये हुए मंद सैनिकों को उन्होंने इशारा कर दिया कि ये लोग जर्मनों के समर्थक हैं। उन सैनिकों को हम लोगों के बीच घोड़े दौड़ाने एवं हंटर फटकारने का अच्छा मौका हाथ आया और सभा समाप्त हो गई।

मुझे उस दिन की घटनायें अच्छी तरह याद हैं कि उस धक्का मुक्की में अकस्मात् अकेली पड़ जाने, वर्दीधारी सैनिकों के इधर उधर दौड़ने, उनके 'मारो-मारो', 'जरा इनको मजा चखा देना' इत्यादि शब्दों को सुनकर मेरे मन में क्या-क्या भाव उत्पन्न हुए थे। बाद में मैंने देखा कि श्रीमती डेस्पार्ड को गुस्से स्त्री-पुरुषों की एक भीड़ ने घेर लिया है। ये लोग हमारे सम्बन्ध में फैलाई गई झूठी अफवाहों से

पागल हो रहे थे। कभी घूंसे तानते, कभी प्राण लेने की धमकी तथा गालियाँ देते थे। इन लोगों के बीच यह प्रचारी शांति भाव से खड़ी थी। उसने उनके द्वारा किये जानेवाले अपमान का कुछ उत्तर न दिया। सिर्फ रह-रहकर अपने इस विश्वास को दोहराती थी—"तुम हमारे टुकड़े-टुकड़े कर सकते हो, पर मेरी कोई हानि नहीं कर सकते।"

महायुद्ध से पहले ईसा के एक अनुयायी अफ्रीका के एक गांव में बस गये थे। उन्होंने देखा कि खून का बदला तो वहाँ के सामाजिक एवं धार्मिक रिवाजों का एक हिस्सा ही बन गया है। अतीतकाल में यदि किसीने किसीकी हत्या करदी थी तो उसके वंशवालों से पुश्त-दरपुश्त बदला लेने की चेष्टा की जाती है। जैसे-जैसे अवसर मिला, उसने इन लोगों को समझाया कि न्याय की इस हानिकर प्रणाली, खून का मूल्य खून से चुकाने की इस प्रथा की अपेक्षा प्रेम और क्षमा का मार्ग कहीं अच्छा है। क्षमाशीलता और अहिंसा से पूर्ण अपने जीवन में उसने इसका क्रियात्मक प्रमाण एवं उदाहरण उन लोगों के सामने उपस्थित किया। उसकी सतत शिक्षा तथा अपने जीवन में उन सिद्धान्तों के व्यवहार का यह परिणाम हुआ कि कतिपय हत्यारों ने स्वयं ही प्रतिहिंसा का त्याग करके क्षमाशीलता को ग्रहण कर लिया। एक दिन, प्रार्थनास्थल पर, यह अद्भुत् दृश्य दिखाई दिया कि क़त्ल किये गये सरदार का पुत्र और स्वयं अपना अपराध स्वीकार करनेवाला हत्याकारी दोनों, पास पास, प्रभु के ध्यान में नतमस्तक हैं।

इस प्रकार अफ्रीका ने एक बड़े ही महत्वपूर्ण सत्य को स्वीकार किया।

इसके बाद युद्ध आरम्भ हुआ और काले महाद्वीप के इन मूल निवासी (हब्शी) फ्रांसीसी सेना में भरती किये गये तथा उन्हें ईसाइयों के मारने के कार्य में मित्र-राष्ट्रों की सहायता करने को फिर भेजा गया। भरती से बचने के लिए कुछ तो अपने घर, कुटुम्ब और चौपायों को छोड़कर ब्रिटिश सीमा में चले गये; किन्तु वहाँ भी सुरक्षित न रहे। युद्ध के संकट-काल के बहाने ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें फ्रांसीसियों के सुपुर्द कर दिया और फ्रांसीसी अधिकारियों ने उन्हें यूरोप के युद्ध-क्षेत्र में भेज दिया। संधि होने के बाद वे अब मित्र-राष्ट्रों की रक्षक सेना [Army of occupation] में शामिल कर लिये गये।

शेली के शब्दों में हम पूछ सकते हैं—

"Christ,was this thy passion;
To foreknow the deed of Christian men?"

६

संधि के बाद

जिस दिन संधि होकर शांति-स्थापना हुई, उसके दूसरे दिन लंदन के एक दैनिक पत्र ने अपने प्रत्येक पृष्ठ पर बार्डर देकर बड़े-बड़े अक्षरों में निम्नलिखित तीन शब्द प्रकाशित किये —

killing has stopped !

['कत्ल बंद होगया']

छोटी सड़कों एवं गलियों के मकानों में रहनेवाली स्त्रियों ने, अपनी खुशी प्रकट करने के लिए, मँगनी माँगे हुए लम्बे-लम्बे टेबुल सड़कों पर लगाकर बीच सड़क पर अपने कुटुम्बों को भोजन कराया। इसके पहले ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा गया था।

हमारे कुछ सैनिक युद्ध भूमि से हटाकर कोलोन (Cologne) में, विजयी शक्तियों की रक्षक-सेना (Army of occupation) में भेज दिये गये थे। उनको संधि एवं शांति होजाने पर बड़ी खुशी हुई। वे जर्मनों और विशेषतया जर्मन बच्चोंसे परिचय और मित्रता करने लगे। ब्रिटेन के आदमियों का बच्चे, फूल, पशु और संगीत ये चार चीजें बड़ी प्यारी हैं। परन्तु उन्हें यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि ये जर्मन बच्चे दुबले और पीले पड़ गये हैं और उनके सूखे हुए चेहरों पर दुःख

की छाया है। पता लगाने पर उनको मालूम हुआ कि देश में ग.. पदार्थों की कमी हो जाने के कारण बहुत दिनों से उनको पर्याप्त भोजन नहीं मिला है। यद्यपि इन घरे (blackode) भार यद्दर स उ" पदार्थ जमनी में न आने देने के लिए ये नहीं जनसेना जिम्मेदार थे फिर भी वे यह कैसे भुला सकते थे कि हम सब एक ही मना के हैं! उन सैनिकों को इन बातों से बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने निश्चय किया कि अपने हिस्से के भोजन में से थोड़ा थोड़ा निकालकर इन सब बच्चों को खिलाना चाहिए। फलतः उस नगर (कोलोन) में यह दृश्य नित्य दिखाई पड़ने लगा कि टामी (अंग्रेजी सैनिक) लोग उन बच्चों को जगह जगह पंक्तिबद्ध बैठाकर खिला रहे हैं। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा बाद में, भीड़ के बहुत बढ़ जाने के कारण अधिकारियों-द्वारा इसे बंद करा दिया गया। परन्तु ब्रिटिश सैनिक को दम्भू मानी नहीं है; यह अपना नया कल्याणकर कार्य क्यों छोड़ता? बच्चों से कहा गया है कि वे सड़कों पर नहीं दूसरी जगह आयें और और सड़कों पर खिलाने की जगह बच्चों को बैठका के पिछवाड़े, जहाँ भीड़ नहीं हो सकती थी, ले जाकर खिलाया जाने लगा।

एक दिन मैं बोनाल्ड रोड से होकर कहीं जा रही थी। रास्ते में एक श्रीमती स्मिथ से भेंट हुई। उनके हाथ में उनके सैनिक पुत्र का कोलोन से आया हुआ पत्र था। उन्होंने मुझे पुकारकर कहा—"देखो, देखो मेरा बेटा क्या लिखता है—'प्यारी माँ, यहाँ का स्थिति बड़ी दुःखदायी है। बेचारे बच्चे भूखे हैं और बड़े दुर्बल दिखाई पड़ते हैं। हम उन्हें थोड़ा खिलाते हैं, पर यह पर्याप्त नहीं है। क्या देश में तुम लो... [illegible] कुछ नहीं कर सकते!'

इस पत्र से उन सैनिकों के दिल की व्यथा मालूम पड़ती है। परन्तु उधर जहां यह हालत थी, वहां अब लन्दन की दुकानों में खाद्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में आने लगे थे। अब तो काफी चाकलेट क्रीम भी प्राप्त था। जिसके पास पैसा हो वह अब बिना कूपन या सम-रापत्र के मक्खन खरीद सकता था। धनवान लोग यथेच्छ क्रीम प्राप्त कर सकते थे। 'या' के लोगों को यह बात अत्यन्त लज्जाजनक प्रतीत हुई कि जब अपने देश में यह सब होरहा है तब जर्मनी में खाद्य पदार्थों के आयात पर रोकथाम चली ही जा रही है। इस नीति के फलस्वरूप, पर्याप्त पोषण न मिलने के कारण, मध्य-यूरोप में फैलने वाली बीमारियों के समाचार भी आने लगे।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री एच० डब्ल्यू० नेविंसन ने इन स्थानों को देखने के बाद लौटकर हमें बताया कि "एक आस्ट्रियन अस्पताल में जब मैं गया तो उसके शिशु-विभाग के करुण दृश्यों के सामने देर तक खड़ा न रह सका।" हम सब जानते थे कि श्री नेविंसन एक बड़े परिव्राजक हैं प्रायः यात्रा करते रहते हैं और दुनिया के कितने ही कठिन मार्गों की उन्होंने यात्रा की है। हमें याद था कि अफ्रीका में जब गुलामों पर, हबशियों पर, गोरे आक्रमण करके, उनको मार मार कर उनकी दुर्दशा कर रहे थे, तब भी नेविंसन अफ्रीका में गये थे। उस समय उनके मार्ग में बड़ी कठिनाइयां खड़ी की गईं, पर प्रत्येक बीभत्स दृश्य, प्रत्येक निर्मम उत्पीड़न देखे बिना उन्होंने वहां से लौटना पसन्द न किया, क्योंकि वह सच्ची घटनाओं को जानकर यूरोप के जन-मत को उस अत्याचार के विरुद्ध जाग्रत करना चाहते थे। ऐसे-

ऐसे निदयतापूर्ण दृश्यों को बारम्बार देखे हुए शाइकी नेविंसन दे
उन बच्चों की दुदशा का करुण दृश्य अच्छी तरह न देख सके। म
प्रत्येक बच्चे क पास जाना और उसकी तबियत के बारे में कुं
पूछताछ करना चाहते थ। पर उन्होंने कहा 'हर बिस्तरे के पास खड़ा ह
प्रत्येक बच्चे से निदयता की वही भयानक कथायें बार-बार सुनने व
साहस मुझे न हो सका। यह मरे बदाश्त के बाहर था। जब मैं प
जाता तो प्रत्येक बच्चा अपनी बड़ी-बड़ी चमकीली आंखों से मेरी ओ
देखता। उनकी इन आंखों और पतले गालों में उनके दुःख व
कहानी लिखी हुई थी। वे मेरी ओर उसी आशा और उत्कण्ठा से देख
थे, जैसे चिड़ियों के बच्चे अपने माताओं के खाद्य-पदार्थ लेकर आने प
चोंच खोलकर उनकी ओर देखते हैं। पर मेरे पास तो उनके लिए भोज
न था। एक प्रसूति-गृह (मेटरनिटी होम) में दो महीने के अन्दर में दु
सौ बच्चे पैदा हुए जिनमें अट्ठानवें दूध के अभाव में मर गये; बेचार
दुर्बल माताओं की छातीमें दूध न था। "हाय ! यह कैसी करुण बात थी।

परन्तु इस तरह की खबरें अंग्रेजी दैनिक पत्रों में शायद ही कभी
छपती थीं। जनता को इन बातोंकी कोई खबर न थी। इसलिए हम लोगों
ने इसी बात का आन्दोलन किया कि लन्दन क पत्र-सम्पादकों से मिलकर
उनसे सच्ची बातें छापने की प्रार्थना करनी चाहिए। हम लोग उनसे
मिले,पादरियों और नगर-सभा (टाउन कौंसिल) के सदस्यों से भी मिल व
गई। पर हम लोगों को कई स्थानों पर विचित्र जवाब मिले। कि
सम्पादक न कहा—"ऐसी बातें लोकप्रिय नहीं होंगी।" किसीने कहा
"यह सत्य नहीं होसकता, अन्यथा इसकी खबर हमें अबतक अवश्य

मिल चुकी होगी।" किसीने कहा—"अच्छा हुआ वे हमी याम्य थे।'
ये भावनायें शांति-स्थापन के बाद पैदा हुए बच्चों के बारे में थी।
जब हम लोगों ने यह बात सुझाई कि लोगों को छ-छः महीने एक-एक साल के लिए इन बच्चों को अपने कुटम्ब में रखना चाहिए तो एक आदमी ने जवाब दिया कि "घर में एक राक्षस को रखना हमारे बच्चों के प्रति अनुचित होगा।" हाय! साढ़े चार वर्ष के अन्दर अखबारों द्वारा फैलाई गई झूठी खबरों ने कुटम्बों के इन दयालु पिताओं के हृदय में कितना जहर भर दिया और उन्हें कहाँ लेजा पटका।

० ० ० ०

'बो' निवासियोंने प्रधान मन्त्री का इस आशय का एक पत्र भेजा कि 'हम अपने अनुभव से भूख की पीड़ा को जानते हैं इस लिए हम और हमारे बच्चे यह नहीं चाहते कि दुनिया के किसी भाग में कोई भी भूखा रहे।—इससे अच्छा तो यही होगा कि मों, धीरे धीरे मारने* तिल-तिल कर के भूख की आग में जलाने की जगह इन बच्चों को बम गिराकर एक दम खत्म कर दिया जाय। ईश्वर के नाम पर खाद्य द्रव्यों की इस रोक को उठा लीजिए।'

उन्होंने पत्र खुद अपने ही हाथों लेजाकर प्रधान मन्त्री को देने का निश्चय किया। उनका कहना था कि यदि समाचार पत्र जर्मन पशुओं की असली स्थिति से जनता को आगाह नहीं करते तो हमीं इस

---

*इसके कारण शरीर की कतिपय हड्डियां भीतर-ही-भीतर नरम होकर टेढ़ी पड़ जाती हैं जिसके कारण बाद में लड़कियों को प्रसव-काल में बड़ा कष्ट होता है और जान का खतरा भी रहता है।

के लिए कोशिश करेंगे। और अपने शरीर को जीता-जागता सन्देश-पत्र बना डालेंगे' इस निश्चय को हम लोगों ने शीघ्र सम्पन्न किया। दुःख प्रदर्शक वस्त्र पहने हुए एक के पीछे एक पंक्ति बना हम लोग बाहर निकलीं। हमने सुन्दर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे पोस्टर तैयार कर लिए थे और उन्हें तख्तियों पर चिपका कर तख्तियाँ लम्बी लाठियों में बाँध लिया था जिससे सुभीते के साथ राह के लोग उन वाक्यों को पढ़ सकें।

इस प्रकार हम नगण्य व्यक्तियों का यह छोटा-सा दल निकला। एक माँ का अपनी दो छोटी बच्चियों को साथ लाना ... इन बच्चियों की हाथगाड़ी (पराम्बुलेटर) के दोनों ओर हमने सब में बड़े ऊँचे पोस्टरों पर लिखा, 'वा' के बच्चों का यह संदेश ... दिया था—"हम नहीं चाहते कि कहीं भी बच्चे भूखे रहें।" सबसे ... जो पोस्टर था उसपर ये शब्द लिखे हुए थे—"तुम्हारे सर्वस्व पिता (प्रभु) की यह इच्छा नहीं है कि इन बच्चों में एक भी नष्ट हो।" इस जलूस ने अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। यद्यपि पार्लमेंट की बैठक हो रही थी अतः उसकी एक मील की सीमा में ... भी जुलूस का ले जाना ग़ैर-कानूनी था परन्तु किसी पुलिस सिपाही ... साहस न हुआ कि इन शांत, अनुभवी तथा परिश्रमी माताओं ... रोके। जब जुलूस सेंट स्टिफेंस (जहाँ पार्लमेंट है) पहुँचा तो ... महिलाओं ने संतोष की साँस ली और एक के ऊपर एक सब पोस्टर वेस्ट मिनिस्टर हाल की पक्की, पुरानी दीवारों के सहारे जमाकर ... दिए और पार्लमेंट की लॉबी' (बरामदा) में बैठ कर सुस्ताने लगीं।

यह घटना संधि पत्रों पर हस्ताक्षर होने के चार महीने पहले की
। इसके तथा अन्य कारणों के फल स्वरूप ही बाद में 'शिशु-रक्षण
कोष' ('सेव दि चिल्ड्रेन फंड') •का जन्म हुआ। इस विश्वव्यापी संस्था
द्वारा प्रकाशित 'संसार के बच्चों का घोषणा-पत्र' सच्ची शांति स्थापित
करने तथा लोगों का ध्यान अन्य प्रकार के मार्च विचार से हटा कर
मानव मात्र के लिए हितकर इस कसौटी की ओर आकर्षित करने में बड़ा
सहायक हो सकता है। वह कसौटी, जिस पर प्रत्येक बात कसी जानी
चाहिए, यह है कि 'अमुक कार्य संसार के बच्चों के सुख और कल्याण
का बढ़ाने वाला है या उनके लिए हानिकर है ?'

• • • •

जुलाई १६१६ ई० में शांति पत्र पर हस्ताक्षर हुए और
उसके बाद वाले रविवार को 'अहिंसा-दल' के तत्वावधान में, हाइड
पार्क में एक प्रार्थना-सभा हुई। वक्ता का हृदय वेदना और व्यथा से
भरा था। उसने इतने महत्त्वपूर्ण कार्य में पहले कभी भाग न लिया
था। उसे मालूम पड़ रहा था, जैसे मैं बीमार हूँ। वह अपनी आँखें
ऊपर न उठा सकती थी और अपने पाँव के पास की सूखी घास वाली
भूमि की ओर देख रही थी तथा भक्ति-विह्वल हृदय से प्रार्थना कर रही
थी कि मैं परीक्षा में खरी सिद्ध होऊँ तथा सत्य प्रकट होकर मुझे
आत्मसात् करले।

भीड़ काफ़ी थी और उस में सैनिकों का भी एक दल था।
जब प्रार्थना आरंभ हुई तो उपर्युक्त वक्ता स्त्री का ध्यान इन सैनिकों

---

* 'सेव दि चिल्ड्रेन फण्ड' ४० गार्डन स्क्वायर, लंदन। देखिए परिशिष्ट ५

पर था और उसके मन में इस बात की प्रबल इच्छा हुई कि 'उन मन के कोमल भावों के चारों ओर जो घना स्तर जम गया है और जो उनके युद्ध की भीषणता एवं महापन का अनुभव करने में बाधक उसे भेदकर मैं उनकी मनुष्यता को, दिल को स्पर्श कर सकूँ।' वह बोली तो दिल से बोली। उसके प्रवचन के बीच में, उससे प्रभावित हो, एक सैनिक ने अपने अन्य सैनिक मनुष्यों से कहा कि "यह लड़की विवेक पूर्ण बात कह रही है।"

फ्रांस की ध्वस्त सीमा के उजड़े हुए दयार में एक ग्राम बड़ी बुरी हालत में पड़ा हुआ था। जर्मन तोपों के कारण उसकी यह दशा हुई थी। पीरी सेरीसोलके नेतृत्वमें संगठित एक स्वयं सेवक दल ने वहाँ जाकर टूटे-फूटे घर खड़ा करने, सड़कों की मरम्मत करने तथा रहने के लिए सुरक्षित मकान बनवाने के कार्य में ग्रामवासियों की सहायता की। इस दल में जर्मन, स्विस, अमेरिकन और अंग्रेज शामिल थे। जमन भाई की घटना तो बड़ी शिक्षाप्रद है। जब अपने भाई, जो लड़ाई पर सैनिक बन कर गया था, के मारे जाने की खबर उसने सुनी तो उसने उसी समय प्रतिज्ञा की कि ज्योंही मुझे अवसर मिलेगा, फ्रांस की कुछ न कुछ सेवा अवश्य करूँगा। प्रतिहिंसा, बदला की प्राचीन पद्धति के विरुद्ध यह कैसा अपूर्व भाव था।

१६२० के साल से ही प्रति वर्ष, गरमी के दिनों में, यह 'अन्तर्राष्ट्रीय स्वयं सेवक दल' स्थान-स्थान पर काम करने जाता है। इसका काम शुष्क और बड़े परिश्रम का होता है। इसमें कोई मजदूरी नहीं मिलती; फिर इसे स्वयं अपनी इच्छा से प्रसन्नता-पूर्वक करते

ईमानदारी के साथ करना पड़ता है। यह स्वयं-सेवक दल इस कसौटी पर, इस आग में तप कर, खरा सोना सिद्ध हुआ। चाहे बर्फीली नदियों की बाढ़ से क्षतिग्रस्त गाँव हो, या ज़मीन खिसकने या चट्टानों के गिरने से नष्ट हुआ राजमार्ग अथवा भूमिखण्ड हो, मतलब किसी प्रकार का कष्ट हो, यह अन्तर्राष्ट्रीय सेवा दल अपनी प्राण शक्ति, अपनी सहानुभूति, अपनी सेवा भावना एवं श्रम-शक्ति को लेकर वहाँ पहुँच जाता था।

दक्षिण वेल्स की खुरा घाटी के कई भागों के निवासी बड़े कष्ट में थे। खनिज उद्योग की दशा इतनी बुरी हो गई थी कि वे वर्षों से लगातार बेकार पड़े हुए थे। शहर और कस्बे दिवालिया हो रहे थे। फिर निकट भविष्य में स्थिति सुधर जायगी, इसकी भी कोई विशेष आशा न थी। एक ऐसी संतति बढ़ रही थी जिसने कभी न जाना कि नियमित जीविका क्या चीज़ होती है। लोगों के हृदय में अविश्वास और निराशा घर कर चुकी थी। युवकों के लिए किसी तरह समय काटने के सिवा कोई काम न रह गया था। वे बैठ कर हसरत भरी आँखों से उन भाग्यवानों की ओर देखते थे जिनके हाथ में कुछ काम था। वे इस बात को महसूस करते थे कि काम का, जीविका-निर्वाह के उपयुक्त साधनों का जो अकाल पड़ गया है। इसमें हमारा कोई दोष, कोई अपराध नहीं है। परन्तु अपनी बेकारी का अनुभव बहुत जल्द आत्म सम्मान को भी शिथिल कर देता है। फिर जो आदमी बेकार होता है उसके साथ घर में तथा बाहर लोगों का जो व्यवहार होता है उसके कारण वह धीरे धीरे अपने को निकम्मा और घटिया समझने लगता है। वह अनुभव करने लगता है कि मैं न तो कुटुम्ब का कुछ कमा कर दे

रहा हूँ, न संसार के कार्य में ही कुछ सहायता कर रहा हूँ। मेरी पूछ नहीं, कोई गिनती नहीं। कोई मुझे नहीं चाहता।

इस उपजाऊ भूमिखण्ड के बीच 'अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल' (Service Volontaire Internationale) का पदार्पण हुआ। उन्होंने पहले बेकार लोगों को एकत्र किया और उनसे इस बात पर चर्चा की कि उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है। पहले तो लोगों ने इन्हें सन्देह की दृष्टि से देखा। उन्होंने समझा कि शायद न्याय निर्देश का यह भी कोई पाखण्ड है। इसलिए स्थानीय लोग चुपचाप ये सब कुछ देखते और सुनते रहे। पर इस अवसर पर [illegible] सहायता की। बच्चों के लिए क्रीड़ा भूमि बनाने, वृद्धों के धूप तापने के लिए धारा लगाने, शनिवार की रात्रि को संगीत का आनन्द लेने के लिए एक बैण्ड स्टैण्ड बनवाने और खेलने के लिए एक मैदान तैयार करने की ये क्या बातें सुनी जा रही हैं? पर ये सब बनेंगे कहाँ? इन्हें तो बिना व्यय के मिल नहीं सकती और इन नवागन्तुकों, स्वयंसेवकों के पास रुपया तो है नहीं। फिर कैसे काम चलेगा? लोग यह सोचने लगे। धीरे-धीरे लोग सभाओं में शामिल होने लगे तथा बातचीत एवं विचार-विनिमय में रस भी लेने लगे। इस बात-चीत में एक को सूझी कि क्यों न हम लोग स्थानीय अधिकारियों के पास जाएँ निवेदन करें कि गाँव की ऊबड़-खाबड़ जमीन हमें इस कामके लिए मिल जाय तो हम लोग मुफ्त बिना मजूरी लिए उसे पाट कर चौरस एवं सम करके ठीक कर लेंगे। आखिर यह जमीन व्यर्थ पड़ी है और इतनी बुरी अवस्था में तथा इतनी ऊबड़ खाबड़ है कि उसका यों भी कोई काम न

ठ सकता' यही किया गया और कुछ दिनों तक चेष्टा करने पर इसमें सफलता भी हुई। फिर क्या था, स्वयंसेवकों, विदेशियों तथा स्थानीय आदमियों ने मिलकर कठोर परिश्रम करना आरंभ किया और मूल योजना के अनुसार सब चीजें तैयार होगईं।

• • ० ०

शांति-पत्र पर हस्ताक्षर होने के साथ ही, जर्मन मजूर संघ के सदस्य एकत्र हुए। उन्होंने असलियत को पहचाना। आपस में विचार किया, स्थिति का अध्ययन किया और योजनायें बनाईं। इसके बाद उन्होंने फ्रांस के मजूरों के पास एक सुविचारपूर्ण योजना भेजी और लिखा कि हम अपने कुछ सर्वोत्तम आदमियों को फ्रांस भेजना चाहते हैं जो वहाँ जाकर हमारे देशबंधुओं-द्वारा ध्वस्त किये गये नगरों के निर्माण में सहायता करेंगे तथा जो निर्माण-सामग्री हम दे सकेंगे वह भी देंगे। यदि फ्रांसीसी श्रमिक हमारे साथ मिलकर काम करना पसंद करेंगे तो हम उनकी सहायता एवं सहयोग का स्वागत करेंगे, क्योंकि इस प्रकार का सहयोग मानवता का एक सुन्दर प्रतीक होगा और उस अवस्था का एक चित्र और आदर्श उपस्थित करेगा जब धूर्त राजनीतिज्ञों के कारण किये युद्ध-द्वारा हुई अपार हानि की पूर्ति के लिए प्रत्येक देश की जनता स्वयं अपने हाथ में शासन एवं प्रबन्ध का कार्य लेलेगी।

अपनी स्वाभाविक सुघड़ता के साथ जर्मनों ने योजना की प्रत्येक बात निश्चित की थी। फ्रांसीसी मजूर इस प्रस्ताव को पढ़कर बड़े खुश हुए। योजनायें, नक़शे तथा सख़मीने छपवाये गये और बड़ी उत्कंठा के साथ उनका अध्ययन किया गया।

परन्तु जब बड़े-बड़े ठेकेदारों, मकान का सामान बनाने सौदागरों, बैंकरों तथा फौलाद के व्यापारियों का यह बात मालूम हुई तो ये चौंके। उत्तर फ्रांस के पुनर्निर्माण की विस्तृत योजनायें इन व्यापारियों ने बनाई थीं जिनसे उनको बहुत बड़ा फायदा होनेवाला था। बड़ी-बड़ी कम्पनियों के इन मालिकों ने अपने प्रभाव से जर्मन मदद के उपर्युक्त प्रस्ताव के सम्बन्ध में आनेवाली खबरों को दबा दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सरकारी तौर पर यह एकदम अस्वीकार कर दिया गया।

• • • •

मध्यम श्रेणी के बहुत-से लोग जो युद्धकाल में ब्रिटिश सैनिकों की वीरता और साहस का बखान कर करके लोगों के जोश को उभारते थे, युद्ध खत्म होजाने के बाद जब सैनिक लौटकर फिर अपने मजदूरी की कार्रवाइयों में लग गये तो उनके विषय में फिर वही अपनी पुरानी सम्मतियाँ दोहराने लगे। युद्ध के कारण अमीतक आविष्कारों अथवा युद्ध-विरोधियों के सम्बन्ध में जो बातें कही जाती थीं वे ही इन सैनिकों के सम्बन्ध में कही जाने लगीं। क्लब वाले कहते—"मेरा बस चले तो मैं इन्हें गोली मार दूँ।" समय बिताने के लिए क्लब एवं निठल्ले पुरुषों द्वारा इन 'भूतपूर्व वीर' श्रमिकों की मुसी, मुद्रा तथा पापों पर गपाड़े एवं बनावें होने लगीं।

• • • •

प्रोफेसर मोहरी तथा ६ अन्य युवक वैज्ञानिकों ने अपनी सब शक्ति, ज्ञान और साधन युद्ध-कार्य के लिए सरकार की ओर कर दिये

ो। अब उन्होंने युद्ध-कार्य से अपनेको बिलकुल अलग कर लेने का निश्चय किया। उन्होंने सरकार को लिखा कि अब भी हम, भविष्य के लिए, अपना सारा समय देने को तैयार हैं, पर अब अपनी सेवा के लिए हम यह शर्त रक्खेंगे कि इसके द्वारा, सब मिलाकर, मानव-जाति के स्वास्थ्य और सुख में वृद्धि, न कि ह्रास, हो।

• • ० ०

'अनिवार्य सैनिक सेवा' के नियम के अनुसार भरती किये गये युवक सैनिकों के लिए स्वीडन में भी यह क़ानून बन गया कि वे लड़ाकू सेना अथवा विधायक कार्यों के लिए संगठित 'राष्ट्रीय दल' इन दोनों में से चाहे जिसमें अपनी इच्छानुसार भरती होसकते हैं। उनके लिए कोई मजबूरी न रहेगी।

• ० • •

'मरी' का 'बा' में आगमन हुआ। यह आस्ट्रिया से इतनी दूर आई थी, बच्चों को यह सब अत्यन्त आश्चर्य जनक प्रतीत होरहा था। वे बच्चे ही उनके भोजन-प्रबंध के लिए एक पेंस (एक आना) प्रति सप्ताह देते थे। एक भाग्यवान कुटुम्ब को तीन बार उनका आतिथ्य करने का अवसर मिला। 'मैत्री-वर्द्धक संघ' ('फैलोशिप ऑफ् रिकन्सिलियेशन') के प्रयत्न से भूतपूर्व शत्रुओं—जर्मनों—के हज़ारों बच्चों को देश (इंग्लैंड) के विभिन्न भागों में, अंग्रेज़ कुटुम्बों ने अपना लिया। इन कुटुम्बों के युवक लड़ाई में जाकर फिर न लौटे थे, वहीं उन्होंने वीर गति पाई थी। इसलिए दुःख और व्यथा का जो वातावरण उनमें

था उसको दूर कर इन कुटुम्बों में स्नेह और मधुरता की भाव जगाने (जर्मन बच्चों को अपनाने के) इस उपाय ने बड़ा काम किया।

• • • •

शान्ति वादिनी एवलीन शाप एक दिन लंदन के एक बोरो में व्याख्यान दे रही थीं तब उन्होंने देखा कि कैदियों के बीच मीस हारेशिया बाटमली भी बैठे हैं। उन्हें याद आया कि एक समय, युद्ध काल में, जब वह स्वयं कैदी एवं उपेक्षित थीं तब मि॰ बाटमली उसके सिद्धान्तों के विरुद्ध बोलने एवं जर्मनों के प्रति घृणा एवं द्वेष जगानेवाले व्याख्यान देने के लिए बड़े लोकप्रिय थे और इन्हें व्याख्यानों के लिए बड़ी-बड़ी फीस दी जाती थी। आज कैदियों के बीच उन्हें बैठे देखकर उनके मन में आया कि मैंने इन्हें गलत समझा था।

• • • •

एक बूढ़ी पेंशनर श्रीमती बानलू बोडाल्ड रोड के पास रहती थीं। जून में गांवों में जाकर सैर-सपाटे का एक कार्यक्रम कुछ लोगों ने बनाया था। उसके लिए, श्रीमती बानलू ने भी प्रति सप्ताह मार्च के महीने से अपने हिस्से का चंदा थोड़ा-थोड़ा करके जमा करना शुरू किया था।

एक दिन वह मुझसे रास्ते में मिलीं और बोलीं—"कैसा सुन्दर कार्यक्रम रहेगा, बहन!" फिर कहा—"मैं तो सीधे जंगल के किसी एकान्त भाग में चली जाया करती हूँ। मेरे पास एक जाड़ी चमड़े जूता है और रास्ता चलने का मुझे अच्छा अभ्यास है। मैं एकांत वनस्थली में वृक्ष के नीचे बैठना पसंद करती हूँ। साथ में एक शाल रखती हूँ और उसे घास पर बिछा लेती हूँ जिससे कपड़े न खराब हों। माइरों, रेलगाड़ी

तथा अन्य प्रकार के शोरगुल वहाँतक नहीं पहुँच सकते। तब मैं पक्षियों का संगीत सुनती हूँ, अपने सिर पर छाया करनेवाली हरी टहनियों को देखती हूँ और शुद्ध वायु का आनंद लेती हूँ।"

पर जब जून का महीना आया तो हमें मध्ययूरोप से लोगों की पीड़ा और भूख के नये समाचार प्राप्त हुए। उनकी सहायता के लिए सामग्री एवं धन एकत्र करने के उद्देश्य से प्रत्येक रविवार की प्रार्थना के बाद हम लोगों ने दरवाज़े के दोनों ओर दो झोले लेकर खड़ा होना शुरू किया, ताकि जाने वाले पुरुष-स्त्रियां जो कुछ देना चाहें उनमें डालते जायें।

जब जून में निश्चित किया हुआ वह दिन आया जिस दिन श्रीमती वानलू तथा उनके अन्य साथी सैर के लिए जानेवाले थे तब लोगों से भरी गाड़ियाँ अपनी घण्टियां से टनन-टनन करती ग्रामों की ओर रवाना हुईं। लगभग ११ बजे, जब मैं किसी काम से कहीं जा रही थी, मुझे श्रीमती वानलू मिलीं। उनको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह इतने दिनों से इस सैर के लिए तैयारी कर रही थीं। मैंने उनकी ओर इतनी कड़ी दृष्टि से देखा कि वह सफ़ाई देने के लिए रुक गईं और बोलीं—"प्यारी बेटी! मैंने इस दिन के लिए जो कुछ जमा कराया था वह बाद में मुझे निकाल लेना पड़ा। इसलिए मैं न जा सकी। अब मैं अपना दिन 'ग्रोव पार्क' में व्यतीत करने के लिए जा रही हूँ।"

मैं जानती थी कि ग्रोव पार्क कैसी जगह है। यह कंकरीली एवं बलुई ज़मीन का एक आयताकार टुकड़ा है जिसके चारों ओर काँटेदार तार और फूलों के पौधे लगे हुए हैं। यहाँ बच्चे क्रिकेट खेलते और

आपस में लड़ते हैं। इसके एक ओर पर पाँच कीड़ों से भरे हुए बरामदे खड़े हैं जिनमें से एक के आरपार मशी-सी लकड़ी की ... हुई है। यह कोई एक सुन्दर या स्वास्थ्यप्रद स्थान नहीं है।
उनकी बात सुनकर मुझे दुःख हुआ और मैंने कहा—... रुपये की आवश्यकता थी तो आपने मुझसे क्यों नहीं कहा! चाहे ... हो जाता, मैं आपको इस सैर में जाने से वंचित न होने देती।"

वह बोली—"नहीं बेटी, मुझे स्वयं अपने लिए रुपये की ... नहीं थी। यूरोप से आये आस्ट्रियन बच्चों की दुर्दशा से भरे उस ... पत्र के कारण उनकी सेवा में अर्पित करने के उद्देश्य से ही ... रुपये लौटा लिये थे। और फिर तुम्हें इसका विश्वास दिलाती हूँ कि ... पार्क में भी मैं उतने ही आनंद के साथ दिन बिताऊँगी।"

यह कहकर वह तेज़ी से चली गई। मैंने देखा कि ... महिला में माता का कैसा हृदय है! मैंने निश्चय किया कि दूसरे ... इनको सैर में ले जाने के लिए किसी को साथ कर दूँगी। पर दूसरे ... तो उनकी मृत्यु ही हो गई।

° • ° •

परन्तु उनकी भावना, उनकी स्पिरिट, दूसरों के बीच ... करती रही। उनकी मृत्यु के एक-दो वर्ष बाद रूस में भयंकर ... पड़ा। एक दिन शिशु-भवन (Children's House) के दरवाजे पर ... वर्ष की एक लड़की ने धपकी दी। मैंने जब दरवाजा खोला ... उसने मुझे एक छोटा-सा पासल दिया और कहा—"इसे रूस के किसी छोटी लड़की के पास भेज दीजिए।"

उस पार्सल में बादामी कागज़ से लिपटी एक सुन्दर स्वच्छ ऊनी 'संडे फ्राक' (जिसे लड़कियाँ रविवार को पहनती हैं) तह की हुई रखी थी। मैंने इस नन्ही बालिका की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि "मेरे पास एक दूसरी फ्राक है और माँ कहती है कि मुझे दो की कोई जरूरत नहीं।"

• • • •

'मैत्रीवर्द्धक संघ ('फैलोशिप ऑफ रिकन्सिलियेशन') एक अहिंसावादी संस्था थी, जिसके द्वारा हम बहुत-से लोग काम कर रहे थे। पर अब एक ऐसा लोकप्रिय आन्दोलन चलाने की आवश्यकता अनुभव हुई जिसकी सदस्यता के नियम कुछ सरल हों और धर्म, तत्वज्ञान, शिक्षण, दण्डविधान-सम्बन्धी सुधार जैसे गंभीर उद्देश्य और आदर्श उसमें न हों। इसलिए कुछ सदस्य एक स्थान पर एकत्र हुए और उन्होंने 'अब और युद्ध नहीं' के आन्दोलन (The no more war Movement) को जन्म दिया।

धीरे-धीरे जन-साधारण में से अधिकाधिक लोग इस बात को अनुभव करने लगे कि हमारे ऊपर एक नवीन सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था को खड़ा करने की ज़िम्मेदारी है और हम में से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से भी इसके लिए काफ़ी परिश्रम करना पड़ेगा। उन्होंने यह भी देखा कि जबतक हम स्वयं इस सम्बन्ध में कुछ रचनात्मक, ठोस कार्य न करें तबतक सिर्फ़ स्वदेशी या विदेशी सरकारों की कड़ी आलोचना करने अथवा प्रस्ताव पास करने या व्यंग पूर्ण भाषण देने से कुछ न होगा।

इसलिए उन्होंने विश्व-नागरिकता (world citizenship) प्रश्न की ओर ध्यान दिया। 'सब देशों के निवासी भाई भाई हैं... किसी सरकार की अधीनता में रहने या किसी देश में... मानवीय आधार टूट नहीं सकता, यह इस आन्दोलन का उद्देश्य... उन्होंने निश्चय किया कि यद्यपि हमारी समस्यायें बड़ी कठिन हैं... कठिनाइयों का मुकाबला करेंगे और अपने अनुभव दूसरों को... कम-से-कम हम अपने स्थान पर जनमत का आग्रह कर देंगे... धीरे धीरे अपना कदम बढ़ाते जायेंगे—इतना बढ़ायेंगे कि... किसी देश का कोई मनुष्य हमारे क्षेत्र के बाहर न रहेगा। हमें... साहस एवं स्वतंत्र वृत्ति को दिन-दिन बढ़ाना होगा। हम किसी... में सत्य को न छोड़ेंगे। हमें ऐसे स्थानों पर भी सच्ची बातें कहनी... जहाँ उन्हें कहने में कठिनाई या खतरा हो।"

• • • •

धर्मपुस्तक (Old Testament) का एमोस एक ... था जो अपना अधिकांश समय चुपचाप अपने गाँव में एकान्त... गाड़ पर काम करने में व्यतीत करता था। अपनी भेड़ों का ऊन बेचने के लिए कभी-कभी वह राजधानी में जाता था। वहाँ उसने जो ... बातें देखीं, उन्हें अपने शान्त ग्रामीण स्थल पर लौटकर भी वह भूल न सका। वह सोचता—धर्म, अहंकार और झूठ पादरियों के बहकावे में पड़कर मनुष्य मनुष्य पर कितना अत्याचार कर रहा है।

जब वह दूसरी बार समारिया गया तो उसके मन में ये भाव भरे हुए थे। वह शाही दरबार में घुस गया और जोर से बोला—"...

—नष्ट होजाओ—तुम जो गरीबों को चाँदी के टुकड़ों के लिए, जिनका आवश्यकता है उन्हें एक जोड़ा जूते के लिए, नगण्य चीज़ों के लिए बेच देते हो, तुम जो हाथीदाँत की गाड़ियों पर चलते हो, घड़ा शराब पी जाते हो और जिनकी जिह्वा भेड़ों के नन्हे कोमल बच्चों के खून और मांस से सनी है। तुम निर्दोष, दीन-हीन लोगों के मुखड़ों के ऊपर चढ़ कर, धूल के लिए, तुच्छ वस्तुओं के लिए हाँफ रहे हो।"*

हृदय की तह से निकलनेवाले इन भावमय शब्दों को सुनकर अधिकारी चकित होगये, पर उन्होंने बाधा न डाली। परन्तु एमोस के ओठों से निकलती हुई सत्य की धारा को रोकने के लिए अदालती पादरी (Court priest)) तेज़ी से सामने आया और बोला—"ओ पैगम्बर, यहाँसे तशरीफ़ लेजा। यहाँ इस तरह की बातें न कर। क्या तू नहीं जानता कि यह बादशाह की अदालत है, बादशाह का चर्च है! फिर देश तेरे ऐसे शब्द सुनने में समर्थ नहीं है।"

इस प्रकार सत्यवादी धनिकों एवं प्रतिष्ठितों के दल से बाहर कर दिया गया और ये धन एवं सत्ता के पुतले फिर उस मुसाहब पादरी के निर्जीव धर्मवचनों को सुनने के लिए रह गये जिसने परिस्थिति को सम्हालने के लिए 'शांति, शांति कहा जबकि वहां शान्ति का नाम न था।

---

* "Woe to you who sell the poor for silver and needy for a pair of shoes who loll on ivory coaches drinking wine by bucketfulls and eating the tenderest lands out of the flock. You pant after the dust on the head of the innocent pour!"

इसलिए उन्होंने विश्व-नागरिकता (world citizenship) के प्रश्न की ओर ध्यान दिया। 'सब देशों के निवासी भाई-भाई हैं। किसी सरकार की आधीनता में रहने या किसी देश में बसने से मानवीय आधार टूट नहीं सकता, यह इस आन्दोलन का उद्देश्य था। उन्होंने निश्चय किया कि यद्यपि हमारी समस्यायें बड़ी कठिन हैं पर कठिनाइयों का मुकाबला करेंगे और अपने अनुभव दूसरों को बतायेंगे। कम-से-कम हम अपने स्थान पर जनमत को जाग्रत कर देंगे और धीरे धीरे अपना क़दम बढ़ाते जायेंगे—इतना बढ़ायेंगे कि अन्त में किसी देश का कोई मनुष्य हमारे क्षेत्र के बाहर न रहेगा। हमें इस साहस एवं स्वतंत्र वृत्ति को दिन-दिन बढ़ाना होगा। हम किसी हालत में सत्य को न छोड़ेंगे। हमें ऐसे स्थानों पर भी सच्ची बातें कहनी होंगी जहाँ उन्हें कहने में कठिनाई या खतरा हो।"

• • • •

धर्मपुस्तक (Old Testament) का एमोस एक गरीब था जो अपना अधिकांश समय चुपचाप अपने गाँव में एकान्त चरागाह पर काम करने में व्यतीत करता था। अपनी भेड़ों का ऊन बेचने के लिए कभी-कभी वह राजधानी में जाता था। वहाँ उसने जो बुरी बातें देखीं, उन्हें अपने शान्त ग्रामीण स्थान पर लौटकर भी वह भूल न सका। वह सोचता—लोभ, अहंकार और झूठ पादरियों के बहकावे में पड़कर मनुष्य मनुष्य पर कितना अत्याचार कर रहा है।

जब वह दूसरी बार समारिया गया तो उसके मन में ये भाव भरे हुए थे। वह शाही भवन में घुस गया और ज़ोर से बोला—'इ

नरहोशाम—तुम जो गरीबों को चाँदी के टुकड़ों के लिए, जिनकी आवश्यकता है उन्हें एक जोड़ा जूते के लिए, नगण्य चीजों के लिए बेच देते हो, तुम जो हाथीदाँत की गाड़ियों पर चलते हो, घड़ों शराब पी जाते हो और जिनकी जिह्वा भेड़ों के नन्हे कोमल बच्चों के खून और मांस से सनी है। तुम निर्दोष, दीन-हीन लोगों के मुखड़ों के ऊपर चढ़ कर, धूल के लिए, तुच्छ वस्तुओं के लिए हाँफ रहे हो।"*

हृदय की तह से निकलनेवाले इन भावमय शब्दों को सुनकर अधिकारी चकित होगये, पर उन्होंने बाधा न डाली। परन्तु एमोस के ओठों से निकलती हुई सत्य की धारा को रोकने के लिए अदालती पादरी (Court priest)) तज़ी से सामने आया और बोला— "ओ पैगम्बर, यहाँसे सशरीर लेजा। यहाँ इस तरह की बातें न कर। क्या तू नहीं जानता कि यह बादशाह की अदालत है, बादशाह का चर्च है। फिर देश तेरे ऐसे शब्द सुनने में समर्थ नहीं है।"

इस प्रकार सत्यवादी धनिकों एवं प्रतिष्ठितों के दल से बाहर कर दिया गया और ये धन एवं सत्ता के पुतले फिर उस मुलायम पादरी के निर्जीव धर्मवचनों को सुनने के लिए रह गये जिसने परिस्थिति को सम्हालने के लिए 'शांति, शांति कहा जबकि वहां शान्ति का नाम न था।

---

* "Woe tc you who sell the poor for silver and needy for a pair of shoes who loll on ivory coaches drinking wine by bucketfulls and eating the tenderst lands out of the flock. You pant after the dust on the head of the innocent pour !'

एमोस स्वस्थ मन से अपने गाँव को लौट गया। उसके हृदय में शान्ति थी, क्योंकि उसने अपना संदेश सुना दिया था।

सच्चा संदेश सुनाने से अधिक तृप्तिकारी दूसरी बात नहीं है, क्योंकि इसके स्वागत की अपने ऊपर जिम्मेदारी नहीं है। इसमें मनुष्य अपनी सीमा से ऊपर उठ जाता है। यह ईश्वर का कार्य है। हमें तो इतना ही करना पड़ता है कि जिसे तुम सत्य जानते हो उसे दूसरों तक पहुँचा दो। अत्यन्त नम्रता और दीनतापूर्वक यह कार्य करना पड़ता है। हाँ, संदेश वाहक के हृदयमें बलवती आशा होती है कि सन्देश सुना जायगा। पर यदि उस समय इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो वह यह जानता है कि यह व्यर्थ न जायगा। उसके भीतर का सत्य एक-न-एक दिन उपदेशकर्त्ता के मन में अवश्य प्रकट होगा। शायद उस समय जब हम चिंतित या निराशाजनक अवस्था में हों, जब एक उसके चारों ओर रहनेवाली प्रशंसकों की भीड़ न रह गई हो, जब राज्य की शानदार मर्यादा, साम्राज्य के वैभव और सम्पत्ति के अहंकार से रिक्त होगया हो।

: ७ :

सीधा मोर्चा

लार्ड पासनबी, जिन्होंने लड़कपन में महारानी विक्टोरिया के महलों में काम किया था, अपना बहुत-सा समय और शक्ति इस कार्य में लगा रहे थे कि जनता गुप्त कूटनीतिज्ञता के प्रभाव से मुक्त होकर अन्तर्राष्ट्रीय बुद्धि से, समस्त संसार के कल्याण की भावना से, युद्ध के प्रश्न पर विचार करे। उधर लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके बड़े-बड़े व्यापारियों के एजेण्ट जनता में अविश्वास और भय फैला रहे थे और यह सब इसलिए कि फ़ौलाद, अस्त्र-शस्त्र तथा रासायनिक वस्तुयें बनानेवाले बड़े-बड़े कारखानों को ज्यादा फ़ायदा उठाने का मौका मिले—क्योंकि युद्ध की दशा में ही यह संभव था। इधर प्रत्येक देश में थोड़े-बहुत ऐसे आदमी बचे थे, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई थी, जिनमें शुभाकांक्षायें थीं और जिनपर कुत्सित प्रचार का कोई असर नहीं हुआ था। इन लोगों को भी कुछ व्यावहारिक कार्य करने की आवश्यकता थी। लार्ड पानसनबी ने ब्रिटिश जनता से अपील की कि वह स्पष्ट रूप से अपना मत प्रकट करदे। उन्होंने कहा—"हमारा कर्तव्य है कि हम अधिकारियों के मन में, इस सम्बन्ध में, कोई संदेह और द्विधा न रहने दें। इसलिए हमें मिलकर सरकार के

पास एक आवेदनपत्र ('मेमोरण्डम') इस आशय का भेजना चाहिए कि हम लोग, जिनके हस्ताक्षर नीचे हैं, किसी दशा में सम्राट् की सशस्त्र सेना में भरती न होंगे और न किसी भावी युद्ध में किसी प्रकार की सहायता करेंगे।" लार्ड पानसबी के प्रयत्न के फलस्वरूप एक बहुत बड़ा खरीता—आवेदनपत्र—सरकार के पास भेजा गया। इस पर हज़ारों आदमियों ने हस्ताक्षर किये थे।

• • • •

इंग्लैण्ड और अमेरिका में जगह जगह ('दि टेरिबुल मीक'*नामक) एक नाटक खेला गया। इस में कुल तीन पात्र थे—एक शीनकाफ़ बघारनेवाला सैनिक, आक्सफर्ड के उच्चारण में बोलनेवाला एक अफ़सर और एक किसान औरत जिसका लड़का अभी मार दिया गया है। दृश्य एक निर्जन पहाड़ी की चोटी का था। इस नाटक में युद्ध की बुराइयाँ प्रकाशित की गई थीं। इसका भी लोगों के मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

• • • •

पर इन प्रयत्नों के विरुद्ध समाचारपत्र तो जनता में निरंतर ज़हर फैला रहे थे। एक दिन शाम को, लंदन के समाचारपत्रों में, निम्नलिखित भय फैलानेवाले शीर्षक थे —

"नवीन वैज्ञानिक खोज।"

"मृत्यु किरण का आविष्कार।"

---

* The Terrible Meek by Raun kennedy Harper & Bros Newyork.

"युवक वैज्ञानिक का रहस्य।"

"इसके सामने कोई चीज़ टिक नहीं सकती।"

"प्राणघातक आविष्कार।"

"विदेशी शक्ति सबसे ज्यादा रुपया दे रही है।"

"कहीं सरकार की विश्वासघातपूर्ण असावधानी के कारण युवक वैज्ञानिक का यह नवीन अस्त्र ब्रिटेन के हाथ से निकल न जाय।"

कई दिनों तक लोगों में गहरी उत्तेजना फैली रही। युवक वैज्ञानिक की खूब चर्चा हुई। कारखाने में काम करनेवाली एक लड़की, एक दिन, अपने काम पर से, सीधे मेरे पास आई। मैं इस सुन्दर, कोमल बाल वाली नटखट लड़की को पहले से ही जानती थी। इस का नाम 'एमी मार्गिमर' था और यह 'बड़ा दिन' (क्रिसमस) के नाटकों में प्राय: माता का अभिनय करने के लिए चुनी जाती थी।

उसने पूछा—"आपने मृत्यु-किरण के सम्बन्ध में फैली सब बातों को सुना है?"

मैंने उत्तर दिया—"हां।"

"आप देख ही रही हैं कि सब आपस में इसलिए झगड़ रहे हैं कि कौन-सा देश इसे खरीद पाता है।"

मैंने उससे कहा कि मैंने ज्यादा बारीकी के साथ सब खबरों को नहीं पढ़ा है।

उसने कहा—"अच्छा, मैं जाकर उस युवक वैज्ञानिक से मिलना चाहती हूँ।"

इनमें नैतिक निःशस्त्रीकरण (moral disarmament) पर जोर दिया गया और लोगों से अनुरोध किया गया कि वे तथ्यों को, घटनाओं को, जिस रूप में वे हैं उसी रूप में देखें पर साथ ही मनमें श्रद्धा रक्खें—वह श्रद्धा जो पहाड़ों को भी हिला सकती है—और इस श्रद्धा से पारस्परिक सेवा एवं सहायता के भाव पर आश्रित समाज की रचना करें। जगह जगह सभाओंमें तथा अन्यत्र युद्ध की भावना निर्मूल करने तथा प्रस्ताव की गई बातों के सम्बन्ध में बहस एवं विचार किया गया। जन-साधारण में इसका जो विश्वास था वह इस आन्दोलनसे बढ़ गया तथा यह अनुभव हो गया कि साधारण जनता दिल से शान्ति चाहती है, युद्ध नहीं। कस्बों और गाँवों तथा बड़े-बड़े नगरों में सद्भाव का, निःशस्त्रीकरण का, शान्ति का, परस्पर सेवा और सहायता का संदेश सुनाया गया।

"यूरोप की तरुणाई इस संदेश को सुनने और उसका अनुसरण करने को तैयार है। वह काम करने, सेवा करने और बलिदान करने को तैयार है। वह निरर्थक युद्ध और निर्जीव शान्ति दोनों की समान रूप से उपेक्षा करती है। हिचकिचाहट एवं सन्देह से भरी कूटनीतिज्ञों की शान्ति पंगु है, वह युवकों के उत्कण्ठित हृदय को सन्तुष्ट करने में असमर्थ है। यदि इसने यही धीमी गति जारी रक्खी तो युवक हृदय उसी पुरानी युद्ध प्रणाली की चकाचौंध में फिर आ जायगा और उसे यह बात भूल जायगी कि इस प्रकार की विजय दूसरे अनगिनत युवकों की मृत्यु और विनाश की कीमत पर खरीदी जाती है। इसलिए युवकों से ही इस मामले में अपील की गई और उन्होंने दिल से विरुद्ध इस धर्म युद्ध की यात्रा का सन्देश दूर तक फैलाया।

"इस 'क्रूसेड'–इस धर्मयुद्ध यात्रा–में ऊपर-ऊपर कोई चमत्कारपूर्ण बात नहीं है। यह किसी सेना की नहीं, एक विचार, एक 'आइडिया' की यात्रा थी। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों-द्वारा इस विचार का जगह जगह प्रचार हुआ। कहीं फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेज, बेलजियन, डच स्त्रीपुरुषों का एक अन्तराष्ट्रीय दल इस काम में लगा हुआ है, कहीं आस-पास के गाँवों एवं कस्बों के लोग सभाओं में इसका सन्देश सुनने को एकत्र हुए हैं। कहीं एक युवक दल थककर विश्राम के लिए घर लौट आता है तब तुरन्त दूसरा दल उसकी जगह ले लेता है। जो भी दल हो, जो भी स्थान हो, सन्देश वही है। इस प्रकार लोगों को शांति का सन्देश सुनाते दल अन्त में, २ अप्रैल को जेनेवा पहुँचता है और पचास हजार आदमियों तक शान्ति की पुकार पहुँचती है।

"पर इस यात्रा की समाप्ति तो वस्तुतः उसका आरम्भ मात्र है। हम लोगों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि इस आरम्भ को कैसे कायम रक्खा और बढ़ाया तथा गहरा बनाया जा सकता है? ज्यों-ज्यों इस विचार का प्रचार बढ़ेगा, इसका विरोध भी होगा पर उसके लिए हम तैयार हैं। क्या इस कहानी के पाठक इसके आगे का अध्याय लिखने का अवसर शीघ्र लाने के कार्य में हमारी सहायता करेंगे?

"और जो कुछ हुआ यह निश्चय ही एक साहस का काम था। आज जब संसार को नवीन सन्तानों को राष्ट्रीयता के झण्डे के नीचे खड़ा किया जा रहा है, जब चारों ओर राजनैतिक असंतोष और अशांति का वातावरण है, और जब उत्साही शांति प्रचारकों में भी निराशा घर कर रही है, तब यूरोप के युवकों से शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए

धमधामा की पुकार करना साहस नहीं तो क्या है ? एक ऐसे आन्दो के लिए, जिसकी शक्ति उसकी संख्या में नहीं वरन् उसकी धारणा, उस विश्वास एवं त्याग में है, युवकों को सार्वजनिक सभाओं में निमंत्रित क बड़ा भारी साहस है। भला नेता, अगुआ लोग तो इसका स्वागत करें कहीं हमारी दशा आक्रमणों या सैनिकों से रहित दल की तरह तो नहीं होगी ये विचार यात्रा आरम्भ होने से पहले हमारे मन में आते थे।

"फिर आर्थिक दृष्टि से तो यह शुद्ध साहस का ही कार्य था। प्रच के लिए, विदेशी व्याख्याताओं के यात्रा-व्यय के लिए, रुपये कहाँ आयेंगे ? फिर इतना रुपया भी कहाँ था ? दूसरी फरवरी यानी निःशस्त्री सम्मेलन के उद्घाटन-दिवस का धमधामा शुरू होनेवाली थी पर २० दिसम्बर तक हमें इस बात का निश्चयपूर्वक पता नहीं था कि आन्दोलन के प्रेमी और सहायक विभिन्न देशों में, कतिपय आर्थि जिम्मेदारियाँ लेने को तैयार हैं। तीसरी जनवरी को कोलोन (Cologne) में एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति की बैठक हुई, जिसमें यह निश्चय हुआ कि हालैण्ड, बलजियम, फ्रांस, जर्मनी तथा स्वीज़रलैण्ड के बीच से गुजरनेवाले तीन या चार मुख्य रास्तों में यह यात्रा की जाय और ईस्टर में जनवा में एक बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन हो। अब कुल तीन सप्ताह का समय रह गया था और इस बीच सात सदस्य स्थानों पर होनेवाली सभाओं की तैयारी और प्रत्येक के लिए यात्री कार्यकर्ताओं को ढूंढ़ना था विभिन्न देशों में के व्याख्याताओं को ढूँढ निकालना था जिनको इस विषय का ठीक-ठीक ज्ञान हो और जिनका भाषा एवं श्रोताओं पर अधिकार हो। फिर उनको

ढूँढना ही नहीं था, ढूँढकर ठीक समय, ठीक स्थान पर पहुँचाना भी था। यात्रा आरंभ करने के पहले घूमकर यह भी देखना था कि तैयारी ठीक है या नहीं और तदनुकूल समाचारपत्रों को सूचनायें भेजनी थीं। ऐसी हालत में यह सब साहस नहीं तो क्या था? खैर हमें डा० विल्हेल्म साल्जबचेर (Dr Wilhelm Solzbachar) के रूप में एक बहुत अच्छे संगठनकर्ता मिल गये। इन्होंने व्याख्यानों द्वारा भी बड़ी सेवा की।

"फ्रांस में तीन सप्ताह की कड़ी तैयारी के बाद फ्रांस, हालैण्ड तथा जर्मनी में एकसाथ ही यह धर्मयुद्ध-यात्रा का काम आरंभ किया गया। सबसे लगभग १२० से भी ज्यादा स्थानों पर सभायें की गईं और लगभग पचास हजार आदमियों तक संदेश पहुँचाया गया। ४५ विदेशी व्याख्याताओं का विनिमय और उपयोग किया गया। विभिन्न भाषाओं में छापकर एक लाख से भी अधिक पुस्तिकायें बाँटी गईं। कार्यक्रम ठीक-ठीक पूरा हुआ और ठीक समय पर हम लोग जेनेवा पहुँचे और हमने अपना प्रार्थनापत्र (Petition) निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के अध्यक्ष के पास तक पहुँचा दिया। पर इस यात्रा का जो इससे भी महत्वपूर्ण परिणाम हुआ वह यह था कि बिना किसी विशेष तैयारी और प्रयत्न के, अपने आप, शांति का कार्य करने के लिए महायुद्ध-सीमा के दोनों ओर कार्यकर्ताओं का एक बड़ा दल निकल आया जिससे यूरोप के शांति आंदोलन के अग्रगामी होने की आशा की जा सकती है।" *

ये उद्धरण 'अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री संघ' (International Fellowship of Reconciliation) की आज्ञा से उसके द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका 'एक्रास यूरोप' (Across Europe by Lilian Stevenson) से दिये गये हैं।

इस यात्रा में भाग लेनेवाले कार्यकर्ताओं में वह जर्मन रसायनिक भी था जिसका ज़िक्र दूसरे अध्याय में किया जा चुका है। उसके मुख पर यद्यपि उन दुःखद स्मृतियों की छाया थी, किन्तु वह ऐसा व्याख्याता था कि असन्त अशांत समूह को भी अपनी वाणी से काबू में कर लेता था। लोग मंत्र-मुग्ध की भांति उसका व्याख्यान सुनते थे। कभी-कभी वह घण्टों तक बोलता था। एक दिन उसे मालूम पड़ा कि हम उस नगर के पास आ पहुँचे हैं जिस पर, महायुद्ध-काल में, उसकी सैनिक टुकड़ी ने आक्रमण किया था और उस सिलसिले में मनुष्यता के नाम को लज्जित करनेवाले अनेक काम किए थे। उस नगर में उसने बड़े ही भारी हृदय के साथ प्रवेश किया। सभा भवन पूरी तरह भर गया और उसके सामने की पाँती भरी थी। उसने सबके सामने अपना दिल खोल दिया। "किस प्रकार इसी स्थान पर महीनों तक अपनी सेना के 'गैस'-पीड़ित सैनिकों की सेवा में मैं लगा रहा और उन दिनों मेरे हृदय में किस तरह प्रतिपक्षी के दुःखों एवं पीड़ाओं की कल्पना से एक तूफान मचा रहता; किस प्रकार मैं सोचा करता कि प्रतिपक्ष के कष्टों के लिए मैं भी जिम्मेदार हूँ क्योंकि मेरी गैस का लाभ उठाकर हमारे दल के सारे सैनिक अभय होकर फिर मरने मारने के लिए युद्ध-क्षेत्र में जाते हैं। इसी समय मैंने निश्चय किया था कि यदि मौका मिला तो मैं नगर में जाकर यहां लोगों से अपने अपराधों के लिए क्षमा की भीख माँगूंगा। उस समय यह इच्छा पूरी न हो सकी। आज शांति आन्दोलन ने वह दिन दिखाया कि मैं आपके बीच खड़ा हूँ और आपसे क्षमा चाहता हूँ।"—इस आशय के शब्द उसने कहे।

जब उसका व्याख्यान समाप्त हुआ तो हाल के पिछले भाग में कुछ हलचल दिखाई पड़ी। शीघ्र ही वहाँ से दो आदमी उठे। ये युद्ध में घायल हुए दो भूतपूर्व सैनिक अफसर थे। सभा के बीच के रास्ते को पार करके इस व्याख्याता—इस भूतपूर्व जर्मन अफसर के पास आये और उससे हाथ मिलाया। फिर उनमें से एक स्पष्ट स्वर में बोला, "युद्ध-भूमि में ऐसी ही अशांति मेरे मन में भी चल रही थी। मुझे अपने से सदा असंतोष रहता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं व्याख्याता नहीं हूँ और हृदय में जिस सूनेपन, जिस पीड़ा का अनुभव मैंने किया उसे आजतक मैं अच्छी तरह किसीपर प्रकट न कर सका। आज, यह व्याख्यान सुनने के पहले तक, मुझे जैसे अनुभव हुए थे, उनका बयान किसी के मुँह से मैंने नहीं सुना था। आज मैं कहता हूँ कि जर्मन अफसर (व्याख्याता) ने जो कुछ अपने विषय में कहा है वही मुझपर भी लागू होता है। इससे तो यही प्रकट होता है कि फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज, हम सब लोग तत्त्वतः एक ही हैं। भेदभाव बनावटी है।"*

• • • •

इस आंदोलन में मनहूसियत नहीं थी। इसमें शामिल होनेवालों के हृदय में वह आनन्द था जो प्रत्येक अच्छे काम में आत्मा के रम जाने से प्राप्त होता है। यात्री दल के युवक हँसते, नाचते, कूदते और गाते हुए चलते थे और जो कुछ आपड़े उसीको आनन्द का साधन बना लेते थे। कहीं अलाव पर सो रहे हैं कहीं लम्बे रास्ते में चलते

* युवक शांति-आंदोलन (Youth Peace Campa[illegible]) के बारे में और हाल जानने के लिए देखिए परिशिष्ट नं० ६।

चमकते नाचने लगते हैं। इनमें कोई-कोई तो ऐसे थे जिन्होंने जीवन में कभी किसी सार्वजनिक सभा में व्याख्यान भी न दिया था, परन्तु ... का ढोंगी पीटनेवाला 'अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्याता' के रूप में उनकी प्रशंसा करता और कभी बोलने का अभ्यास न होने पर भी धाराप्रवाह बहुत अच्छा बोले। एक ने प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (निःशस्त्रीकरण सम्मेलन) पर टीका करते हुए कहा—यह "निःशस्त्रीकरण सम्मेलन उस सम्मेलन के समान है जिसका उद्देश्य तो निरामिष आहार (शाक भाजी) का प्रचार करना हो किन्तु जिसके प्रतिनिधि कसाई अथवा उनके सहकारी हों।"

श्री आर्थर हेंडरसन* से इन लोगों ने कहा—"हमें आशा है कि अभी तक आप लोगों को जिस दुर्भाग्य का अनुभव करना पड़ा है उससे भविष्य में आपको अच्छा अनुभव होगा; किन्तु यदि आप सब ऐसे असफल रहे, जैसी कि संभावना है, तो हमको कोई विशेष निराशा न होगी। बूढ़े आदमी चाहे जो करें, हम युवक इस मोह को, इस शांति की भावना को स्वयं आगे बढ़ाने के लिए कुछ उठा न रखेंगे।" श्री हेंडरसन को इन उत्साह-वर्द्धक शब्दों को सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

• • • •

* श्री हेंडरसन इंग्लैण्ड की मजदूर पार्टी के एक महान नेता थे। निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन में यह आरम्भ से ही विशेष दिलचस्पी लेते रहे और बाद में उसके अध्यक्ष भी हुए। यह मजदूर-सरकार के समय ब्रिटेन के परराष्ट्र-सचिव भी थे। अपनी सेवाओं के लिए यह प्रसिद्ध थे और इन्हें शान्ति का नोबेल पुरस्कार भी मिला था। गत वर्ष इनकी मृत्यु हो गई है।

जब मनुष्य की ईश्वर में श्रद्धा और अपने काय म दृढ़ आस्था होती है तब अपनेआप उसमें एक प्रकार की निश्चिंतता और निर्भयता का जन्म होता है। अफ्रीका की एक घटना है। एक धर्मोपदेशक को ज्वर आगया। उस समय वह उस देश क एक ऐसे भाग से गुज़र रहा था जहाँ आदमी का माँस खानेवाली जंगली जातियाँ रहती हैं। ज्वर आने से उसे वहीं रुकना पड़ा। उसे ऐसे रास्ते से घूमकर जाना था जिसमें यह प्रदेश न पड़ता पर सम्भवतः वह ऐसी अवस्था में था जब किसी जगह चुपचाप पड़ा रहने के सिवा कुछ अच्छा नहीं लगता है।

उस प्रदेश के सरदार को जब मालूम हुआ तो वह आया और अपने संकेत द्वारा उसे अपनी सीमा से बाहर चले जाने को कहा। सरदार को भय था कि यहाँ रहने पर उसकी जंगली प्रजा कहीं आगन्तुक पर आक्रमण करके उसे मार न डाले। इसलिए वह उसे होशियार करने आया था। उपदेशक को उसकी भाव-भंगी और संकेतों से मालूम हो गया कि यहाँ रहने में भय है परन्तु उसकी तबीयत इतनी खराब हो रही थी कि सरदार से बात करते समय भी वह ज्यादा देर तक खड़ा न रह सका, चट्टान के एक टुकड़े पर बैठ गया और उसकी ओर देखता भी रहा। जंगली सरदार के चेहरे पर उसके कथन की सचाई इतनी स्पष्टता से प्रकट हो रही थी कि धर्मोपदेशक खिलखिलाकर हँस पड़ा। एक बार हँसी जो आई तो मानों सोता फूट पड़ा अट्टहास रुकता ही न था। जैसे आँधी में वृक्ष हिलता है वैसे ही वह हँसी में बेबस होकर झूम रहा था। सरदार ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

ऐसे खतरे के वक्त यह हँसता है ! जब प्राण-भय उपस्थित है तब यह खिलखिला रहा है ! यह—यह तो कोई अजीब आदमी है ! सनकी ! यह हँसी के शिकार उस धर्मोपदेशक की ओर कुछ देर तो इस दृष्टि से देखता रहा जो कह रही थी कि जो कुछ तुम ... हो वह ठीक नहीं है; पर अंत में उसपर उपदेशक की अवस्था एवं निर्मलता का कुछ ऐसा असर हुआ कि हँसी की छूत उसे भी लग गई और वह भी खिलखिला पड़ा।

उसके बाद उसने रोगी (उपदेशक) को सहारा दिया। वह उसे अपने सेवकों के द्वारा सुरक्षित स्थान पर लेगया, वहाँ उसकी सेवा-सुश्रूषा का प्रबन्ध कर दिया और तबतक उसकी देखभाल करता रहा जबतक कि वह रोग-मुक्त होकर चला नहीं गया।

·८·

बीज का गुप्त विकास

फौलाद तथा जहाजों के बड़े-बड़े व्यापारी सदा युद्ध-वृत्ति को जाग्रत किया करते हैं। यही नहीं, वे किसी ऐसे प्रयत्न को सफल होते नहीं देख सकते जिससे युद्ध की सम्भावना का अन्त हमेशा हो। वे सदा जातियों और राष्ट्रों को लड़ाने के फेर में रहते हैं। इसीमें उनका लाभ है।

ऐसे ही स्वार्थी व्यापारियों के एक गुट ने विलियम बी॰ शीरर नाम के एक आदमी को इस काम के लिए नियुक्त किया कि वह वाशिंगटन के नौसेना-सम्मेलन (Naval Conference) में शरीक होकर विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों में (जो नौसेना घटाने के प्रस्ताव पर विचार करने को एकत्र हुए थे) परस्पर अविश्वास और संदेह के बीज बोदे। उसका मुख्य काम ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र को मिलजुलकर कार्य करने से विरत करना था। उसको अपने षड्यंत्रों में सफलता मिली। व्यापारियों के गुट ने, बदले में, उसकी मुट्ठी खूब गरम की परन्तु उसके कथनानुसार जितनी रकम की उसे आशा दिलाई गई थी उतनी न दी गई। आशानुकूल रकम न मिलने से वह नाराज होगया और उसने अदालत में मुकदमा चलाया। इस मुकदमे के सिलसिले में सब बातें

प्रकट हुई तो जनता दंग रह गई। यदि मुकदमा न चलता और इ का काफ़ी रकम मिल गई होती तो सारी बातें छिपी रहती और कल जान सकती कि परदे के भीतर-भीतर इन स्वार्थ-लोलुप व्यापारियों कैसे-कैसे हथकण्डे चला करते हैं।

इस मुकदमे के विवरण तथा अन्य घटनाओं को लेकर ए संस्था (Union of Democratic Control) ने 'दि सीक्रेट इंटर नेशनल' नाम की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तिका प्रकाशित की है। उस लेकर यहाँ कुछ अवतरण दिये जाते हैं।

'शीरर केस'

शस्त्रों का व्यापार करनेवाली कम्पनियाँ जेनेवा में निःशस्त्री-करण-सम्मेलन को असफल बनाने के अर्थ चतुर प्रचारकों की मुट्ठी गरम किया करती हैं।

श्री शीरर एक अमेरिकन प्रचारक (Publicist) थ। इनका जीवन बड़ा घटनापूर्ण और बहुरंगी था। कभी इन्होंने किसी जलसेना के पक्ष में सिनेट के सदस्यों को प्रभावित किया कभी 'रात्रि गोष्ठियों ('नाइट क्लबों') तथा नाटक-मंडलियों की स्थापना में भाग लिया। १९२९ ई० में शीरर ने अमेरिका की जहाज बनानेवाली सबसे बड़ी कम्पनियों (बेथलहम शिप बिल्डिंग कार्पोरेशन, न्यूपोर्ट न्यूज़-शिप बिल्डिंग एण्ड ड्राई डाक कम्पनी तथा अमेरिकन ब्राउन बो वेरी कार्पोरेशन) पर २,५५,६५५ डालर के लिए दावा किया। उसका कहना था कि '१९२७ के जेनेवा नौसेना-सम्मेलन में निःशस्त्रीकरण को असफल करने के लिए मुझे इन कम्पनियों ने नियुक्त किया था। मैंने सफलता

[र्वक इसका काम किया। मुझे केवल ५१,२३० डालर दिये गये हैं। पर मैंने न केवल निःशस्त्रीकरण के निश्चय को असफल किया वरन् प्रभाव डालकर इन कम्पनियों को लड़ाकू जहाजों के आर्डर भी दिलवाये। यदि सम्मेलन सफल होगया होता तो ये जहाज आज अटलांटिक महासागर में न दिखाई देते। इसलिए मुझे बतौर इनाम २,५५,६५५ डालर और मिलने चाहिएँ।'

सितम्बर १६२६ में राष्ट्रपति हूवर ने एटर्नीजेनरल को इस मामले की जाँच करने की आज्ञा दी। तब बेथलहम शिपबिल्डिंग कार्पोरेशन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री युगीन ग्रेस ने राष्ट्रपति को इस मामले का खुलासा करते हुए लिखा कि 'मैंने और मेरी कम्पनी की सहकारी कम्पनी बेथलहम स्टील कार्पोरेशन के संचालक मण्डल के सभापति श्री सी एम॰ श्वार्ज (C. M Schwartz) ने श्री शीरर को 'निरीक्षक' (Observer) के रूप में नियुक्त किया था और इस काम के लिए २५,००० डालर फीस तय हुई थी।'

इस 'निरीक्षक' (Observer) शीरर के क्या-क्या काम थे इसका वर्णन एक दूसरी पुस्तक* में किया गया है। इस पुस्तक में सम्पूर्ण शीरर केस का विश्लेषण किया गया है। उसके आधार पर चन्द बातें यहाँ दी जाती हैं —

१ जेनेवा-सम्मेलन में 'निरीक्षक' के रूप में उपस्थिति। पता नहीं श्री शीरर एवं इन कम्पनियों के बीच जो 'जबानी कन्ट्रैक्ट' हुआ था

---

*The Navy Defence or Portent, by Charles A Beard (Harper Bros)

और जिसके अनुसार इस आदमी को भाड़े पर रक्खा गया था, उसकी शर्तें क्या थीं। पर इतना तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ब्रिटेन के विरुद्ध इसने ज़ोर शोर से प्रचार किया है, निःशस्त्रीकरण को असफल बनाने में जी तोड़ परिश्रम किया है, नौसेना के अफ़सरों एवं अमेरिकन संवाददाताओं को बड़ी-बड़ी दावतें दी हैं और स्वयं उसके कथनानुसार 'सैनिक एवं व्यापारिक दोनों प्रकार के जहाजों के उद्योग' बढ़ाने का प्रयत्न किया है। इसके अलावा शांति आंदोलन के अमेरिकन नेताओं को बदनाम करनेवाला साहित्य इसने दूर-दूर तक वितरित किया है और 'न्यूयार्क टाइम्स' इत्यादि अमेरिका के प्रसिद्ध समाचार पत्रों द्वारा, समाचारों की आड़ में, अपने पक्ष में खूब प्रचार कराया है।

२ कांग्रेस * के सामने पेश सैनिक एवं व्यापारिक जहाजी बिलों के पक्ष में प्रचार करने के लिए वाशिंगटन में एक 'लाबी' ‡ चलाना और उसके द्वारा बनने वाले इन कानूनों पर प्रभाव डालना।

३ अखबारों, पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के लिए राजनैतिक लेख तैयार कराना।

४ देशप्रेम-प्रचारक सभाओं तथा अन्य नागरिक संस्थाओं में व्याख्यान कराना।

---

* संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की पार्लमेंट।

‡ पार्लमेंटों एवं व्यवस्थापक सभाओं में जो बरामदे होते हैं एवं जिनमें सदस्य तथा अन्य लोग बिलों तथा अन्य महत्वपूर्ण राजनैतिक विषयों पर चर्चा करते हैं उसे 'लाबी' कहते हैं। यहां अर्थ विचार, चर्चा एवं अध्ययन के स्थान से है।

५ शिष्टमंडलों तथा अन्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति इन 'विशेषज्ञों' की करतूतों का पता नहीं।

६ अमेरिकन लीजियन, व्यापार-संघों तथा इसी प्रकार की अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं एवं संगठनों के सामने व्याख्यान।

यदि श्री शीरर ने लोभ में पड़कर यह मुकदमा न चलाया होता तो जन-साधारण को कभी पता न चलता कि शस्त्रास्त्रों की बिक्री बढ़ाने के लिए शस्त्रों के बड़े-बड़े व्यापारी कैसे-कैसे हथकण्डे रचते हैं। निःशस्त्रीकरण की असफलता के कारण जिन शत-शत आदमियों को कष्ट भोगना पड़ता है तथा युद्ध-भूमि में प्राण देने पड़ते हैं वे तो इन हथकण्डों को न समझनेवाले जन-साधारण से आते हैं। यहाँ यह मनोरंजक बात ध्यान में रखनेलायक है कि १९३२ के निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के समय भी श्री शीरर जेनेवा में दिखाई पड़े थे।*

° • • •

लंदन के जन-साधारण में मटिल्डा रीड † की जीवन-कथा का भी खूब प्रचार हुआ। इसके कारण, 'हिंसा की शांति हिंसा से नहीं हो

* ब्रिटेन में भी इसी प्रकार का एक केस हुआ था। उसकी जानकारी के लिए देखिए परिशिष्ट ७।

† 'अन्तर्राष्ट्रीय मैत्रीवर्द्धक संघ' (International fellowship of Reconciliation) की एक स्थापक ('आर्गेनाइजर') सदस्या। अधिक जानकारी के लिए 'मटिल्डा रीड' (Matilda Wrede) नामक पुस्तक पढ़िए। मिलने का पता —Friend Book Shop Euston Road, London.

सकती', इस विश्वास को और बल मिला। मग्‍डिला का जन्म जि में हुआ था। उसके पिता जेल के गवर्नर थे, इसलिए जेल के पास ही उसका बालपन बीता। इसके कारण वह कैदियों की भलाई के में दिलचस्पी लेने लगी। उसने कोठरियों (सेलों) में रहनेवाले कै की देखभाल करना अपना कर्तव्य बना लिया था और उनके दु के लिए, अपने दिल में, अपनेको जिम्मेदार समझने लगी थी। एक-एक कैदी से परिचित थी, और इस सहानुभूति एवं सेवा का असर हुआ कि सब उसको मानने लगे। डाक्टर, वार्डर और अ सब—सम्पूर्ण जेलवासी—उसपर एकसमान विश्वास रखते और उ बात मानते थे। यहाँतक कि जब कोई झगड़ा खड़ा होता तो लोगों शांत करने के लिए उसे ही बुलाया जाता। गुस्से से पागल अपराधी जब अपनी कोठियों को बन्द कर लेते और पास आने को मार डालने की धमकी देते थे, जब उनकी आँखों में खून ना होता था, तब भी यह दुबली-पतली लड़की उनके किवाड़ों को। शांति थपथपाती और अपने लिए किवाड़ खुलवा लेती। खूनी-से खूनी भ भी उसके सामने अपनेको असहाय अनुभव करता था। अकेली, किसी प्रकार के भय या चिन्ता के बह उन लोगों के बीच बैठी उनको समझाती, शांत करती। उसने उनमें अपराध की, पशुता वृत्तियों की जगह आशा और आत्म-गौरव का भाव जगा दिया। जीवन में उसके मित्र और साथी जेल से छूटे हुए लोग ही थे। उ में काम करते-करते उसने अपना जीवन बिता दिया।

• • •

इसी प्रकार स्वीज़रलैण्ड में पीरी सेरी सल्त इत्यादि ने अनिवार्य सैनिक सेवा के विरुद्ध लगातार १२ वर्ष तक कठोर परिश्रम करके जन-मत तैयार किया और व्यवस्थापक सभा के एक-चौथाई सदस्यों को इस बात पर राज़ी किया कि व अनिवार्य सैनिक सेवा की जगह राष्ट्र के विधायक कार्यक्रम म सहायता एवं सेवा लेने के बिल का समर्थन करेंगे।

• ० ० ०

हर साल जून-जुलाई के महीने में, प्राय शनिवार के दिन, हैण्डन के वायुयान स्टेशन (एयर ड्राम) पर अंग्रेज़ी शाही वायु-सेना (रिन्गिल रायल एयर फ़ोर्स) का विराट प्रदर्शन होता था और लगभग ढाई-तीन लाख आदमी उसे देखने को जमा होते थे। साल में सैर का शायद यह सबसे लोकप्रिय दिवस होता था। मनोरंजन और सैर का सस्ता प्रोग्राम था! एक शिलिंग (उस समय लगभग १२ आने) सारे दिन का तमाशा। फिर बारीक कटी हुई मुलायम दूब का दूर तक विस्तृत हरा मैदान, जिसपर स्थान-स्थान पर एक-एक कुटुम्ब के लोग आराम से बैठ सकते थे और सब अपनी अपनी रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार समय बिताते थे। पुत्र और पति नई-नई मशीनों को देखते तो मातायें एवं स्त्रियाँ नरम दूब पर बैठकर पढ़ती, बुनाई करतीं और घर से लाया हुआ भोजन परसकर सब मज़े से खाते। बच्चों के लिए तो सभी जगह आनन्द की, कुतूहल की सामग्री होती थी। कहीं बैंड है, कहीं रंगीन गुब्बारे नीलाकाश में उड़ते हैं, कहीं पसीने से तर आदमी 'लाउड स्पीकरों' में सूचनायें पढ़ते हैं। यह सब बच्चों के लिए तमाशे और आनन्द की सामग्री थी। इस भीड़ में अच्छे स्वभाव के लोग होते थे

जो किसीका बुरा नहीं चाहते, पर अधिकांश के मन में इस बात का अर्थ भाव या विचार ही नहीं उठता था कि इन सुन्दर चमकते हुए हवाई जहाज़ों के व्यवस्थित प्रदर्शन के पीछे क्या बात छिपी हुई है! कार्यक्रम इस तरह रक्खा जाता था कि हरेक बात निर्दोष और स्वच्छ मालूम होती। छुट्टी और सैल के दिन लन्दनवासी किसी बात को तह तक जाने की विशेष चेष्टा नहीं करते। उस दिन वे हलके दिल से आनन्द के साथ, समय काटना पसन्द करते हैं। फिर सम्पूर्ण कार्यक्रम के बीच केवल अन्तिम भाग ही ऐसा होता था जिसमें प्रदर्शन का गूढ़ एवं व्यावहारिक उद्देश्य छिपा था। यह दृश्य तब दिखाया जाता था जब लोग घर लौटने की तैयारी करते होते थे। इसमें यह बात दिखाई जाती थी कि दुनिया के एक सुदूर एवं बेपहचाने भाग में विद्रोह को शान्त करने, ज़बर्दस्ती कैद किये आदमियों को छुड़ाने या अत्याचार का दमन करने का काम शाही वायु सेना (आर० ए० एफ०—रायल एयर फ़ोर्स) किस तरह करती है। वे ऐसे ही अवसरों पर वे सब काम करते हैं जिनके लिए उनपर इतना रुपया खर्च किया जाता है। वे बम गिराकर गाँव-के-गाँव नष्ट कर देते हैं; या किले और अपराधी की झोंपड़ी को तहस-नहस कर डालते हैं। यद्यपि इन दृश्यों में मुश्किल से ५ मिनट का समय लगता होगा, पर जब दर्शक देखते हैं कि एक कृत्रिम कैम्प-कूप गगनचुम्बी लपटों और ऊँची धूम्रजटाओं के साथ भभक उठता है अथवा सारा गाँव उजड़ गया है पर उस ध्वंस में यूरोपियन ईसाइयों का गिरजाघर खड़ा है, तो उनकी दिलचस्पी उभर बहुत बढ़ जाती है।

दस-बारह वर्ष पहले एक भूतपूर्व इस्लामी कैदी रोज़ा हायहाउस का ध्यान ऐसे ही एक प्रदर्शन की ओर गया जो प्राचीन काल में रोमन राजा लोग अपने तथा लोगों के मनोरंजन के लिए कराते थे। इनमें पहलवान एक-दूसरे से लड़ते और अपने प्रतिद्वंद्वी का क़त्ल कर डालते थे। मनोरंजन का ऐसा पाशविक रूप देखकर ईश्वर में श्रद्धा रखनेवाले एक व्यक्ति को बड़ा दुःख हुआ। उसने इस प्रश्न पर काफ़ी विचार किया, किन्तु उसके हृदय का दुःख बढ़ता ही गया और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रभु ने मानव-प्रकृति को आनन्द ग्रहण करने की जो शक्ति प्रदान की है उसका यह बिलकुल ही उलटा प्रयोग है। उसने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने की ठानी। वह स्वयं समारोह के स्थान पर गया, अपनी जगह पर बैठ गया और भगवान के चरणों में आत्मार्पण करके उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। जब अखाड़े में मानवी रक्त की धारा बह चली और पचास हज़ार दर्शकों की हर्षध्वनि से आकाश गूँज गया, तो अपनी जगह पर खड़े होकर उसने लोगों से अपील की कि ज़रा सोचें कि यह क्या हो रहा है, और ऐसे पाशविक खेल को बन्द करदें। पर उस नशे में उसकी कौन सुनता ? लोगों ने उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। पर अन्तःकरण में बात चुभ गई थी। उसके शब्दों ने दुनिया को बेचैन कर दिया उसके विचार फैल गये। फलतः यह खेल आगे के लिए बन्द होगया।

रोज़ा ने जब इसपर विचार किया तो वह इस निश्चय पर पहुँची कि हेंडन का यह वायुयानों का वार्षिक प्रदर्शन लोगों में इस प्रकार की अमानुषिक वृत्तियों को जाग्रत करता है जो दूसरों के विनाश के दृश्य

देखकर तृप्त होती हैं। इसलिए रोजा स्वयं हेण्डन गई और इस नाम पर उसने लोगों की सद्भावनाओं को जाग्रत करने की चेष्टा की। एक युवक अफ़सर उसे मैदान से बाहर कर देने के लिए आया और उसने रास्ते में स्वीकार किया कि 'मेरी राय भी तुमसे मिलती-जुलती है' किन्तु 'क्या किया जाय? शाही वायुसेना का जीवन मुझे अनुकूल पड़ा है और अपने कुटुम्ब का पोषण करने की इसके सिवाय दूसरी युक्ति मेरे पास नहीं है।'

परन्तु रोजा के इस एकान्त प्रयास का असर दूसरे आदमियों पर भी हुआ और एक विचार के बहुतेरे लोगों ने एकत्र होकर अगले वर्ष के प्रदर्शन के लिए कार्यक्रम बनाना शुरू कर दिया। एक शिशु शाला (Nursury School) की संचालिका ने बताया कि प्रदर्शन के कुछ दिन पहले मेरे नन्हे बच्चों ने, जिनकी आयु ३-४ वर्ष की है, आकाश में उड़ते हुए हवाई जहाजों को देखा था। संभवतः वे जहाज हेण्डन जाते थे। वे तब-तक इन जहाजों को देखते रहे जबतक कि वह उनकी निगाह से ओझल नहीं हो गये। तब सबसे बड़ा बच्चा दूसरों से बोला—"बड़ा होने पर मैं भी ऐसा ही बनूँगा। हवा में से मैं तुम सबपर बम गिराऊँगा।" नन्हे नन्हे बच्चों के मन पर इन प्रदर्शनों का कैसा विषैला प्रभाव होता है, यह बात इस उदाहरण से बहुत स्पष्ट हो जाती है।

प्रति वर्ष लन्दन की म्युनिसिपल शालाओं के चुने हुए विद्यार्थियों को हेण्डन में मुफ़्त में खेल दिखाया जाता था। सार्वजनिक प्रदर्शन के एक दिन पहले उनके सामने खेल का रिहर्सल किया जाता था। यह सब किसलिए? उनमें युद्ध की मनोवृत्ति जाग्रत करने के लिए या अविवेकपूर्ण

दयालुता के कारण ! जो भी हो, पर स्थानीय अधिकारियों के पास अनेक अभिभावकों ने इस पद्धति का विरोध करते हुए पत्र भेजने शुरू किये कि बालकों के मन पर ऐसे प्रदर्शनों का बड़ा बुरा एवं विषैला प्रभाव पड़ता है इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए।

जब किसी देश के हवाई जहाज कहीं बम गिराते हैं तो पीड़ितों के कण्ठ से जो करुण हाहाकार एवं आर्तनाद उठता है उसका ब्रोडकास्ट रेकार्ड दोनों दिन के प्रदर्शनों में नहीं सुनाया जाता था क्योंकि ऐसा करने का उलटा असर होता और दर्शकों की सहानुभूति पीड़ितों के पक्ष में होती। पाँच-छः वर्ष पहले जब शंघाई पर बम गिराये गये थे तो कुछ उत्साही व्यक्तियों ने उस समय के आर्तनाद का रेडियो रेकार्ड बनाया था। इसके सुनने से मालूम होता है कि पीड़ित माताओं एवं बच्चों की करुण चीत्कारसे किस प्रकार वातावरण कम्पित होता है। वातावरण को ऐसे हाहाकार से पूर्ण करने में सहायक होना मानव प्रकृति की श्रेष्ठ मर्यादा का अपमान करना एवं विनाश करना है। ईश्वर इसे कभी पसन्द नहीं करेगा।

लाखों वर्ष से शुद्ध वायु प्राणिमात्र के लिए ईश्वर की एक श्रेष्ठ देन रही है। पर आज ऐसा समय आया है कि हमारे अहंकारमय परिश्रम ने इसे विजय कर लिया है और अब हम इसे एक अभिशाप तथा मारक भय एवं विनाशकारी पीड़ा का एक साधन बना देने पर तुले हुए हैं। हाय!

इसलिए, रोम के उदाहरण से अनुप्राणित हो, इंग्लैण्ड के प्रत्येक भाग से आ-आकर लोग हर साल हेण्डन में एकत्र होने लगे।

इनके साथ परचे, नोटिस, पोस्टर सब कुछ होते थे। इनमें अध्यापक, बेकार, पादरी, भूतपूर्व अफसर, मजूर स्त्रियाँ और कारखाने के मिस्त्री सभी तरह के लोग होते थे। वे प्रदर्शिनी के प्रवेश-द्वार के बाहर घूम-घूमकर प्रचार करते और भीतर जाकर या दर्शकों से अपील करते कि क्या ऐसे भयानक और अमानुषिक कार्यों में सहायता देना ईसा के प्रेम धर्म में विश्वास रखनेवाले (ईसाइयों) के लिए उचित है! जब खेल खतम होजाता और लोग घर को लौटते तो भीड़ इतनी ज्यादा होती थी कि कोई तेजी से चल न सकता था। कछुए की चाल से वह भीड़ स्टेशन की ओर बढ़ती थी। तब ये लोग लोगों को अपने परचे और नोटिस बाँटते थे। कुछ दीवारों पर या स्टूल पर खड़े होजाते और व्याख्यान देने लगते थे। लोग जगह-जगह खड़े होकर बड़े चाव से व्याख्यान सुनते। कहीं कोई भूतपूर्व सैनिक खड़ा होजाता और युद्ध करके युद्ध को नष्ट करने के कार्य में प्राण गँवानेवाले अपने मृत साथियों के नाम पर लोगों से अपील करता। वह युवकों से कहता—भाई, इस प्रश्न पर अच्छी तरह विचार करो। अभी जो खेल तुम देखकर आये हो, युद्ध कोई वैसी मनोरंजक और आसान बात नहीं है। इसके बाद वह अपने अनुभवों का वर्णन करता और युद्ध की भयानकता का नकशा लोगों की आँखों के सामने खड़ा कर देता। वह कहता—"हम लोग इंग्लैंड की राष्ट्रीय आय का लगभग ७५ प्रतिशत भावी युद्धों की तैयारी के लिए खर्च कर रहे हैं। क्या आप चाहते हैं कि शस्त्रालयों के भागीदार—शस्त्रों का व्यापार करनेवाले—दिन-दिन धनी हों और श्रमिक, मेहनत करके रोटी कमानेवाले, दिन-दिन गरीब होते जायँ!"

एक सभ्य बंगाली सज्जन, जो भारतीय सिविल सर्विस में मजिस्ट्रेट थे, अपनी पत्नी के साथ, गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए इंग्लैण्ड आये हुए थे। वह भी हैंपस्टेड पहुँचे। जब उन्होंने वहाँकी अपार भीड़ और ऊपर से बम गिरानेवाले हवाई जहाजों की करतूत देखी तो बड़े निराश हुए। वह सज्जन बोले—"हम लोग पश्चिम के इन आदमियों को कभी न समझ सकेंगे।" बाद में उन्होंने 'अहिंसा'-दल के आदमियों का कार्य देखा जो कड़ी धूप में अपने अपने ढंग से, बड़ी लगन के साथ, लोगों में युद्ध के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। यह सब देखकर उनकी पत्नी ने कहा—"हाँ, यह देखो। कम-से कम इनमें कुछ ऐसे भी हैं जो इस विषय में हमारी ही तरह महसूस करते हैं।"

इस तरह हैंपस्टेड जाकर युद्ध के विरुद्ध अपने भाव प्रकट करना और यथाशक्ति उन भावों का प्रचार करना, अब सामान्य बात होगई है। जब एक पतला-दुबला बेकार श्रमिक अच्छे अच्छे कपड़े पहने हुए लोगों के सामने खड़ा होकर अपील करता है कि आप लोग इस प्रदर्शन को उस दृष्टि से देखें जिससे हमारे प्रभु देखते हैं, तो लोगों को लज्जा सी मालूम होती है और लोगों के दिल में सचमुच एक धक्का-सा लगता है।

° ° • •

अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध-प्रतिरोधी संघ (दि वार रेसिस्टर्स इण्टरनेशनल),* जिसके अध्यक्ष लार्ड पानसन्बी हैं, समग्र यूरोप के अहिंसावादी

*'युद्ध के विरोधियों का घोषणा पत्र' (The War Resisters Declaration) परिशिष्ट ८ में देखिए।

उसने कहा—"मित्र, आपको तो इसकी जानकारी नहीं होगी, पर हम लोगों का संगठन आज छिन्न-भिन्न होने ही जा रहा था। कुछ समय से ग़लतफ़हमियाँ और कठिनाइयाँ बढ़ रही थीं। हमें वीरतापूर्वक मुक़ाबला करके उनपर विजय प्राप्त करनी चाहिए थी, परन्तु हमारे लिए वे बड़ी प्रबल सिद्ध होती थीं। आज की मीटिंग इन कठिनाइयों से पार पाने के लिए हमारा अंतिम प्रयत्न था, पर उसमें हम असफल हुए। ऐसे ही अवसर पर आपका आगमन हुआ और जिस चीज़ को हम भूल गये थे आपने हमें उसकी याद दिलाई। हम आपके आभारी हैं और आपका धन्यवाद करते हैं।"

• • • •

१९३२ में दो विश्वसनीय एवं प्रतिष्ठित अंग्रेज पुरुष तथा डा० मौड रायडन नामक महिला, तीनों इस उद्देश्य से गाँवों में गये कि वहाँ के लोगों के साथ मिलकर जटिल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति को सुलझाने एवं हमें मार्ग दिखाने के लिए भगवान् से प्रार्थना करेंगे। यह बात स्पष्ट होती जा रही थी कि यदि आर्थिक एवं राष्ट्रीय संघर्ष की विषम स्थिति से संसार को मुक्त करने का कोई उपाय शीघ्र न ढूँढा गया तो मानवी सभ्यता का ख़ात्मा होजायगा। इन तीन व्यक्तियों की चेष्टा का परिणाम यह निकला कि 'शान्ति-सेना' (पीस आर्मी)* का जन्म हुआ।

* The Peace Army 24 Rosslyn Hill Hampstead. London.

इसका उद्देश्य एक शस्त्रहीन सेना का निर्माण करना है। इसके दो हिस्से हैं। पहले विभाग के सदस्य दो शक्तियों में परस्पर युद्ध होने

• ० • •

येरुसलम में सराय के पास ही जो गिरजाघर है उसपर ईसाइयों
[यू]नानी, आमनी और लैटिन धर्म-सम्प्रदाय तीनों का अधिकार है।
पादरियों के अज्ञान तथा अधिकारियों के पारस्परिक विद्वेष और
[मतभे]द के कारण इन तीनों सम्प्रदायों में आपस में इतने झगड़े खड़े
[हुए] कि उस मंदिर के पवित्र प्रांगण में भी खून की धारा बह गई।
[फ]िलस्तीन (Palestine) पर तुर्की का कब्जा था तब, १९१० में,
[मैंने] इस गिरजाघर को देखा था। यह दृश्य मैं कभी भूल नहीं सकती।
[इन] सम्प्रदायों के अनुगामियों में परस्पर कटुता इतनी बढ़ गई थी कि

[अ]वस्था में, उनके बीच निरस्त्र (Unarmed) खड़े होने को तैयार
[रहते] हैं (Members of Section 1 Volunteer to stand un-
[arm]ed between the contending forces in the event of
[wa]r by whatever means may be found possible)। दूसरे
[वि]भाग के लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि यदि हमारा देश युद्ध में भाग
[ले]गा तो युद्ध-घोषणा होते ही हम युद्ध-विभाग के कार्यालय में जाकर
[कह]ेंगे कि हम किसी प्रकार की सामरिक सेवा में भाग लेने से
[इन्क]ार करते हैं और यदि इस इन्कारी के फलस्वरूप हमें गोली से मार
[दे]ने की भी आज्ञा हो तो उसके लिए भी तैयार हैं (Members of sec-
[tio]n 2 promise in the event of their own country going
[to] war to present themselves at the War Office as soon
[as] possible after its declaration and state that they
[ref]use to take part in war services of any kind, and that
[the]y are prepared to be shot for this refusal

अधिकारियों को शांति-रक्षा के निमित्त मन्दिर के अन्दर सेना रखने की आवश्यकता पड़ी। मैंने देखा कि 'उच्च वेदी' (High Altar) के सामने ही एक मुसलमान सैनिक भिरचदार बंदूक कंधे पर लिये यहाँ-से-वहाँ और वहाँ-से-यहाँ घूमकर पहरा दे रहा है। वह वहाँ इसलिए था कि ईसा की उपासना के लिए एकत्र अपनेको ईसाई कहनेवाले लोग एक-दूसरे पर आक्रमण न कर बैठें।

यह हमारे लिए एक महान् चुनौती है!

हमें अपनी जड़ों को 'अपनी आत्मा की भूमि'—ईश्वर की गहराई में सन्निविष्ट करना होगा।

यदि हमको पृथ्वी पर शांति की स्थापना करनी हो तो हमें अपनी सहानुभूति का क्षेत्र इतना बढ़ाना पड़ेगा कि कोई उसकी सीमा के बाहर न रह जाय।

यदि हमको पृथ्वी पर शान्ति की स्थापना करनी हो तो हमें ईश्वरप्रेरणा और महदाकांक्षा की उस स्थिति को प्राप्त करना होगा जब अपने मानव बन्धुओं के सम्बन्ध में हमारे अन्दर ईश्वरीय विचारों का विकास होता है।

हमें पुराने ढंग के उपायों से अब संतोष नहीं हो सकता। प्राचीन काल में मनुष्य पागलों से डरते थे, दूर भागते थे। वे नहीं जानते थे कि उनको पागलों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। वे उन्हें पहाड़ की चोटी पर लेजाते और वहीं बेड़ियों एवं साँकलों से उन्हें जकड़कर छोड़ देते थे। उनके खानेभर को नित्य उसी स्थान पर रखवा दिया जाता था, जिससे वे बस्ती में आकर लोगों को तंग न करें।

• • • •

एक दिन की बात है कि कुछ मित्रों का दल सैर-सपाटे के लिए गाँवों की ओर गया। संयोगवश वे एक ऐसे स्थान के पास होकर निकले जहाँसे थोड़ी दूर पर एक पागल का निवास था। जाते-जाते एकाएक उनको दूर से आती हुई उस पागल की अमानुषिक डरावनी चीख सुनाई पड़ी। साँकलों में बँधा हुआ वह पागल खीझ-खीझकर ज्यों-ज्यों उछलता, साँकलों की रगड़ से खनखनाहट होती थी। भय के मारे वे रुक गये, पर उनमें एक ऐसा था जो निर्भय और निश्चिन्त आगे बढ़ता गया। उसके हृदय में पागल के लिए सहानुभूति का भाव था। 'बेचारे को कैसे सूनेपन का अनुभव होता होगा, वह खीझ-खीझ कर कैसा निराश हो गया होगा और सदा अपने दर्शकों के चेहरों पर भय के चिन्ह देखकर उसका हृदय भी भय से त्रस्त होगा'—यही सब सोचता-विचारता वह उसके पास जा पहुँचा। पागल ने जब देखा कि एक आदमी निर्द्वंद्व उसकी ओर चला आरहा है जिसके चेहरे पर भय का कोई चिन्ह नहीं है और आँखों में सहानुभूति झलक रही है, तो उसने अपनी रक्षा के लिए हाथों में पत्थर के जो टुकड़े ले रक्खे थे वे फेंक दिये और बड़े ध्यान से इस अद्भुत आगंतुक की ओर देखने लगा। क्योंकि उसने अपनी तरफ आनेवाले किसी आदमी के चेहरे पर ऐसा भाव नहीं देखा था। यहाँ न भय था, न दया की रेखा थी केवल आँखों में विश्वास एवं बंधुता की झलक थी। *

---

* अपने नाटक 'मेरी मैगडालेन' में ऐसे चरित्र के बारे में प्रसिद्ध नाटककार मॉरिस मेटरलिंक ने लिखा है—

"He with his steadfast face and eyes that lit up all He looked upon and lips that spoke unceasingly of happiness

कुछ समय बाद जब और साथियों ने देखा कि पागल की डरावनी चीख मन्द होगई है तब वे सुस्थ हुए और इस बात पर शर्मिन्दा भी हुए कि हमने अपने नेता को अकेले छोड़ दिया। इसलिए वे भी साहस कर आगे बढ़े और नज़दीक पहुँचने पर उन्होंने पागल के समीप ईसा-रूपी अपने नेता को बैठे हुए देखा। पागल ने बस्त्र पहन लिये थे और शान्त होकर बैठा था।

हम जन-साधारण को ऐसे ही नेता की ज़रूरत है। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम प्रभु की संरक्षता के कवच को न भूलें।

परिशिष्ट-भाग

—१—

विश्वास और श्रद्धा से क्या नहीं होसकता !

—२—

डाइनामाइट में अर्थ-शोषण

—३—

युद्ध काल में असत्य

—४—

सर बेसिल जहरोफ

५

जेनेवा का घोषणापत्र

६—

हालैण्ड और बेलजियम में शान्ति-आन्दोलन

—७—

श्री मुलीनर का मामला

—८—

युद्ध प्रतिरोधक संघ का घोषणापत्र

—९—

छात्रों का युद्ध-विरोधी निश्चय

विश्वास और श्रद्धा से क्या नहीं होसकता ?

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भागमें, अर्जेण्टाइन तथा चाइल नामक पड़ोसी देशों में परस्पर बड़ा मनोमालिन्य था। फलतः दोनों के बीच के झगड़े यहाँतक बढ़े कि सब लोगोंको निश्चय होगया कि युद्ध अवश्यम्भावी है। यद्यपि दोनों देशों ने १८९६-९८ में महारानी विक्टोरिया से इन झगड़ों में पञ्च बनकर निर्णय कर देने की प्रार्थना भी की थी, किन्तु दोनों ज़ोरों के साथ युद्ध की तैयारी भी करते जा रहे थे। १९०० में तो ऐसा मालूम हुआ कि अब युद्ध रुक नहीं सकता। हरेक आदमी यही समझता था कि १४ महीनों के अन्दर—ईस्टर तक—लड़ाई अवश्य शुरू होजायगी।

परन्तु इन दोनों देशों में ऐसे भी स्त्री पुरुष थे जिनको यह ईसा का मज़ाक़ करने जैसा मालूम पड़ता था कि एक ओर तो 'गुडफ्राइडे' * मनाने की तैयारियाँ हों और दूसरी ओर, साथ-ही-साथ, अपने पड़ोसी देश के भाइयों के क़त्लेआम की तैयारियाँ की जायँ।

इसलिए अर्जेण्टाइन के बिशप श्री बनावेण्टी (Monsignor Benavente) तथा चाइल के बिशप श्री जारा ने आगे क़दम बढ़ाया

* गुडफ्राइडे = ईसा के क्रास पर चढ़ाये जाने की स्मृति में इस दिन ईसाई उपवास रखते हैं। यह त्योहार शुक्रवार के दिन प्रायः अप्रैल महीने में आता है।

और अपने कार्य, वाणी तथा प्रार्थना-द्वारा अपने नागरिक बन्धुओं
यह बताया कि युद्ध कैसी भयंकर वस्तु है। उन्होंने अपील की कि
शान्ति के साथ, ठंडे दिमाग से, इस प्रश्न पर विचार करें। क्या यु
अनिवार्य है? इस ईश्वर-निर्मित संसार में एक बिलकुल बुरी चीज़
अनिवार्य होसकती है? और युद्ध होता कब है? तभी तो जबकि दो दे
के लोग उसकी इच्छा करते हैं या समझते हैं कि इसमें भाग लेना
कर्तव्य है? बिना देशवासियों की सहायता और सहयोग के
युद्ध हो नहीं सकता। इसलिए क्या अच्छा हो कि दोनों देशों के नि
ठंडे दिमाग से इस प्रश्न पर विचार करें और इस निश्चय पर पहुं
कि हम लड़ाई न लड़ेंगे। यदि हमने यह निश्चय करलिया तो
निर्माण करनेवाले कारखाने भी हमारे विश्वास एवं विवेक की
संगठित दृढ़ता के सामने बेबस और अशक्त सिद्ध होंगे।

यह बात लोगों के दिलों में बैठ गई। ईस्टर * नज़दीक आ
था। क्या उसे खून से अपवित्र किया जायगा? लोगों के दिलों में
विचार से बेचैनी पैदा होगई। फलतः दोनों देशों के अधिकारियों
राजनीतिज्ञों ने एकबार फिर सच्चे मन से, मिल-जुलकर, समझौते-द्वारा
झगड़ा निपटा लेने की कोशिश की और इस बार वे सफल हुए। द
ने निश्चय कर लिया कि हम पंच मुकर्रर करलें और वह जो फैसला
उसे मानलें। सम्राट् एडवर्ड सप्तम को पंच बनाया गया। उन्होंने

---

* ईस्टर = कहते हैं कि फाँसी पर चढ़ाने के तीसरे दिन ईसा
फिर शरीर धारण किया था। उस दिन, रविवार को, ईसाई बड़ी खुशियाँ
मनाते हैं। यह उनका प्राचीन त्योहार है।

अगस्त १६०२ को अपना फैसला दिया, जिसपर सबके दस्तखत हुए और उसके फलस्वरूप दोनों देशों में एक 'सामान्य पचायती संधि' (General Treaty of Arbitration) होगई।

एक या दो वर्ष बाद इस संधि की खुशी में पुएन्टेल इंका नामक सीमान्त पहाड़ी स्थान पर बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। इस स्थान के पास ही दोनों देशों की सीमायें मिलती हैं। एक रात पहले से ही आस पास की टेकरियों पर या उपत्यकाओं में लोगों ने डेरे डाल दिये थे। दोनों देशों की जल एवं स्थल सेनाओं के निहत्थे सैनिकों ने मिलकर प्रभु ईसा की एक बड़ी मूर्ति खींचकर पहाड़ की एक चोटी पर पहुँचाई। यह मूर्ति किसी पुराने तोप के गोले को गलाकर ढाली गई थी। आज यह १३,००० फुट ऊँचे उस तुषाराच्छादित स्थान से सतत उत्तर की ओर देख रही है जहाँ दोनों देशों की सीमायें मिलती हैं। इसके पादमूल में निम्नलिखित महत्वपूर्ण वाक्य खुदा हुआ है —

"यही हमारी शान्ति है जिसने दो को एक करदिया।" *

दूसरी तरफ़ लिखा है—

"ये पर्वत चाहे टूटकर धूल में मिल जायँ, परन्तु मुक्तिदाता ईसा के चरणों के समीप संधि न तोड़ने की जो प्रतिज्ञा अर्जेण्टाइन एवं चाइल के लोगों ने की है वह अमर रहेगी।" $

---

* "He is our Peace who hath made loth one.

$ 'Sooner shall these mountains crumble into dust than the people of Argentine and Chile break the peace which they have sworn to maintain at the feet of Christ—the Redeemer

२

डाइनामाइट में अर्थ-शोषण

[लेखक—श्री ए० फेनर ब्रॉकवे]

महायुद्ध होने के समय तक संसार के सब बड़े-बड़े शस्त्र-निर्माता एवं विक्रेता अपने अन्तर्राष्ट्रीय गुट बना-बनाकर सम्मिलित व्यापार करते थे और ये गुट बिना किसी भेदभाव के शत्रु-मित्र सभी को शस्त्र बेचते थे। ऐसे ही एक गुट का नाम 'हार्वी यूनाइटेड स्टील कम्पनी' था जिसमें इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, इटली, रूस, जापान तथा अन्य कई देशों के शस्त्र-निर्माता एवं व्यापारी सम्मिलित थे। अमेरिका की स्टील कम्पनी भी इसमें हिस्सेदार थी।

इसी प्रकार का एक दूसरा जबरदस्त अन्तर्राष्ट्रीय गुट और था। यह 'नोबेल डाइनामाइट कम्पनी' के नाम से व्यापार करता था। इसमें छः अंग्रेज़ और चार जर्मन कम्पनियाँ शामिल थीं। महायुद्ध शुरू होने के दस महीने बाद, मई १९१५ तक भी, जर्मन ब्रिटिश शस्त्र-व्यापारियों का यह पारस्परिक सम्बन्ध बना रहा। युद्धकाल में शत्रु की सम्पत्ति को जब्त कर लिया जाता था, पर उपयुक्त कम्पनी के सम्बन्ध में उनके ब्रिटिश और जर्मन सरकारों ने गुट (ट्रस्ट) के एजेन्टों को पासपोर्ट

*'क्रिश्चियन सेंचुरी' से

दे रक्खा था कि वे एक-दूसरे से मिलकर शेयरों के विनिमय के बारे में प्रबन्ध कर सकें। मई १९१५ में दोनों देशों के समाचारपत्रों में ऐसे विज्ञापन छपे जिनमें कहा गया था—"दोनों देशों की सरकारों की सहमति से यह निश्चय किया गया है कि गुट—ट्रस्ट—के ब्रिटिश विभाग के शेयरों का जर्मन विभाग के शेयरों में और जर्मन विभाग के शेयरों का ब्रिटिश विभाग के शेयरों—हिस्सों—में तबादला कराया जा सकता है।" इधर यह होरहा था, उधर इसी गुट—ट्रस्ट—द्वारा बनाये गये विस्फोटक द्रव्यों तथा अन्य युद्ध-सामग्रियों के द्वारा ब्रिटिश और जर्मन सैनिक, समान रूप से, टुकड़े-टुकड़े किये जा रहे थे।

इस बात के उदाहरण से पृष्ठ-के-पृष्ठ भरे जा सकते हैं कि किस प्रकार शस्त्र-व्यापारियों ने अपनी पैशाचिक अर्थ-शोषण की प्रवृत्ति के कारण, महायुद्ध के पहले और महायुद्ध के समय में, शत्रु-देशों को भी युद्ध-सामग्री बेची। परन्तु मैं थोड़े में ही यहाँ उनका ज़िक्र करूँगा। पहले मैं जर्मन पक्ष को लेता हूँ।

क्रप॰द्वारा जर्मनों का क़त्ल

महायुद्ध में हाथ से फेंके जानेवाले बमों-द्वारा हज़ारों जर्मन मारे गये। इन बमों में क्रप के फ्यूज़ लगे होते थे। (महायुद्ध के बाद क्रप ने २५ सेंट प्रति फ्यूज़ के हिसाब से जर्मन सैनिकों के मारने के काम में आये हुए २०,००,००० फ्यूज़ के दाम पाने के लिए अदालती कार्रवाई की थी।) कितने ही जर्मन सैनिक जर्मन कारखानों द्वारा बने हुए

*फौलाद का एक बहुत बड़ा जर्मन कारखाना जो जहाज़, अस्त्र-शस्त्र, बारूद इत्यादि बनाता है।

काँटेदार तारों में फँसकर किरचों से मारे गये थे। अंग्रेजी रसोई में तोपों में जर्मन लक्ष्यदर्शक सुई (Gun sights) का उपयोग किया जाता था और उनके सहारे कितने ही जर्मन जहाज नाविकों सहित डुबा दिये गये। महायुद्ध के जमाने में जर्मनी से आनेवाले लोहे और फौलाद से बनी हुई फ्रांसीसी, इटेलियन एवं रूसी तोपों और गोलों ने जर्मन सैनिक दलों के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिये। मित्रराष्ट्रों की पैदल सेना जर्मन निर्मित शस्त्रों को पहनकर युद्ध क्षेत्र में गई थी। रूसी नौ-सेना का तो निर्माण ही जर्मन पूंजी से हुआ था। अमेरिकन अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले कारखानों में भी बड़ी जबर्दस्त जर्मन पूंजी लगी हुई थी।

यह तो हुई जर्मनी की बात। इसी प्रकार मित्रराष्ट्रों की ओर के भी कुछ उदाहरण लीजिए:—

एक ब्रिटिश कारखाने में बनी हुई पनडुब्बियों (Submarines) तथा विध्वंसकों (Tarpedoes) द्वारा न जाने कितने अंग्रेज तथा अमेरिकन अगाध जल-राशि के अन्दर चले गये। एक अंग्रेजी फर्म द्वारा निर्मित किलों एवं तोपों-द्वारा दर्रा दानियाल (Dardanelles) में कितने ही अंग्रेज और आस्ट्रेलियन सैनिक मारे गये। बलगारिया के खिलाफ युद्ध करते हुए बाल्कन में फ्रांस के मित्रराष्ट्रों की कितनी ही सैनिक टुकड़ियों का सफाया होगया और यह सब हुआ उन तोपों व गोला-बारूद की सहायता से जो एक फ्रांसीसी फर्म द्वारा बलगेरिया को भेजी गई थी। युद्ध काल में ही फ्रांस और फ्लैंडर्स में जब अंग्रेज और अमेरिकन सेनायें विध्वंस की जा रही थीं तब शत्रुओं के शस्त्र निर्माण के लिए एक ब्रिटिश अमरिकन फर्म, भारी पैमाने पर, निकल

(Nickel) पहुँचा रही थी। मज़ा तो यह है कि महायुद्ध-सम्बन्धी इन सेवाओं के लिए इस फर्म के अंग्रेज अध्यक्ष को बाद में 'सर' की उपाधि प्रदान की गई।

अपने-अपने देश में

युद्ध के पीछे काम करनेवाली इन स्वार्थी शक्तियों को शत्रु-देशों को हथियार भेजने से ही संतोष नहीं होगया, वरन् अपने देश में भी मौक़ा पाकर उन्होंने भाव खूब ऊँचा कर दिया। उन्होंने राष्ट्र के साथ बड़ा ही निर्दय और लज्जाजनक बर्ताव किया। शस्त्र-सामग्री विभाग के मंत्री डा० एडीसन ने ऐसे उदाहरण दिये हैं जब दाम इतने बढ़ाकर लिये गये कि १०० प्रतिशत से भी अधिक लाभ उठाया जासके। परन्तु बाद में ब्रिटिश सरकार के ज़ोर डालने पर इन्होंने दाम कम किये। श्री लायड जार्ज ने, जो युद्ध-काल में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे, बताया कि सरकार के इस कार्य से राष्ट्र के लगभग ६,३०,००,००,००० रुपये बच गये।

अमेरिकन कारखानेदारों ने अपने देश में कुछ कम फ़ायदा नहीं उठाया। उनका उदाहरण भी इतना ही बुरा है। १६२१ में अमेरिका की शासन-सभा (सिनेट) ने युद्ध-व्यय के सम्बन्ध में जाँच करने के लिए एक कमेटी बैठाई थी। उसने उदाहरण देकर बताया है कि ताँबे (Copper) के सौदागरों ने ६०,१५० और ३०० प्रतिशत से भी अधिक फायदा उठाया। 'यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन' ने ५० प्रतिशत तक लाभ उठाया। प्रसिद्ध 'बेथलहम शिपबिल्डिंग कार्पोरेशन' ने २१ प्रतिशत लाभ उठाया। हज़ारों सैनिकों ने देश के लिए प्राण दे देकर इन स्वार्थी व्यापारियों को मालामाल कर दिया।

अभी कुछ ही दिन पहले की बात है कि संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की व्यवस्थापक सभा (हाउस ऑफ़ रिप्रेज़ेन्टेटिव्स) की वैदेशिक कमेटी के सामने यह प्रस्ताव विचारार्थ पेश किया गया था कि शस्त्र-निर्यात सीमित और नियमित कर दिया जाना चाहिए। इस कमेटी के सामने जिन गवाहों के बयान हुए उनमें रेमिंगटन आर्म्स कम्पनी के श्री मेन इन भी थे। इन हज़रत ने कहा कि आकस्मिक राष्ट्रीय आपत्काल के लिए कारीगरों को अभ्यस्त रखने के वास्ते शस्त्र-निर्यात आवश्यक है। आगे जो बातचीत हुई वह नीचे दी जाती है —

श्री हुल--आपका कहना है कि इस वैदेशिक व्यापार के द्वारा उनकी शिक्षा (ट्रेनिंग) चल रही है?

श्री मानाहन—जी, हाँ

श्री हुल—इन कारीगरों को शस्त्र-निर्माण का अभ्यास बना रहे वे इसे भूल न जायँ, इसके लिए संसार के किसी-न-किसी भाग में कुछ उपद्रव बनाये रखना आपके लिए आवश्यक है?

श्री मानाहन--जी, हाँ।

दूसरे शब्दों में इन बात को यों रक्खा जा सकता है कि इन व्यापारियों की सफलता संसार के किसी-न किसी भाग में युद्ध के स्थायी रूप से चलते रहने पर निर्भर है। सफलता की इस शर्त के कारण ही वे युद्ध तथा सैनिक तैयारियों को उत्तेजन देने तथा निःशस्त्रीकरण और शान्ति के प्रयत्नों को अनुत्साहित करने में नहीं हिचकिचाते।

शांति के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र

मैं इसके अनेक उदाहरण दे सकता हूँ कि शस्त्र-कम्पनियों ने समाचारपत्रों द्वारा दूसरे देशों के शस्त्र-संग्रह एवं सैनिक तैयारियों के सम्बन्ध में किस प्रकार झूठी एवं मनगढ़ंत कहानियों का प्रचार किया, ताकि उनके देशों की सरकारें भी सैनिक तैयारियों की झूठी होड़ में शामिल होजायँ, किस प्रकार इन कम्पनियों के गुप्त प्रतिनिधियों ने झूठे और अतिशयोक्तिपूर्ण आँकड़े दे-देकर मंत्रिमंडलों को भयग्रस्त कर दिया है और उनकी उत्तेजना का लाभ उठाया है, किस प्रकार चीन के विभिन्न सैनिक दलपतियों, मैक्सिको के क्रांतिकारियों एवं फासिस्ट सेनाओं को शस्त्र पहुँचा-पहुँचाकर इन्होंने गृह-कलह को बढ़ाया है (यथा यह कि शस्त्रों का मूल्य ग़रीब किसानों की लूट से चुकाया जाता था)। शस्त्र-कारबार की प्रसिद्ध फरासीसी कम्पनी स्कोडा ने ही हिटलर को अस्त्र-शस्त्र पहुँचाये। मैं इसके भी उदाहरण दे सकता हूँ कि किस प्रकार शस्त्रादि तथा सैनिक जहाज़ों के लिए आर्डर प्राप्त करने के उद्देश्य से इन कम्पनियों ने युद्ध-विभागों तथा नौसेना के अफ़सरों को घूस दे देकर मुट्ठी में किया है। हम इस विषय का जितना ही गहरा अध्ययन करते हैं यह बात उतनी ही स्पष्ट होती जाती है कि शस्त्रास्त्र उद्योग विश्व-शांति के विरुद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र है।

अमेरिकावासी भी शीरर के मुकदमे को न भूले होंगे। यह दरअसल अमेरिका की प्रसिद्ध शस्त्रनिर्माता फर्मों (बेथलहम शिपबिल्डिंग कार्पोरेशन, न्यूपोर्ट-न्यूज़ शिपबिल्डिंग ड्राइ डाक कम्पनी तथा अमेरिकन ब्राउन बोवेरी कार्पोरेशन) द्वारा जनेवा के निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन में

उसे असफल करने के उद्देश्य से भेजा गये थे। इस कार्य के लिए इ कम्पनियों ने इन्हें ५१,२३० डालर भेंट किया, परन्तु इन्होंने इस सिलस २,००,००० डालर और माँगे कि उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप इन कम्पनियों को सैनिक जहाजों के निर्माण के लिए कई अच्छे आर्डर प्राप्त हुए जो सम्मेलन के सफल होने की अवस्था में कभी न प्राप्त हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ओर तो अमेरिकन राष्ट्रपति नौसेना सम्बन्धी निःशस्त्रीकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाते हैं दूसरी ओर अमरिकन शस्त्र-कम्पनियाँ निःशस्त्रीकरण को असफल बनाने के लिए प्रतिनिधि भेजती हैं।

जिनको युद्ध से लाभ होता है ऐसे स्वार्थी व्यापारियों द्वारा विश्व शांति के विरुद्ध जो यह भयंकर अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र चल रहा है उसके सामने हम क्या कर सकते हैं? पहला पग तो इस दिशा में यह हो सकता है कि हम शस्त्र-उद्योग के राष्ट्रीयकरण और अन्तर्राष्ट्रीयकरण पर जोर दें। व्यक्तिगत शस्त्र-उद्योग को बन्द कर दिया जाय। परन्तु यह इस गम्भीर समस्या के एक अत्यन्त लघु अंश का हल है। जब हम युद्ध के आर्थिक पहलू पर विचार करना आरम्भ करते हैं तब हम देखते हैं कि इस समस्या के साथ इसकी अनेक शाखा प्रशाखायें लगी हुई हैं और तब हमें यह पता चलता है कि इस कार्य में न केवल शस्त्र कम्पनियाँ मिली हुई हैं वरन् बैंक (जो शस्त्रों के आर्डर के लिए कर्ज देते हैं), धातु एवं तेल उद्योग के बड़े-बड़े व्यापारी (जो शस्त्र-निर्माण के लिए कच्चा माल पहुँचाते हैं) तथा पूँजी लगानेवाले लोग, उद्योग संघ एवं विशेष सुविधाप्राप्त वर्ग (जिनकी हित-रक्षा के लिए सना

भाव करती और सैनिक पोत आगे बढ़ते हैं) भी इसमें बड़ी दूर तक सम्मन्वित हैं। इन सब बातों को देखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि युद्ध-समस्या और अधिक गहरी समाज की आर्थिक निर्माण-विधि की समस्या का केवल एक अंश-मात्र है। इसलिए यदि हम ईज़राई लैंग विल के साथ यह प्रश्न करें कि—

> ऐसी दशा में हमारे लिए इस बात की आशा कहाँ है कि यह मृत्यु-व्यापार बन्द हो जायगा?

तो हमें उसके ही शब्दों में इसका यह उत्तर देना पड़ेगा—

> जबतक वर्तमान समाज-विधि है, तबतक इसकी कोई आशा नहीं। व्यापार में लगा मनुष्य युद्ध का देवता है। सोना ही सब शस्त्रों का सञ्चालक है। *

---

* There is none while this Social order lives
The man of business is the God of war
And gold pulls all the strings and all the triggers.

·३·

युद्ध-काल में असत्य

[कैप्टन एफ० डब्ल्यू० विल्सन ने यह कथा १६२२ में अमेरिका
कही थी और यह 'न्यूयार्क-टाइम्स' में निकली, जहाँ से २४ फरवरी १६२
के 'कुमेडर' में छपी।]

लन्दन के प्रसिद्ध दैनिक 'डेलीमेल' के संवाददाता कैप्टन विल्
युद्ध* छिड़ने के समय ब्रसेल्स में थे। उनको पत्र के स्वामियों का तार मि
कि अत्याचार की कथायें भेजो। पर उस समय कोई अत्याचार न
हुआ था जिसकी कहानियाँ भेजी जा सकें; अतः संवाददाता ने
असमर्थता प्रकट करदी। तब वहाँ से तार आया कि भगोड़े ए
शरणार्थियों (refugees) की कहानियाँ भेजो। संवाददाता ने
में कहा—"अच्छा है; मुझे कहीं जाना न पड़ेगा।" ब्रसेल्स के पा
एक छोटा कस्बा था, जहाँ अच्छा खाना मिलता था। संवाददाता ने
सुना कि वहाँ कुछ जर्मन आये थे। उसने कल्पना की कि वहाँ कु
भी रहे होंगे। बस, उसने घर में आग लगा दिये जाने एवं वहाँ कठिन
से बच्चे के बचाने की एक अत्यन्त करुण पर पूर्णतः कल्पित कह
लिख डाली।

---

* 'फाल्सहुड इन वार टाइम' (ले०—आर्थर पॉन्सनबी; प्र—ऑ
एलन एण्ड अनविन) से।

यह लिखता है—'दूसरे दिन तार आया कि बच्चे को भेज दो। लगभग पाँच हजार पत्र आये हैं जिनमें उसे गोद लेने की उत्सुकता प्रकट की गई है। उसके दूसरे दिन आफ़िस में बच्चे के कपड़े आने लगे। रानी अलेकजेण्ड्रा तक ने सहानुभूति का पत्र और कुछ कपड़े भेजे। यहाँ तो कोई बच्चा भी न था। पर मैं ऐसा तार तो दे नहीं सकता था। इसलिए शरणार्थियों की देखभाल करनेवाले डाक्टर से मिलकर मैंने यह गढ़ा कि बच्चा किसी गहरे संक्रामक रोग से मर गया।

बच्चे के लिए आये हुए कपड़ों से लेडी नार्थक्लिफ ने एक शिशु चिकित्सागृह की स्थापना की।

• ० ० •

युद्ध के पूर्व, ११ जुलाई १९१४ ई० को, बर्लिन में शाही महल के सामने एकत्र हुई एक भीड़ का फोटो लिया गया था। यह फ़ोटो एक फ़्रांसीसी पत्र (Le Monde Illustre) के २१ अगस्त १९१५ के अंक में निम्नलिखित शीर्षक के साथ छपा'—

Enthousiasme et Joie de Barbares

[जंगली जर्मनों का उत्साह और आह्लाद]

इसके नीचे एक नोट था कि लुसिटानिया' (जहाज) के डूबने पर यह आनन्द-प्रदर्शन किया गया है।

• ० ० •

'बर्लिन टैग' नामक जर्मन पत्र के ११ अगस्त १९१४ के अंक में एक फोटो प्रकाशित हुआ। इसमें हाथ में मालपात्र लिये हुए लोगों की लम्बी पंक्तियाँ थीं और इसके नीचे लिखा हुआ था—

"हमारे रूसी और फरासीसी नजरबन्दों का एक लाइन में खड़ा करके भोजन वितरण किया जा रहा है।"

यही फोटो २ अप्रैल १९१५ के 'डेली न्यूज़' में प्रकाशित हुआ। उसपर शीर्षक था —

जर्मन मजूरों में असतोष

और फोटो के नीचे लिखा था—"इस प्रकार के दृश्य बर्लिन में आज सामान्य होरहे हैं। इससे हमारी समुद्री शान्ति का पता चलता है।" मतलब यह था कि समुद्री सेना के घेरा डाल लेने से जर्मनी में भोजन दुष्प्राप्य होगया है।

• • • •

जर्मनी में कहीं एक फोटो छपा था जिसमें जर्मन अफ़सर सिपाही द्रव्यों के बड़े-बड़े बक्सों का निरीक्षण कर रहे थे। यह फोटो १० जनवरी १९१५ के अंग्रेजी पत्र 'वार अलेस्ट्रेटेड' में प्रकाशित हुआ। उसपर शीर्षक था—"एक फरासीसी हवेली के खजाने को जर्मन अफ़सर लूट रहे हैं।"

• • • •

एक फोटो था जिसमें एक जर्मन सैनिक एक घायल एवं मरणासन्न जर्मन सैनिक बन्धु के ऊपर भुका हुआ उसे देख रहा है। यही फोटो १७ अप्रैल १९१६ के 'वार अलस्ट्रेटेड' में निम्नलिखित शीर्षक के साथ प्रकाशित हुआ—

"युद्ध के नियमों के जर्मनों द्वारा दुरुपयोग का प्रत्यक्ष उदाहरण।"
"जर्मन जंगली एक स्त्री को लूटने के समय पकड़ा गया।"

• • • •

६ जून १६१४ के 'बर्लिन लोकलंजीगर' में एक फोटो छपा था। इसमें तीन अश्वारोही अफ़सर किसी प्रतियोगिता में विजयी होने पर मात कप एवं ट्राफ़ी के साथ खड़े हैं।

यह फोटो पहले 'विसमीर' नामक एक रूसी पत्र में उद्धृत हुआ। उसपर शीर्षक यह था—"वारसा में जमन लुटेरे।" यही फोटो ८ अगस्त १६१५ के 'डेली मिरर' में इस शीर्षक के साथ उद्धृत किया गया—

'तीन जमन अश्वारोही सैनिक लूटे हुए चाँदी-सान के साथ।'

जो देश युद्ध से उदासीन थे उनमें जाली फोटो बहुत बड़ी संख्या में भेज जाते थे।

• • ० ०

एक जर्मन नगर (Schwirwindt) पर रूसियों ने कब्जा कर लिया था। जर्मनी वालों ने इसका एक फोटो छापा। यही फोटो डेनमार्क के एक पत्र (Illustraret Familienlad) में इस शीर्षक से प्रकाशित हुआ—"जर्मन बम-वर्षा के बाद एक फरासीसी नगर का दृश्य।"

एक जमन पत्र (Das Leben in Bild) में १६१७ में तीन हँसते हुए युवक जर्मन सैनिकों का एक फोटो निकला। शीर्षक था—

'पुन स्वदेश में। तीन साहसी युवक जर्मन जो फरासीसी कैद से निकल भागने में सफल हुए।"

यही फोटो डेनमार्क के एक पत्र में २ मई १६१७ को प्रकाशित हुआ, जिसके नीचे लिखा था—

"युद्ध की अग्निवर्षा से भागे हुए तीन जमन सैनिक फ्रांस के कैदी होजाने पर कैसे आनंद-मग्न हैं!"

० ० ० •

पीछे हटते हुए रूसियों ने 'ब्रेस्ट लिटोवस्क' (Brest Litovsk) के किले पर अग्नि-वर्षा की। ५ सितम्बर १६१५ के 'डील मिरर' में एक फोटो निकला, जिसमें बोरों में माल भरकर जर्मन सैनिक लगा दिखाये गये थे।

यह फोटो १८ सितम्बर १६१५ के अंग्रेजी पत्र 'ग्रैफिक' में उद्धृत हुआ। लिखा था—"जर्मन सैनिक ब्रेस्ट-लिटोवस्क की एक फैक्टरी को जिसपर पीछे हटते हुए रूसियों ने अग्निवर्षा की थी, लूट रहे हैं।"

• • • •

एक रूसी फिल्म में यह दिखाया गया कि जर्मन नर्सें धार्मिक साधुनियां (सिस्टर्स)के वेश में घायलों की सेवा के बहाने जाती हैं और उन घायलों को छुरा भोंक देती हैं।

• • • •

एक फ्रांसीसी तस्वीर (फोटो नहीं) का उन दिनों बड़ा प्रचार हो रहा था। उसका नाम था 'Chemin de la gloire (यश का मार्ग) और यह Choses vues (दृष्ट पदार्थ) माला में प्रकाशित हुई थी।

इसकी पार्श्वभूमि में एक गिरजा आग में धू-धू करके जल रहा है और लम्बी सड़क टूटी फूटी बोतलों से भर रही है। सामने एक छोटे लड़के का शव पड़ा हुआ है जिसमें किरचों की मार पड़ी है।

• • • •

फ्रांस के भूतपूर्व अर्थसचिव क्लाट्ज (Klotz) ने, जिनको युद्ध के प्रारम्भकाल में अखबारों के सेंसर का काम सौंपा गया था, अपने

स्मरणों (De la Guerre a la Paix Paris Payot, 1924) में लिखा है

'एक दिन शाम को मुझे 'फिगारो' पत्र का प्रूफ दिखाया गया, जिसमें दो प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के हस्ताक्षर से यह बात प्रकाशित की गई थी कि उन्होंने अपनी आँखों से देखा है कि लगभग १०० लड़कों के हाथ जर्मनों द्वारा काट लिये गये हैं।

इन वैज्ञानिकों की गवाही होते हुए भी मुझे इस वक्तव्य की सचाई में संदेह हुआ और मैंने उसका प्रकाशन रोक दिया। जब 'फिगारो' के संपादक ने इसपर आपत्ति की तो मैंने कहा कि मैं अमेरिकन राजदूत के समक्ष इस गंभीर आरोप की, जिससे दुनिया में तहलका मच जायगा, जाँच करने को तैयार हूँ। मैंने कहा कि दोनों वैज्ञानिकों को उस स्थान का नाम बताना चाहिए जहाँ जाँच की जाय। मैंने विस्तृत विवरण तुरन्त माँगा। पर आज तक मुझे इन वैज्ञानिकों का न कोई उत्तर प्राप्त हुआ और न वे स्वयं मेरे पास आये।"

पर यह झूठ उस समय जनता के दिमाग़ पर इतना असर कर गया था कि आज भी उसके झाँक की लहर देखने में आती है। अभी कुछ ही दिन हुए लिवरपूल के एक कवि ने 'ए मेडली ऑफ़ सांग' नामक एक कविता पुस्तक छपवाई है, जिसमें देश-प्रेम के नाम पर लिखी एक कविता की चन्द लाइनें ये हैं —

They stemmed the first mad on rush
Of the cultured German Hun.
Who d outraged every fema e Belgian
And maimed every mother, son. !

[उन्होंने सभ्य जर्मन हूण के प्रथम पागल से आक्रमण को रोका उस जर्मन हूण के जो प्रत्येक बेलजियन नारी की आबरू लेलेता था और प्रत्येक माता के बच्चे को हाथ काटकर लूला कर देने को तैयार था।]

४ः

सर बेसिल ज़हरोफ़*

हम पहले स्वदेश की शस्त्र-निर्माणकारी फर्म विकर्स आमस्ट्रांग (Vickors Armstrong) को लेते हैं। इस फर्म की कथा अमेरिका भी नहीं गई है। युद्ध के पूर्व के इसके इतिहास एवं स्थिति तथा १९१८ से इसके विकास की साधारण परीक्षा से भी यह प्रकट होता है कि यह फ्रम-जैसी ही कम्पनी है।

इस कम्पनी का इतिहास काफ़ी पुराना है। इसका सूत्रपात तो असल में १७९० ई० में जार्ज नेलर द्वारा हुआ था। १८२६ में इसका नाम 'नेलर हचिंसन विकर्स ऐण्ड को०' पड़ा और १८६७ ई० में 'विकर्स संस ऐण्ड को०' के रूप में बदल गया और डेढ़ लाख पौंड की पूँजी से काम चलने लगा। चार ही वर्ष में पूँजी बढ़ाकर पाँच लाख पौंड करदी गई।

१८९२ ई० में इसने अपना काम और बढ़ाया। नये शेयर निकाले गये और कई अन्य कम्पनियों में हिस्से खरीदे गये। तबसे इसका 'नाम विकर्स लिमिटेड' पड़ा और जोरों से इसकी वृद्धि होने लगी। इसने ग्लासगो में सैनिक भण्डार, शेफील्ड और एरिथ में शस्त्रास्त्र

*'सीक्रेट इण्टरनेशनल' से।

बनाने के कारखाने और यालनी द्वीप में जहाज़ी कारबार का प्रबन्ध किया। १८९७ में भविष्य के युद्धों को दृष्टि में रखकर इसने शस्त्र व्यापार और बढ़ाया और मैरी की 'नेवल कंस्ट्रक्शन एंड आर्मामेंट्स' कम्पनी को सवा चार लाख पौंड में खरीद लिया।

यहाँ बेसिल ज़हराफ़ का उल्लेख करना आवश्यक है क्योंकि विश्व के इतिहास में इस व्यक्ति ने अपनी अर्थ-सम्बन्धी प्रतिभा से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। इसका जन्म १८४९ में मूगल (ग्रीस) में हुआ था। शस्त्र-व्यापार में यह 'नार्डेनफ़ल्ट' (Norden feldr) के विक्रेता के रूप में आया। जगह-जगह घूमकर इस फ़र्म के आर्डर लेता था। १८७७ में इसने इस व्यवसाय में प्रवेश किया। इस समय बाल्कन में टर्की के विरुद्ध विद्रोह की आग सुलग रही थी और टर्की तथा रूस पूर्व में अपनी शक्ति बढ़ाने में प्रयत्नशील थे। १८८० तथा उसके बाद के वर्षों में यूनानी सेना का जो संगठन हुआ और उसमें जो वृद्धि हुई उससे सर बेसिल ज़हरोफ़ ने खूब पैसा कमाया। इसी समय 'नार्डेनफेल्ड' के कारखाने ने एक नई एवं प्रभावशाली 'पनडुब्बी' (सबमेरीन) का आविष्कार किया। ज़हराफ़ ने प्रधान शक्तियों के हाथ इसे बेचना चाहा; पर वे तबतक इस निश्चय पर नहीं पहुँची थीं कि पनडुब्बियों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए या नहीं, इसलिए उन्होंने खरीदने से इन्कार कर दिया। किन्तु यूनान ने ज़हरोफ़ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस प्रकार यूनान ने दुनिया में सबसे पहले पनडुब्बियों का अनुभव प्राप्त किया। शीघ्र ही ज़हरोफ़ ने टर्की को बतलाया कि यूनान के पास एक पनडुब्बी है तो टर्की के पास दो होनी

-चारियँ। १८८८ ई० में, जहरॉफ के प्रयत्न एवं प्रभाव से 'नार्डेनफेल्ड गन्स एण्ड एम्यूनिशन कम्पनी' और 'मैक्सिम गन कम्पनी' दोनों मिलकर एक होगई। हीरम मैक्सिम ने ही उस मशीनगन का आविष्कार किया था जिसने युद्ध-प्रणाली में क्रांति करदी। बाद में नार्डेनफेल्ड के कम्पनी से अलग होजाने पर जहरॉफ उसका सर्वेसर्वा होगया।

बोअर-युद्ध के बाद इस कम्पनी ने एक लाख साठ हजार पौंड में 'ब्रहमली स्टील एण्ड मोटर कम्पनी' तथा एक लाख दस हजार पौंड म 'बाइनेंस असेसरीज़ कम्पनी' खरीद ली।

रूस जापान युद्ध में यद्यपि इंग्लैण्ड जापान का दोस्त था, पर उसने दोनों पक्षों को शस्त्रास्त्र पहुँचाये और जहरॉफ ने रूस के सेंटपीटर्स वर्ग आयरन वर्क्स एवं फ्रैंको-रशन कम्पनी की साभेदारी में काम किया। इन फर्मों के द्वारा उसने तोपों एवं क्रूजरों के लिए आर्डर प्राप्त किया और रशन शिपबिल्डिंग कम्पनी की सहायता से काला सागर के लिए दो प्रथम श्रेणी के लड़ाकू जहाजों का आर्डर उसे मिल गया। विकर्स-द्वारा संचालित ग्लासगो की बर्डमियर फर्म ने श्नीडर-क्रासेट एवं आगस्टिन नार्मंड के साथ मिलकर रूस में तोप के गोले का कारखाना और डाक यार्ड बनाने का काम किया। इससे इस फर्म का अन्तर्राष्ट्रीय रूप स्पष्ट होजाता है। जहरॉफ के शेयर न केवल विकर्स-मैक्सिम वरन् श्नीडर क्रासेट तथा अन्य ब्रिटिश शस्त्र बनानेवाली कम्पनियों में भी थे। इनमें आर्मस्ट्रांग व्हिटवर्थ का नाम भी शामिल है।

परन्तु केवल विकर्स को अलग लेकर विचार करना भ्रमोत्पादक होगा, क्योंकि इस समय तक वह उस महान् अन्तर्राष्ट्रीय शस्त्र-निर्माण

कारी संघ का अङ्ग बन गया था जो हार्वी यूनाइटेड स्टील कम्पनी के नाम से प्रसिद्ध था। यह ट्रस्ट (संघ) १९०१ ई० में बना था और १९११ तक उसका अस्तित्व रहा। विकर्स एण्ड मैग्जिम के मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री एलबर्ट विकर्स ही इसके अध्यक्ष थे और १९०१ ई० में इसके संचालक-मण्डल (Directorate) में चार्ल्स कैमिकल कम्पनी, वर्ल्ड कैमिकल लिमिटेड, विकर्स और संस एण्ड मैग्जिम लिमिटेड नामक चार अंग्रेजी फर्मों के प्रतिनिधि थे। इसके अलावा क्रप और डिलिंगन स्टील कम्पनी नामक दो प्रधान जर्मन, कार्नेगी स्टील कम्पनी नामक अमेरिकन इनीहर, फैटलन स्टील कम्पनी और बेथेलम स्टील कम्पनी नामक फ्रेंच एवं टर्नी स्टीलवर्क्स नामक इटैलियन फर्मों के प्रतिनिधि भी संचालक मण्डल में थे। यद्यपि बाद के वर्षों में संचालकों में परिवर्तन होता रहा और कई नये संगठन बनते रहे, पर यूरोपीय महायुद्ध के आरम्भकाल तक तो हार्वी स्टील ट्रस्ट ही विश्व का सबसे बड़ा शस्त्र-निर्माणकारी संगठन था। इसमें ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली और यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका की प्रधान शस्त्र-कम्पनियाँ शामिल थीं। हार्वी स्टील ट्रस्ट के साथ शस्त्र निर्माण व्यवसाय के रक्षक एवं रासायनिक पदार्थों पर एकछत्र आधिपत्य रखनेवाली नोबेल डाइनामाइट ट्रस्ट और चिलवर्थ गनपाउडर कम्पनी का भी सहयोग था।

चिलवर्थ गन पाउडर कम्पनी लिमिटेड का आविर्भाव १८८५ ई० में हुआ था। यह यूनाइटेड रनिश, डुयनबर्ग पाउडर मिल्स एवं आर्मस्ट्रांग के मैनेजिंग डाइरेक्टरों का सम्मिलित प्रयास था। इसके अध्यक्ष आर्मस्ट्रांग के ही एक डाइरेक्टर थे और मशीनों के आरम्भ

क इस का भी अन्तर्राष्ट्रीय रूप था। महायुद्ध आरम्भ होने पर जर्मनी वाले अलग होगये।

ये सब संगठन पूर्णतः अन्तर्राष्ट्रीय थे और इन्होंने प्रत्येक राष्ट्र पड़ोसी राष्ट्रों में होनेवाली तैयारी के नाम पर शस्त्र प्रतियोगिता की भावना का खूब चढ़ाया और खूब फ़ायदा उठाते रहे। इन्होंने राष्ट्रों को युद्ध सामग्री से खूब सज्जित किया और इन्हीं शस्त्रास्त्रों के द्वारा एक राष्ट्र के निवासियों ने दूसरे राष्ट्र के आदमियों को नष्ट करने का भरपूर प्रयत्न किया।

जब १६१४ ई० में युद्ध आरम्भ हुआ तो विकर्स लिमिटेड का दर्जा रीम-करीब आर्मस्ट्राँग के बराबर था और व्हाइटहेड टारपीडो फ़ैक्टरी में दोनों का साझा था। दोनों सम्मिलित रूप से अंग्रेज़ी शस्त्र व्यवसाय के नेता थे। यदि पूंजी (शेयर कैपिटल) की दृष्टि से विचार किया जाय तो विकर्स को क्रप से भी बड़ा कह सकते हैं। फिर इसका देश-विदेश की अनेकानेक कम्पनियों से सम्बन्ध था। इनमें जर्मनी की लोव कम्पनी भी थी, जिसका एक प्रतिनिधि विकर्स के संचालक-मंडल में भी था। स्पेन, इटली, रूस, जापान और कनाडा में इसके कारखाने थे।

५

जेनेवा का घोषणापत्र

'जेनेवा का घोषणापत्र' 'बालरक्षा कोष' (Save the Children Fund) के संस्थापक श्री एगलयण्टाइन जेब ने १६२६ ई० में तैयार किया था। सितम्बर १६२४ ई० में, राष्ट्रसंघ यूनियन की पाँचवीं बैठक (असेम्बली) में, यह राष्ट्रसंघ द्वारा स्वीकार किया गया है। असेम्बली के अध्यक्ष के शब्दों में 'यह राष्ट्रसंघ के शिशु-कल्याण का का आदेशपत्र है।'

जेनेवा का घोषणापत्र

शिशु के अधिकार (Rights of the child) के इस घोषणापत्र के द्वारा, जो साधारणतः जेनेवा का घोषणापत्र के नाम से प्रसिद्ध है यह जानते हुए कि मानव जाति का शिशु के प्रति बड़ा भारी कर्तव्य है संसार के समस्त राष्ट्रों के स्त्री पुरुष घोषित और स्वीकार करते हैं कि जाति, राष्ट्रीयता और धर्म की भावनाओं एवं विचारों के ऊपर—

१ शिशु को उसके स्वाभाविक विकास के लिए भौतिक एवं आध्यात्मिक सब प्रकार की सुविधा दी जानी चाहिए।

२ जो शिशु भूखा हो उसे भोजन अवश्य मिलना चाहिए; जो शिशु बीमार हो उसकी शुश्रूषा और चिकित्सा अवश्य होनी चाहिए;

शिशु अविकसित हो उसे अवश्य सहायता मिलनी चाहिए अपराधोन्मुख शिशु को अवश्य सुधारा जाना चाहिए और अनाथ एवं अरक्षित को अवश्य रक्षण एवं शरण प्राप्त होनी चाहिए।

३ आपदा एवं संकट के समय शिशु को सबसे पहले सहायता मिलनी चाहिए।

४ शिशु को इस योग्य बना देना चाहिए कि वह जीविका कमा सके और सब प्रकार के शोषण से उसकी रक्षा होनी चाहिए।

५ शिशु के अन्दर यह चेतना जाग्रत करनी चाहिए कि वह अपनी बुद्धि का उपयोग मानव-बन्धुओं की सेवा में करेगा।

:६

हालैण्ड और बेलजियम में शान्ति-आन्दोलन

हमारे डच मित्रों ने फ्लशिंग, राटर्डम, हेग, हार्लेम, उट्रेख्ट, अर्नहेम एवं हीरलेन इत्यादि नगरों में अनेक सभाओं की योजना की। 'डच फेडरेशन ऑफ पीस यूथ, 'नो मोर वार' एवं 'कर्क एन रीड' इत्यादि संस्थाओं ने 'डच फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलियेशन' से पूर्ण सहयोग किया। तीनों जर्मन वक्ता कैथलिक थे और उन्होंने मुख्यतः प्रोटेस्टेण्ट लोगों की बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण किये। इस आन्दोलन में कैथलिक एवं प्रोटेस्टेण्ट लोगों का हार्दिक सहयोग एक विशेष बात थी। अर्नहेम जैसे स्थानों की बड़ी सभाओं में श्रमिकों एवं 'युवकों' का सम्पर्क स्थापित हुआ। हार्लेम इत्यादि स्थानों की सभायें यद्यपि अपेक्षाकृत छोटी थीं, पर उनमें शान्तिवादी सभी प्रकार के वर्गों का प्रतिनिधित्व था और इनके द्वारा विदेशी वक्ताओं से डच शान्ति आन्दोलन के कार्यकर्ताओं का अच्छा परिचय हुआ। एम्सटर्डम में सभा 'फिमर्स ट्रेनिंग स्कूल फार सोशल सर्विस' में हुई। उट्रेख्ट में लगभग १०० श्रमिकों एवं छात्रों की उपस्थिति थी। फ्लशिंग की सभा में शामिल होने के लिए जीलैण्ड द्वीप से भी कितने ही आदमी आये थे और "हाल श्रमिकों, कृषक स्त्रियों, कलाकों, पादरियों तथा

अन्य पेशे करनेवाले स्त्री पुरुषों से भरा हुआ था।" हार्लेम में सा जमन, फ्लेमिश और वालून के शान्ति-वर्गों का डच शान्ति-वर्गों के साथ अच्छा सम्पर्क स्थापित हुआ। वक्ताओं पर डच जनता की शान्ति के लिए तीव्र इच्छा और उत्साह का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

उत्तरी फ्रांस के खनिकों में

हेनिन-लीटार्ड एक स्कूल में बड़ी सभा मेयर की अध्यक्षता में: श्रमिक स्त्री-पुरुषों की भातृमण्डली अनेक खनिक सब प्रकार के मत रखनेवालों की उपस्थिति। प्रथम वक्ता आँद्री भाकमे नाम के एक फ्रांसीसी युवक पादरी थे। उन्होंने फ्रांस की सरकारी नीति की निर्भीक आलोचना के साथ अपना भाषण शुरू किया। उनके भाषण में बार बार बाधा डाली गई। अन्त में उन्होंने चुनौती दी कि विरोधी सामने आकर अपनी बात की सत्यता सिद्ध करे। बाधा देनेवाला ठंडा पड़ गया और उसने शिथिल होकर कहा—"पर मैंने अखबारों में तो ऐसा ही पढ़ा है।" इसपर लोगों ने व्यंगात्मक हास्य किया। पादरी वक्ता ने श्रोताओं की अत्यधिक संख्या को अपनी बात का विश्वास दिला दिया। श्रोताओं में नि:शस्त्रीकरण और शान्ति की प्रबल इच्छा स्पष्ट दिखाई दे रही थी। जमन वक्ता जोसेफ़ प्रोम्स्ट ने, जो एक कैथलिक गृहस्थ था, अपनी निर्भीक सरलता से श्रोताओं के हृदय को जीत लिया और उसका बड़ा स्वागत हुआ। बहुत थोड़े-से विरोधी रह गये। बेथून के एक युवक वकील ने फ्रांसीसी राष्ट्रीयता के पक्ष में एक ज़बर्दस्त भाषण किया—"हम शान्ति चाहते हैं, पर शान्ति के लिए ही हमें पूर्णत: शस्त्र-सज्जित फ्रांस की आवश्यकता है।" श्रोताओं से

उसे बहुत थोड़ा समर्थन प्राप्त होता है, पर वह अपने विश्वास
सच्चा है। जर्मन वक्ता उसे राइनलैंड आकर स्वयं अपनी आँखों
कुछ देखने का निर्मंत्रण देता है और आतिथ्य का विश्वास दिलाता

योने के नगरों एवं गाँवों में

"अगली संध्या हम सर्व-साधारण के और निकट पहुँचते
हम मिनसेलास नामक एक गाँव में सभा करते हैं। सीधे-सादे मा
उसमें पर्याप्त संख्या में आते हैं—बहुत-से तो दूर-दूर के गाँवों से
आते हैं।

"अन्तिम गाँव, जहाँ हम गये, वेसली था। यहाँ भी सभा
योजना की गई। लोगों ने कहा कि यहाँ कभी सार्वजनिक सभा नहीं
और लोग शायद ही आवें, पर आठ बजते बजते हाल भर गया। व
हुई; भाषण हुए। मेयर ने अन्त में कहा कि 'आप लोग उनके सा
बातें हैं जो पहले से ही शान्ति के प्रेमी हैं।'

'क्या इसमें अतिशयोक्ति थी? ऐसा नहीं मालूम होता। स
साधारण जनता चाहती यह है कि उसे शान्ति के लक्ष्य का प्राप्त क
के निश्चित साधन और मार्ग बताये जायें। वह चाहती है कि शान्ति
विचारों को राजनैतिक कार्यक्रम के रूप में परिवर्तित किया जाय। जन
की शान्ति की इच्छा उससे कहीं अधिक दृढ़ है जितना हमें उन
सरकारों की नीति से पता चलता है।

लियोन से जेनेवा के मार्ग पर

"एक अमेरिकन, एक स्काट, बारह तरुण अंग्रेज स्त्री-पुरुष,
एक फ्रान्सीसी और एक जर्मन मिलकर लियोन से जनेवा को रवाना हुए।

गाँवों एवं नगरों से जाते हुए ये गाते और छोटी-छोटी पुस्तिकायें वितरण करते। पहली रात को उन्होंने मौंटक्षुएल में मुकाम किया। एक गोष्ठी हुई। दूसरे दिन हम ग्रम्मेरियस में ठहरे। यहाँ टाउनहाल में बड़ी सभा हुई। इस प्रकार की मटरगश्ती से हम सामान्य जनता के सम्पर्क में खूब आये। (इनमें शान्ति की प्रबल प्यास थी) पर जब हम सरकारी जेनेवा के संकुचित क्षेत्र में पहुँचे तो हमें कुछ अजीब अनुभव हुआ। यहाँ केवल शासक ही बोल सकते हैं और शासितों को मौन रहना चाहिए।"

७

श्री मुलीनर का मामला

१६०६ ई० शस्त्र-व्यवसाय की एक प्रसिद्ध घटना के लिए मशहूर होगया है। व्यापार की हालत बुरी थी बेकारी बढ़ रही थी और शस्त्र-कम्पनियों के मुनाफ़े की दर घटती जा रही थी।

इस समय भी एच० एच० मुलीनर कवेन्ट्री आर्डनेंस कम्पनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर थे। ३ जनवरी १६१० ई० के 'टाइम्स' में उन्होंने 'महान् पराजय की डायरी' (The Diary of the Great Surrender) प्रकाशित की और निम्नलिखित वाक्य उनके कार्य के सम्बन्ध में स्वयं प्रकाश डालते हैं —

"१३ मई, १६०६। मि० मुलीनर ने एडमिरलटी (नौसेना विभाग) को सूचित किया कि जर्मन नौसेना में बहुत अधिक वृद्धि करने की तैयारियाँ हो रही हैं। (राष्ट्रों से यह समाचार मार्च १६०६ तक छिपा कर रक्खा गया)।

"३ मई, १६०६। मि० मुलीनर ने मंत्रि-मण्डल के सामने बयान देते हुए सिद्ध किया कि जर्मनी में शस्त्र-निर्माण के कार्य का प्रगति देने की जिस योजना के विषय में मैंने बार-बार नौसेना विभाग को सूचना दी थी, वह अब कार्यान्वित होगई है और बड़ी तेजी से तोपें तथा अन्य चीजें बनाई जा रही हैं।"

"१६०८ के दैमत में मि० मुलीनर ने एक बड़े सेनापति के कान में य बातें भरीं। सेनापति ने हाउस ऑफ लार्ड्स (पार्लमेंट की सरदार-सभा) में भविष्यवाणी की कि 'शीघ्र ही ऐसी बातें प्रकट होनेवाली हैं जो भयंकरता के साथ हमारी आँखें खोल देंगी।'

१ मार्च १६०८ को भी मुलीनर मन्त्रि-मण्डल की बैठक में बुलाये गये। दस दिन बाद नौसेना विभाग के व्यय का चिट्ठा प्रकाशित हुआ, जिसमें १६०६–१० के लिए ३,५१,४२,७०० पौंड का खर्च दिखाया गया था अर्थात् खर्च में २८,२१,२०० पौंड की वृद्धि की गई थी। इन अनुमानपत्रों और उन पर होनेवाले पार्लमेंट के विवाद से स्पष्ट मालूम पड़ता है कि ग़लत सूचनायें दे देकर मन्त्रि-मण्डल को गुप्त रूप से प्रभावित करने में भी मुलीनर सफल हुए।

इन आँकड़ों तथा जर्मनी की तैयारी के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट अखबारों में तथा अन्यत्र प्रकाशित हुई वह इतनी चालाकी से तैयार की गई थी कि उसने जनता में एक भय एवं उत्तेजना पैदा कर दी। इस रिपोर्ट का यह वाक्य खूब लोकप्रिय हुआ—"We want eight and we wont wait (हम आठ चाहते हैं और इसके लिए प्रतीक्षा नहीं करेंगे।)

बाद की घटनाओं ने जर्मन सरकार पर लगाये गये युद्ध की तैयारी के इलज़ाम को असत्य सिद्ध कर दिया। फिर भी ब्रिटिश सरकार ने २६ जुलाई को चार लड़ाकू जहाज बनाने का निश्चय प्रकट किया और सबसे पहले निर्माण का ठेका कैमेल लेयर्ड को मिला, जिसका कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी में (जिसके मैनेजिंग डाइरेक्टर भी मुलीनर थे) बहुत काफी हिस्सा था।

बाद में श्री मुलीनर ने इस सनसनीखेज कहानी के गढ़ने की ज़िम्मेदारी भी स्वीकार करली। इसके कारण वह कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी की मैनेजिंग डाइरेक्टरी से हटा दिये गये और उनकी जगह पर रियर एडमिरल आर० एच० एस० बेकन (जी० सी० ओ०, डी०एस० ओ०) की नियुक्ति हुई। श्री बेकन फर्स्ट सी-लार्ड के नौसैनिक सहायक (नेवल असिस्टेंट) थे और १६०७ से १६०६ तक डाइरेक्टर ऑफ नेवल आर्डनेंस ऐंड टारपीडोज रह चुके थे। उन्होंने कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी के लिए सरकार से बड़े-बड़े आर्डर लेने में सफलता प्राप्त की। जान ब्राउन कम्पनी की(जिसका कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी में पर्याप्त हिस्सा था) वार्षिक सभा में १ जुलाई १६११ को लार्ड ऐबरसेनवी ने कहा था—"कवेण्ट्री बढ़ रहा था, पर वह हमारी पूँजी पर एक बोझ-सा हो रहा था और शायद कुछ और दिनों तक रहता, किन्तु सरकार ने राष्ट्रीय शस्त्र-निर्माण कार्य में उसकी उपयोगिता स्वीकार करली। गत हेमंत में मैं श्री विंस्टन चर्चिल के साथ स्काटसनबर्ग गया। श्री चर्चिल ने मुझे वचन दिया और बाद में उसे पूरा किया कि कवेण्ट्री को सरकार अब सदा आर्डर दिया करेगी और पिछले दिनों की भाँति उसके साथ उपेक्षा का व्यवहार न होगा।"

·८·

युद्ध प्रतिरोधक संघ ("वार रेसिस्टर्स इण्टरनेशनल) का घोषणा पत्र

"युद्ध मानवता के प्रति एक अपराध है। इसलिए हम दृढ़ हैं कि उसका समर्थन न करेंगे, चाहे वह किसी प्रकार का युद्ध हो, और युद्ध के सब कारणों को दूर करने की चेष्टा करेंगे।"

सिद्धान्त-विषयक वक्तव्य

युद्ध मानवता के प्रति एक अपराध है, यह जीवन के प्रति अपराध है और राजनैतिक एवं आर्थिक स्वार्थों के लिए मनुष्य का दुरुपयोग करता है।

इसलिए हम, मनुष्य जाति के प्रति अपने दृढ़ प्रेम के कारण, दृढ़ हैं कि उसका समर्थन न करेंगे, स्थल, जल या वायु सेना में किसी प्रकार की सेवा करके न तो प्रत्यक्ष समर्थन करेंगे और न युद्ध-सामग्री बनाने, युद्ध ऋण में हिस्से बँटाने अथवा दूसरों को सैनिक सेवा के लिए मुक्त करने के हेतु अपनी श्रम-शक्ति का उपयोग करने इत्यादि के रूप में अप्रत्यक्ष समर्थन करेंगे।

चाहे वह किसी प्रकार का युद्ध हो—आक्रमणात्मक अथवा रक्षणात्मक। क्योंकि हम जानते हैं कि आजकल युद्ध को सरकारें रक्षणात्मक ही कहकर छेड़ती हैं।

युद्धों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है:—

१ उस राज्य की रक्षा के लिए छेड़ा गया युद्ध जिसके हम नागरिक हैं, जिसके हम अंग हैं और जिसमें हमारा घर-बार स्थित है। इसमें भाग लेने से इन्कार करना कठिन है—

(क) क्योंकि राज्य सब प्रकार की ज़ोर-ज़बरदस्ती के द्वारा वैसा करने को बाध्य करेगा।

(ख) क्योंकि घर या मातृभूमि के लिए हमारे प्राकृतिक प्रेम को जानबूझकर राज्य के प्रेम से अभिन्न कर दिया गया है।

२ कतिपय अधिकार-प्राप्त लोगों (Privileged few) की रक्षा के लिए वर्तमान समाज-संगठन को क़ायम रखने के हेतु किया जाने वाला युद्ध। यह स्पष्ट है कि हम इसके लिए कभी युद्ध न करेंगे।

३ दलित जनता (मजूर-किसान) की रक्षा या मुक्ति के लिए किया गया युद्ध। इसके लिए शस्त्र ग्रहण करने से इन्कार करना बहुत कठिन है—

(क) क्योंकि मजूर किसान शासन या उससे भी अधिक जनता (Masses) क्रांति एवं विद्रोह के समय उसको विश्वासघाती (Traitor) समझेगी जो नूतन व्यवस्था की शस्त्र द्वारा सहायता करने से इन्कार करेगा।

(ख) क्योंकि पीड़ित और दलित वर्गों के प्रति हममें जो प्राकृतिक प्रेम है, वह उनके लिए शस्त्र ग्रहण करने को हमें प्रलुब्ध करेगा।

जो हो, हमारा विश्वास है कि हिंसा के द्वारा वस्तुतः शान्ति रक्षा नहीं हो सकती, न उसके द्वारा हमारे घरों का बचाव हो सकता

उनसे मजूरों-किसानों को मुक्ति मिल सकती है। बल्कि अनुभव ने
द कर दिया है कि सब युद्धों में शान्ति (Order), सुरक्षितता
ecurity) और स्वतंत्रता (Liberty) का लोप हो जाता है एवं
से लाभ उठाना तो दूर रहा, किसान-मजूरों की हानि सबसे ज्यादा
ती है। हमारी धारणा है कि शांतिवादियों को केवल नकारात्मक स्थिति
रहने का कोई अधिकार नहीं है, उन्हें अच्छी तरह स्थिति का समझना
र युद्ध के सब कारणों को दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए।

हम मानते हैं कि केवल अहंकार और लोभ, जो प्रत्येक मनुष्य
हृदय में पाये जाते हैं, ही युद्ध के कारण नहीं हैं, वरन् वे सब
ते भी हैं जो आदमियों के विभिन्न वर्गों में घृणा और विरोध पैदा
रती हैं। इनमें हम निम्नांकित को वर्तमान समय में अधिक महत्वपूर्ण
समझते हैं —

१ जातियों में विभेद, जो कृत्रिम ढंग से बढ़ाकर विद्वेष एवं
हिंसा में बदल दिया जाता है।

२ विभिन्न धर्मों में विभेद, जो पारस्परिक असहिष्णुता और
संहार की वृद्धि करता है।

३ वर्गों के बीच हर्ता एवं अपहृत के बीच का विभेद, जिससे
गृह-युद्ध पैदा होता है। यह तबतक रहेगा जबतक उत्पादन की वर्तमान
व्यवस्था बनी है और सामाजिक आवश्यकता की जगह व्यक्तिगत
लाभ समाज का मुख्य ध्येय बना हुआ है।

४ राष्ट्रों के बीच विभेद (जिसका मुख्य कारण उत्पादन की
वर्तमान व्यवस्था है), जो व्यापक युद्धों और आर्थिक अव्यवस्था की

सृष्टि करता है, जैसा आज हम देख रहे हैं। हमारी दृढ़ धारणा कि यदि सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण को दृष्टि में रखकर कि की अर्थ-व्यवस्था का निर्माण किया जाय तो ऐसे युद्धों का भय न रहेगा

अन्त में हम कहेंगे कि राज्य(State)के बारे में जो गलत धारणा में फैली हुई है उसमें भी युद्ध का एक मुख्य कारण निहित है। रा मनुष्य के लिए है मनुष्य राज्य के लिए नहीं है (The State exi for man not man for the state) । मानव व्यक्तित्व (Hu an personality) की पवित्रता की स्वीकृति को मानव-समाज आधारभूत सिद्धान्त माना जाना चाहिए। इसके अलावा राज्य मनप्रधान एवं अपनेमें परिपूर्ण (Self-contained) सत्ता नहीं क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र विशाल मानव-कुटुम्ब का एक अङ्ग है। इसलि हम अनुभव करते हैं कि सच्चे शान्तिवादियों को केवल नकारात्म स्थिति ग्रहण करके रह जाने का कोई अधिकार नहीं है वरन् उन्हें व (Classes) एवं जातियों के बीच के विभेदों को दूर करने और प सरिक सेवा-सहयोग पर आश्रित विश्वव्यापी भ्रातृत्व(बिरादरी–Brotl hood) के निर्माण में लग जाना चाहिए।

•६•

छात्रों का युद्ध-विरोधी निश्चय

१ आक्सफर्ड यूनियन सामायटी ने ६.२.३३ को निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया —

"यह यूनियन किसी भी परिस्थिति में अपने राजा और देश के लिए युद्ध नहीं करेगा।"

पक्ष में २७५ मत। विपक्ष में १५३।

२ श्री रायडल्फ चर्चिल ने संशोधन पेश किया कि यह प्रस्ताव कार्य-विवरण पुस्तक (Minutes) से निकाल दिया जाय।

७५० मत विपक्ष में, केवल १३८ पक्ष में। संशोधन गिर गया।

३ मांचेस्टर विश्वविद्यालय ने आक्सफर्ड वाला उपयुक्त प्रस्ताव (नं० १) पास किया।

•१ मत पक्ष में, १६६ विपक्ष म।

४ ग्लासगो यूनिवर्सिटी यूनियन

निम्नलिखित प्रस्ताव पेश हुआ था—

"यह यूनियन अपने राजा एवं देश के लिए युद्ध करने को त्यार है।"

पर यह अस्वीकृत हुआ। प्रस्ताव के पक्ष में ५६८ मत आये, विपक्ष में ६१४ मत आये।

५. लंदन स्कूल ऑफ इकानामिक्स ऐण्ड पोलीटिकल साइंस ८३ ३३ का आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ।
पक्ष में २७० मत, विपक्ष में केवल ६० मत।

६ मडफर्ड कालेज, लन्दन आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ
पक्ष में १४४, विपक्ष में ४४ मत।

७ बर्कबेक कालेज, लन्दन आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास।
पक्ष में ५५, विपक्ष में १८ मत।

८ ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ –
"दो राष्ट्रों के बीच युद्ध का कोई औचित्य नहीं हो सकता।"
पक्ष में ९७, विपक्ष में १२ मत।

६ ब्रिस्टल अन्तर्विश्वविद्यालय विवाद (आक्सफर्ड के पूर्व) या प्रस्ताव पास हुआ—"राष्ट्रीय सरकार द्वारा युद्ध की घोषणा होने पर यह सभा उसमें भाग न लेगी।" पक्ष में १४०, विपक्ष में ४० मत।

१० एब्रिसट्विथ यूनिवर्सिटी कालेज शान्ति का प्रस्ताव पास हुआ।
पक्ष में १८६, विपक्ष में ६६ मत।

११ बैंगर यूनिवर्सिटी, ७ मार्च, १६३३ः आक्सफर्ड वाले प्रस्ताव का समर्थन। पक्ष में १६५, विपक्ष में १८ मत।

१२ यूनिवर्सिटी कालेज ऑफ साउथवेल्स ऐण्ड मानमाउथशायर १० ३ ३३ को आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ। पक्ष में २००, विपक्ष में ६१ मत।

१३ लाइसेस्टर यूनिवर्सिटी कालेज आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ। पक्ष में २०, विपक्ष में ८ मत।

१४ नार्थम्पटन इंजीनियरिंग कालेज यूनियनः आक्सफर्ड के प्रस्ताव का समर्थन। पक्ष में २२, विपक्ष में १० मत।

१५. मेलबोर्न यूनिवर्सिटी : आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष में १०७, विपक्ष में १०५ मत।

१६. विक्टोरिया कालेज, टारंटो आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष में दो-तिहाई बहुमत।

१७ केपटाउन यूनिवर्सिटी : आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष में १८६, विपक्ष में १४४ मत।

१८. सेली ओक कालेज, बिरमिंघम : आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष में ५०, विपक्ष में ८ मत।

१६ वेस्ली हाउस, केम्ब्रिज २१ सदस्यों में से २० ने घोषणा की कि वे किसी भी स्थिति में युद्ध में भाग न लेंगे।

२० वेस्ली कालेज, लीड्स : आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास। पक्ष में २७, विपक्ष में १७ मत।

२१ पेयसेडा ब्रांच ऑफ नार्थवेल्स-क्वैरीमेंस यूनियन (सदस्य-संख्या लगभग ६,०००) आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास।

२२ थार्नली माइनर्स वेलफेयर डिबेटिंग सोसायटी आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास। पक्ष में १२४, विपक्ष में ३१ मत।

२३ नेशनल अमलगेमेटेड यूनियन ऑफ शाप असिस्टेंट्स, वेयर हाउसमेन ऐण्ड क्लार्क्स की मेरीशायर शाखा मार्च १६३३ में एक प्रस्ताव पास कर दुकानों में काम करनेवालों से अनुरोध किया कि युद्ध की घोषणा होने पर वे राजा एवं स्वदेश के लिए लड़ने से इन्कार करदें।

२४ निम्नलिखित ५ मेथडिस्ट कालेजों में यह प्रस्ताव पास हुआ कि "हम आक्सफर्ड यूनियन वाले प्रस्ताव से सर्वथा सहमत हैं।"

मत यों आये—

कालेज	पक्ष	विपक्ष	उदासीन
१ रिचमण्ड कालेज, सरे	२५	२१	—
२ विक्टोरिया पार्क, मांचेस्टर	२३	१	३
३ हार्टली कालेज, मांचेस्टर	४६	६	२
४ डिड्सबरी कालेज, मांचेस्टर	२६	२०	७
५ हैंड्सवर्थ कालेज, बिरमिंघम	५१	१०	१
	१७४	५८	११

निम्नलिखित कालेजों में आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव या तो पश होने से रोक दिया गया, या अस्वीकृत हुआ—

	पक्ष में मत	विपक्ष में मत
१ नार्टिंघम यूनिवर्सिटी	(रोक दिया गया)	
२ शेफील्ड यूनिवर्सिटी	(रोक दिया गया)	
३ बिरमिंघम यूनिवर्सिटी (अस्वीकृत हुआ)	१०७	१३०
४ आर्मस्ट्रांग कालेज, न्यूकैसिल (अस्वीकृत हुआ)	१२०	३११
५ सेंट डेविड्स कालेज, लाम्पीटर (अस्वीकृत हुआ) ११ मतों से		
६ क्वीन्स कालेज, बेलफास्ट (अस्वीकृत हुआ)	१०४	१२४

अनुवादक का नोट

संसार के प्राय: सभी देशों के छात्रों ने युद्ध के विरोध में अपना मत प्रकट किया है।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	फुटनोट में सबसे नीचे की लाइन का "The stranger" पृष्ठ ६ के फुटनोट की पहली लाइन के ऊपर रहेगा। पृष्ठ ६ के इस फुटनोट का प्रारंभ यों होगा— N P The stianger Shall see (शेष जैसा छपा है)		
६ ,,	,, १	और आँखों में	और अपरिचित आँखों म
७ फुटनोट पंक्ति	२	classics series	Classics Series
७ ,,	,, ३	The kingdom of Heaven is with	The Kingdom of Heaven is
७ ,,	,, ४	within you	Within You
८	१	नामन	नार्मन
११ फुटनोट पंक्ति	३	galander	Icelander
११ ,,	,, ४	7 M.	J M
१३	६	वैराम्य	वैपम्य
१५	११	सैनिक ने	सैनिक नेता
२१	१०	जीव न	जीवन
२८	३	आत्मोत्सर्ग	आत्मोत्सर्ग
२६ फुटनोट पंक्ति	८	पर्सीफाक	पर्सीफाल
३०	,, १	आकर्मण	आक्रमण
३	, २	कूरनुमा	कुसनुमा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२	१७	अनेक	प्रत्येक
३२	फुटनोट पंक्ति २	216	2/6
३२	,, ,, २	Union	Unwin
३२	,, ,, ३	पृष्ठ	परिशिष्ट
३३	१०	ऊँचा	अन्या
३५	४	धक्के	धक्के
४१	२	अगनभूमि	अग्रभूमि
४१	फुटनोट पंक्ति ४	निमंत्रित	नियंत्रित
४६	५	fell	flee
६१	१	जाने दे	जाने क
८१	८	समारे	हमारे
८१	१७	सलिए	इसलिए
८३	३	पुरस्कार	पुरस्कृत
८४	१	पर मा	पेरिस, या
८५	२	शांति	शांत
८६	११	deed	deeds
८८	३	blackode	blockade
६४	१४	चमन	चमन
१०५	फुटनोट पंक्ति ४	lands	lambs
१०५	५	Pour	Poor
१०८	१०	अफम	अफसर
१११	७	Dues	Deus

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१११	१७	नि:शात्री करण	नि शस्त्रीकरण
११६	६	इतना रुपया	इतना समय
११७	५	कर थे	मेचर
१२० फुटनोट पंक्ति २		नि:शास्त्री करण	नि:शस्त्रीकरण
१२२	४	कुछ तुम दो	कुछ तुम कह रहे हो
१२४	१६	मो येरी	मोयेरी
१२५ फुटनोट पंक्ति १		Navy Dcfence	Navy Defencc
१२६	७	वायुमान	वायूयान
१३१	११	मानव	मानय
१३४	६	स्टेशन	स्टेशन
१३७ अन्तिम लाइन		स्वदेश-हित	स्वदेश-हित-विरोध
१३८ नीचे से दूसरी लाइन		Jablonec n/m	Jablone'c
१४०	७	हटा	हटा
१४२	२	अपना	अपने
१४२	१७	हमें	हम
१४६ फुटनोट पंक्ति ४		end	and
१५५ ,,	,, १	loth	both
१६६	७	समुद्री शान्ति	समुद्री शक्ति
१६६ नीचे से	,, १	mother	mother s
१७५	४	पड़ोसी	में पड़ोसी
१७५	१०	रीम-करीब	करीब-करीब

'सस्ता साहित्य मण्डल' 'सर्वोदय साहित्य माला' के प्रकाशन

१ दिव्य जीवन। स्वेट मार्डेन की The Miracles of right Thought नामक पुस्तक का अनुवाद। जीवन की कठिन समस्याओं से निराश युवकों के लिए, यह पुस्तक संजीवनी विद्या के समान है। उत्साह वर्धक ओजपूर्ण और सही रास्ता बतानेवाली। मूल्य ।=)

२ जीवन साहित्य। भारतीय साहित्य परिषद् के मंत्री और महान् विचारक काका कालेलकर के शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता राजनीति आदि महत्वपूर्ण विषयों पर लिखे निबन्ध। मूल्य १।)

३ तामिल वेद। दक्षिण के अछूत महात्मा तिरुवल्लुवर का उच्चकोटि की नैतिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक शिक्षाओं से भरा हुआ ग्रन्थ। भूमिका लेखक श्री राजगोपालाचार्य। मूल्य ।॥)

४ भारत में व्यसन और व्यभिचार। [ले० वैजनाथ महोदय] इसमें तथ्यों तथा आँकड़ों से यह बताया है कि भारतवर्ष में शराब, भाँग, गाँजा अफीम आदि दुर्व्यसन कैसे फैले तथा उनसे भारतवर्ष की जनता को क्या हानियाँ हुई और हो रही हैं; व्यभिचार के पाप से भारतवासी किस प्रकार पतित हो रहे हैं और किस प्रकार हम इन दुर्गुणों के पंजों से निकल सकते हैं। मूल्य ॥।=)

५ सामाजिक कुरीतियाँ। [जब्त: अप्राप्य] मूल्य ॥)

६ भारत के स्त्री-रत्न। इस पुस्तक में भारतवर्ष की लगभग सभी प्रसिद्ध एवं पूजनीय स्त्रियों की मनोहर तथा पवित्र जीवन-कथाएँ लिखी गई हैं। बहनें इन्हें पढ़ें तथा हमारे पवित्र और गौरवशाली

भूतकाल की झांकी देख और अपने का आदर्श स्त्री-रत्न बनायें। तीन भागों में। चौथा भाग तैयार हो रहा है। मूल्य १)

७ अनाथा। फ्रान्स के प्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के Laughing Man का अनुवाद। उमरावों तथा दरबारियों की कुत्सित क्रीड़ाओं का नग्न दर्शन। मनोरंजक, करुण और गम्भीर। मूल्य १।=)

८ ब्रह्मचर्य विज्ञान। (जगन्नारायणदेव शर्मा) इस पुस्तक में ब्रह्मचर्य की महिमा, उसके पालन की विधि, उसके लाभ आदि बातें बहुत अच्छे ढंग से बताई गई हैं। पुस्तक में वेद, उपनिषद्, पुराण आदि सद्ग्रन्थों के शुभ वचनों का बहुत अच्छा संग्रह है। मूल्य ।।।=)

९ यूरोप का इतिहास। (रामकिशोर शर्मा) यह राष्ट्रीयता, आत्म बलिदान तथा आज़ादी का इतिहास है। हम भारतीयों को यह इतिहास ज़रूर पढ़ना चाहिए। मूल्य २)

१० समाज विज्ञान। (चन्द्रराज भंडारी) समाज-रचना, उसके विकास तथा निर्माण पर इसमें बहुत अच्छी तरह विचार किया गया है। समाजशास्त्र पर हिन्दी की मौलिक पुस्तक। मूल्य १।।)

११ खद्दर का सम्पत्तिशास्त्र। रिचर्ड बी ग्रेग की The Economics of Khaddar का हिन्दी अनुवाद। इनमें लेखक ने खादी की उपयोगिता वैज्ञानिक तथा आर्थिक ढंग से सिद्ध की है। मूल्य ।।।=)

१२ गोरों का प्रभुत्व। अमेरिकन विद्वान् लाथ्राप स्टाडार्ड की The Rising Tide of Colour नामक पुस्तक के आधार पर इसमें बतलाया गया है कि संसार की समस्त जातियाँ स्वतन्त्र होने के लिए किस प्रकार गोरी जातियों से लड़ रही हैं और किस प्रकार उनके भार से अपने को स्वतन्त्र कर रही हैं। मूल्य ।।।=)

१३ चीन की आवाज़। [अप्राप्य] मूल्य ।−)

१४ दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास। (महात्मा गांधी) सत्याग्रह की उत्पत्ति तथा उसके प्रयोग का खुद गांधीजी द्वारा लिखा इतिहास पढ़ें कि किस प्रकार बहादुरी से इस शस्त्र द्वारा अफ्रीकावासियों ने अपने अधिकारों की बिना दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाते हुए रक्षा की। मूल्य १।)

१५ विजयी बारडोली। [अप्राप्य] मूल्य २)

१६ अनीति की राह पर। संयम, इंद्रिय-निग्रह तथा ब्रह्मचर्य पर गांधीजी की यह कृति अनुपम और सर्वश्रेष्ठ है। मूल्य ॥=)

१७ सीता की अग्नि-परीक्षा। (काली प्रसन्न घोष) लंका-विजय के बाद सीताजी की अग्नि-शुद्धि का यह वैज्ञानिक विश्लेषण है। विज्ञान का हवाला देकर, यह बताया गया है कि सीता की अग्नि परीक्षा की घटना सच्ची है। ।−)

१८ कन्या शिक्षा। इस छोटी-सी पुस्तक में हिन्दी के यशस्वी लेखक स्व० चन्द्रशेखर शास्त्री ने बिलकुल सरल ढँग से, शुरू से लेकर विवाह के बाद तक के कन्याओं के जीवन तथा उनके कर्त्तव्यों की चर्चा प्रश्नोत्तर के रूप में बड़े सुन्दर ढँग से की है। कन्याओं क सीखने योग्य सभी बातें इसमें आगई हैं। मूल्य ।)

१९ कर्मयोग। अश्विनीकुमार दत्त की यह पुस्तक पढ़ने से पाठक 'कर्मयोग' के संसार में प्रवेश पा जाते हैं और उनको पारमार्थिक सुख का अनुभव होने लगता है। मूल्य ।=)

२० कलवार की करतूत। रूस के महान् लेखक महात्मा टाल्स्टाय की सरल भाषा में शराब के आविष्कार की मनोरंजक और शिक्षा प्रद कहानी। मूल्य =)

२१ व्यावहारिक सभ्यता। बच्चों, युवकों, यहाँ तक कि अवस्था प्राप्त लोगों के लिए भी रोज़ के व्यवहार में आनेवाली शिक्षाओं की पोथी। रोचक, शिक्षाप्रद तथा ज्ञानप्रद। मूल्य ।।)

२२ अन्धेरे में उजाला। टाल्सटाय के Light Shines in The Darkness नामक नाटक का अनुवाद। इस नाटक में टाल्सटाय ने अपने जीवन की छाया अंकित की है। उनके हृद्‌गत मनोभावों और हृदय-मंथन की यह अनुपम कहानी है मूल्य ।।)

२३ स्वामीजी का बलिदान। (ह० उ०) [अप्राप्य] मूल्य ।–)

२४ हमारे ज़माने की गुलामी। कन्त: [अप्राप्य] मूल्य ।)

२५ स्त्री और पुरुष। संयम तथा ब्रह्मचर्य पर टाल्सटाय की यह पुस्तक बहुत महत्त्वपूर्ण है। स्त्रियों को अपनी इच्छा-पूर्ति का साधन समझनेवाले इसे पढ़ें और समझें कि स्त्री-पुरुषों का सम्बन्ध भोग-विलास का नहीं बल्कि एक पवित्र उद्देश्य के लिए किया गया एक पवित्र सम्बन्ध है। मूल्य ।।)

२६ सफ़ाई। घर, गाँव तथा शरीर की सफ़ाई के सम्बन्ध में उत्तम पुस्तक। ग्रामीणों के काम की चीज़। मूल्य ।=)

२७ क्या करें? टाल्स्टाय की सुप्रसिद्ध पुस्तक What to do? का अनुवाद। गरीबों एवं पीड़ितों की समस्यायें और उनका हल। यह पुस्तक नहीं बल्कि सममर्मी हृदय का मंथन है। मूल्य १।।=)

२८ हाथ की कताई-बुनाई। [अप्राप्य] मूल्य ।।–)

२९ आत्मोपदेश। यूनान के प्रसिद्ध विचारक महात्मा एपिक्टेटस के प्रथम और महत्त्वपूर्ण उपदेशों का संग्रह। मूल्य ।)

३० यथार्थ आदर्श जीवन। [अप्राप्य] मूल्य ॥—)

३१ जब अंग्रेज नहीं आये थे। इसमें बताया गया है कि भारत की दुर्दशा किस प्रकार अंग्रेजों के यहाँ आने के बाद से शुरू हुई। स्व० दादाभाई नौरोजी की Poverty and Un British Rule in India के आधार पर लिखित। मूल्य ।)

३२ गंगा गोविन्दसिंह। [अप्राप्य] मूल्य ॥=)

३३ श्री रामचरित्र। श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य लिखित रामायण की कहानी। करुण और मधुर। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी का जीवन-चरित्र। मूल्य १)

३४ आश्रम-हरिणी। (वामन मल्हार जोशी) एक पौराणिक गाथा। विधवा विवाह समस्या पर पौराणिकों के विचार। मूल्य ।)

३५ हिन्दी-मराठी-कोष। (पुण्डलीक) मराठी भाषा भाषियों को हिन्दी सीखने में यह बड़े काम की चीज है। मूल्य २)

३६ स्वाधीनता के सिद्धान्त। आयर्लैंड के अमर शहीद टिरेन्स मेकस्विनी के Principles of freedom का अनुवाद है। आज़ादी की इच्छावालों की नसों में नया खून, नया जोश और स्फूर्ति भरनेवाली पुस्तक। मूल्य ॥)

३७ महान मातृत्व की ओर। (नाथूराम शुक्ल) इस पुस्तक में मातृत्व की जिम्मेदारी, उसकी गुरुता और आरोग्य का दिग्दर्शन है। स्त्री उपयोगी उत्तम और दिलचस्प पुस्तक। मूल्य ॥।=)

३८ शिवाजी की योग्यता। (वामलकर) छत्रपति शिवाजी का चरित्र विश्लेषण। उनकी शासन प्रणाली का तर्कपूर्ण अध्ययन। मूल्य ।=)

३९ तरंगित हृदय। गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री देवशर्मा के

विचार-तरंगों का सुन्दर संग्रह। स्व० स्वामी भगवानन्द के आशीर्वाद सहित। नया संस्करण मूल्य ॥)

४०—हॉलैण्ड की राज्यक्रान्ति [नरमेध] अंग्रेज़ी के सुप्रसिद्ध लेखक मोटले की Rise of the Duch Republic के आधार पर श्री चन्द्रभाल जौहरी का लिखा हुआ डच प्रजा के आत्मयज्ञ का पुनीत और रोमांचकारी इतिहास। हृदय में उथल पुथल मचा देनेवाला क्रांतिकारी ग्रंथ। मूल्य १॥)

४१ दुखी दुनिया। ग़रीब और पीड़ित मानवी दुनिया के करुण चित्र। श्री राजगोपालाचार्य की सच्ची घटनाओं पर लिखी कहानियाँ। मधुर, करुण और सुन्दर। मूल्य ।=)

४२ जिन्दा लाश। टाल्सटाय के The Living Corpse नामक नाटक का अनुवाद। टाल्सटॉय के सब नाटकों में यह बड़ा ही करुण और मर्मस्पर्शी है। मूल्य ॥)

४३ आत्म-कथा। (महात्मा गांधी) संसार के साहित्य का यह एक उज्ज्वल रत्न है। उपनिषदों की भांति पवित्र और उपन्यासों की भाँति रोचक। चरित्र को निर्मल और मन को ऊँचा उठानेवाला। हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा किया गया प्रमाणिक अनुवाद। मूल्य १॥)

४४ जब अंग्रेज़ आये। [ज़ब्त अप्राप्य] मूल्य १।=)

४५ जीवन विकास। डार्विन के विकासवाद के सिद्धान्त को विशद रूप से समझानेवाली हिन्दी में यह एक ही पुस्तक है। मूल्य १।) १॥)

४६ किसानों का बिगुल। [ज़ब्त अप्राप्य] मूल्य =)

४७ फाँसी। विक्टर ह्यूगो लिखित Sentence to death नामक उपन्यास का अनुवाद। फाँसी की सज़ा पाये हुए एक युवक के मनोभावों का चित्रण। बेधक और करुण हृदय की झाँकी। मूल्य ।=)

४८ अनासक्तियोग और गीता बोध। गीता पर महात्मा गांधी की व्याख्या;मूल श्लोक तथा महात्माजी द्वारा गीता के तात्पर्य-गीता बोध सहित १५० पृष्ठों में। मूल्य केवल ।≠)

केवल अनासक्तियोग ≈), सजिल्द ।) गीताबोध –)॥

४९ स्वर्ण विहान (हरिकृष्ण प्रेमी) [पत्र अप्राप्य] मू० ।≠)

५० मराठों का उत्थान और पतन। (गोपाल दामोदर तामसकर) मराठा साम्राज्य का विस्तृत और सच्चा इतिहास। मराठी भाषा में भी मराठों का ऐसा सच्चा और बड़ा इतिहास नहीं है। ऐसा महाराष्ट्र के अनेक विद्वान् और नेता मानते हैं। मू० २॥)

५१ भाई के पत्र। (रामनाथ 'सुमन') स्त्री-जीवन पर प्रकाश डालनेवाली; उनकी घरेलू एवं रोजमर्रा की कठिनाई में पथ प्रदर्शक। बहनों के हाथों में दिये जाने योग्य एक ही पुस्तक। मूल्य १॥) २)

५२ स्वगत। (हरिभाऊ उपाध्याय) चरित्र को गढ़नेवाले तथा युवकों को सच्चा रास्ता दिखाने वाले उच्च और उत्तम विचार। मू० ।≈)

५३ युगधर्म। (ह० उ०) [जब्त अप्राप्य] मूल्य १≈)

५४ स्त्री समस्या। (मुकुट बिहारी वर्मा) नारी-जीवन की जटिल समस्याओं का गम्भीर अध्ययन। स्त्री-आन्दोलन के इतिहास सहित स्त्रियों की समस्या पर यह एक अच्छी और संग्रह करने योग्य 'रेफ़रेन्स' युक्त है। मूल्य १॥।) सजिल्द २)

५५ विदेशी कपड़ा का मुकाबला। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री मनमोहन गांधी ने इसमें बतलाया है कि भारत किस प्रकार अपनी ज़रूरत का पूरा कपड़ा तैयार कर सकता है और विदेशी कपड़े को हिन्दुस्तान में आने से रोक सकता है। मू० ॥=)

५६ चित्रपट। प्रो० शान्तिप्रसाद वर्मा एम० ए० के गद्य-गीतों का संग्रह। भावनामय, करुण और मधुर। मूल्य ।≥)

५७ राष्ट्रवाणी। (गांधीजी) [अप्राप्य] मू० ॥≥)

५८ इंग्लैण्ड में महात्माजी। (महादेव देसाई) महात्माजी की दूसरी गोलमेज़ परिषद् के समय की इंग्लैंड की यात्रा का सुन्दर, सरस और मज़ेदार बयान। हिन्दी में अपने ढंग का सर्वोत्तम यात्रा वृत्तान्त। मू० १)

५९ रोटी का सवाल। मशहूर क्रांतिकारी लेखक प्रिंस क्रोपाटकिन की अमर कृति Conquest of Bread का सरल अनुवाद। समाजवाद का सुन्दर, सरल और सुबोध विवेचन। मू० १)

६० दैवी-सम्पद्। उत्तम नैतिक एवं धार्मिक पुस्तक। 'दैवी-सम्पद् से मनुष्य को मोक्ष होता है।'गीता की इस उक्ति का सुन्दर विवेचन। मनुष्य को मोक्ष का रास्ता बतानेवाली पुस्तक। मू० ।=)

६१ जीवन-सूत्र। अंग्रेज़ी में थॉमस केम्पिस लिखित सर्व प्रसिद्ध पुस्तक Imitation of Christ का अनुवाद। जीवन को उन्नत और विचारों को सात्विक बनानेवाली पोथी। अंग्रेज़ी में इसको बाइबिल के समान माना जाता है। मू० ॥)

६२ हमारा कलंक। अस्पृश्यता-निवारण पर महात्माजी के विचारों एवं लेखों का संग्रह, उनके महान् उपवास की कहानी। महात्मा गांधी के आशीर्वाद सहित। मू० ॥≥)

६३ बुदबुद्। (हरिभाऊ उपाध्याय) अपने आदर्शों से जीवन का मेल मिलानेवाले युवकों के लिए चिंतनीय पुस्तक है। मूल्य ॥)

६४ संघर्ष या सहयोग? प्रिंस क्रोपाटकिन की Mutual Aid नामक पुस्तक का अनुवाद। इसमें बतलाया है कि पशु और पक्षियों से

लेकर मनुष्य तक सबके जीवन का आधार सहयोग है, संघर्ष नहीं; एकता है, लड़ाई नहीं। मूल्य १॥)

६५ गांधी विचार दोहन। (किशोरलाल मशरूवाला) इसमें महात्मा जी के समस्त राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं नैतिक विचारों का बड़ा सुन्दर संकलन और दोहन किया गया है। मूल्य ॥)

६६ एशिया की क्रांति। (सत्यनारायण) [अप्राप्य] १॥)

६७ हमारे राष्ट्र-निर्माता। (रामनाथ 'सुमन') लोकमान्य तिलक, स्व० मोतीलालजी, मालवीयजी, महात्माजी, दास बाबू, जवाहरलालजी, मौ० मुहम्मदअली, सरदार और प्रेसिडेंट पटेल की जीवनियाँ—उनके संस्मरण, जीवन की झाँकियाँ और उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण। हिन्दी में यह पुस्तक जीवन-चरित्र लिखने का एक नया ही मार्ग उपस्थित करती है। अपने ढंग की एक ही मौलिक पुस्तक। मूल्य २॥) १)

६८ स्वतंत्रता की ओर। (हरिभाऊ उपाध्याय) इसमें बताया गया है कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है ? हम उस लक्ष्य – स्वतंत्रता— को किस प्रकार और किन साधनों से प्राप्त कर सकते हैं। हमारा समाज कैसा हो, हमारा साहित्य कैसा हो, हमारा जीवन कैसा बने, जिससे हम स्वतंत्रता की ओर बढ़ते चले जायँ। हिन्दी में इस पुस्तक का बड़ा आदर हुआ है और अपने ढंग की एक ही मौलिक पुस्तक मानी जाती है। मूल्य १॥)

६९ आगे बढ़ो। स्वट् मार्डेन के Pushing to the Front का संक्षिप्त अनुवाद। कठिनाई में पड़े युवकों को सच्चे साथी व समान रास्ता बतानेवाली मूल्य ॥)

७० बुद्ध-वाणी। (वियोगी हरि) भगवान् बुद्ध के चुने हुए वचनों का विषयवार संकलन। बौद्ध धर्म के विषय में हिन्दी में मिलने वाले सब ग्रन्थों का सार-तत्त्व। मूल्य ॥=)

७१ कांग्रेस का इतिहास। डॉ० पट्टाभि सीतारामैया की लिखी तथा कांग्रेस की स्वर्ण जयन्ती पर प्रकाशित अंग्रेज़ी पुस्तक History of the Congress का यह प्रामाणिक अनुवाद है। इसकी भूमिका तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू ने लिखी है। अनुवाद तथा संपादन हरिभाऊ उपाध्याय ने किया है। दूसरा संस्करण। बड़े आकार के ६५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक। मूल्य केवल २॥)

७२ हमारे राष्ट्रपति। (सत्यदेव विद्यालंकार) कांग्रेस के पहले अधिवेशन से अबतक के तमाम सभापतियों के जीवन-परिचय इस पुस्तक में दे दिये हैं। हिन्दी में अपने विषय की यह उत्तम तथा एक मात्र पुस्तक है। भूमिका श्री राजेन्द्रबाबू ने लिखी है। सब सभापतियों के चित्रों के साथ पृष्ठ संख्या ४००। मूल्य १)

७३ मेरी कहानी। पं० जवाहरलाल नेहरू की आत्म-कथा। हिन्दी अनुवाद और संपादन हरिभाऊ उपाध्याय ने किया है। वर्तमान समय की एक ही बेजोड़ पुस्तक। बड़े आकार में, पृष्ठ-संख्या ७५०। सजिल्द मूल्य ४)

७४ विश्व इतिहास की झलक। पण्डित जवाहरलालजी के अपनी पुत्री इंदिरा के नाम लिखे पत्रों का संग्रह। इसमें १९६ पत्र हैं और इनमें उन्होंने सारी दुनिया के इतिहास की झाँकी बड़ी सरलता से बताई है। दो खण्डों में -१५, पृष्ठ— मूल्य ८)

७५ किसानों का सवाल। (डॉ० अहमद) इसमें बताया गया है

कि हमारे किसानों का सवाल क्या है, उनकी हालत क्यों खराब है ? और अगर खराब है तो उसके जिम्मेदार कौन है ? और उसके दूर करने का उपाय क्या है ? यह सब हमें जानना चाहिए। इसकी भूमिका पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लिखी है। मूल्य ।)

७६ भारत का नया शासन विधान। (प्रान्तीय स्वराज्य) नये शासन-विधान पर इस पुस्तक में आलोचनात्मक ढंग से विचार किया गया है और बताया गया है कि किस प्रकार इस नये शासन-विधान में हमें कुछ भी अधिकार नहीं दिये गये हैं। नये विधान को समझने के लिए इससे सरल और सुबोध पुस्तक अभी तक हिन्दी में नहीं लिखी गई है। मूल्य ।॥)

७७ हमारे गाँवों की कहानी। (स्वर्गीय रामदास गौड़) हिन्दुस्तान गाँवों का देश है। गाँव ही हमारी नसों में जीवन प्रदान करते हैं—ये ही हमें खाना-कपड़ा देते हैं लेकिन इनकी खुद की दशा क्या है ? यह जानने के लिए स्व० रामदास गौड़ की लिखी हमारे गाँव की यह दर्दनाक कहानी पढ़िए तो आप सिहर उठेंगे कि हमारे अन्नदाताओं ने जिनको मेहमान समझा और उनकी इतनी खातिरतवाज़ो की, वे कितने बेवफ़ा निकले और उनको कितना नीचे गिरा दिया। मू० ॥)

७८ महाभारत के पात्र। (आचार्य नानाभाई) मूल्य ॥)

७९ हमारे गाँवों का सुधार और संगठन। (स्वर्गीय रामदास गौड़) मूल्य १)

८० मन्तवाणी। (वियोगी हरि) मू० ॥)

'सस्ता साहित्य मण्डल' [सेल एजेन्सी विभाग] के

अन्य प्रकाशन

१ आदूगरनी [हरिकृष्ण 'प्रेमी'] प्रेमीजी की कविताओं से हिन्दी-संसार काफ़ी परिचित हो गया है। जादूगरनी उनकी दूसरी रचना है—मूल्य ।॥)

२ विद्यार्थी और शिक्षक [अनु० काशीनाथ त्रिवेदी] गुजराती के शिक्षण शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य श्री गिजूभाई, हरभाई, तारा बहन मोडक आदि के शिक्षा विषयक उत्तम लेख और निबन्धों का संग्रह— ॥) [अप्राप्य]

३ लोपामुद्रा [ले० कन्हैयालाल मुन्शी] गुजरात के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री मुन्शी का यह ऋग्वेद कालीन उपन्यास बहुत मनोहर और रोचक है। महान् अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा की यह जीवन-कथा है। मूल्य १)

४ रोटी का राग [श्रीमन्नारायण अग्रवाल एम० ए०] रोटी का राग नये युग का राग है। महात्मा जी के शब्दों में रचयिता का 'हृदय स्वच्छ और निर्मल है।' श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में 'यह रोटी का राग भूखों ठुंठों को रुचेगा' और काका कालेलकर के शब्दों में 'सरल संस्कारी और सहृदय इन्हीं शब्दों में श्रीमन्नारायणजी की कविता का वर्णन हो सकता है।' मूल्य ।॥)

५ चारा-दाना और उसका खिलाने के उपाय [ले० परमेश्वरी प्रसाद गुप्ता] इसमें पशु-पालन के बारे में वैज्ञानिक रीति से और साथ ही सरलता पूर्वक विचार किया गया है। इसके लेखक का इस बारे में वर्षों का प्रत्यक्ष अनुभव है। मूल्य ≈)

आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थ

१ राजनीति प्रवेशिका—(हेरल्ड लास्की)
२ जगत धर्मग्रन्थ आर्य—(डॉ० अहमद)
३ गीतामन्थन—(किशोरलाल मशरूवाला)
४ हमारा नागरिक जिम्मेदारी—(कृष्णचन्द्र विद्यालंकार)
५ लोकजीवन—(काका कालेलकर)
६ जीवनशोधन—(किशोरलाल मशरूवाला)
७ गांधीवाद समाजवाद—(संपादक—काका कालेलकर)
८ गांधी साहित्य माला—(२० भागों में)
९ महाभारत के पात्र—(५ भागों में)
१० टाल्स्टॉय ग्रन्थावलि—(१० भागों में)
११ लोक साहित्यमाला—(२०० पुस्तकें)
१२ नया शासन विधान—(फिडरेशन)

परम कल्याण मंत्र

ॐकारबिन्दुसयुक्त, नित्य ध्यायन्ति योगिन ।
कामद मोक्षद चैव, ॐकाराय नमोनमः ॥

सपादक श्री 'पमी'

प्रकाशकः—
जीवणचंद धरमचंद झवेरी
धनजी स्ट्रीट–मुंबई

(सुधारा वधारा सहित)

आवृत्ति बीजी

मुद्रणस्थान—
धी आनंद प्री. प्रेस–भावनगर.
मुद्रकः—
शाह गुलाबचंद लल्लुभाई

उ प हा र

श्री ———————————————— को

———————— भेंट

सत्य

सुंदरम्

श्री सिद्धचक्रजी उर्फे नवपदजी मंडल.

? Press Bhavnagar

प्रकाशकना बे शब्द

निवेदन.

परम कल्याण मंत्रनी चोपडी प्रथम में छपावी एक हजार नकल भेट आपी त्यार बाद घारे वाळुपणी मोगधी आववाथी मी वसी वेळो साधु गुरुश्री पासे हता, तेमने तेमां योग्य सुधारो करी छपाववा, वीगेरेनुं कार्य सोंप्युं ने भेट आपवा केटलाक तरफथी पैसा आपवा कहेवामां आव्युं हतु. पण पैसा नहीं आववाथी कींमत राखवामां आवी छे अने तेमां जे कांइ वधारो आवशे ते फरीथी आ चोपडी छपाववाना कार्यमां वपराशे

प्रसिद्ध कर्ता.

पूर्वक प्रसंगोपात नोंधता रह्या परिणामे तेमांथी ॐ अर्हं अने 'मनना सायन्स' संबंधीनां विचारो सूत्र तारवी वाचकवर्ग समक्ष आ पुस्तक रूपे आजे रजु थाय छे

पुस्तक वाचता पहेला ए जाणवु जरूरी छे के आ पुस्तकना आगळना भागमां छपायेलु योगीजीनु संस्कारचित्र ए भाइ वसीनुं, योगीजीना जीवन सबधी बहु ज सूक्ष्म रीते थयेलुं स्वतंत्र छतां थाछु अवलोकन मात्र छे ज्यारे ॐ अर्हं अने मनना विज्ञान उपर दर्शावेला विचारो मूळ योगीजीना छे, अर्थात् 'वस्तु' तेमनी छे, अने मात्र भाइ वसीए ते वस्तुने रो मापामा विस्तारी बराबर क्रमसर गोठवी आपवानु सपादन कार्य कर्युं छे

आ पुस्तकने तैयार करवामां भाइ वसीए पोतानी चालु मांदगीनी वच्चे पण प्रेमवश थइ जे श्रम उठाव्यो छे ते मदल आभारनी उंडी लागणी दर्शावी वाचकवर्ग पासेथी आशा राखु छुं के तेओ आवुना पहाडोमां विचरता एक उच कोटीना साधु पुरुषना आ विचारप्रवाहने समजवा अने समजीने ते प्रमाणे पोतानो कल्याणपंथ शोधी लेवा पोताथी बनी शकतो यत्किंचित् प्रयत्न सेवशोज

जरूर तेमां आपणु कल्याण छे ! कारण के आ पुस्तक ए एक अनुभवीनी अनुभवकथा छे कल्याणपथे पळी चूकेला एक जीवात्मानो पेगाम छे आपणे सांभळीए, समजीए अने अनुसरीए तो अचूक आपणी फतेह छे ज ः सौनु कल्याण हो ! एज भावना !

मुबइ प्रकाशक,

जीवणचद धरमचद झवेरी

अर्पण हो !

जगतभरनां योद्धाओ, अवधूतो ने योगीओ

के

जेमना बाहुमां, ध्यानमां, गानमां ने 'ध्यान'मां

पोताना

चोक्स 'ध्येय'नी सिद्धि अर्थे

अजब मस्ती

भरी छे।

तेमना

करकमळमां

वगर सरवे ..वगर परवानगीए

सस्नेह

समर्पण !

ॐ

अने समर्पण हो तेमने के जेओ

ॐकारना

पवित्र ध्यानमां

पोताना आत्मानी रोशनी प्रगटावी शक्या

अने हजु य प्रगटाववा

उत्सुक होय तेवा

जीवात्माने

सप्रेम समर्पण !

परमयोगी श्री शांतिविजयजी महाराज

। संवत् १९४६ महा सुद ५ दीक्षा संवत १९६१ महा सुद ५

, ग्राम-भावनगर

एक संस्कारचित्र.

आलेखनार श्री मंसी

योगीश्री शांतिविजयजीनुं मधुर दर्शन

ए एक उच्च कोटीना महापुरुष छे छतां बाळकना जेवुं निरभिमान
अने गभरु एमनुं हृदय छे महात्माओना लक्षण शास्त्रमां तो घणे
ठेकाणे लख्यां होय पण बीजे भाग्येज कोइमां भाव एवुं बुद्धि अने
हृदयनुं विचारबळ अने भावो सरस प्रमाणमां एवो भावो सुंदर
समन्वय ए मने तो खरा महात्मापणानुं स्वरूप छे एम एमना
अने मारा परिचयथी मने लाग्युं छे ज्यारे ज्यारे हुं एमनी पासे गयो
छुं त्यारे त्यारे एमना सानिध्यमां प्रगाढ अने हृदयना भावोनी
एकता थइ जइने फक्त एमनी सामे जोया करवानी अने एमनुं
वचन सांभळ्या करवाना भावमात्र सिवाय बीजी कांइ वृत्ति उत्पन्न
न थती नथी. दरेक भावनारने एवो भास थइ जाय छे एम मैं
जोयुं छे महात्मापणानी एथी विशेष व्याख्या–सामग्री बीजी शुं होइ
शके ! लोकपक्षानी इच्छाथी तेओ घणां पर छे
घणां महान् पुरुषोना परिचयमां आववाना प्रसंगो मने
बन्या छे, पण एमनुं सानिध्य मने अपूर्व लाग्युं छे
क्या अने केटला अभ्यासनुं आ परिणाम हशे ए जो समजाय अने
ते प्रमाणे करी शकाय एटली सुगमता वधाय तो तेम करवानुं मन
थइ जाय एवुं छे

सर प्रभाशंकर पट्टणी

भावनगर.

जे चहेरा परथी ' शास्त्री ' थे धर्मो रचाय ते चहेरो धन्य छे

केटलाक चेहेराओ एवा मधुर होय छे के आखे सताय स्हामे बेसी एनां अमृत पीधां ज करीए ! पीतां धराइए नहिं अने जोतां स्हमजी शकाय नहिं एटलो इतिहास सुझो थाय, न थाकी शकाय तेटला भावो जन्मे अने न कळी के कथी शकाय तेटली सुंदर लागणीओ उभराय !

वदन पर विशीए एवी अपूर्व छटाथी सुकुमारतानी रेखाओ पाडी होय अने एना मनोहर लालित्यमां मस्तानपणानां एवां मोहक रंगो पूर्या होय के बस ! त्यां ज नजर ठरी जवानुं दील थाय:

एवो स्वाभाविक 'चुंबक' थी भरेलो कोई गौरवशील चहेरो त्हमे जोयो छे ?

आत्मसौंदर्यनां शीतळ रसभर्यां झरणांओ वहावतुं, गुलाबी यौवनथी चकोचक भरेलुं तेजस्वी मुखडुं कोई नजरे चडयुं छे ? प्रभुतानो ठंडो स्पर्श पामेलुं, मौन छतां मोरलीना जेवो मीठो सूर समझावतुं अने हृदयमां शांतिनुं सींचन करतुं कोई भव्य ने रसिक मुखारविंद 'अनुभव्युं' छे ? .. जोयुं छे ? अनुभव्युं छे ? कहो ! कहो !

आबुना पहाडोमां विचरता पथिकों सामे वातावरणमांथी आवा प्रश्नो थता संभळाय छे:

अमने कलकत्तामां राजमार एवी रामदिना पणो घणाने लायक छे

आबुना रम्य पहाडोमां फरता फरता चार पांच वर्ष पहेला एक सुभागी घोघडीए एवुं एक सुंदर दर्शन थयुं हृदयने इषमचाची मानवजीवनना शुद्ध संस्कारोने प्रकाशमां आणे एवा प्रतापी व्यक्तित्वनी कल्पनाने स्थूळचित्र मळ्युं त्यारे अजब आनंद ने शांतिनो अनुभव कर्यो !

- पाच वर्ष वीती गया अनेकवार मीलननो लाभ मळ्यो: हृदय पर जे छाप पडी छे तेने स्मृतिमांथी कागळ पर उतारी जाउं ! *

ए महापुरुषनु शुभ नाम श्री शांतिविजयजी छे.

दिव्यताना दुष्काळोथी रीबाता शहेरोना झेरी वातावरणथी सदाय दूर रही आत्मा अने परमात्मानो 'योग' साधवा आबुना एकांत पहाडोमां 'मानदमस्त' थइने ए योगी विचरे छे

कुदरते एमना चहेरा पर एवुं अजब माधुर्य मूक्युं छे के लोको एनी पाछळ घेला थइ फरे, एमनी पासे एवी निर्दोष

* मारी अमदा के ग्रंथस्थाः आ बधेमांथी कोइनां 'हेर'ने आ 'यादी'मां स्थान न होय ! गमे त्यां वगर जोये 'जूठी बनावी' मालवबुद्धि के केवळ टीकाओ ज करवानी 'मनुष्यना हीन लागणीओने' बदकारा जेवी शुद्ध विचारक बुद्धि अने अवलोकन शक्तिथी ज मानसशास्त्रने आधारे आ 'दर्शन'नां स्मरणांमो लखाया छे

'शोधे तेने ज मात्र 'मळे' छे. Seek & Find !

मोहिनी छे के एकवार मळनार व्यक्ति जीवनभर कदी ज तेमने भूली शके नहि ! कारण के न समजी शकाय पण कोइक 'अनुभवी' शकाय तेवुं मुंगु संगीत एमना मीलनमां मयु छे

एमना शांत ने प्रतापी च्हेरा पर शाति-असिम शांति परमो जाणे महाणी छे, सुंदर व्यक्तित्वनी स्वां तेजस्वी छाप छे बाळकना जेवी सरळता ने मीठाश भरी छे मद मंद निर्दोष हास्यनी स्वच्छ ने निखालस सुरखी छवायली छे भलमनसाई ने मोळी उदारतानी घेरी छायाओ पडी छे फूल जेवी कोमळता, नरमाश ने मृदुता भरे छे अने सात्विकताना अमीसिंच नथी तेमना च्हेरा पर रोजरोज नवु लावण्य वधारे रमणीय रीते खीलतु जाय छे

जाणे आ च्हेरामांथी काव्यनां झरणांओ वहेतां होय तेवु देखाय छेः 'जोनारी आंख्या' होय तो चतुर कोमीयागरनी माफक ए च्हेरानां सुंदर, सौम्य ने कोमळ भावो आपणां जीवनने अजब रीते सरखा देखाय छे

खरेखर ! आ च्हेरो आपणां सुरता 'जीवन' ने मौन भाषामां मधुर कंठथी जागृत करवानी कळा धरावता देखाय छे ए मुख पर पथरायेली निरांत अने बेपरवाइनां भावो जोवां मळ्या आवे के तेओ भरपुर जींदगीनो रस बराबर म्हाणी रह्यां छेः

उत्कृष्ट सत्संग 'मौन' पीः मध्यम ' अनुभवनी अप-डी द्वार' बनी ?

कोइ पाश्चात्य मानसशास्त्री आ मों उपरना घणे घणे पक्ष-दाना भवनवा रगोनो सारी रीते अभ्यास करे तो कहेशे के – आ महापुरुषना एक जीवन पाछळ अनेक जीवनना संस्कारो छे.

•

चहेरानु 'रत्न' तो आम्योज छेने !

तेमना नयनो आपणा नयनोने 'तृप्ति'थी भरी दे छे !

तेमा प्यारनी मीठाश छे : ममतानी ठकाश छे मक्षपर्यंनु प्रभव ओमस छे, सस्कारी आत्मानु ए आखोमा दर्शन छे स्वभावनी उबताना सुदर लक्षणो छे अपरिचित सामर्थ्यनो एमा गुप्त इतिहास छे अगम्यवादनु तेमा तेज छे आदर्श पाछळ अर्पण थवानी मनोहर खुमारी छे साधुताना शीतळ फूवाराओ उडे छे अने आपणी प्यासने छीपवे तेवु 'कांइक' ए आखोमा उडु उडु भर्यु छे पण 'काइक' शु छे तेनी खबर नथी

नीर्मळ नीतरेला नीर जेवी तेमनी स्वच्छ चक्षुओमा कै कै अनुभवनी गुप्त वातो छे प्रखर इच्छाशक्ति Will Power नुं जोश छे हजारो वस्तुओने पीठ दइ मात्र एकनु ज 'ध्यान' धरी शकवानी एकाग्रता छे निजानदमां 'मस्त' रही पोताना व्यक्तित्वने समष्टिनी एरण पर घडवानी तालावेली छे स्वाभिमाननी अमीरीनी खुमारी छे आत्मसामर्थ्यथी महत्ता मेळवी ए महत्ताथी ज पूरेपूरी तृप्ति, छलोछलता अने शांति 'अनुभववानी'

शक्ति ने 'गुणो' केळववानुं सामर्थ्य तेज वातो शाखी पे

शुचि छे अने ' योग ' ए जगत परनु सौथी महान् ने अवर ' सायन्स ' छे, ए ' सायन्स 'थी मनुष्यने विजय (Majestic) बनावी शकाय छे—आयो स्पष्ट संदेशा छे

आपणा हृदयनां कोइ अगोचर प्रदेशमां बहु ऊंडीयुं कर्तन पीठना भावो बांधती तेमनी आंखोमां हृदय अने बुद्धिनी गंगा-जमनानो संगम छे निश्चयबळनो अग्नि धरावे छे तेमना प्रतापी व्यक्तित्वनी सुंदर ने स्वच्छ पीछान छे मजा ने मोज्ञा आनंदी मस्तरामनी बेपरवाइ छे, तदुरस्त आत्मानी तेमां ताजगी छे पोताना मार्गे जतां वखमात्र 'गाफीलपणुं' के 'प्रमत्त' भावथी सदाय पोताने सावधान रहेवानो पटारव छे : भद्रनी उमराइ जती शक्तिने इन्साफ आपवानु ' वचन ' छे अने तपश्चर्यानां परिणामे मेळवेली शक्ति के पूर्णताने कांधे कदापि ' हलकाइ ' जवा के तेनो खोटो बयको उपयोग करवाने 'ना' भणतां भव्य भावो त्यां बेठा छे उपरांत चक्रवर्तीना य चक्रवर्ती-विपुल आत्मसमृद्धिनां खजानाना मालीकीनो ए आंखोमां सुंदर शमिालेग छे आवी आखो स्वरे ' एमना जीवननुं ' बेरोमीटर ' छे

आ महापुरुषना चहेरा सामे बेमी फलाकोना फलाको विताव्या छे टगर टगर जोइ ए चहेरा परनां रसिक भावो बांध्या छे मनुष्यना अंतरने मापी लेती तेमनी आंखोमां उमरातां विविध चित्रो मारिकाइथी निहाळ्यां छे, तेमनां मांसल चहेरापर अने

जीवनने ' जेवा मुक्त करवानो सदाय भरे तम शार्गो मरा ' के

शांतिना निशामां घेरायलां ध्यानमग्न नयनोमां गभीर विचार
मन कोइ अद्‌भूत वस्तुने पामवाना कौशल्यनी सुरेख छाप
पडेली जोइ छे वदन पर ज्यारे जूओ त्यारे मधुरी प्रसन्नता
बेठी ज होय। प्रतापनो झरो सतत् वहेतो देखाय। 'आत्माना बधा
वैभवथी स्वतंत्रपणे जीवी शकाय एनुं ज नाम जीवन।' एवो
जीवनबोध सांभळ्यो छे वात्सल्यपूर्ण मीठो अवाज हमणां फाटशे
हमणा फाटशे जेवी लागणीओ दिलमां आगती जोइ छे
आसपासनी 'धमाको' वधे य तेमने पोतानुं स्वतंत्र 'एकान्त'
अभावी तेमां डोलतां देख्या छे अने केटलीय वार तेओ बाळक
शु हमी पडे, वडु हसे, ए हास्य मंजु, सत्कारी ने मोहक लागे।
फूल पर्यावद्ध तेवुं ते वत्सलनुं ए योगीश्रीनु नयनतेज केम झीलवुं
तेनी समज न पडे तेवुं प्रतापी होय।

•

संसारना बधा प्रपंचोथी दूर रही, पवित्रतानी साक्षात् मूर्ति
समा आ महापुरुषनुं निस्पृही, सरळ ने निराडंबरी जीवन पणीय
वन कष्टोमांथी जीवाइ रहेलुं छे, दरेक प्रसंगे तेओ हसमुखा ने
पोताना 'ध्याननी मस्ती'मां लहेरथी डोलता होय छे; अने
'गुरु' 'विनोबा' के 'बाळक' जेवी बोल्ली मनोदशामां सदाय
म्हालता जोवाय छे भूतकाळनुं स्मरण के भविष्यनुं चिंतन
करवानी तेमने परवा नथी पळो वर्तमान ज जीवे छे अने तेय
ध्यर्थ संकल्प—विकल्प रहित चित्तनी आबाद शांतिपूर्वक।

सत्य शब्द के भय जेनी कल्पनामां य नथी ते पुरुषोत्तम छे

आत्मशरामा 'रमण' ए तेमनो प्रिय 'विलास' छ:

पद्य, पाद, गद्य ने वाढाओ के एना सुघ्मतानां मर्मां प्रदेशोनोनी भूसकाओ तोडी तेओ स्वतन्त्र मानवताना चैतन्यथी पण होना प्रमुत्वमयाँ मायरानी मीठाश अने 'भरपक' वाजगी वधे 'प्रभुत्व' आत्ममस्ती अने आपाद 'दृष्टि' थी ओथो रहो व' 'व्यक्तिमान' नां कांचडने दूर करतां तेमना अतरमां समष्टिमान (Universal consciousness) प्रगटया पाम्यु छे, एटले ज तेओ पोताना आत्माने विश्व साथे जोडी शक्या छे

विश्वनां दरेक रजकणमां समायली दिव्यता अने मनुष्यत्वने पूजी जाणवानी तेमनामां भव्यता छे, प्रेम अने मात्र देवी प्रेमनी ज आशा नीचे चालतुं तेमनु जीवन एकवार मुनीनी आंखमां पण 'प्रेमना प्रभु' समराये तेवुं मनोहर छे

केवळ चारित्र अने तपश्चर्यानी मोहिनीथी मर्मा तेमनी तरफ आपणे अजाणये खेंचाय छे

नहिंतर क्यां ए रबारी कुटुंबमां जन्मेलो ते समयनो भीमा तोलाओनो साधारण पुत्र, अने क्यां ते आजनो पूजनीय परम योगी ?

'रब' मे 'शोध जेनी हथेळीना रमवाँ दृप छे ते साथ गायक छे

पांडित्यना प्रदर्शनो करवा एमणे कोइ पोथीओ वाच्या नथी, पुस्तकोनां ढगले ढगला उथलावी तेमणे विद्वत्तानो फांको धार्यो नथी प्रखर वक्तृत्व के लेखनकळा तेमने वरी नथी मगजनो नकामो खीचडो करे अने जीवनमां एक पण सुंदर स्थिति न वधारे तेवी रीते सैंकडो शास्त्रो ने स्मृतिओ पोपटनी माफक एमणे पढी नाखी नथी ए तो सादो ने सीधो, भोळो ने उदार, सरल आत्मा के एमना आत्मामांथी स्वयं (पुरुषार्थे ने तपश्चर्याथी) ज्ञाननी गुप्त गंगा फूटी छे अनेक प्रश्नोना उत्तरो तेमांथी आपोआप चाल्या आवे छे, सरस्वतिए तेमना पर मधुरु हास्यसिंचन कयु छे

'वचनगुप्ति': जे साधुताचु सुंदर लक्षण छे अने जे 'वस्तु'-ना आले ज्यां जूओ त्यां सांभा छे, ते 'वस्तु' बराबर आळ-खीने आ महापुरुष पोतानी 'भरपूरता' नुं सौने दर्शन करावे छे भरेलाओ छलकाता नथी, पण अधुरीयाओ ज ज्यां त्यां छलकाय छेः ए सूत्रनुं अहीं जीवत दर्शन थाय छे

बीजी तरफ आले शु छे ? वाचाळता, वाचाळता ! वाचाळता ! ज्या जूओ त्यां एज बीमारीनो वायु वाय छे ! जगतने सुधारी नाखवानी 'भयकर' दयावृत्तिनो ज्यां जूओ त्या 'मेरी' बटोळीयो चढयो छे ! पण अरेरे ! ए 'दया' ना रोगमां सपडायला दर्दी-सेवकोनां जीवन केवां सुकां, सुनां, रस, आदर्श के विचार-विहीन छे !

Voice of Inner Soul सांभळी आवरे तेव Noble life जीवे

विचारीने वचन बोलवु, मने केटलु, क्यां बोलवुं अग्रवुं ने शोभामयुं छे–ए जाणवु ए तो साधुजीवननो एक महा आदर्श छे जाणे ने आचरे तेज साधु 'साधक' जीवन जीवी शके

•

चद्दारनां तेमज 'अदर'ना क्लेशमात्र पर 'जय' मेळववा तेमनो प्रयास आगळ आगळ थइ रह्यो छे एकांतमां बेसी मात्र सत्वनुं तेओश्री चिंतन करे छे जगत्कल्याणनी विशाळ भावना भावे छेः सपाटी परनी क्रियाओ के व्यर्थ दोडादोडी छोडी अदरना गर्भ तरफ तेमनु जीवन वळेलु छे तेमनी प्रत्येक क्रियामां काइन काइ (Romantic element) अद्भूत तत्व जणाय छेः तेमना निरीक्षणमां मानसशास्त्रनी झीणवट छे, पूर्वकाळनां ऋषि मुनिओनां जेवी सादाइ ने सस्कारिता वरी छे तेमनी आंगना पल-कारे पलकारनां गणितशास्त्रनी चोकसाइ छेः प्रसिद्धिथी तेओ जेम जेम दूर दूर नासे छे तेम तेम प्रसिद्धि सोगणा जोरथी पोतानी शक्ति समना पर अजमावे छे

स्वभावे तेओ बहिर्मुख (Extro-vert) नथी, परा सदाय अन्तर्मुख (Intro-Vert) छे एटले क समूहनु जीवन जीववाने बदले तेमनी दृष्टि अंतरमा वळेल छे समूह साथे तेओ क्वापि एकरूप थइ शके नहि, कारण के लोकोनां विचारो साथे तेओने बहु ओछी लेवा देवा होय ! तेओ सदाय स्वतंत्री आमा–आ

प्रेमाथी 'सदुं' ॥ मदुं बधे दिव्य धाम तेज धम तेज प्रौढ

{ों के सत्य सापेक्ष सशीन रहे । दरेक मनायनी किंमत
ोतानी रीते-पोताना ज दृष्टिबिंदु (Standpoint) थी करे

नैसर्गिक नेतृत्व तेमने स्वभावथी वरेलु छे

पथ्थर जेवा हृदयना माणसने पण जेने जोता जरूर माननी
लागणी थाय, एवा आ पुरुषना शीलनमा कोमळता ने मधुरता छे.
तेमनी वाणीमां विवेक छ ' वस्तु ' छे ' कळा ' छे नैस-
र्गिक छे प्रतिभाशाळी व्यक्तित्वनी छाप छे प्रखर वक्तृत्वनो
प्रभावो छतां आत्मसामर्थ्यना बळे श्रोताजनोना अतरमा
सहेलाइथी प्रवेशवानी कळा छे तेमनां केटलाक विचित्र जणातां
वर्तनमा न समजाय तेवु गुप्त लोककल्याण भरेलु भासे छे ।

आवा असाधारण व्यक्तित्वने समजवा माटे असाधारण
सामर्थ्य ने महत्ताशाळी हृदय जोइए । साची आखो जोइए ।

म्होंनी वाळ जेवा ' मारुधीम ' उपदेशो करतां शांत मौन ' भर्तु ' छे.

ज्यारे ज्यारे हुं आ योगीश्रीना पुण्य समागममां आव्यो छुं त्यारे त्यारे म्हने तेमनामांथी दरेक समय कैंक नवुं ज दर्शन थयु छे तेमनुं मधुरु रसमयुं मौन, म्होंढा पर फरकतुं आछुं आछुं स्मीत, कपाळमां पडेली अनेक करचलीओ सहुनी अगम्य भाषा, हलनचलननी संस्कारी रीतभात, बेसवामां ने चालवामां छुपायली गुप्त वात्सल्यता, मुख पर पथरायेली निरांत अने बेदरकारी जोतां जरुर तेमना माटे कोइ पण मुसाफर उंचामां उंचो अभिप्राय लइने नीकळे । पोतानी योगमस्तीमां मस्त रहेवुं–ए सिवाय वधारे आकर्षक काम कें पण एमना जीवनमां नहि होय तेम स्पष्ट लागी आवे. घणीवार तेमनी सचोट द्रष्टि, तेमनी महा शक्ति, भरपुरता अने सावधानताना बराबर वर्णन करवा: नीडर अने शांत तो प्रथम द्रष्टिए ज लागे: आवा पहाडी अने कांइक गोरा शरीरमां जरूर कोइ प्रबळ ने भव्य, सुंदर आत्मा वसतो हशे तेवुं भान थाय तेमना अवाजमां भारोभार प्रेम, बाळक शी सरळता अने मीठाश भरी होय केटलीय वार तेओनां संसार वर्णवती तेमनी आंखो सामे जोइ रहेवुं आपणने भारे पडे । ए स्थिर, शांत, निश्चळ ने सत्यदर्शक तेम असह्य पण लागे,

---

*Child 'like बाळक जा हृदयमां ज अध्यात्मनुं 'रमामण' रही शके छे.

अर्थात् तेमना ठंडा छतां प्रतापी नयनो आपणा पर कुदरती रीते सत्ता चलावे छे

संपूर्ण आनंद अने विनयनी मूर्ति जेवा आ महापुरुष लेशमात्र खोटा अभिमाननी छाया नीचे न आववा पोतानी साम्हे आवनार न्हानामां न्हाना मनुष्यने पण अतरथी वंदन करवा जेटली लघुता दर्शावी मनुष्योनां भीतरमां छुपायली दिव्यताने शोधी पूजी जाणे छे, ए समये तेमना मनमां रमी रहेला सौम्य ने नम्र भावो चित्रवत् गाल पर पथराइ जवा जोया अ करवामां आपणने ओर मजा आवे छे ते एक प्रकारनी आपणने रससमाधिमां तरबोळ करे छे तेमनी गौरवभरी साधुतानो—शीतळतानो स्पर्श पामेली आखो अ आपणने क्यांथी 'जीवन मुसाफरी'ना थाकने य भूलावी कोइक अनुभवी शकाय, पण 'शुं छे' ते जल्दी न समजी शकाय—तेवी मीठी शांत्वना आपे छे तेमनी प्रत्येक रीतभात एवी परिचित लागे के जाणे आपणने बहु लांबा समयनी तेमनी साथे ओळखाण होय ! तेमनां सहवासथी हरसमय अनुभव्यु छे के—आपणुं दील साफ बने छे: त्यांथी खसवानुं मन ज न थाय तेमनी पाछळ हजारो काम छोडीने घेला घेला थइ फरवानुं स्वाभाविक दील थायः

त्यां नथी दंभ, डोळ, देखाव के 'धरम' ना नामे थता अखेडा ने खखेडा ! एवो पहाडनो मस्त पुरुष पोताना तानमां मस्त आनंदघन ! तेने बधा शोधता आवे: 'महावीरो' ने गौतमो

आसम टगड मां कुशळ 'मुग्धाओ' करतां मनूळी छोकरीओ उत्तम छे.

शोधता ज आवे । गौतमोने शोधवा साथ 'महावीरो'ने गलीएकुचीए भटकवानुं न होय, के भटकीने पकडेला 'शीकार'ने संताडवानुं य न होय । न होय । न होय । 'महावीर'नी प्रकृतिमां ज ए तत्व न होय एतो अशक्तोना—'तुच्छो'ना चेलाओ मात्र । 'जी बापजी! जी बापजी !' शब्दो चेलकाओ पासेथी सांभळवा 'महावीरो'-ने फळफसाट करवा ना पाडे । ए तो भरपूरतानी मूर्ति । अधुरीया ज छलकाय । अधूरीया ज चेलाचेलीनी भूखमां वळवळे ने टळवळे । अने मात्र अधुरीया ज—'अध्यात्म'नुं रसायन न पचावी शक्या होय, तेवा रोगीष्टो ज मात्र धर्मने नामे अधममां आंधळीया करे । महावीर पोताना आत्मानी मस्तीमां मशगुल होय, ने गोशाळो महारनां वाघळीयामां मोंकाय एज महावीर अने गोशाळानो फरक छे ने । अने मात्र एटलो ज फरक कांइ न्हानो सूनो छे ?

[1] 'एक' आत्माना प्रदेशामां मौनपणे स्वभावथी वसे छे ; बीजो जीभडीना जोरे—अने अंध चेटाओनुं 'मारसानुं' सह 'पोतेज मात्र 'धरम' नुं साक्षात् स्वरूप होवानो अने जगतनो उद्धार करवा खातर पडवानो ढोल वजावतो ज्यां त्यां भटके छे । एमळे छे भूखडी वारस जेवो ज्यां त्यां भूख—भूखनी बूम पाडतो गयके छे, गजबनो फेर ! ! !

---

[1] 'बुद्धि' केवळ नर्तकी छे, 'अनुभव' मात्र महान् चीज छे

आ योगीभीने कोई चेलो नथी चेलानी इच्छा य नथी. ते तेमनां आ शब्दो परथी वधारे स्हमजाशे।

" म्हने चेलाचेली शा ? हु ज पोते म्हारो चेलो छु "

धन्य! आवो शिष्यभाव! ए शुं ओछु महत्तानु लक्षण छे ?

अने बीजी तरफ ? अरेरे ! नजर नांखतां आंखो आपणी शरमथी भराइ जाय एवु कगाळ दृश्य छे

तेओ पोताने ज पोताना चेला थवा जेटली लायकात केळवी शक्या नथी, तेवा लायकात वगरना कैंक वेशधारी उपदेशको पारकाने पोताना चेला करवा अने पोताने तेमना 'गुरु' तरीके स्थापवा अनेक प्रकारनां—एक सारा माणसने न छाजे तेवा प्रपंचो, तोफान अने झगडाओ करी पोतानी रही सही मानवताने होमी रह्यां छे ! आ रमतडीमां तेओ " शास्त्रोना नामे "—अने 'शास्त्रोना सिद्धांत प्रमाणे' ज नाचवा होवानुं कहेतां जराय शरमातां नथी.... ! अरेरे ! जे कोयडो एक सामान्यबुद्धि (Common Sense) उकेली शके त्यां त्यां पण पोताने मनफावतां अर्थो काढवा—पेला बीचारा—अबोल—जड शास्त्रोने सडोवी तेनी 'कमबख्ती' करवामां आवे छे ! रे ! वस्तुतः शास्त्रो य तेमने मदद करी शकतां नथी ! !

जे पोताने ज पोतानो शिष्य बनावी शक्यो नथी एने बीजाने पोतानो शिष्य बनाववानो शो [illegible]ार ? जे पोते

'व्यवहार' मां डुगमी बडापण — 'चतुर' छ

तरी शकतो नथी (मात्र तेरा पहेर्यांथी ज तरी गयानुं मानव होय तेने—ते मान्यता मुबारक हो !) ते पीशने शुं तारी शके !

आ वस्तु समजाय तो केवु सारु ! एवुं म्हने घणीवार थया करे छे अने खास करीने आ योगीश्रीनां दर्शने जवं छुं त्यारे ! कारण आटली महत्ता मेळव्या छतांय तेओश्री पोतानो 'शिष्यभाव' आबाद जाळवी शक्या छे

आ योगीजीनी रहेणीकरणी एटली सादी ने निराडंबर छे के तेमांथी 'महत्ता' शुं तत्त्व शोधवा सामान्य लोको बीचारा असमर्थ निवडे! लाबा लचरक उपदेशो आपवां एमने आवडतां नथी,—अर्थात् वाक्‌पटुता एमने अराम तरी शकी नथी एटले जो कोइ 'वाचाळता' नो प्रेमी पोताना गजथी एमने मापवा जाय तो जरुर ते माप अवलुप्त होय ! पुस्तकनां लुख्खां पांडित्यनो एमने स्पर्श नथी एटले उपर उपरनां शब्दो गोखी मारी शास्त्रो अने सूत्रोनी 'पचहजमी' पामेला 'शब्द खेलाडीओ' तेमनां ज्ञानने मापवा जाय तो जरूर, तेमने समजवामां भूल खाय !

हृदय अने बुद्धि बन्नेनो सहचार मेळवी चूकया होय अने अंधविश्वास के अविश्वास नामनी बन्ने 'बला'ओथी अस्पर्श रही निर्मळ भावे—निर्मळतानां ज दर्शन करवा निकळ्या होय तेम मात्र तेमने समजी शके

••

'मूरदो' प्रेरीत आंधळानी बन्ने भूप ने शांत ते पराक छे.

खुशामत अने निंदा नामना मीठा कडवा बन्ने झेरथी दूर रहेता आ योगीश्रीना जीवननी पाछळीए पाछळीए पवित्रताना हंसो बेठा छे तेमना जीवनमां उच्च सिद्धांत छे, पोताना 'ध्येय' नु अचळ 'ध्यान' छे, सहामा माणसने मापी लेतु 'साइकोलोजीकल' ज्ञान तेमनी चक्षुओमां छे 'आध्यात्मिक' रसमां चकचूर थता जीवननो आनंद तेमना महेरा पर छे, शुष्कता के जडताने बदले रसमयता अने चैतन्यना धाधा तेमना रुवे रुवे समाया छे तेमना नयनोमा अनुभव छे पोताना 'ध्यान' नी 'मस्ती' नुं अजब घेन छे, अने चारित्रनी सुंदर रोशनी छे

योगना घेनथी घेरायली आ आंखो सहामे आपणे कलाकोनां कलाको सुधी वणबोल्या बेसी रहेवु पडे अर्थात एक शब्द.. पर्णीयवार सामळवा ना मळे आ स्थितिमां कलाको ने मीनीटो पर ज जीवन जीवनारा भीषारा पोतानी 'धीरज' खोइ पण बेसे ! खरा !

४० थी ४१ वर्षनी उम्मरना आ पुरुषमां यौवननु ताजु गुलाबी नूर छे सीनो पहोळो एवो भव्य—मजबूत छे। चक्षुमां आत्मविश्वास भर्यो पड्यो छे, ए विश्वासभरी तेमनी नजर पडे ने आपणने आपणी अल्पतानु काइक भान थाय छे

आ बधो एमना सुंदर संस्कारोनो प्रभाव छे एमनु निर्मळ स्वरूप, तेजस्वी व्यक्तित्व, अखंड साधना अने तपश्चर्या, चारित्र

जीवन आखु य जेनु संपूर्ण सामायिक ' मय छे तेज माभ साधु

ने निस्पृहता सर्वत्र सात्त्विक अने स्नेहाळ वातावरण ज जमावे ए शुं आपणो ओछा भक्तिभावने पात्र गणाय ?

आ योगीश्रीना समागममां आवेलां अनेक विचारवंत पुरुषोनां अभिप्रायो जाण्यां छे ते परथी पण सहेजे समजी शकाय के तेमनामां " कैंक " अद्भुत वस्तु जरूर भरी पडी छे

मीस इलीझाबेथ शार्प नामनी इंग्लीश लेडीनां शब्दोमां सांभळीये तो —

SHANTI-VIJAYJI has wonderful eyes naturally large and dilated They gaze through one as if they read innermost thoughts. He is very dark but strangely enough in meditation his colour grows several shades fairer I have seen this phenomenon personally A small speck of light called Taraka Bindu in Sanskrit can be distinctly seen flashing from eye to eye across the nose and the two patalled Lotus of Yoga called the Agna Chakra show faintly in the forehead.

ELIZABETH SHARPE.

आपणी मदद ज आपणो महान इश्वर महाविरा नाद करे छे

आचार्य श्री विजयकेसरसूरिजीना शब्दोमा —

परमयोगी महाराज श्री शांतिविजयजी, मारा धारवा प्रमाणे एक महान योगी छे, योगनो मार्ग तेमना हाथमां सारो आव्यो छे मारे तेमनी साथे जे वात थइ छे, तेमां एक मुद्दानी वात जे योगमा अस्खलितपणावाळी छे, ते तेओश्री बराबर जाणे छे, एम मने खात्री थई छे बाकी तो तेओ एक त्यागी, सच वैरागी, एकांत सेवनार, निस्पृही, सर्व जीवो तरफ प्रेम राखनार, पोताना शुभ सकल्पथी विश्वनुं भलु इच्छनार, विनयी, नम्रतावाळा अने मायाळु स्वभावना छे ते गुणो मारा मे विवसना परिचयमां जणाया छे क्रियामार्ग जे अत्यारे साधु समुदायमां प्रचलित छे, तेमां तेओ थोडी प्रवृत्ति करता होय ते बनवा योग्य छे केमके तेओनो स्वरुपस्थिरता, जाप अने ध्याननो अभ्यास सतत चालु होय तेने लई आ कार्यथी पोतानी विशेष विशुद्धि मेळवे छे एटले बाह्यक्रियानो आंतरक्रियामां समावेश थइ जाय छे जेम पाचमी चोपडी भणनारे चोथी चोपडी छोडवी जोईये, ते न्याये ते योग्य लागे छे तेमनु दर्शन आनंदप्रेरक छे

मैं मारी जींदगीमां कोइ अद्भुत वस्तु जोई होय तो ते योगनिष्ट महात्मा श्री शांतिविजयजी ज छे तेओ बाह्यतः केवा मामुली देखाय छे, अने ज्यारे पोते वातो करे छे त्यारे एक साधारणमां साधारण माणस बोलतो न होय एम लागे छे!

आ 'शास्त्रो' पर आत्मानी रोशनी न उतरे तो ते शास्त्रो अंधारीया कुवा छे

देसाय पण तेओश्रीनो कुदरती एवोज छे, एटले जगत् सर्व जमी, भुलथाय त्हाई थाय तो एमां काई नवाई नथी पण मने तो एम लागयु के आतो कोई उच्च कोटीनो महान् आध्यात्मिक ज्ञाननो भंडार छे एवा महान् पुरुषोने आपणे स्हेजे ओळखी शकीए नही कारण के तेओ पोते योगमां तेमज आध्यात्मिक ज्ञानमां एटला बधा उंडा उतरेला छे के अढार अढार मास सुधी तेओनी पासे रहीने एक विद्वान माणस पण संपूर्ण समजी शकतो नहि. हालना आटला बधा माधुओमां एओ पोतेज योगक्रिया तथा आध्यात्मिक ज्ञाननी यावत्मा मोखरे छे एवा महान् योगीश्वरने समजवा माटे महान् शक्तिवालो आत्मा घणा लांबा टाईमेज कांईक स्हेज समजी शके छे

श्री कीबेजी (इंदोर) ना शब्दोमा —

' ज्यारे इंदोरथी अमो आबु जवा माटे नीकल्या, त्यारे 'टाइम्स ओफ इन्डिया' वांचता जणायु के आबुमां महात्मा श्री शान्तिविजयजी रहे छे अने ते एक (वडरफुल) अजब शक्ति धरावे छे, कारण के तेओश्रीने युरोपीयन पारसी जैन, मोहमेदन अने हिंदु, दरेके दरेक पुज्य माने छे, त्यारे अमारा मनमां पण वीचार आव्यो के, अमारे पण एओश्रीने मलवुं जोइए, अमो पण त्यां गया, गुरुदेव शान्तिविजयजीने जोया, त्यारे अमोने मनमां थयु के, तेओ कोई सारा माणस तो छेज ! अमो

दुनियाना सर्टीफीकेट मांज माज जे मोहम ते दोजखनी टीकीट बराबर छे.

कोई पुजनिक आदर्श तरीके मानता नही (लाखा टाईमे अनु-भवथी घडरपुल सखेलु) पण हवे अमो तो कोई अजब देव-रत्न समज्या होय, अने जेम जेम अनुभव वघतो गयो, तेम तेम अमोने विचार थयो के, खरो कोई अजब पुरुष छे आतो देवरत्न पुरुष छे—ने मनुष्य रुपमा देवपुरुष छे—ए महान् पुरुषने ज्यारे आपणे जेवी जेवी भावनामां जोईए छीए तेवी तेवी रीते तेओ पोते देखाय छे प्रथमथीज दुनियाने अध-विश्वासमा बीजा साधुओ मळेल छे, एटले आपणे आवा महान् देवपुरुषने ओळखी शक्या नही, कारण के आमे साधुओ माटे जगत् अविश्वास करे छे ए वात बरोबर छे, दुनियामां ढोळ करनाराओ अने पंडिताई अने वाक्यचातुर्यता बतावनारा घणा पुरुषो साधुवेषमां जगतने भरमावे छे, अने एवाओने मान-नाराय अधश्रद्धालु अने पुजनाराओ दुनियामां मली जाय छे परतु शांतिविजयजीनु व्यक्तित्व ए नोंधी पर छे एमनो उपरनो देखाव सवन भोळो अने सादो छे, ज्यां सुधी आपणने पुर्ण अनुभव नहि थाय त्यां सुधी एमज लागशे के ए तो सदन मामुली साधारण माणम छे गुरुश्री शान्तिविजयजीनो उपरनो 'सादो' देखाव जुदो अने अदरनो 'भव्य' गुरुदेव शान्ति-विजयजी जुदा छे, आजे दुनिया तो उपरनो ढोळढमाक जोईने अधश्रद्धामां फसाई जाय छे, अने ज्यारे पाछळथी अनुभव थाय छे त्यारे श्रद्धाहीन बनी जाय छे साधुनुं नाम जे पवित्र

---

* [illegible] तेम शास्त्र मात्र स्वीकारवा योग्य छे

छे. एनाथी पोते काई पवित्र थतो नथी धारोके कोईनु नाम राम—कृष्ण, रीखव, जरथोस्त, महमद, अने कोईनु नाम ईसु के हवे एवां नाम धारण करवाथी काई पोते तेवा महान् पुरुष थई शक्वा नथी धारो के सघला साधुओना वेपख पुजनिक गणाता होय तो, पछी नाटकमां जेम राजाराणी थाय छे तेवीज रीते, तेमज बकराना उपर सिंहनुं चामडु चढाववाथी काई बकरो सिंह थतो नथी, तेवीज रीते सिंह जेवो आत्मा (जीव) बल वान होय तोज खरेखरो सिंह बनी शके छे धारो के नाटकमां एक श्रीमंत माणस ज्यारे फारसमां उतरे छे त्यारे ते मामुली माणस रुपे देखाय छे, तेथी ते काई मामुली न कहेवाय! तेवीज रीते दुनियाना धर्मोधार्मोण साचा सव बनावी जायवा होत तो आजे दुनिया मुक्तिपुरी बनी होत! अने दुनियाना महान् पुरुषोने ओलखाव्या होत! पण ए महान आत्माओने ओलखवा माटे पण महान् विचारक बनवानी जरूर छे ज्यारे ए महान पुरुषनों (ब्लेसींग) आशीर्वाद पडे त्यारे, दुनियाना मोटा मोटा नामी नामी डॉक्टरोए पण जेने माटे आशा छोडावी दीधी हती तथा जोतिषोए पण जेने माटे हाथ खंखेरी नाख्या हता, तेयाओ पण एमना आशीर्वाद वडे साजा थइ गया छे जेने आपणे साधु कहीये,[1] जेना दर्शन वडे आपणु पाप नष्ट थई जाय ए साधुता कांइ, जुदीज वस्तु छे गुरुदेव शान्तिविजयजीने तो घणा ओलखे छे पण आपणी कोइ महान् पुन्याई हशे तोज अदरना गुरुदेव श्री

---

[1] 'महात्माओ' पुरुषोने पीछानवा महात्मापणुं अंतःकरण जोइए छे

शान्तिविजयजीने ओळखी शकीशु. ते दीवसे आपणे (ब्लेसींग) खरेखरू जाण्यु कहेवारो विशेष शु कहुं ? एमनो आशीर्वाद एटलो बघो बळवान छे के जे केसने माटे दरेके दरेक माणसोए आशा छोडी दीधी हती, ते व्यक्ति एवा महान् रोगथी मुक्त थइ, ए मारो पोतानो खुद अनुभव छे हु तो दुनियामां महान योगिवर तेमने समजुं छु अहाः हा ! दुनियामां आजे एवा देवरत्नो छे के जेनी पासे सिंह अने वाघ जेवा क्रूर जनावरो पण पाळेला जनावरोनी माफक आवी बेसी जाय छे एवा महान् पुरुषोनो भेटो थवो ए कांई साधारण वात नथी एकवार ता दरेके दरेक मनुष्ये जरूर एमनां दर्शन करवा जोईए एवी मारी दरेके दरेकने भलामण छे एमनो जे मार्ग छे ते सत्य छे 'मारू ते सत्य नहीं,' पण 'सत्य तेज मारू' छे, एवो गुरुदेवनो दरेकने एकसरखो उपदेश छे गुरुदेव पोते आते रबारी कुळमां जन्मेला अने दरेके दरेक प्राणी उपर समभावना राखवी एवो तेओश्रीनो उपदेश छे, अने विश्वनुं कल्याण थाओ एवी तेमनी मगळ भावना छे

धर्माचार्य दर्शननिधि स्वामी रामदासजी एम. ए (साउथ केनेरा) ना शब्दोमाः—

दुनियामा जो कोइ धधारे उच ने पवित्र वस्तु में जोइ होय तो ते फक्त शांतिविजयजी ज छेः

जे महेरापरथी शास्रो ' ने धर्मो रचाय ते महेरो धन्य छे

मीस–माइकल पीमना शब्दोमा:—

(वश्री–श्रीम्युट हेरोल्ड, न्युयोर्क)

में दुनीयाना दरेके दरेक देशनी मुसाफरी करी, अने द्यणा घणा महान् पुरुषोने मली छुं, अने छेवटमा पुज्य गुरुवर महाराज श्रीशान्तिविजयजीने पण मली, अमारा पाश्चिमात्य लोकोमां एटलुं तो ठीक छे के, अमो बराबर समजीने पछी ज मानीय छीए. हमो हमारा मनने पुछीए छीए के (Doubt) दरेक वस्तुमां साचुं सत्य शुं छे मीस मेयोए मधर इन्डीया मामनी जे बुक लखी छे तेमां लखवा एवी मोटी भुल थायी छे, कारण के हिंदमां हजीए आवा देवस्त्नो छे, एटले एनी भुल एक दिन समजाशे अने जगत सत्य वस्तु सारी रीते समजी शकशे

Guruji is a God no doubt.

(गुरुजी परमेश्वर छे तेमा शक नथी)

एक मे नरशना शब्दोमां —

महाराज श्री शान्तिविजयजी महाराजना समागममा आववाने तथा तेओश्रीनो उपदेश साभलवाने भाग्यशाली थयां अमायु के तेओश्री एक उत्तम योगीपुरुष छे, अने तेमनुं चारित्र पणी उची कोटीनुं छे एवा महर्षिना प्रवचनो समुदाये सांभळवाथी जेम औषधीथी शरीरनुं दर्द अने मलीनता दुर थई

ममने अकुशमां राखनार बधी समृद्धिमा पणी थवाने लायक छे

आरोग्यता अने निर्मलता मेळवाय छे तेम जनसमाजनी मलीनता दूर थइ जीवन आरोगी अने सुखी बने छे एवा महान् पुरुषो आपणामां वधारे अने वधारे थाओ अने तेमना पवित्र जीवन अने आदर्श उपदेशथी जन समुदायनु जीवन वधारे नीतिमान अने सुखमय बनो एवी मारी चाहना छे

योगनिष्ठ मुनि महाराज श्री शान्तिविजयजीना समागममां लेखा म सात वर्षथी आवता हु जोइ शक्यो छु के तेओश्री एक उच्च कोटीना महापुरुष छे योगाभ्यासथी प्राप्त थती दिव्य-दृष्टि (Clairvoyance) तेओश्रीए मेलवी छे अने तेना बे दाखला मारा अगत अनुभवथी मैं जोया छे तेओश्री सरल प्रकृतिना एक योग–परायण महापुरुष छे हु इच्छुं छुं के अधिकारी सज्जना तेमना पवित्र सत्संग आवी तेमनी आत्मिक उच्चतानो लाभ मेलवे

आ उपरांत बीजा केटलाय अभिप्रायो परथी पण समजी शकाय के तेओश्री स्वरेखर[1] सत्कार अने पवित्रतानी मूर्ति समा छे शांतिमां विराम पामेलो ए महान आत्मा के तेमनामां आत्मबळ खुब विकसवा पाम्यु छे

परिणामे तेमनां मनुष्यत्व पर देवत्वनो सुदर रग चढवा लाग्यो छे

---

[1] जीवनने विघ्न अने क्लेशमुक्त करवामां सहाय करे तेज खरो धरा थे

ए योगीश्री शांतिविजयजी

के जेओश्री पोताना मौन जीवनथी आपणा

जीवनने अजवाळता होय छे

तेमनुं सुंदर दर्शन

आपणने पवित्र

करो !

अस्तु !

+ योगीश्रीना परिचयमां आववानो लाभ मळतां तेमना श्रीमुखथी उभे थई अने मनमां सामन्य संबंधी जे कांइ उच्चारवामां आव्युं हतु तेने सावचेतीपूर्वक नोंधी लइ, विस्तारी क्रमसर गोठवी आ भाग पुस्तक रूपनी मात्र प्रसादी रूपे संपादित करवामां आव्यु छे; अमे तेटली काळजीपूर्वक संपादन करवा छतां! संभव छे के तेमां कदाच योगीश्रीना विचारने बराबर उच्चारवामां कोइ स्थळे स्खलना थइ होय या भाव क्वांक बदलाया होय ! वाचक तेनी उदारभावे क्षमा करे ! कारण के एक वार संपादित कर्या पछी फरीथी वांची जवा सारु म्हारी मांदगी वखे मने अवकाश मळी शक्यो नथी छतां भूल होय तो ते म्हारी छे हवे तो ए पछीनी आवृत्तिमां सुधारी लेवाशे

संपादक

शोधे तेनेज 'मळे' छे Seek & Find !

श्री केशरियानाथजी

नवकार सूत्र

नमो अरिहंताण

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाण

नमो लोए सव्वसाहूण

एसो पच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेर्सि

पढमं हवइ मगल

पंचिंदिअ सूत्र

पंचिंदिअ संवरणो.

तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो

चउविहकसायमुक्को

इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो

पंचमहव्वयजुत्तो

पंचविहायार पालणसमथ्थो

पंचसमिओ ति गुत्तो

छत्तीसगुणो गुरू मज्झ

परम
कल्याण
मंत्र

ॐ अर्हं

आबूना एकांत पहाडोमा
विचरी रहेला
एक
योगीश्रीना
श्री
मु
ने
थी

अध्यात्म योगी

मुनिराज श्री शांतिविजयजी

प्रेमाळ आत्मस्वरूपो ! आपने शांति हो ! आनंद हो ! सकळ विश्वनुं कल्याण हो ! प्रिय ! आवो अने बेसो, जरा विश्रान्ति लई कहो !

आप शानी शोधमां फरी रह्या छो ? जरा स्थिर थाव ! चित्तने शांत करो अने कहो ! एवी कई चीज छे के जेनी पाछळ सौ कोईने रातदिन चिंतामां चिंतातुर पडे छे ? तमारा अन्तरमांथी पनो स्पष्ट उत्तर न मळी शके तो कहुं के ते, सुख अने शांतिनी शोध छे. अनन्तकाळथी मानवजात ए बन्ने चीजो माटे तरफडीया मारे छे, ज्यां त्यां रखडे छे, रसळे छे ने एज तरफडाट अने तडफडाटमां ज पोतानुं जीवन पूरुं करे छे.

नर 'शुभ' करणी करे तो 'नर'नो 'नारायण' थाय

शांति माटे प्रयास कर्यो छे, पण ए एक बीजी ज दुनिया–जेने अध्यात्मीओ "अंदर"नी दुनिया कहे छे, त्यां नजर नाखवा–सहेजे तपासवा केटलीय तकलीफ नथी उठावी ! एज दुनियामां सुखनु, शांतिनु महान् साम्राज्य स्थपायेलुं छे, त्यां आ अने ओ ! सुख अने शांति त्हारी ज राह जोवे छे 'अंदर'मां डूबकी मारे छे तेने ज ते मळे छे भीतरना भोंयरामा पेसीने जे शोधे छे तेने ज सुख–शांतिना साचां रत्नो मळे छे

,

एक माणसने अमुक वस्तुमां सुख देखाय छे त्यारे तेज पळे बीजो माणस ते वस्तुमां दुःख नीहाळी तेनाथी नासे छे तेमज एक वखते आ वस्तुमां सुख तो बीजी ज वखते बीजी वस्तुमां सुख देखाय, ने त्रीजी वखते वळी त्रीजी वस्तुमां सुख माळी तेना तरफ दोराइए छीए, ने ते मेळववा यत्न करीए छीए ! एटले एक समये जे चीज बहु ज सुखदायक "लागती" हती, ते ज चीज समय बदलातां अत्यंत दुःखदायक लागे छे ! आनु कारण शुं ? शुं कोइ वस्तुओ ज मूळ आपणने सुखदुःख उपजावे छे ? ना, ना, हरगीज ना ! एक समयनो दीलोजान दोस्त के जेने दिनभरमा वार वार मळ्या वगर चेन न्होतुं पडतुं ते ज मित्रनुं मुख जोवाना पण बीजे समये कसम लेवा पडे, तेमां सुखदुःख प्रेरक वस्तु तो एकनी एक ज छे ने ? छतां आम

मनुष्यत्वने खूब केळवीए तो स्वतः 'देवत्व' पामीए.

केम थने छे ? वास्तविक रीते जोतां मूळ—चोक्कस वस्तुओ कइ सुख के दुःख प्रेरक या प्रिय—अप्रिय नथी, परन्तु वस्तुना स्वीकार—ने अस्वीकारमा रमती मननी वृत्तिओ ज सुखदुःखना तरंगो पेदा करे छे मनना विचारोनी लहरीओ ज मानवीनी आसपास सुखदुःखनी मूर्तिओ उभी करी तेना सामु जोइ हसावे के रडावे छे—अर्थात् वस्तुओ प्रत्ये बदलाती आपणा मननी भावनाओ ज सुखदु खनुं वर्तुल रचे छे त्यारे ए कहेवुं साव साचु छे के ज्या मन छे, मनना अनुकूळ व्यापारो छे, त्यां ज सुख छे, त्यां आनन्द छे, ने ज्यां ए नथी त्या अशांति छे मनना प्रतिकूळ व्यापारो छे त्यांज दुःख छे पीडा छे शोक छे ग्लानि छे खरे ! जे वस्तुमां मन अनुकुळ बनी रहे तेमां ज माणसने सुख देखाय छे, ने प्रतिकुळ बने त्या दुःख लागे छे आपणी मनोवृत्तिओने सानु कुळ अवस्था आवी मळे तेने सुखना सयोधनथी संबोधीए छीए, ने प्रतिकुळ रहे त्यां दुःख मानी दु खी थइए छीए. आ आपणी साची स्थिति छे तेथी सुखदु खनु मूळ पण एज मन छे एटले विज्ञानीना सिद्ध—प्रयोगोनी मयादनी माफक एम कहेवामां घराय सकोच नथी के खरु सुख नथी कोई पृथ्वीमां के पृथ्वीनी खास कांइ वस्तुमां, परतु मननी वृत्तिओ एटले ज्यां मन मानदे छे, ज्या आनंदथी मन खेले छे त्यां सुख, ने रम्मतनो भंग ते दुःख छे वस्तुओ तो एकनी एक ज छे मात्र वस्तु प्रत्ये बदलाता मनना भावो ज सुखदुःख प्रेरे छे

' आजीवन स्वर्ग उतारवुं ए साचा' जीवतरनुं 'प्रमाण' छे.

आपणी मनोवृत्तिओ जे वस्तु के विषयमा तल्लीन बने छे के माटे छे, त्यांथी ज सुखनो स्वाद पामी शकाय छेः एटले सुखना इच्छुक जनोए पोताना परम सुख अने शांतिने अर्थ—के जे सुख ने शांति आपणां सदायनां बनी रहे ते माटे कोई उच वस्तु, उच लक्ष्य के उच आनन्दप्रेरक विषय पर पोतानु चित्त चोंटाडवा मनोवृत्तिनी एकाग्रता साधता शीखी लेवुं आवश्यक छे, ए एकाग्रता सधाइ जाय एटले समजी लेवुं के ते पुरुष सुखनी—शांतिनी अखूट सरितामां आगळ ने आगळ वध्यो ज जवानो।

हवे सुखो बे प्रकारना छेः क्षणिक अने स्थायी एक परपोटा जेवुं छे, बीजुं समुद्र समु छे एक क्षुद्र छे, बीजुं दिव्य छे एक ठगारु छे, बीजुं आशीर्वादरूप छे केवी पसदगी करवी एज आपणी चतुराइ छे

आ देखावी दुनिआना धूमस जेवा क्षणिक सुखो, मोहक विलासो ने तुच्छ वैभवो महाजवा पाछळ दोट मूकवी पने साचा सुखनी भूख न कहेवाय अने भला, कहो। ए कहेवाती भूखे कोनी मागी छे ? तेथी विकास—इच्छुक जीवात्मानो पग क्षणिक सुखो तरफ न ज सवाय।

नित्य के अनित्य सुखशांतिनो विवेक समजीने साचा सामनी दृष्टिए तेने महत्वा गोदवुं जोइए तेमां ज कल्याण छे,

---

अंतरमां धार्मं", रस प्रेम ने प्रभुतामा रमराधा आवे ते ज त्याग छे.

अने एज साचा सुख मेळववानी खास चावी छे साचा सुख-शांति तो ए छे के जेनो प्रवाह अखंड होय, कदापि न सुकाय के न सिजाय, अने जे सुखो पळे पळे विस्तार पामी अमरताना गान साथे जीवनने विकसावता सदाय आगळ आगळ वधा करे ! एवा सुख-शांतिना अखंड प्रवाहमां पडेला जीवात्माने पोताना आनन्द'नाच'मां दु:खनुं, किंचित् पण दु:खनुं के अशांतिनुं आछुं पातळुं स्वप्नुंय शानुं आवे ? ए तो सदाय पोताना उत्सव तानमां गुल्तान होय !

एवा प्रकारना उच्च, स्थायी सुख माटे जीववुं ने मरवुं अने एवीज अचळ शांति पाछळ दोडवुं ने मेळववा मथवुं एज मानवजीवननो सार छे, अहो ! एमज समजो के तेमांज आपणी मनोवृत्तिओनो कल्याण विहार छे

मृगजळशा ठगारा सुखो के शांतिना आभासोथी चेतता रही साचुं सुख शामां छे, साची शांति क्यां छे, अने ते मेळववाने क्या क्या प्रयत्नो आवश्यक छे ते जाणीने आचरणमां मूकवा एज आ जीवननी महान् कळा छे आ कळामां कुशळ थइए तो वगर विचार्ये मोहान्धतायी क्षणिक देखाता सुखो के ठगारी शांतिनी माया पाछळ मनोवृत्तिओने जेम तेम रखडवा देवानी टेवथी बचावी शकीए ने ते द्वारा आपणी सुवारी थती अटकावीए !

---

¹ आजीवन स्वर्गने मावर्ुं ए मानव जींदगीनो आदेश छे.

सुख–शांति माटे मानव समूहने लागेली तृषा छीपी शकी नथी, केनु कारण, क्षणिक सुखो पाछळ दोट अने स्थायी सुखो पाछळ उपेक्षावृत्तिज मात्र छे तेथी साचां सुखने समजवा आपणे खूब प्रयत्न करवा जोइए.

आ सुख–साचुं सुख बीजे क्यांइ नहीं पण आपणां अंतरमा छे हृदयमां तेनां बीयां क्यारना रोपाइ चूक्यां छे हवे मात्र मीठा जळना सिंचननीज जरूर छे थोडु थोडु जरा सींचवा लागो तो प्रति पळे तमे अनुभवी शकशो के " सुखनो छोडवो अदरथी फाली रह्यो छे, अदरथी मीठो अवाज सांभळी शकशो के " हु खीलुं छुं खीलुं छु हृदयमांथी खीलतां खीलतां आखा शरीरमां विस्तरवा मथु छुं ने पछी शरीरनी आसपास सुखनाज आत्मगान समळाववा इच्छुं छु जल्दी सिंचो " आ अंतर अवाज सांभळो अने जीवो—

स्थायी सुख माटे बीजे कोइ स्थळे फांफां मारवा छोडी दइने आपणे आपणां अंतरमांज शोधीए तो केवु सारुं ! आटली बधी शक्तिओनो नकामो व्यय जे क्षणिक सुखो ने शांतिनी शोधमां थइ रह्यो छे तेमांथी अडधी पण शक्ति जो आ मांघा अंतरना सुखने प्रगटाववा–सींचवा पाछळ ग्ररचवामां आवे तो सारी सृष्टि सुखशांतिमां जरूर तरबोळ थाय !

आत्मानो उल्लास प्रगटाववा ज आ मनोहर जींदगी छे.

ए साचुं सुख ने शांति दरेकना अंतरमां छे शुद्ध ने सनातन सुखनो सागर त्यांज गरजी रह्यो छे। एनो अवाज ध्यान दइने सांभळीए तो आपणा आनंदनो पार न रहे, भूलेला मार्ग माटे आपणने पश्चात्ताप थाय अने पोकारी उठीए के 'अरेरे! आजसुधी भूल्यो सुख माटे आ बहारनी चीजोमां में नकामा वलखा मार्या साचुं सुख तो बीजे क्यांइ नथी पण अहीं अहीं आ अंतरमा छे त्यांज आत्मा अने परमात्मानी ज्योति जगमगे छे अहो! हो! आ सुखनी आगळ दुनियाना क्षणिक सुखनी कंइज गणत्री नथी ...'

मानभूलु कस्तुरीमृग जेम पोतानी डूंटीमा कस्तुरी छूपाएली होवा छतां अज्ञानवश ए कस्तुरीने सुघवा जंगलमां आमतेम नाक नाखी दोडे छे, छतां स्थूल कस्तुरी तो विचाराने सांपडतीज नथी, ने कस्तुरीनु साचु स्थान क्या छे तेनी पण समज मेळवतुं नथी, तेमज आपणे सुख माटे आ व्हारनी दुनियामां ज्यां त्यां शाने माथु पटकीए ? अने एम पटकवाथी सुख शांति मळे पण क्यां छे ? तेयी ज्या ते 'छे'–एवा अंदरना स्थानमांज तेने शोधीए ने मेळवीए पछ्ज व्हापण छे एमांज जीवननी चातुरी ने सिद्धि छे × × × आपणा अंतरमाज अने मात्र अंतरमाज साचु सुख छे परम ऐश्वर्य अने सामर्थ्यनो खजानो त्यां ज भर्यो छे आनंद अने शांतिनो

थोडुं परंतु मीठ, भव्य ने 'सुंदर' जीवनमां ज 'विजय' छे

फुवारो त्यां ज छे   बधां उच्च तत्त्वो ने परम कल्याणनुं ए धाम छे तो पछी बहार शाने फाफा मारवा ? तमे ज सुख चक्रवर्ती हो तो पछी नाना ठाकरडानी खुशामत तमारे शाने करवी पडे ? तेथी तमारी अदर ज बधो दिव्य खजानो भर्यो पड्यो छे ए वस्तुने बराबर हृदयमां घूंटी घूंटीने समजी ल्यो तो ए सुखनो अनुभव आह्लादपूर्वक तमे करी शकशो।

'अदर 'ना सुगंधी बगीचा—परम सुखना बगीचाना तमे पोते मालीक हो तो पछी बहारना पावळीयामा मोंकावानी कांइ ज जरुर नथी तमे खुद गुलाबनुं फूल हो तो पछी तमारे कागळना बनावटी गुलाबनी मोहिनीमां ठगावानी—अरे। सोए सो टका ठगावानी स्थितिमां पोतानी जातने मूकवानी शी जरुर छे ? सुखना तमे ज स्वयं सृष्टा हो तो पछी बहारनी चीजो तमने सुख आपवानी लालचमां फसाववा मांडे तो तमे शाने पसंद करो ? खुद तमे ज सुखस्वरुप हो—शांतिस्वरुप हो तो पछी बीजा बहारना ठगारा विषयोना कहेवाता सुखनो फोगट भार सहन करवानुं केम ज मान्य राखी शको ? तेथी ज समजी ल्यो के तमे ज बादशाह छो सुख, समृद्धि, शांति ने आनन्दनो मीठो झरो तमारी अदरनी गुफामां खळखळ वहो जाय छे एकान्तमां जशो तो ए मधुर नाद सभळाशे ..' जे सांभळी तमे आनदन्थी नाची उठशो

'चैतन्य 'ना धनवनतारपूवक- जैम महित जीवनमां मजा छे

हृदयनी सही गुफामां श्रद्धा अने धीरजपूर्वक 'खोज' करशो तो आस्ते आस्ते तमारा अवर्णनीय आश्चर्य वचे ए सत्यनो साक्षात्कार थशे ज के जे जे काल्पनिक सुखोनी भ्रमणामां बहारनी दुनियामां आपणे भटकीए छीए ते बधी ज ' खरी ' वस्तुओ उपरान्त कैंगणो किंमती सुखनो अने शांतिनो खजानो ' अंदर ' भरेलो छे, जे शाश्वत छे, अनत छे अखूट छे, तेने कोइ लूटी के खेंची शके ज नहीं ए ज आपणी साची दोलत छे ज्यारे आ कहेवाता बहारना सुखो तो क्षणे क्षणे पोतानो वेश बदले छे, पळे पळे पल्टो ल्ये छे, अने तेना मोहमां फसानारने दगो ज दे छे !

कोइ म्हेलमा मोहाय छे, तो कोइ झुपडीमां मोहाय छे कोइ वैभवमां तो कोइ त्यागमां ! एटले तेनो अर्थ एक ज छे के कांइ म्हेल के झुंपडु सुखने खातर स्वय सुख नथी, वैभव के त्याग ए पोते ज सुखने खातर सुख नथी, परंतु ए तो बधां अदरनी पसदगीनां के नापसदगीनां सुखदु खप्रेरक निमित्तो मात्र छे ! ए बधुं 'आपणे पोताने खातर' ज प्रिय–अप्रिय छे खरेखर सुखनु मूळ आपणा पोतामा ज छे तेथी साचा सुखना पिपासुए पोताना दिलमां ए वात हवे बरावर ठसावी लेवी जोइए के बधां सुखशांति ' अंदर 'थीज आवे छे, बहारथी नहीं अदरनोज सूर्य पोतानां किरणो बहार फेंके छे ने वस्तुने रूप आपे छे अदरनो ज भरो पोतानां जळ बहार वहावे छे अने ते ज झरामां पळे पळे मानवी न्हाय छे ने झरणाओ साथे आनन्दमस्तिमां गेल

हसतां हसतां सभ्यतापूर्वक मरवामां ज जींदगीनुं नूर छे

करवा पोतानु जीवन विशुद्ध बनाव्ये जाय छे जेथी पोतानी आसपास सुखनु विस्तरतुं वर्तुळ प्रतिपळे आपणाथी अनुभवाय छे आ वात सुख-पिपासुना वेतुए तंतुमां श्रद्धापूर्वक थयाइ जवी घटे

एक वात, आ वस्तु (Fact) आपणां बाह्यमन (Objective Mind) पर चोक्कस स्थान ल्ये, तो त्यांथी अंतरमन (Sub-conscious Mind) पर तेनु ओसथी वक्रीभवन थवा पामे, एटले के वधारे सादी भाषामां कहीए तो ए के जो आपणां अंतरमन (जे मन, 'उपर'ना मननी नीचना भागमां सूक्ष्म रीते रहेलु छे ते) ना तळीआमां आ ज्ञान संघराइ जाय तो तेज क्षणेथी-दुःखोनी लहरीओ आसपास फरती बंध थाय ने ते ज क्षणथी सुखनो चंद्रमा बीजनी माफक हृदयाकाशमां-अंदरमां-खीलवा मांडे छे ने पछी क्रमशः सुखनी भावनाओनी टोंच पहोंचतां पुनमना चांदनी संपूर्णता ने शीतळता आपणे अनुभवीए छीए. आ आंतरमन ए कुदरती मन छे एना पर जे फोटो सचोट रीते नाखवामां आवे छे तेनु ज परिणाम ते लावे छे मनुष्योनो ए ज महान मित्र छे जीवननुं सुंदर मंदिर ए ज घडे छे ए ज सुख शांतिना धाममां लइ जनारो दूत छे वधी बाह्यमनना द्वारमां प्रेमी आंतरमन पर जेवी रोशनी आपणाथी फेंकाशे तेवो ज प्रकाश आपणी आसपास पथराशे। हवे ए प्रश्न उठे छे : सुख

'सरा'नी माफक वक्रराळ वहती 'जींदगी' ए ज जींदगी छे

ाषां अंदर मर्यां छे ए वात साची ! पण ए सुख–शांतिने ेळववां शी रीते ? अर्थात् भीतरमां पोढेला ए सुख–शांतिने ीवनमा साक्षातरुपे अनुभववा कइ रीते ? सुखोने 'सुखो'रूप राखवानी ने तेमाथी दिव्य आनद लूंटवानी कळा न आवडे तो ए सुखो वधां शा कामना ? कजुसनी मूडी शी किंमतनी ?

हा ! प्रश्नो उत्तर तैयार छे परंतु प्रश्नकार जो ए उत्तर मेळवी साचा सुखो शोधवानी खरी 'गरज'मां-संपूर्ण वाञ्छा-ेक्षीमां होय तो ज तेने ते मळी शकशे–फळी शकशे ! तो ज ते मनुभवी शकशे !

अेने आपणे आत्मा–आत्मा कहीए छीए ते क्यां रहे छे ए ज पहेलां समजवु जोइशे कारण के समारना सुख–दुःखने धारनारु ए ज महापात्र छे, तेथी एनो सूक्ष्मतायी विचार करीए ! सामान्य लोको माने छे के आत्मा शरीरमा वसे छे, अने शरीरने दुःख लागतां आत्मा दुःखाय छे ! ना, पण तेम नथी आत्मा शरीरमां वसतो नथी के वस्तुवः शरीरनां दुःखे ए दुःखी थतो नथी, परतु आत्मानुं साचुं निवासस्थान तो 'विचार' छे विचारमां ज आत्मा वसे छे ने विचारना सरोवर वच्चे ज ए कमळसम खीले छे या करमाय छे

विचार ए आत्मानु मदिर छे, ने आत्मा ए मदिरमां विरा–

मननना 'स्फुरण' वचे 'डोकवां' जीवनमां ज मनुष्यत्व'नो वास छे.

जतो देव छे आत्मा राजा छे, विचार मत्री छे मदिरमां अपवित्रता होय तो देव पर तेनी छाया पडे छे, अने सलाह कारना बदले मत्री शाराक बने तो राजानु तेज नवलु पडे छ तेमज मदिरनी—विचारोनी पवित्रतायी आत्मा—देव पवित्र बने छे, अने मत्रीनी सुमलाहथी ज राजानुं शासन दीपी उठे छे

जे विचारोनी लहेरो ज्यांथी पेदा थाय छे ते स्थानने 'मन कहेवाय छे विचारोनो झरो ज्यांथी छूटे छे ते स्थाननुं नाम मन छे ए मन उपर आखा जीवननो—आत्मानो आधार छे कारण के मन जेवा तरंगो पेदा करे छे, अने जेवा विचारोनी विजळी अंदरथी छोडे छे, तेवा ज पुद्गलो वधे आत्माने गेंधी तेमां हसावे के रडावे छे, सुख के दुःख मनावे छे, आनद के शोक प्रेरे छे: तेथी मननु विज्ञान (Science) जाणी लइए तो—अने मननां अचळअंडीपणाने काबुमां लइए तो धार्युं फळ के धारेली सिद्धि आत्मा पामी शके छे, अने मनुष्यजन्म पण सफळ थाय छ × × × मनुष्य ए शु छे ? घणीवार प्रश्न थाय छे के शा माटे पशु—पक्षीओ करतां तेनी वधारे किंमत हशे ? कारण—बीजुं काइ ज नथी पण तेनामां विचारशक्ति प्रबळ छे, अने बीजी अनेक प्रकारनी गुप्तशक्तिओनो ए भर्यो भंडार छे मनुष्यमां छुपायलां (Hidden forces) गुप्त बळो जो संपूर्ण पणे खीली शके अने प्रकाशमां आवे तो ते देवनो पण 'देव' बनी शकवाने समर्थ छे ! आथी मनुष्य महान छे

भयंकर 'जोखम'ना ढाढ पर ज आ जींदगीनी इमारत छे.

आ गुप्तशक्तिओनु केन्द्रस्थान शोधवा मथीए तो आपणने बरोबर जडी आवशे के–ते ते स्याननुं नाम मन ज छे मानवजीवननु सचालन करनारी एज सार्वभौम सत्ता छे जीवन नावनु ए ज सुकान छे ते धारे तो तारी शके ने धारे तो डूबाडी शके छे जींदगीनां सर्व सुखदुःखनी लागणीओनुं मूळ, आत्मानां आनन्द के शोकनुं कारण, अने उन्नति के अवनतिनां भारे पसडी जइ विजयी के पराजयी जीवन जीवाडवामां जे पोतानी कुल सत्ता ने प्रभाव अजमावे छे ते बस ! आपणु मन छे Mind छे Sub-conscious छे

मन एव मनुष्याणां कारण बंधमोक्षयो ।

जींदगीनां सुखदुःखनी भली–बूरी लहरीओ उत्पन्न करनारु यत्र ए मन ज छे ए मनरूपी (डायनेमो) विजळीयत्रमाथी सघळां विचारोना किरणो फूटे छे अने ए किरणोमा पोताना स्वभावनो ताप होय छे जेथी ए तापनी गरमीथी धारेला फळो उगाडी शकाय छे

वरा विचारो ! ससारमा आमसुधी थइ गयेलां अने थनारा सारां माठां बनावोनु मूळ जो कोइ होय तो ते मन सिवाय बीजुं शुं छे ? मने ज अनेक युद्धो कराव्यां ने सुलेहो स्थापी छे मने ज अनेकने हराव्या ने अनेकने जीताड्या छे आम मानवजातनी मुक्ति के बधन ए बधा मननां ज फळो छे

सदाय परिवर्तनशील जीवनमां ज माणसाइनी निशानी छे

आ मन एक एवु यन्त्र छे के तेमाथी प्रतिक्षणे नवनवा विचारोनी लहरीओ पेदा थाय छे ए विचारोमां एटली अद्भुत शक्ति होय छे के तेनुं वर्णन करवु अशक्य छे एक पल पण एवी खाली नथी जती के जेमा मने कंइने कंइ विचारनी लहरी न पेदा करी होय ! 'वायरलेस'नी माफक ते पोतामांथी विचारनी विजळी प्रतिक्षणे फेंक्ये ज जाय छे ! जेथी ते विचार कुदरतनां चैतन्य साथे मळी अइ तेमांथी पोतानां 'सजातीय' तत्त्वोने खेंची लइ जेटलां जोरथी छूटयां होय तेटलांज जोरथी पाछा आवी बेसे छे अने आसपास एवा ज तत्त्वोनु साम्राज्य जमावे छे आ छे विचारोनुं कार्य !

मनुष्यनु शरीर अने तेनी अकेक गति विचारने तावे छे अने विचारज देहनो ने दुनियानो सर्वोपरी राजकर्ता छे विचारोज अनेकनां पतन करे छे ने अनेकनां उत्थान आदरे छे मना (Force) बळमां एवु अजब जादु छे के जे वस्तु धारे ते मेळवी शके छे एनी अद्भूत शक्ति (Latent power) थी केटलाय योगी अने प्रबळ प्रकृतिनां पुरुषोए दुनिया पर म्होटामां म्होटा फेरफारो कर्या छे

Mind is known to be a power, a real force—and every one must first sink this truth right in to the mind that is that mind is a real Force.

जीवनसरना 'आत्म'मांथी प्रत्येक मळे नवुं जीवन मेळवतुं पडे.

Then go a further and you will fiud that mind is the only Force, that all else is the creation of mind, That mind stands back of all creation, that nothing ever existed before mind.

It is the only Force ever Known.

आ Mind मननी जे पेदाश छे तेनुं नाम Thoughts विचारो छे ए विचार एक पदार्थ छे प्रतिक्षणे मनुष्यनां मनमांथी विचारनो प्रवाह् नीकळतो ज होय छे निरंतर विचारना तरंगो आपणी अंदरथी नीकळ्या ज करे छे, आपणे जाणीए के न जाणीए पण आपणी अंदरथी विचारो नीकळीने वादळानी माफक वातावरणमां घूम्या ज करे छे, ने आकर्षणना नियम प्रमाणे पोताना जेवा गुणधर्मयुक्त बीजा विचार तरंगो के तत्त्वोने पोतानी तरफ खेंचे छे कुदरतना अस्फुट चैतन्यमां जे शक्ति छे तेज शक्ति विचारोमां छे, तेथी विचारोमां सघाय कुदरतनी महाशक्ति उतरे छे

भावनाबळे सुर देवताओ मूर्तिमंत हाजर थाय छे तो जगतनां कार्योनु तो पूछवुज शु ?

विचारबळ (Thought force) ए आखा जगतमां सौथी बळवानमां बळवान् शक्ति छेः ए सर्वोपरि फोर्स छे एज महान् चैतन्य छे तेनी द्वारा आत्माणु, जिंदगीनुं ने

अहो ! कांटाओनी सेना वच्चे 'गुलाब' केवुं मधुर 'जीवन' जीवे छे.

जगतनु सुंदर सर्जन थाय छे, तेथी म्होटा म्होटा साम्राज्योने ध्रुजाव्या छे कैंकने चलाव्या छे ने पछाड्यां छे एनी शक्तिना महिमा अपार छे × × ×

आजनुं मनमानु विज्ञान (Science) पण ए विचारबळने सामे माथुं झुकावे छे, तेथी मनोबळ जे केळवशे, मनने पोताना नक्की करेला विचारो करवा जेटलुं काबुमां जे राखी शकशे, मनरूपी अकथ्य अवर्णनिय सुंदर विचारो, सशक्त भावनाओ अने क्रियात्मक जीवन विताववानो आदेश आपी पोतानी मरजी मुजब तंत्र चलाववा मनने हाथमां राखशे, तेज मानवात्मा जगतमां जीतशे—जीवशे ने विजयी—अजेय जीवन वितावशे। ए सर्व सिद्धिनी वरमाळ वरवाने तेज भाग्यशाळी थशे।

पूर्वना योगीओ, तत्त्वचिंतको अने आजना वैज्ञानिको एक अवाजे बोधी रह्यां छे के जेटली शक्तिओ आपणा विचारोमां छे तेटली बीजी कोइ चीजमां नथी संसारनी कोई चीज एना प्रवाहने रोकी शकवाने असमर्थ छे, एवी ए प्रबळ शक्ति छे, एनो अनुभव सामान्य जनोनेय केंई वार थाय छे

मन ए सूर्य छे ने विचारो ए तेनां किरणो छे तेथी किरणोनो रंग होय तेवो ज सामे प्रकाश—सूक्ष्म के स्थूळ रूपे पथराय छे अर्थात् जेवुं अंदरनुं मानसिक वातावरण तेवो ज

मुरलेशीनी ' चमेली ' अ ' मनुष्यत्व ' मुं मुंदर चतर थाय छे

विचारनो प्रवाह अंदरथी बहार वहे छे ने पोतानो प्रभाव सर्व चीजोपर भजमावे छे रासता रूपे सुखी मनोदशामां स्फूरेलां सुखमय विचारो ज्यारे मनरूपी म्हेलमांथी छूटे छे त्यारे दुःखनु भान पण भूली जवाय छे ! आखो दुनियापर दुःखनु नामनिशान ज न होय एवु सुख अनुभवाय छे तेमज दुःखी मनोदशामांथी स्फूरेलां दुःखी विचार–किरणो सुखनी स्मृतिओने पण मसाडे छे आम जोता अगाध भावरो के विचारनां मोजांओ ज, के जे मनरूपी समुद्रमां उछळे छे तेज–मूळ जेवां रंगथी भींजायला होय तेवी सृष्टिओ रचे छे ने पोताना प्रवाहमां आवेलाने खेंचे छे

वस्तुतः सुख दुःख जेवी कोइ भीन्न चीज ज नथी. छे.. छे मात्र विचारना रंगो ! छे मात्र मनना मोकलेला विचार–दूतना स्वांगो !

५

आपणे जेवा विचारो करीए छीए तेवी ज लागणीनो स्पर्श आपणने अंदर थाय छे जेवु मननु वलण होय छे तेवी ज असरो आपणे अनुभवीए छीए. तेथी जेवी भावना–विचारो थाय, तेमज सुखी के दुःखी, उन्नत के अवनत, वीर के कायर, देव के दानव बनी शकीए ! जेवी पसंदगी तेवी सिद्धि ! कहो ! केवा विचारो पसंद करशो ? विचारोनी शक्ति स्वीकार्या पछी 'जेवु वावशो तेवु व।लणशो ' ए सिद्धांत तरफ आवीए.

संघटोने 'हसतां हसतां' स्वाकारे तेनो ज जीवनबाग खीले छे.

"जेवा विचारो, करशुं तेवा ज फळो पामीशुं" आ पण विचारनो एक सिद्ध प्रयोग छे उच्च, पवित्र अने कल्याणकारी विचारोनुं सेवन करनार आकर्षणना नियम प्रमाणे पोतानी जेवा ज गुणधर्मवाळा उच्च विचारोने ज आकर्षे छे अने विचारनी आसपास शुभ विचारनां प्रवाहनु एक प्रकारनु गाढु 'कवच' रचाय छे, जे कवच बीजानां अनेक अशुभ विचारोनां प्रभावथी प बचावे छे आटलुं ज नहि पण शुभ विचारनां माणसोने य शुभ विचारो पोतानी तरफ आकर्षी ले छे तेमज पोतानां विचारो जेवां ज पोतानी आसपासनां संजोगो माणस घडी शके छे

आजनो माणस जे देखाय छे ते गइकालनां विचारोनुं ज फळस्वरूप छे, ने आवती काले जेवो ते थवानो ए आजनां विचारोनु परिणाम हशे. तेथी विचारो एवा करवा जोइए के जे स्थिति आपणे खरेखर चाहता होइए !

मंदिरना घुम्मटमां जइ अवाज करीए छीए त्यारे अवाज केवो उपर घुमीने पाछो (पडघारूपे) आवे छे ? तेवीज रीते आ आकाश रूपी घुम्मट नीचे आपणा ज विचारो चोतरफ घूमीने पाछा आवे छे, ने आपणी पर तेनी असर करे छे तेथी सुखना —साचा सुखना अने शांतिना उपासके पोतामा मनमांथी दरेक बनी विचार लहरीओमां पदुं कंइ ज तत्त्व ना प्रवेशवा देवुं जोइए के

मुर्शीवलो' मंजुर होय तेने ज 'साचुं' जीवननो 'अधिकार' छे

जे लहरीओ—जे विचारनां मोजांओ दुनिया पर फरी पाछां आपणी तरफ आवतां लेशमात्र दुःख, क्लेश के अशांतिकारक आपणने निवडे ! आपणां सुंदर सत्त्वने अने सुखनां के शांतिना मनोहर स्वप्नने ना वगाडी मूके ते सारु विचारोनी काळजी बहु लेवी जोइए. ए काळजी कई रीते लइ शकाय ?

, ह्मारी मनोभूमिने एवी शुद्ध, पवित्र राखो के तेमाथी सदाय सुंदर, पवित्र ने विशुद्ध विचारोनुं ज स्फुरण थाय शुभ सत्कार, अडग पुरुषार्थ, पवित्र भावना, अद्‌भूत हिंमत, अखुट आत्मविश्वास, समता, समानता, विश्वप्रेमभावना, प्रबळ महत्वाकांक्षा, प्रमाणिकता अने धीरजनां बीयां ए भूमिमां ऊंडा ऊंडा रोपवां जवां जोइए, कारण के जेवा मननां सत्कारो हशे तेवोज मनमांथी विचारोनो मोल उतरशेः जेवी भावना हशे तेवीज सिद्धि थशे !

आवी ठक्कु, इर्षा के द्वेषनां विचारो अने क्रोध के तिरस्कारनी तामसिक भावनाओथी माणस इर्षा के द्वेषनां दावानळ तरफ ज धकेलाय छे सामाने बाळवा पहेलां तेज पहेलो बळे छे एवा विचारोथी क्रोध तिरस्कार ने अशांतिनी आगमां ए पोते ज सदाय शेकाया करे छे, ते कांइ एवा दुष्ट विचारोनी पोताने य कइ ओछी शिक्षा नथी ! तेथी महा ! आवा विचारो कया समत पथगामी—सुखशांतिना साचा उपासकने करवा पालवे ? विचारथी ज आपणुं भावि घडाय छे तो पछी हाथे

'महा' गुरुकेशीओने पी आयो, तेज महान् बनी शके छे

करीने खराब विचारोमां रखडीने एवो कोण चतुर पुरुष पोतानु भावि काळु बनावशे ?

विचारनो विस्तारनो स्वामी मन छे, ने मानवीना भाविनो सर्जनहार विचार ज छे तेथी हरहंमेश कल्याणकारी, सुखनां–संपनां–आनंदनां–सुसमीमाजीपणानां–उदारतानां–संतोषनां अने प्रेमना ज विचारो करवा घटे

कारण, एक बीजी पण वात छे के सत्य, प्रेमाळ ने पवित्र विचारोमां वधारे बळ होय छे मलेने तेवा विचारो करनारनु मनोबळ सामान्य के निर्बळ होय तो पण घणामां घणा बळवान स्वार्थी बने अपवित्र मनवाळा द्वेषी माणसनां विचारो करतां तेनामां अनेकगणु बळ रहेलु छे

मनरूपी झरामांथी दिव्य, मीठां, पवित्र ने निर्मळ जळ ज वहेवा देशो ! जो लुमारामांथी अमृतसरो ज बहार वहेशे तो आसपासनां[1] क्षेत्रनेय अमृत बनावशे ! ए कदापि न भूलावु जोइए के Thoughts are things. विचारो ए कोइ दिवस कांइ नकामी वस्तु नथी पण जे जे कांइ सूक्ष्मथीय पण सूक्ष्म विचार आपणे करीए छीए तेनो, तेना जेवो ज आकार रचाय छे हवामां तेनी स्थूल मूर्तिओ घडाय छे ने तेज प्रमाणे कार्यो बने छे आ एक म्होटुं विज्ञान छे

[1] 'चेतन' श्री लालचंद्र शम्मा व गेकटेने ' आरा करे छे.

मनुष्य जेवो विचार करे छे तेवु ज ते पोतानु 'नसीब' घडे छे सुखनां विचारे सुखनी ज सृष्टि रचे छे ने दुःखनां विचारे ते दुःखनी ज दुनिया बनावे छे प्रेमना विचारे ए चोमेर प्रेम, प्रेम ने प्रेमनां ज बगीचा खीलवे छे ने द्वेषना विचारे चोतरफ द्वेषरूपी ज्वाळामुखीनी ज आग अनुभवे छे धर्मनां विचारे त्याग, उदारतानां विचारे समृद्धि, शौर्यनां विचारे शक्ति अने पवित्रतानां विचारे पवित्र-जीवननो साक्षात् अनुभव करे छे अने आर्थी उलटा विचारे हलको विलास, कंगालीयत, अशक्ति ने अपवित्रता तरफ मानवजात जाण्ये-अजाण्ये घसडाय छे

•

जीवननी पळे पळे माणस पोतानु भविष्य घडे छे ने विचारो एज तेना भाविने घडनारा हथोडा छे

•

जरा जगत् पर नजर नांखो । लक्षाधिपति माणसनी पासे पैसो, चाकर, नोकर सगवड, बागबगीचा, बगला ने गाडी घोडाओ होय छे, आ बधां साधनो शेठजीने सुख आपवा खूब प्रयत्नो करे छे छतां प्रायः ए दुःखी ज रहे छे ? अने बीजो माणस झुंपडामां रहेवा छतां सुखी छे । कारण, स्पष्ट छे: कुदरत माणसने दौलत, शक्ति, साहेबी, साधनो ने लांबी जींदगी आपी शके छे पण ते सुखी करवाने 'अशक्त' छे ए सुख तो माणसे पोते ज-पोतानी अंदरमांथी उत्पन्न करवु जोइशे । धन-

---

'इच्छाशक्ति' थी मेरेलुं । 'मम्म हृदय व सुरकेशीओने 'नमामे' छे.

दौलतनी आबादी साथे 'सुख' ने कांई दोस्ती होय तेवो नियम नथी तेथी सुखी थवा माटे तो 'सुखी' मन 'साधवुं' घटे छे

पैसे टके सुखी होइए ए साचु सुख नथी, पण मननुं सुख एज म्होटुं सुख छे पैसो होवा छतांय जो माणस पासे तेनां मनमां साचा सुखी थवाना—सुखी 'थवाना' तत्त्वो ज न होय तो बीजा बधां प्रकारनां बाह्य आनंदो साव किंमत वगरना छे कारण के ते साचुं सुख अनुभववाने असमर्थ छे तेने माटे तो 'सुखी मन' अने तेनां किरणोरूपी प्रफुल्लतानां विचारो ज कार्यसाधक निवडे छे

Attitude of happy mind only can creat Happiness.

And happiness of thought is always to be practised like the Vialin.

पण आ करवां पहेलां ख्याल राखो के आपणां हृदय साफ थवां जोइए. कारण ते विना बधुं नकामुं छे ; तेथी आपणा हृदयमां प्रत्येक जीवात्मा माटे पूर्णप्रेमनो अग्नि प्रसाववो जोइए. कारण के जेओ प्रेमनी सर्वव्यापक एकतानो साक्षात्कार करे छे तेओ ज मात्र जीवननो साचो आनंद, तथा सुख ने मानी

साध्य सिद्धनुं संचालन करनारी शक्ति Will-'इच्छाशक्ति' छे

शांति अनुभवे छे, अने तेज मनने समतोल बनावी शके छे तेथी प्रेमना पवित्र कुंडमां जे कंइ विरोधता ने द्वेषबुद्धि होय तेने डुबाडी दइ तेने स्थाने मधुरता ने प्रेमना तत्त्वने कामे लगाडवुं जोइए !

अने पछी जुओ प्रेमनी शक्ति केवी गजबनी छे ! एणे अनेक दुश्मनोने-विना प्रयत्ने दोस्तो बनाव्या छे वैरीना मित्रो सर्ज्या छे वेरी पर वेर लेवानी एक महान् अकसीर औषधि छे: कारण के द्वेषनुं निवारण द्वेष कोइ काळे होइ शके ज नहि, पण प्रेम–प्रेमनुं अमृत ज द्वेषाग्निने शांत करी शके छे तेथी परम सुखना इच्छनारे प्रत्येक जीव साथे प्रेमनुं जोडाण आदरवुं जोइए. ए हृदय साफ करवानी प्रथम चावी छे

पछी तो आवा मनोहर प्रेमी हृदयनो सुंदर फोटो मन पर पडे छे जेथी मन स्वयं समजी जइने प्रेमनी–भ्रातृभावनी ज मीठी विचार लहेरीओ पेदा करे छे ने तेमां ज मालवीने तरबोळ करी सुख शांतिना स्थान तरफ हसतां हसतां दोरी जाय छे

मनमां कदापि व्यर्थ फिकर–चिंताना विचारो, कंगाळीयत, दुःख, दरद, पाप, नासीपासी, इर्ष्या, प्रपंच के एवा दुनियाना दुःख मुख्य असुखना मूळ कारणोवाळा विचारोने स्थान न ज आपवुं जोइए, नहीतर ए विचारनी भूखणी पोतानी जेवा ज अणुओ वातावरणमांथी खेंची आपणा सुखी प्रवासमां अटकाव

साहस, शौर्य, जोखम, श्रम के मनेकर अवकरानी 'जनेता' Will छे.

पहोंचाडशे—आपणने हेरान करशे—आपणा दिव्य पुरुषमां पत्र राखो मोळपशे—आपणने उपर चढता गबडावशे ने पतन तरफ चाली जशे; तेथी कोइ पण अशुभ—निराशाजनक, निरुत्साह प्रेरक अने दुष्ट विचारोना छांयडेय आवता दूर रहेवुं परम हितकर छे, विचारोनी जेटली उज्वल प्रेमाळता, मव्यता ने शुद्धि हशे तेटलो विचारोनो वेग वधारे तेजस्वी ने साफ बने छे

सक्रिय शांति के सुखने माटे आपणे आपणा मनमें आनंदी विचारोनो माळो बनाववो जोइए पछी जोया करो के ए सुंदर तेजस्वी विचारो द्वारा जीवननुं केवुं मनोहर चीतरांग बनावी शकाय छे ! एकवार मनमुवाइथी जीवनना पायामां भव्य विचारोनी पूरणी करी लीधा पछी गमे तेवा भयंकर वावाझोडां पण एने हलाववा असमर्थ निवडे छे, ने गमे तेवा मारे दुःखो के भरोसिना मोजांओ पण आपणां आश्चर्य वच्चे सुखरहोविमां फेरवाइ जाय छे

मनुष्योना दुःखमय जीवननुं मुख्य कारण ए छे के सो मांथी ९८ माणसो एवा होय छे के जेओ पोतानी चारे बाजु सर्व प्रकारनी प्रतिकूळ मानसिक लहेरो के तरगो, पेदा करी तेनी ज वच्चे वसे छे तेथी स्वाभाविक रीते तेमनी आसपास सदाय दुःखनुं ज वर्तुल वर्तु थाय छे' दुःख ! दुःख ! भयंकर दुःखनां ज मानसिक स्वप्नांओथी सदाय दुःखनो ज अरुणा तेमना

'शांति नी आरपना ए 'मनुष्यत्व' मो पवित्र मे महन् धम छे

ारमां पडे छे ने एवा उभा करेला दुःस्वमा ज पोतानी आवने ाद होमे छे ! अरे ! केवु आश्चर्य ! जेम करोळीयो पोतानी ासपास पोते ज जाळ रची अदर सपडाय छे, तेमज ाल्पनिक दुःखोनी बेडीओमां माणस पोताने जकडावी दीघाये ो, आथी ऊलटु एक मजबुत मननो प्रबळ विचारक सुखी थवा ग्राय मनमां सुखना घरगो उभा करे छे सुख सुख ने सुखनी ज ानसिक लहेरोमां फरी मानसिक शक्तिथी सुखो अनुभवे छे ेवी भावना के जेवो विचार, तेवी सिद्धि ! उन्नत विचार जीवनने ंन्नत दिशानु भान कराचे छे, ज्यारे अवनत विचार अवनति ारफ ज दोरे छे हवे कहो ! खराब विचारो सेववा ने उंचा थवु ए तो केम ज बनी शके ? कारण कुदरतनो कायदो कोइथी पलटावी शकाय तेम नथी त्यां तो जेवुं भाववु तेवु ज लणवानी तैयारी करवी जोइए. सद्भावना अने सद्विचारनां बीयां रोपनार ज सुख ने शांति लणे छे, चोमेर हरीयाळा बगीचानुं सौंदर्य तेज माणे छे ज्यारे खराब विचार के खराब भावना सुख शांतिनो नाश करी जगतने उकरडो बनावे छे अने पोतानी आस-पास पणी ज दुर्गंधीओ माणस उभी करे छे माटे चेतवु घटे !

ज समये क्रूर खराब विचार आवे छे त्यारे जो विद्वानीनी माफक आपणां अतःकरणनी दशा उपासीए तो अपणाइ आवशे के पहेली ज तके खराब विचार हृदयमां चटकाओ भरे

शक्ति ' ने मेळववा-केळववा मथवुं ए साचा ' मानवी ' नो मंत्र छे

छे, जीवाने बाळवा पहेलां तो आपणे ज अंतरमां तेथी मा
बळीए छीए. खराब विचार वस्तुतः खराब छे एवु
आपणने थाय छेज "एवा विचारो न करवा" एवी
प्रेरणाय भीतरनां भोंयरामां थाय छे पण ए प्रे
पाछळ बळ न होवाथी स्वार्थ के तुच्छतावाळा घेनमां सु
माणसने वधारे नीचे पाडवा ए खराब विचारो स्वच्छं
पोतानो प्रवास आगळ धपाव्ये जाय छे पवी तो क्रम
आपणां शरीरनां, मननां ने आत्मानां परमाणुओ मेलां करे
अमृतने स्थाने झेरनु सींचन करे छे, अने आम ज माणसव
वीचारी दंभमां—अज्ञानतामां पोते पण न जाणे तेम अधोग
बनी गबडे छे आवी दशा माटे आपणे आपणा मनमांथी पवि
विचारोनुं ज केवळ स्फुरण थवा देवु जोइए. अने वळी जु
तो खरा ! सौ जाणे छे के कोइ पवित्र विचार मनमां स्प
ज्यारे आवे छे त्यारे माणस केवो अनेरो दैवी आनंद अनुभ
छे ! बीजाने सुखी करवा अर्थां या पवित्र भावनाओ भाव
पहेलां भावुक पोते ज ए सुखनां मीठां स्वाद चाखवा केटलं
बधो भाग्यशाळी बने छे ! पोतानी आसपास ठंडक, आनंद
प्रेम अने मीठाशनु साम्राज्य विस्तरेलु ए अनुभवे छे कहो
एवा सुंदर, मधुरां फळो चाखवा आपणे सुंदर ने उच्च विचारो
नेज आपणी सेवामां हाजर राखीए तो केवुं सरस !

'जीवनकलह' मां मारामारी चवेची य 'जीवनलीला' मां ते बहादुर छे

कोइ कोइनु सुरुं करी शके ते पहेलां करनारने अ 'बुराइ' नां
स्वाद चाखवा पडे छे ए बुराइ करनारने कंइ ओछी शिक्षा
तेमज भलु, सुंदर कार्य करनारने ज करती वखते स्वर्गीय
द आवी मळे छे, ते पण तेनी भलाइनी कं ओछी कदर
आ प्रमाणे सुख—दुःखना कारणो ए विचारोनो मात्र प्रभाव
अने ए वात साफ छे के (Wireless) तार वगरना दोर-
ओ माफक विचारो पोताना समान गुणधर्मी विचारो साथे
ावो करे छे, हद वगरनी शक्ति धरावनारु चुंबकतत्त्व तेमां
ोतामी एक बीजा परस्परने खेंचे छे तेमां जे विचार बधारे
र होय, एटले मननी एकाग्रतायी छोडवामां आव्यो होय तो
ते बळवान गणाय छे एथी ते नबळा विचारने पोताना तरफ
खेंचे छे—गमाये छे ने शक्तिनी लेण—देण करे छे बीजी बाजु,
एम विचार हलका विचारोने दबावे छे, तेना पर शासन करे
छे ने तेने सुधारे पण छे

हवे आ विचारोमा एकाग्रता (Concentration) अने
ता ए तेनी शक्तिना मुख्य अंगो छे तेथी जे जे विचार
गापणी अंदरथी बहार पडे तेमां द्रढता अने एकाग्रतानुं तत्त्व
ूब होय तो ते जल्दी असर करे छे ।

... शक्ति ... मेतनमयुं ' जीवे ' ते ज ज्ञानी छे

विचारनी लहरीओ एकवार उभी थाय एटले पछ पछ ते विस्तरे छे। सारा के मांठा बन्ने प्रकारनो विचारो जेटला जोस पूर्वक कर्या होय, जेटला मनमां घुटी घुटीने कर्या होय, तेटल तेटलां वधारे त्वरायी विस्तरी सारं के माठु परिणाम ते लावे मूके छे तेथी समजी शकाशे के माठां विचारोमां विचारकनो न खूब थात थाय छे, ने शुभ विचारोमां विचारकनो विकास थाय के परंतु विचारोमां दृढता जेटली वधारे तेटली वहेली सिद्धि समजवी

आपणे जे काइ शब्दो उचारीए के विचारीए तीर ते शब्दोना बोलेबोलनी तथा तेनां जाडा–पातळा अवाजनी धुजणी (Vibration)थाय छे के जे धुजणी पीजी चीजो तरफ ते अवाजने– सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचारने तथा तेनी नानामां नानी असरने लइ जा धुमारी पेदा करनार विचारकनी इच्छा (Will power)मुजब कार्य सिद्ध करे छे, आ हकीकतनो संपूर्ण विश्वास (Intellectual Belief) राखवो जोइए ज

हृदयनां ऊंडाणमांथी नीकळतुं नादभर्यु संगीत सांभळी कोण कोण नथी मोहायु ? 'मेघ मल्हार' राग गावो वरसाद वरसे छे ने 'दीपक' राग गावां दीवाओ प्रगटे छे आ शुं शुं छे ? विचार अने नादनुं शक्ति–विज्ञान नहिं तो बीजुं शुं छे ?

'भीषण' संजोगोमां हिंमतपूर्वक सामी छातीए 'कूच' करे ते मर्द छे

शब्दोमां सुषकशक्ति तो छे ज हा ! सगीत तात्पत्र न्याय छे, तेम विचारोय मनमांथी ताहवद्ध नीकळे तो ज्यां बने सरलुंज बने छे तेथी मगेनी असर समान छे एकना यथारे शक्ति तेनी एकाग्रताने लीधे छे, तो थीजामां एकाग्रता आवतां ते प्रनाडना ते पण तेवी ज शक्ति मेळवे छे विचारो आम ज माणसने, माणसनां विचारोने, कार्योने, भावनाओने अने कुदरती चैतन्यने आकर्षे छे

एटले मथळ 'इच्छाशक्ति' पूर्वक करेला विचारो ज, पछी भलेने ते एकाद व्यक्तिना ज केम नहोय ! परन्तु ते धारे तो आखा वातावरणमां नवी भात पाडे छे तदन नवीन सृष्टि जुनी सृष्टि पचे सर्जी करे छे

सुदर ने इच लागणीओ आपणां मनरूपी 'वायोलीन' मा तारने जो मगजमांथी मूके अने अदरथी तालवद्ध सूर नीकळे तो ए अद्‌भूत कार्य करी शके छे, कारण के आवी रीते प्रेरायलो सूर ज्यारे मगजमांथी बहार जाय छे त्यारे साथे साथे आपणो थोडो प्राण पण लेतो जाय छे जे प्राण विचारनी शक्तिने अति उपयोगी ने सहायक निवडे छे, ने ते अद्‌भूत कार्य करी शके छे

आवी लागणीओ पेदा करवा सारु कोइ पण विषयनुं पुरु ज्ञान समजी लेवुं जोइए जेथी आपणी सकल्पशक्ति सतेज थशे, ते लागणीने प्रेरशे, लागणी मनरूपी वायोलीन पर अद्

मुसीबतो सामे "हसतां हसतां" धीरजपूर्वक जम येदे' ते ज वीर छे

पछाडो मारशे, मन विचारोनी भणभणी पेदा करशे ने परिणामे तेमांथी एक सूर नीकळशे, एक ताल मीकळशे, ते सूर ने ताल ज बधां कार्योंनुं–सिद्धिनुं बीज छे

Like attracts like.

एटले हवे विचारोने शुद्ध राखवा—मजबुत करवा, दृढ ने एकाग्र बनाववा अने तेने कोइ चोक्कस भावनामां स्थिर करवा .. एमांज विचारोनो साचा सदुपयोग कर्यो कहेवाय

सदाय याद राखवु जोइए के मननी वृत्तिओने गमे त्यां ने गमे तेम रखडवा देवाथी कांइ ज फायदो नथी, तेमज चोक्कस लक्ष वगर करेला विचारोनी अमोली तरंगोनी शक्तिनो दुर्व्यय थवा देवो कोइ रीते इष्ट नथी तेथी मनमांथी बहार भटकी रहेली विविध वृत्तिओने काबुमां राखवी ए सुखशांतिने शोधवानी म्होटामां म्होटी चावी छे अने माटे बहारनी वस्तुओमाथी तथा बीजा अनेक आडाअवळा विचारोमांथी तमारा मनने मुक्त—स्वाक्षी—कोरु करवानी खास जरुर छे कारण के—नकामा विचारोना वमळमां गुंचवायला रहेता मगजमां मानसिक बळ क्षीण थतु जाय छे तेना तरंगोनी शक्ति ओछी थाय छे, तेनी विजळी ठंडी पडवा लागे छे तेथी दरेक विचारनी पाछळ तेनो चोक्कस आदर्श नक्की करवो जोइए. अने ते आदर्शने हुं सिद्ध करीश ज, एवुं वज्र कोटीनुं हृदयमां महाबळ होवुं जोइए. पछी बस ! मन पर आदेश चलावो ! मन सिद्धि आपशे !

' विजयी ' जीवन जीववा याद राख, गभराट के ग्लानी न घटे !

पण अहो ! मन तो माकडा जेवु छे ने ! न इच्छीए तेवा विचारो ते करे छे ने इच्छीए ते विचारोथी दूर करे छे ! ! ! वाह ! तेनो खेल अजबरगी छे ! खरेखर मनमाकडाने वश करवाने खुब सामर्थ्यनी जरुर छे

ए ' मन ' मर्कट बहुज अटकचालुं छे एना नाचो कैं कैं विचित्र होय छे एक पळमां आकाशमां उडे छे तो बीजी पळे ते पाताळमा गमे त्या रखडतु होय छे ! तेथी जेणे मनने पोताना इसारा माफक ज उडवा देवा कमर कसी छे ते ज तेनी महान् शक्तिओने, पोतानुं उन्नत जीवन जीववामां मददगार बनावी शके छे

• •

- मनने केळववा जो के प्रारंभमा मुश्केलीओ आवशे कारण के ए बहु अटकचालु छे एकज वखते ते हजार चीजोमा फरे छे : क्षणे क्षणे नवीन सृष्टिओ रचतुं ने नाश करतु एवु आ मन बहुज चपळ छे परंतु प्रयत्ने—दृढ प्रयत्ने ते कामुमा आवशे एने काम आपो.. कोइ पण शुभ प्रवृत्तिमां रोको तो ज ते बधाय, ने तो ज ते श्रेयकर्ता छे नहिंतर, ते जीवननी खुवारी करी नाखे छे तेथी आपणां मनोमंदिरमा ज्यारे ज्यारे अज्ञानता, निर्बळता, स्वार्थी-पणा, के अहमभावने लीधे जे जे वृत्तिओ—नकामी उभी थाय त्यारे त्यारे तेने मजबूत आत्मबळथी दबावी देवी जोइए. जे जे खाडा—अवळा विचारो उभा थाय ते ते विचारने पकडी तेनुं एवा

साचुं ने मनोहर जीवन तंदुरस्त ' हास्यलहरीओमां भर्युं छे

प्रकारे निराकरण करो के जडमूळथी ते उखडी जाय ! रोज अनेक दुष्टवृत्तिने दबावी देशो तो क्रमश मननुं वलण अमुक समये मजबुत थशे पण जो जो ! एकनां हाथे पण हार खाइने हवारा थया तो बधु ज गुमावशो ! रे ! सारुय जीवन बरबाद थशे

आ मनने साधवा माटे आपणी अंदर एक बीजी महान् शक्ति छे जे मन करताय म्होटी छे, छवा ते शक्तिने मन पासेथी ज-काम लेवु पडे छे ते शक्तिनुं नाम छे आत्मबळ: Spiritual force.

आत्मबळ ! गजबनी शक्ति ! एकवार ए आत्मानुं बळ 'मन' पर अचूक स्थापी लइए एटले 'मन' बीचारुं आत्माने आज्ञांकित रही पोतानुं कार्य बजाव्ये जाय छे पूर्वकाळना ऋषि-मुनिओ, योगीओ ने समारमरना विजेताओ ए आत्मबळथी ज 'मन' ने साधी शक्या हवा अने तेथीज तेओ विजयी जीवन जीवी शक्यां एवु ज बळ आजे पण (अने भाविमा पण) आपणे धरावीए छीए. अखूट आत्मसामर्थ्यनो खजानो प्रत्येक मानवीमां भर्यो छे मात्र ए खजानो खोलवानो बाकी छे आपणी भीतरमां सूवेली शक्तिने ढंढोळी जागृत करवानी छे.. पछी तो मन बीचारुं चाकरी लेवु बनी जशे, ने आपणने मन धायु काम आवशे !

आत्मबळ : एटले बीजा शब्दोमा आत्मानुं निश्चय बळ ! ज्यां एवा निश्चयनी खुमारी छे त्या कोण छीर शुं काइ करकी शके

मीठुं मीठुं हसवुं मे हमारवुं ए आंद जगतमां मोटुं पुण्य मनी म

केम छे? निश्चय! निश्चय! हा .. एकवार युक्तिपूर्वक अमुक निश्चय करी तेने पार पाडवा मनने अमुकज विचारोना आंदोलन फेलाववानी आज्ञा आपवा मनरूपी म्हेलपर हल्लो लइ जइए अने तेने निश्चयबळथी नमावी ताबेदार बनावीए तो बस पछी जीत! जीत! जीवनमां जयना डंका वागे छे! पछी तो आपणां नांखेला पाटा परज मन पोतानुं एंजीन चलावे छे, आपणी हकुमत प्रमाणेज ते दोडे ने थमे छे! अहा! आ कांइ ओछी सिद्धि छे? सुख, शांति, आनंद, कल्याण ने पवित्रताना उत्तम विचारोथी उन्नत थवाने माटे धारेला पासा मन पासे पडावी शकीए ए कइ कोइ रीते ओछुं नथी आम सद्भाग्ये 'मन' रूपी चक्रवर्तीनेय साधी शक्या ए आपणी जींदगीनी कइ जेवी तेवी जीत नथी कारण, ए एकज जीतना गर्भमांथी त्रीजी अनेक जीतो जन्मे छे ने जीवन सफळ बने छे

हवे मननो विकास करवाना रस्ताओ पकडी तेनी द्वारा जीवननो विकास ने सुख शांति साधवानुं विचारीए

दरेक मनुष्ये 'पोताना आत्मामा कशायनी खोट नथी' एम मानी बीजा नबळा विचारोथी भरेला मनने खाली करी साव कोरा मगजे मात्र एज विचारोनो प्रवाह सदाय वहेतो राखवो जोइए के, सर्व प्रकारनी शक्तिओ ने सिद्धिओ मनुष्यनी अंदरथी ज प्रगटवा पामे छे अंदरना झरामांथी ज शक्तिनुं संगीत संभळाय छे

निर्दोष ने मधुर स्मित हास्य ए तो आत्मानु शुद्ध 'झरणुं' छे

प्रत्येक स्त्री ने पुरुष एक महान शक्तिना अवताररूप छे तेनी अंदर देवत्वनी सघळी सामग्रीओ भरी पडी छे तेथी वहारना वादळी-यामां भोंकावाने बदले अदरनी विजळी—अखुट आत्मतेज मेळव वाथी सर्व प्रकारनी सिद्धिओने वरी शकाय छे " आवी विचारणानुं अखंड वहेण आपणां मनमा चालु राखवा यत्न करवो जोइए.

आपणे पोते सदाय एवुज चिंतन राखीए के " हु बळवान छु आरोग्यवान छु प्रतिभाशाळी छु. हु दीव्यतानो अधिकारी छुं एक जीवनसमुद्रनी लहेरीओ म्हारामां स्हेरी रही छे हुं उछळु छु. आनदमां गाजु छुं म्हारो विकास थाय छे हुं खीलुं छुं प्रतिपळ विकसुं छु. हुज सुख—शांतिनो महासागर छुं अहो ! हु म्हारा विचारोथी—भावनाओथी म्हारुं भविष्य रची रह्यो छुं हु पूर्ण छुं—पूर्ण 'सिद्ध' करवा मथु छुं हुं मननो मालिक छु.. विचारो पर म्हारु शासन छे हु अजेय छु .. अने हु सौनो प्रेमी छुं... आनंदी छुं बस खीलु छुं.. खीलुं छु "

पछी आ भावनानुं सतत् चिंतन थवुं घटे के " हुं सौनो प्रेमी छु, तेथी मने कोइ हानी पहोंचाडी शके तेम नथी हुं आनदस्वरूप छुं, एटले मने शोकनो स्पर्श मात्र थइ शके नहिं हुं प्रचड संकल्पशक्तिनो भडार छुं, तेथी दरेक शक्तिने साक्षात् स्वरूपे म्हारामां प्रत्यक्ष करी शकु छुं " एवी भावनाथी मन केळवाय छे तेवा संस्कारथी तेनामां सुंदरता आवे छे, अने बधा अर्थ साथे मजबुत विचारना वेगथी समजीने आ प्रमाणे भावना

हमणां हसतां 'वांचे' तेम वस्तु वधते 'आबाद' इसी थाके छे.

भावीए तो ए भावनामांथी उठता तरंगो के लहेरीओमां विजळीना चमकारा करतांय कैंगणी तेजस्वीता, सिघ्रता, वेग ने प्रबळता आगी पोताना प्रकाशवडे विरोधी तत्त्वने नमावे छे, ने पोताना मनासीय तत्त्वनु स्थापन करे छे

•　　　　　　　　•

भावना ए कांइ योगनोज मात्र विषय नथी, परन्तु जगत् व्यवहारमां डगले ने पगले काम लागी शके तेवु ए उत्तम तत्त्व छे ए भावनायवळे ज गइकाळनां मुफलीसो आजे चक्रवर्ती बन्याना हजारो दृष्टान्त आपणी सामे छे एमांना आपणे पण एक लीए—मनीशु तेनी खातरी राखीए.

हवे कामुमां आवेली मनोवृत्तिओने चोक्कस चीज—'ध्येय' पर—कोइ उच्च आदर्श तरफ स्थिर करीने एकाग्रताथी परम सुख अने शांतिनां स्वप्नां सेवतां आगळने आगळ धपावीए तो ज मननी साची सिद्धि मेळवी शकाय मन भटके छे, कारण तेने योग्य केळवणी के सस्कार मळ्या नथी तेमज तेनी सामे अमुक क्षेत्रमां ज वसवानो कोइ आदर्श नथी होतो, तेथी ते बीचारुं ज्यां त्यां भटके छे ! हवे तेने आपणे वधारे वखत भटकवा देवु न होय तो आसपासना झाडी—झाखराओमांथी तेने भटकतुं अटकावी तेने एक शुभ ध्यानमां—कोइ चोक्कस साध्य पर लगाडी देवु सौथी वधारे इष्ट छे जो के एक वस्तुमां चोंटी रहेवानो मनने आदेश आपवा छतां—आरभमां ते पोतानी जुनी टेवने वश थशे, जेथी

'तोफानोथी भडकइ ने हसमुखा Jolly बने तेम जींदगीनी मजा माणो छे.

ते ज समये बीजा अनेक विचारो मनमां जागशे मनने चळा-ववा तेओ खुब प्रयत्न करशे ज ! परतु स्वस्थ मनथी–निश्चय-बळथी ते बधांने मनमांथी 'चाली जवानो' मजबुत ओर्डर आपतां क्रमश तेओ पलायन थइ ज जशे, एटले मन ए चोक्स 'वस्तुमां' अमुक समये स्थिर थशे.

मानसशास्त्रनी दृष्टिए जोतां मनना विचारोने स्थिर करवा माटे चोक्स वस्तु पर तेने चोंटाडवु जोइए. मे ते सारु अमुक अनुकूळ चिन्हनी महान् आवश्यक्ता रहे छे कारण के ज्यां त्यां भटकता मनने कायुमां लेवा मारु तेनी सामे बीजुं कोइ क्षेत्र तैयार होवु जोइए. कोइ चोक्कस एक ज चीज पर मनने वळगाडतां मन एज विचारथी परिपूर्ण रीते ग्रस्त थाय छे जुनु ए भूले छे ने नवामां चोंटे छे ने परिणामे आस्ते आस्ते ए ज विचारमां केवळ तल्लीन थाय छे जेथी विचारो ए मननां राजा नहीं पण मननी आज्ञा प्रमाणे वशवर्ती थइने चालनारा सेवको बने छे मनना अणुए अणुमां ए व्यापी जाय छे एटलुज नहि पण सारांये माणसनां रोमरोममां तेनो प्रवाह चाले छे मन एक ज विचारमां आम ज्यारे तल्लीन थाय छे त्यारे तो घणीवार आपणने पोताने पोतानुं भान पण नथी रहेवा पामतुं कारण के एकज विचारमां आपणे लीन थइए छीए–एमां ज डुबीए छीए अने एमां ज डूबकी मारीने अंदरथी रत्नो मेळववा मथीए छीए. तेथी मनने चोक्कस स्थानपर लगाडवु जोइए. आथी हवे मनने क्या विचारक्षेत्रमां रोकीशुं ए प्रश्ननो जवाब शोधीए.

पोताना आनंदी तानमां ज मस्तान मे तेज मजब गीने जीने छे

मननी महत्ता महान् छे अवर्णनीय छे, एनी शक्तिओ अमर्यादित छे, स्वर्ग के नर्कना फेंसला एनी कचेरीमां ज लखाय छे, सुख के दुःख ए मननु ज परिणाम छे आवी महान् शक्तिशाळी चीजनो जेटलो बने तेटलो उच्च अने सुंदर उपयोग करवो घटे छे तेथीज तेने कोइ तुच्छ चीजो पाछळ रखडतु मूकवा करतां—दुनिया अने दुनिया पारनी उचामां उंची चीज—पवित्रमां पवित्र वस्तु अने परम शक्तिशाळी तत्त्वो साथेज मैत्री करावी लेवी इष्ट छे

मनुने धडधडाट हसी आपवानी ' मस्ती मेळवे तेज महान् छे.

जे मैत्री उषामां प्रभु मुख अने उषामां ऊंची शान्ति ने उत्कृष्ट कोटीनां फळो आपी शके तेज मैत्री धन्य छे

एवी मैत्री बांधवानुं
सुदर पात्र कहो के
परम शक्तिनुं केन्द्र कहो !
ते मु ना म
<u>ॐ अर्हम्</u>
छे

मनने आदेश मळे छे के तारा विचारोना खजानाने आ कोइ
दिव्य बीज–दिव्य ध्यानः
ॐ अर्हम्
नां ध्यानमां डुबाडी दे !

अने सकळ विश्वनी ऋद्धि–सिद्धिनो अनुभव कर !
पण हा, मन पूछे छे ॐ कार ए शुं छे ?

हां ! सुणोजी !

ॐ is the voice of silence
ॐ ए

अगाध शांतिना साम्राज्यमांथी चाली आवतो एक सुंदर मनोहर सूर छे

ए सूरने जे भजे छे ते शान्तिने पामे छे

सपळां दुःखो बने न जीवन Holiday जेवुं लागे त्यां ' जीवन ' छे

आनंद प्रीन्टींग प्रेस—भावनगर

ॐ कार ए परम मंत्र छे बधां न्हाना मोटां मंत्रोनो ए मेरु छे बधी शक्तिओनो ए सरदार छे ॐ एज ब्रह्मानुं बीजुं नाम छे, परमात्मानु ए साचु स्वरूप छेः 'ॐ' ए प्रणवमंत्र छे सर्व ज्ञाननु ए मूळ छे आखु जगत् अने जगतपारनी सर्व उत्तम चीजो ए एकज शब्दमां समायेली छे प्रत्येक शब्द, भाव, भावना ने उच्चवाना झरणानुं मुख छे अने परमशक्ति साथे एकत्व साधी आपनारुं ए दिव्यतत्त्व छे विश्वव्यापी ज्ञाननु कुदरती स्वरूप ते ॐ छे ॐ छे !

ॐ, ॐ, ॐ ! ! ! जगत् अने जगत्नी पार .. ज्यां नजर नाखो त्यां स्हमने ॐ कारनो मीठो ध्वनि संभळाशे कानने–अदरना कानने जरा खुल्ला राखो तो जगतमांथी–चोमेरथी स्हमारा काने ॐकार नुज मधुर संगीत सभळाशे

•

बाळकना रडवामां अउम्, अउम्, अउम् सभळाशे

मुगानी मौनवाणीमा अउम्, अउम् सभळाशे

मानवमा मरागुल मानवीना शब्दोच्चारमां स्वाभाविक ज 'ॐ'नो सूर सभळाशे सुप्रभातमा पगे चाली आवती भाराभरी कुमारिकाना झांझरना झमकारमा ॐ कारनो ध्वनि सभळाशे

भक्तना हृदयमा, योद्धाना बाहुमां, गवैयाना कंठमा अने योगीजनोनां मानसमांथी ॐ नो ज ध्वनि नीकळतो सभळाशे

आ त्रण मुख्य शब्दो (आ+उ+म्=ॐ)ना बनेला शब्दमांथी प्रथम 'आ' शब्दनु गान बालक पोताना जन्मनी साथेज शरु करे छे पछी जरा मोटो थतां तेने कैंक वस्तु देखाडता 'उ'नी सहायथी गाजे छे, अने पछी वळी जरा म्होटो थता बोलवानो प्रयत्न करतां 'म्' नो उपयोग करता 'मा' शब्दथी गाजशे

न्हानु बाळक पण ॐकारना सस्कारोथी भरेलु छे ने !

सगीतनु विज्ञान पण ॐ थी चकोचक भरेलु छे

अ आ .. थी शरु थतां उ उपर आवी म् अनुस्वारना स्वरमां पूर्णपणे सगीत खीली उठे छे आ, उ, अने म् वगर सगीतने जीवबु मुश्केल थइ पडे छे अने तेनाज विकासमां सगीतनु जीवन ताणु बने छे

आम दरेक वस्तु अने भावमां एक या बीजे रूपे ॐ नुं नाम व्यक्त के अव्यक्त भावे थयेलुं ज छे

× × × ×

तलमाथी जेम तेल नीकळे छे, गुलाब पुष्पोमांथी जेम सौरभ-गुलाबनुं अत्तर नीकळे छे तेम ज आ दृश्यमान बधी चीजो अने अदृश्य रहेला भावो, भावना, भाषा, चीजो अने क्रियानुं सत्व मात्र ॐ छे तेथी आसपासनां छोटां-मोळ छोडी सत्व-अत्तरमांज न्हावुं एज महा कल्याण छे-एज श्रेयकर्ता छे

उक्त चोसर ने 'ओघ्रमधारी' नां नाम साथे ह्मवामां गयेली पण भन्य छे

सर्व मन्त्रपदोमा ॐ ए आद्यपद छे यथा वर्णानो ए आद्य-पिता छे, एनु स्वरूप अनादि अने अनंत गुणोथी युक्त छे ज्ञान-तो ए सूर्य छे अनाहत नादनो ए प्रतिघोष छे परब्रह्मनु बोधक अने पंचपरमेष्ठि (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुजनो)नुं वाचक छे सर्व दर्शनो अने मंत्रोमां ते समान भावथी व्यापक छे संसारथी विरक्त–आत्मा ने परमात्मानो योग साधवा मथता योगीजनोनु ए आराध्य अधिष्ठान छे निष्काम उपासकोने ते आध्यात्मिक उद्यमा उच प्रसादी–मोक्ष आपे छे ने सकाम उपासकोने मनोवांछित फळ आपे छे, दुःखरूपी अग्निनी ज्वाळाने शान्त करे छे अने सर्वत्र सुखशान्तिना मेघ वरसावे छे

ॐ मां वस्तुतः पांच अक्षरो छेः—अ, अ, आ, उ, म्. आना संयोजनथी ॐ प्रणवाक्षरनु स्वरूप बने छे

अ=अरिहंत

अ=अशरीरी (सिद्ध)

आ=आचार्य

उ=उपाध्याय

म्=मुनि (साधु)

आनंद के निर्दोष विनोद ए कंटाळा दुःखोने भूलावनारी दवा छे.

नमस्कार मन्त्रनो आ ज सार छे

सिद्ध—एटले आत्मानी मुक्ति मानी लीधी छे, तेवा आत्मतेजथी ओळखाता जीवो, संसारना ए सर्वोच्च स्थान रूप परम शून्य (०)मां विलीन थयां छे अर्थात् सिद्धशिला पर तेजमां तेज रूपे भळी गयां छे

आनंद ए मानसिक व्याधिओने नाश करनारुं उत्तम रसायन छे

अरिहंत–राग ने द्वेषरूपी शत्रुओथी जे पर थयां छे एवा संसारथी अलिप्त जीवात्माओ आध्यात्मिक आकाशमां (ˇ) विराजी त्यांथी जगत् पर पोतानी प्रभा पाथरे छे अने ज्ञानामृतनां शीतल किरणोथी सर्वत्र शान्तिनु सिंचन करे छे

आचार्य–पोताना आदर्श आचार अने विचारोथी पृथ्वी परनी जनताने सन्मार्गे दोरवा सदा उद्यत रहे छे तेवा सदाचार-ना उपदेशक आचार्य, लोकनी वचे उचु स्थान पामे छे

उपाध्याय–सत्यना मार्गे दोरी जाय तेवा ज्ञाननु अक्षयदान निष्कामभावे जगतने जे अर्पण करे छे तेवा पुरुषो मध्यमा वसे छे

साधुपुरुष–पोताने अने ससारना जीवोने उचे लइ जवा माटे जेओ पोताना साधु–समतामावमा–स्वस्वभावमां रहीने प्रेरणा करे छे ने पामे छे तेनु स्थान ॐ मां सौथी नीचे छे

• ∴

पटले के उत्क्रान्तिना क्रम प्रमाणे मुक्तिना इच्छुके पहेलां (भाव) साधु याने साधक थनवु घटे, पछी ससारना कल्याण माटे उपदेशक बनवुं घटे, पछी पोताना आचारथीज जगत्ने उचे लइ जवु पडे,–अने पछी आचारशुद्धिनी पराकाष्ठा थवा

विस्मृतिनां सागरमां कलेपीने डुबाडनार हास्य करे ! ' अमृत ' छे

अर्हम् याने जगतपूज्यपद पर जवाय, ने पछी अंतमां परमात्म स्वरूप अथवा सिद्ध थवाय

आ सघो भावार्थ ॐमां गुप्तपणे छूपायलो छे जे जाणवाथी माणस मुक्तिना एकेक पगथीए चडता एक दिन मुक्तिमंदिरमा प्रवेशी शके छे के ज्या उचामा ऊंची प्रकारनां सुख अने शान्तिनुं साम्राज्य छे

ॐ कार सघा मंगळोमां प्रथम मंगळ छे

ब्रह्मा, विष्णु, महेश ए त्रणेना एक नामसूचक पद ॐ छे

जे हतु, छे अने थशे, उपरान्त जे कांइ पण 'नथी' एवुं नथी ते सघुज ॐ कार स्वरूप छे आ शब्दने प्रणव कहे छे एटले के प्रत्येकना जीवनमा ते व्यापी रह्यो छे दरेकना प्राणमां वही रह्यो छे, स्वासोश्वासमां एनुज रटन थइ रह्युं छे ते सर्व उत्तम विचार अने दिव्य जगत्नो प्रतिनिधि छे

तेथी ॐ is the essence of everything

ॐकारनो महिमा अपार छे जे जे तेने भजे छे, स्मरे छे, तल्लीनतापूर्वक ध्यावे छे,—मनन करे छे—चिंतवे छे अने जे जे जीवात्माओ ॐना स्मरणमां—ध्यानमां डूबे छे ते ते ॐकार मय बने छे प्रभुस्वरूप बने छे एवुं ध्यान धरतां परब्रह्म थवाय छे ! ब्रह्म स्वरूप बनाय छे

चैतन्ययुक्त शरीर ने इसतो चहेरो ज दुनियामां सौने गमे छे

मनुष्यात्मा ए जीवात्मा ने विश्वात्मा ने परमात्मा : एटले 'व्यक्तिभाव'मांथी समष्टिभावमां–विश्वभावमां प्रवेशावु तेनुं ज नाम आत्माने परमात्मा बनाववा ने बनवा प्रभु छे आ बनवु ॐ ना साधनथी थइ शके छे कारण के ॐ ए ज आत्माने परमात्म-दशामां परिणीत करनारु एक महा साधन छे

ॐ ए कोइ अमुक भाषानो के अमुक धर्मनो रीझवट शब्द नथी परन्तु दरेक भाषा अने दरेक धर्मना लोको ॐ नी समानप्रेमे पूजा करे छे कदाच ए बोलाता–उच्चाराता शब्दोमां किंचित् फेरफार नजरे देखाय, छता वस्तुतः आखरमा बधायना भावो अने भूमिका एकज–ॐकारमय होय छे हिन्दु, मुस्लीम, जैन, पारसी, खीस्ती के बीजी कोइ पण प्रजा एक नहिं तो बीजी रीते ॐ ने ज भजे छे–ॐ ने ज नमे छे

•

ॐकारनो प्रणवनाद आपणामा महाजीवन रेडनारुं रसायण छे तेना उच्चारनी साथे वातावरणमा अवनवा फेरफारो थाय छे बोलनारनी आसपास ॐ नु निर्मळ वातावरण जमु थाय छे अने जेम जेम ए वातावरणमां स्थिर रही ॐ ना श्वास लेवा जइए तेम तेम वधारे शुद्ध, पवित्र अने तेजस्वी थवाय छे जेम हिनाना अत्तरनुं एक पुमडु आपणी आसपास सुगधी फेलावी मगजने तर बनावे छे, तेमज आ ॐनु महान्–पवित्र सुगंधी अत्तर तेना सुचनारने–पवित्र अने महा शक्तिशाळी बनावे छे अने

मधुर स्मित कोमळ हास्य ने सुंदर शब्दो ज एक महान् नैतिक शक्ति छे.

आपणे पोते पण न जाणीए तेवी रीते पणीवार आपणा विचारोमां गभीर परिवर्तन लावे छे, ने उन्नतने मार्गे आपणने आबाद रीते मूकी दे छे एना स्मरणथी आत्मा निर्मळ बने छे

ॐना ध्यानमां जेओ रच्या–पच्या रहे छे, तेओ ज जीवननी मीठाश अने आत्मानी प्रचंड शक्तिओनो परिचय पामी शके छे प्रतिपळे दैवी असर तळे रही जेओ ॐना ध्यानमां मस्त रहे छे तेओ ज जींदगीनो साचो आनंद अनुभवे छे, ने तेओ ज पोतानी आसपासनी दुनियामां आनंदना फुवारा उडाडवा भाग्यशाळी थाय छे

ॐना मीठा उच्चारमां कोई अपूर्व चैतन्य भर्युं छे न कल्पी शकाय तेवी गुप्त शक्तिओनो ए भंडार छे सर्व प्रकारनी दैवी ऋद्धि–सिद्धिना द्वारो खोलनारी ए चावी छे अहो ! ए ॐकारमां सुखनुं शाश्वत साम्राज्य भर्युं छे एना सुंदर गानथी मन स्थिर बने छे सब विचारो अने लागणीओ समतोल बने छे आत्मामां मधुरी शान्ति रेडाय छे। कहो ? पछी बीजुं वधारे शु जोइए ?

घोर जंगलमा सिंहनी गर्जनाथी मृगलाओ जेम थथरीने नासी जाय छे तेमज आ जीवनअटवीमां ॐनी प्रचंड गर्जनाथी–अंतरना ऊंडाणमांथी श्रद्धा अने प्रेमना वेगीला आवेशथी उच्चारेल ॐकारनी हाकलथी–अंतरनां दुःखो, रोगो, दुष्ट विचारो,

---

हसवुं ! हसवुं ! पण ते चारित्रनी कीमती रूप ' निर्दोष ' होवुं घटे !

लक्ष तरफ जेटला जोरपूर्वक तीर छूटशे, तेटली ज त्वराथी तीर ते लक्षने पामशे

ॐकार ए परमात्मानुं—परमात्मानुं विशुद्ध स्वरूप छे, तेथी ॐकारने भजवो ए परमात्माने भजवा समुं छे अर्थात् परमात्म स्वरूप बनवा जेवुं छे, पण ते हृदयना पूर्ण प्रेम अने श्रद्धा भक्तिथी भजावुं जोईए—एकज भक्तिथी, के ॐ एज तारणहार मंत्र छे, ए ज परम शक्ति छे, ए ज महा तपश्चर्या छे, अने ॐ ए ज सर्वस्व छे आटली श्रद्धापूर्वक—गमे तेवा कारणो वगरनी नाखवा छोडे छतां मनमां अचळ रही हृदयना दृढ भावपूर्वक—ॐकारने हृदयना ताकपूर्वक वारंवार स्मरवाथी (Repeat) उच्चारवामा आवे, एना ज उच्चारमां खेलवामां आवे—अने एनी ज धुनमां मस्त बनीए तो जगते कदीय न मानेला एवा आश्चर्यकारक परिणामो पेदा थाय छे

जगत्मां चमत्कार जेवुं कांई ज नथी, पण चमत्कार जेवुं देखातं होय तो ते मात्र श्रद्धानुं—तपश्चर्यानुं—साधनानुं फळ मात्र छे

अतरमां असिम शान्तिनु–प्रेमनु–प्रभुतानुं–साम्राज्य स्थापशे जीवनमां कोइ अजब प्रकारनी चमक लावी आत्मामां अपूर्व आनंद उभरावशे ! आ ॐकारने ज्यां हो त्यां, गमे ते स्थितिमा ने गमे ते स्थानमा जप्या करो ! एनुं ज रटन करो ! ए ॐकार मन्त्रने जीवनना एक उत्तम भाथा तरीके–जेटलीवार हृदयपूर्वक उचारी शकाय तेटली वार उचारी समृद्ध बनो ! कारण के एज जींदगीनी साची मूडी छे तेमांज सुख ने शांतिनो खजानो भर्यो छे

आपणी आंतरचक्षुओ सामे ॐ नी मूर्तिने सदाय रमती राखो, एना शीतळ अने प्रतापी स्पर्शनो जीवनमा अनुभव करो, एना दर्शनथी अतरमा ओजस् भरो, आंखोमा ॐ ने आजी ल्यो, कानमा ॐ ने सांभळो ! हृदयना वतुए वतुमा ॐ ने घुटी थो ! अने रोमेरोममा–नसेनसमा ॐ नु मधुर सगीत भरी न्यो ! स्थिरतापूर्वक, बीजी बधी मानसिक निर्बळताने फगवी नाखी ॐ नो उचार करो ! ते वखते तनमनथी तेमाज डूबी जाव ! तमारा आत्मामा ओतप्रोत थइ जाव ! मनसा, वाचा ने कर्मणा तेनो उचार करो ! रगेरगमां ए मन्त्रनो ध्वनि जागृत करो ! हृदयमा ॐ ना धबकारा थवा धो ! अने तमारा लोहीनां टीपे-टीपामां आ मन्त्रनो मधुर रस रेडो ! अने पछी जुओ ! तमे पोते साक्षात् चैतन्यमूर्ति बनी जशो–एटले मानवताना पाटलेथी देवत्वना उचा सिंहासन पर चडवा लागशो !!

पैसाना दास' प्रत्येनी वफादारीमां ज धार्मिको निर्मळ प्रकाश छे.

लक्ष तरफ जेटला जोरपूर्वक तीर छूटशे, तेटली ज त्वराथी तीर
ते लक्षने पामशे

•

ॐकार ए परब्रह्मनुं–परमात्मानुं विशुद्ध स्वरूप छे, तेथी
ॐकारने भजवो ए परमात्माने भजवा समुं छे अर्थात् परमात्म-
स्वरूप बनवा जेवुं छे, पण ते हृदयना पूर्ण प्रेम अने छलोछल
श्रद्धाथी भजावुं जोइए–एकज श्रद्धाथी, के ॐ एज तारणहार
मंत्र छे, ए ज परम शक्ति छे, ए ज महा तपश्चर्या छे, अने ॐ
ए ज सर्वस्व छे आटली श्रद्धापूर्वक–गमे तेवा कारणो हटावी
नाखवा दोडे छतां मनमां अचळ रही हृदयना दृढ भावपूर्वक–
V ॐकारने हृदयना वालपूर्वक उपराउपरी स्मिरवाथी (Repeat)
उच्चारवामां आवे, एना ज उच्चारमां खेलवामां आवे–अने
एनी ज धुनमां मस्त बनीए तो जगते कदीय न मानेला एवा
आश्चर्यकारक परिणामो पेदा थाय छे

जगत्मां चमत्कार जेवुं कांइ ज नथी, पण चमत्कार जेवुं
देखातुं होय तो ते मात्र श्रद्धानुं–तपश्चर्यानुं–साधनानुं फळ मात्र छे

ॐकार ए अमृतजळ छे, एना छंटकावथी ज्यां ज्यां जखमो
चचरायली हशे, आघात हशे, अप्रेम हशे, दु:खदायानल सळगतो
हशे त्यां त्यां ते बधुं शान्त थइ जशे हृदय सरोवरमांथी कचरो
दूर करी शुद्ध बनावशे, विकार ने वासनानी मलिनता दूर करशे

जीवनना 'भूलभोपा' बनी शके तेनेज मानवनुं मोंघु रत्नपद छाजे छे

मतरमां असिम शान्तिनु–प्रेमनु–प्रभुतानुं–साम्राज्य स्थपाशे जीवनमां कोइ अजय प्रकारनी चमक लावी आत्मामां अपूर्व आनंद उभरावशे ! आ ॐकारने ज्यां हो त्यां, गमे ते स्थितिमां ने गमे ते स्थानमा जप्या करो ! एनु ज रटन करो ! ए ॐकार मन्त्रने जीवनना एक उत्तम भाथा तरीके–जेटलीवार हृदयपूर्वक उचारी शकाय तेटली वार उच्चारी समृद्ध थनो ! कारण के एज जींदगीनी साची मूडी छे तेमांज सुख ने शांतिनो खजानो भर्यो छे

आपणी आंतरचक्षुओ सामे ॐ नी मूर्तिने सदाय रमती राखो, एना शीतळ अने प्रतापी स्पर्शनो जीवनमां अनुभव करो, एना दर्शनथी अतरमा ओजस् भरो, आंखोमा ॐ ने आजी ल्यो, कानमा ॐ ने साभळो ! हृदयना तलुए तलुमां ॐ ने घुटी थो ! अने रोमेरोममा–नसेनसमां ॐ नुं मधुर संगीत भरी ल्यो ! स्थिरतापूर्वक, बीजी बधी मानसिक निर्बळताने फगवी नाखी ॐ नो उच्चार करो ! ते थवाथी तनमनथी तेमाज डूबी जाव ! तमारा आत्मामां ओतप्रोत थइ जाव ! मनसा, वाचा ने कर्मणा तेनो उच्चार करो ! रगेरगमा ए मन्त्रनो ध्वनि जागृत करो ! हृदयमां ॐ ना धबकारा थवा थो ! अने तमारा लोहीनां टीपे-टीपामां आ मन्त्रनो मधुर रस रेडो ! अने पछी जुओ ! तमे पोते साक्षात् चैतन्यमूर्ति बनी जशो–एटले मानवताना पाटलेथी देवत्वना उचा सिंहासन पर चढवा लागशो !!

पोताना हृदय' प्रत्येनी वफादारीमां ज चारित्रनो निर्मळ प्रकाश छे

ॐ ना ध्यानमां डूबी जवायी, द्रष्टा ने दृश्य आसरे एक थवायी—अंतरमा अजवाळुं थशे जेमांथी बधी वस्तुओनु प्रतिबिम्ब सुरत जोइ शकाय छे अने आपणा अंतरना नव नवा चित्रो जगत पर पाडी शकाय छे

ॐ कारनुं स्मरण करीये एटले पळे पळे आपणा हृदयमांथी ॐकारमय शक्तिशाळी सुंदर विचारोनी लहरीओ पेदा थाय छे एकमांथी बीजु—बीजामांथी त्रीजुं—एम लहरीओनु वर्तुळ—(पाणीथी भरेला तळावमां कांकरो नाखता जेम वतुल थाय ने वधतां वधता छेक किनारा सुधी पहोंचे तेम (Circle) थयुं जाय आपणी आसपास ए लहरीओनु राज्य स्थपाय—अने पछी हवे क्यां अजाण्यु छे के विचारोमां प्रबळमा प्रबळ शक्ति छे ! एना जोरायी त्रिभुवन गजावी शकाय छे, एकाग्रतायी संचय करेला विचारोना धमाराथी चौद राज्यलोक धुजावी शकाय छे एनो वेग महान् छे ..तिग्रातितिग्र छे विजळी अने प्रकाशनी गति करतय कइ गणो तेनो वेग छे

प्रकाश के विद्युतनो प्रवाह एक सेकन्डमां इथर (आकाशीतत्त्व) द्वारा एक लाख छ्याशी हजार माइल पहोंची शके छे, ज्यारे विचारशक्तिनो प्रवाह एक सेकन्डमां चार हजारथी लइने ८ पद्म माइल (के जे केटलाय अबज माइल थाय त्यां) सुधी जइ शके छे

आकरणमनी धरब वगर 'सत्य' न उच्चरी शक तेनामां गरीब छे.

साचा विकासमार्गना पयीश्रो सवाय ॐकार रूपी उपतत्वमा ओतप्रोत थइने पोताना शुभ विचारोनी लहरीओ एक स्थानेथी बीजे स्थाने इथर (सूक्ष्म तत्त्व) द्वारा मोकली सर्व प्रदेशने ॐकार मय बनावी पोतानु अने विश्वनु कल्याण करे छे, परन्तु दरेक विचार करवा लक्ष्यमा लेवा जेवु छे के प्रत्येक विचारनी पाछळ प्रबळ कल्पनाशक्ति, एकाग्रता अने मजबूत इच्छाशक्ति (Will Power) नी खास जरुर छे कारण के विचारनी गतिनो प्रवाह तेना ज पर निर्भर छे एना विना विचारोमा कंपन-धारी भावी शक्ती नथी एना विना विचारो बीचारा लगडा बनी निष्फळ निवडे छे, अर्थात् ज्या त्या रेलाइ जाय छे तेथी ॐकारना स्मरण पाछळ सबळ कल्पना, द्रढ एकाग्रता अने मजबुत इच्छाशक्तिने सवाय कामे लगाडवी परम आवश्यक छे

मगजमा जेटली शक्ति, ने हृदयमां जेटलु बळ—आकर्षण हशे अने जेटला वेग के सचोटताथी ॐकारना विचारआंदोलन उभा कर्या हशे, ते प्रमाणे ज विचारोना किरणो दूर दूर पहोंची तेटलीज झडपथी पोतानुं कार्य पुरु करशे। विचारोनुं क्षेत्र जेटलुं विशाळ हशे तेटलुज तेनु कार्य विस्तृत रुप पकडशे, ने तेटलुज ते चिरस्थायी निवडशे माटे विचारो पाछळ मजबुत इच्छाबळ राखवु खास जरुरी छे

पवित्रनां धर्मी प्रदशनोने स्थाने निर्मळतावी जोवी ए श्रय स्यों चारित्र छ.

ॐकारना सतत विचारथी—भने ॐ ना ध्यानथी मानवजात पोताना गर्भमा प्रवेशे छे, ने ते गर्भमां सुवेली शक्ति के शक्ति प्रकाशने जागृत—सचेत करे छे, अर्थात् पोताना स्वरूपमां—प्रकाशमां खेली साधक स्वयं ज्योतिस्वरूप बनी रहे छे

ॐकारनुं नित्य स्मरण करवु, ए आपणी आसपास एक प्रकारनो मजबुत कोट (Fort) रचवा समान छे कारण के एना जापथी आपणे आत्मा अंदर ने बहारथी मपलाइ जइए छीए. आपणा हृदयमां कोइ महान् शक्तिनो संचार थाय छे आपणा अंतरमां उज्ज्वळताना, पवित्रताना ने निमळताना भोघ उछळे छे प्रेमथी आपणुं हृदय—सरोवर छलकाइ गयु होय छे आपणा चहेरा उपर एक प्रकारनी आदर्श आभा (ora) रुपी दिव्य प्रकाश पथराय छे आपणी चक्षुमां अलौकिक तेज आवे छे आपणा हलनमां—चलनमां ने उचारमा पूरतो संयम अने वात्सल्यता स्वाभाविक उतरे छे आपणा रोमे रोमे—श्वासे श्वासे वेनुं अ संगीत संभळाय छे, तेथी आपणी आसपास आकर्षणशक्तिनु साम्राज्य प्रवर्ते छे कहो ! तमने पछी कोण हेरान करी शके ? तमारो पछी कोण दुश्मन होय ? प्रेमनी सामे दुश्मनावट के अशान्ति टकी शकती नथी, तो तमे तो ॐकारना जापथी पूर्ण प्रेमस्वरूप बनी जवाना, तथा आखी दुनिया अने दुनियापारनी वस्तुओ तमाराज प्रेमनी आज्ञा नीचे आवशे पृथ्वीनुं एक परमाणुंय तमारी आज्ञा विरुद्ध वर्ती

माटी तमने Masoon मांथी ‑‑ तरी ‑‑ ‑‑ ‑‑ छे.

शकशे नहिं आ बधो प्रताप ॐकारना शुद्ध हृदयथी करेल रचारणनो छे ! ॐना जापथी मन एवी सूक्ष्म भूमिकामा पहोंची जाय छे के ज्यां सर्वदा शान्ति अने प्रसन्नता ज व्यापी रह्या होय छे भीक, चिन्ता, व्यग्रता, निर्बळता अने एवा बीजा कुसंस्कारो ते मगजमांथी चाल्या जतां तेने स्थाने प्रेम, प्रभुता, सबळता, निडरता ने मधुरता स्थपाय छे विश्वनो प्रकाश पोतामां विलसी रह्यो होय तेवुं भान थाय छे जे जे मनोवृत्तिओ बहिर्मुख हशे ते पण अन्तर्मुख बनी जता आस्ते आस्ते आत्मानो झीणो अवाज समजाशे धीमे धीमे आध्यात्मिक मननी पांखडीओ खुलवा लागशे अने तेथी तेमां रहेला अनेक किंमती सत्यो तमारा ज्ञानप्रदेशमां आपोआप चाल्या आवशे तमने वचनसिद्धि अने भावनासिद्धिनी सुंदर भेट मळशे !! अहो ! केवुं सुंदर !

ॐनो आराधक प्रतिदिन विकासमार्गमां कुच कर्ये ज जाय छे तेथी तेनामां उंचा विचारो, उंचा आचारो, पवित्र भावनाओ ने उन्नत अभिलाषाओ स्वत जागे छे मननी समता, प्रसन्नता, संतोषवृत्ति अने एक प्रकारनी न कळी शकाय तेवी दिव्य मानसिक विभातिनी स्थिति प्राप्त थाय छेः ते हमेशां शोभाहिन ने शान्त अवस्थामां रहे छे, ने ते पोते शक्ति अने प्रतिभानी मूर्तिरूप सौने देखाय छे

प्रमाणिकता वगर जिंदगी जेने अक्षरो लागे त्यां चारित्र छे.

ॐनी पाछळ जगाडेली एकाग्रताने छीधे मनने ज्यारे एक प्रकारनी मधुर समाधी चडी जाय छे त्यारे तेनामां अद्भूत प्रकाश पडे छेः सत्यनां, ज्ञाननां ने चैतन्यना गुह्य तत्त्वो आपो-आप समजावा लागे छे अने पछी तेनी जींदगीना सब अने शुभ उद्देशो स्वतः सफळ थाय छे

ॐनु निरंतर ध्यान आपणाने रहे छे अने ज्यारे आपणी रगरगमां, रुंवाडे रुवाडामां बस ! ॐनो ज विचार होय छे त्यारे आपणा प्रत्येक छिद्रमांथी ॐ—ॐ अने ओम् नो ज प्रकाश नीकळतो जणाय छे आपणा हलनचलनमांथी पण ॐ नो मधुर ध्वनि संभळाय छे

ॐ ना सतत् स्मरणथी माणस धीमे धीमे समुद्र जेवो गभीर, आनंदी, प्रशान्त ने निर्विकल्प बनी जशे एज पोताना आनंदनो सृष्टा बनशे ए पोतेज पोतानो देव अने पोतेज पोतानो शिष्य बनशे एना हृदयना द्वारो खुली जतां तेनामां विश्वदृष्टि (Clari-voyance) नु तेज उतरशे, एटले आखी दुनिया तेने मन हस्तकमलवत् बनी जशे !

∴

अगर जो ॐ ना ध्यानमां जीवात्मा डूबी जाय तो तेने आखरे विश्वदर्शन अने आत्मदर्शन थाय छ अने आखा जगतनां विचार प्रवाह पर तेनाज विचारोनु साम्राज्य स्थपाय छे नीचेनी भूमि-

---

मृदु वचनोमां मीठाशमां, नम्रता, प्रेम ने उदारतामां चारित्र्य छे.

कानो हलका आंदोलनो तेने स्पर्शवानी के स्वप्नमांय तेनी पासे आववानी हिंमत करी शकतां नथी ॐ नो आराधक आत्माना स्पष्ट नादने सांभळे छे अने पछी तो रागद्वेषादि द्वन्द्वोथी पर थतां तेनामा संपूर्ण अद्वैतभावनी रोशनी प्रगटे छे तमाम धर्मोनी एकता—उंच नीचना भेद वगरनी—तेने समजाय छे भयंकर कोलाहलनी वच्चे पण ए साधकनी माफक अचळ उभो रहे छे तेनो प्रत्येक शब्द ते जड अने चेतन बन्ने माटे 'आज्ञा'रूप नियडे छे ते जगतनां गुप्त भेदनु रहस्य उकेली शके छे जंगलनि साचा ल्हावाओ ए म्हाणी शके छे, अने अंदरना यथाय 'वेताल' घोंघाटोना अस्तित्वनी पण तेने खबर नहि होय ! ते आखी दुनियामांथी मधुर संगीतनां गळबद्ध सूरो सांभळशे जीवनना तमाम पळोने विंधीने वहेतो ओर एक छूपो अवरनो झरो शोधीने तेना अखूट जळमा ते स्नान करशे, आगळ ने आगळ ए झरामा अजय खेल करतां ते वधां ज करशे अने आखरे ते पोतानी आसपासना तमाम जीवोने विराटना अंशो मानी पोताने पण तेवोज एक महान् अंश समजी पोतानुं तेज प्रसारता प्रसारतां सौनां तेजमां पोते मळी जशे

आखरे ॐ ना जळमा पडेला अने सतत् ॐ ना स्मरणमा-ज रमता मानवीनी जींदगीने खूद साचा आवशे, तेने मुगाओ गोमशे, वहेराओ सांभळशे, आधळाओ जोशे, पशुपक्षीओ—वृक्षो ने सरिताओ तेनां गान गाशे प्रचंड तोफान पछीनु गाढ शान्ति सम्म तेनुं मृदु जीवन पण साराय विश्वने माटे एक आशीर्वाद-

---

बोले नहि छतां हृदयमां वारो मनमकारपी नाबे त्यां वारिन छे.

रूप निवडशे; कारण के तेमना प्रत्येक श्वासमांथी पुण्यभावनानां जे जे आंदोलनो रचाय छे, अने विश्वकल्याणनी जे जे किमती विचार लहरीओथी पेदा थाय छे ते आखा जगतनुं भावी-उज्ज्वळ भावी घडवाने माटे संपूर्ण शक्ति धरावे छे.

आवी उज्ज्वळ ने प्रतापी शक्तिना भंडाररूप ॐकारने भजवुं-ॐकारमय बनवुं ए मानवजीवननी परमोत्कृष्ट सिद्धि छे एज साची शान्ति ने सुखनु धाम छे

सौ कोई भजो ने सिद्धि वरो ए अभिलाषा !

ॐ अर्हं मंत्रपदमां प्रथम ॐ नुं महत्व जाण्या पछी हवे बीजा 'अर्हं' शब्दनु महत्व समजवु जोइए.

(३)

ॐ अर्हं
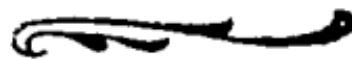
ए मूळ मंत्र छे

आ परम मन्त्रना प्रथम पद ॐनो महिमा सारी पेठे जाण्या पछी हवे अर्हं पदनुं स्वरूप, स्थान अने शक्ति विचारीए.

ॐमां जे महान् शक्ति ने सामर्थ्य छे, ते ज शक्ति ने सामर्थ्यनो खजानो अर्हं मन्त्राक्षरमां भर्यो छे सोनु ने सुगंधिनो मेळाप, तेमज ॐ अने अर्हं मन्त्रोनो विरल संयोग एक 'नूतन' शक्ति ने नूतन तत्त्वरूपे प्रगटे छे दुध ने साकरना योगथी जेम बन्नेनां स्वादमां ओर मीठाश आवे छे तेम ॐ अने अर्हंनो संबंध समजवो जोइए.

तर्कवितर्कोथी पर, ने शब्दोनां नखरांथी जो कोश दूर ते चारित्र वे

बमेनी शक्तिओ महान् छे, अवर्णनीय छे, अवाच्य छे

अकारेणोच्यते विष्णू रेफे ब्रह्मा व्यवस्थितः ।
हकारेण हरः प्रोक्तस्तदन्ते परमं पद ॥

अ अक्षर विष्णुनो वाचक छे रेफ याने र् अक्षरमां ब्रह्मानी स्थिति छे, अने ह् अक्षरमां 'हर' अर्थात् शंकर–महादेव छे अने अंतमा जे आवी ˘ चन्द्रकळा छे ते परमपद अर्थात् मुक्ति याने सिद्धशिलानी सूचक छे

अकारादि हकारान्त रेफमध्य सबिन्दुकम् ।
तदेव परम तत्त्व यो जानाति स तत्त्ववित् ॥
महातत्त्वमिद योगी यदैव ध्यायति स्थिरः ।
तदैवास्य सपद्भूर्मुक्तिश्री रुप तिष्ठते ॥

अ जेना प्रारंभमां छे ने ह जेना अंतमा छे, तथा ० बिंदु-सहित 'रेफ' जेनी मध्यमां छे एवा अर्ह नामक मंत्रपद ज परम तत्त्व छे : तेने जे मजे छे ने जाणे छे, ते ज साचो तत्त्वज्ञ छे योगीलोक ज्यारे आ महान् तत्त्वनुं स्थिरचित्ते ध्यान करे छे त्यारे आनंदस्वरूप मोक्षलक्ष्मीने पामे छे

जैन मौन 'नां भेद बमरनो सुंदर प्रदेश तेज रमणिय चारित्र छे.

" अर्हं " (१-१-२)

" अर्हमित्येतदक्षरं परमेश्वरस्य परमेष्ठिनो वाचकं, सिद्धचक्रस्यादिबीजं, सकलागमोपनिषद्भूतमशेषविघ्नविघातनिघ्नमखिलदृष्टादृष्टफलसंकल्पकल्पद्रुमोपमं, शास्त्राध्ययनाध्यापनावधिमणिधेयम् " ॥

अर्हं ए अक्षर परमात्मानु स्वरूप परमेष्ठीनो वाचक छे सिद्धपुरुषोना समूहरूप-सिद्धचक्रनो आदि बीज छे, सकल आगमो अने सकल शास्त्रनु रहस्य छे लौकिक अने पारलौकिक सुख आपनारु तत्त्व छे बधा विघ्नोनो नाश करी कल्पवृक्षनी माफक मनोवाञ्छाने पूर्ण करनार महा पवित्र मन्त्र छे

अर्हं एटले लायक, विश्वमां लायकमां लायक अने पूजवाने योग्य, उत्कृष्टमां उत्कृष्ट तत्त्व जे छे ते अर्हं छे

सिद्धचक्रनो ए बीजमन्त्र छे बीज एटले बीजः साधी विधिपूर्वक जो ए मन्त्रना बीयां आपणी आत्मभूमिकामां रोपाय तो पुण्यरुपी अकुराओ फुटता आखरे कर्मनो क्षय थतां सिद्धिपदने वरी शकाय छे आलोक अने परलोकनु कल्याण थाय छे

अर्हं ने भजवो एटले, जेणे राग ने द्वेष, मोह ने माया,

' व्यष्टि भावमांथी उठी समष्टि ' मां प्रवेशवु ते महा चारित्र छे.

लोभ न तृष्णा, आदि गणाता जीवमात्रनां दुश्मन समा दुर्गुणोने हरया छे, अने जेमणे पोताना आत्मानु प्रमुत्व तेमना पर स्थापी महत्ता मेळवी छे एवा एक उच्च परमात्माने हु भजु छुं, एवी एक उच्च महाशक्तिनो हुं आराधक छुं

आवा एक परम मंत्र —

ॐ अर्हंनु भव्य ने विवेकथी ध्यान करवामां आवे अने तेना चिंतन ने मननमा मस्त बनी जवाय तो साधकना चरणो आगळ अनेक प्रकारनी सिद्धिओ आवी झूकी पडशे ए निश्चित वात छे

अहा ! आनंद छे

ॐ अर्हंमां परम सुख छे

शाश्वत सुखनो ए खजानो छे

भांग पीधेला मनुष्यने, जेम छाश पीवां निस्सो उतरे छे तेम संसारनी कलुषित भावनाथी खरडायेला आत्माने शुद्ध करवा

अने साचु सुख मेळववा ॐ अर्हं मंत्रना जापनी जरुर छे

ॐ अर्हं, ॐ अर्हं ने ॐ अर्हंना नादथी आत्माने पखाळो अने रोमेरोमे ॐ अर्हंनु संगीत रेलावी मूको बस ! ए ज जीवनसिद्धि छे.

पवित्र दृष्टि, शुद्ध मनोवृत्ति ने आदर्शभावि ज्यां छे त्यां चारित्र छे.

ॐ थी आत्मानु वातावरण शुद्ध थाय छे पवित्रताना चोमेर
काव थाय छे, ने दिव्यताना बगीचाओ साधकनी जीवन-
ष्टिमां आपोआप खीली उठे छे

ओ प्रिय सौ जीवात्माओ ! आत्माने शुद्ध करवा मथजो !

ॐ ॐ ॐ

ओम् ओम्

ओम्

प्रति रोममा बस ! ओम् हो !

सारा विश्वनुं कल्याण थाव, ॐ शांति ! एज आपणी
निरंतर भावना हो !

जीवनसंग्रामनी कठण शीखमो पर पहुंचाने भवाय ते चारित्र छे.

(४)

ध्यान माटे

चित्तने शांत केम करशो ?

प्रिय साधक !

ॐ अर्हं ए आपणा ध्याननो परम मंत्र छे परन्तु ए मंत्रने जीवनमां वणी देवा माटे प्रथम आपणा चित्तनी शांति जरुरी छे कोइपण प्रकारना ध्यानना आनंदमा डुबवा माटे सौथी अगत्यनी वस्तु ए छे के—साधके पोताना चित्तने अत्यंत शांत—प्रशांत बनाववु जोइए कारण के चित्तनी शांति एज एक प्रकारनी मस्त समाधि छे ए समाधि ज्यां सुधी न प्राप्त थाय त्यां सुधी आपणी अंदरना Great Hidden Forces महान् गुप्तबळोने खीलवानो अवकाश ओछो मळे छे तेथी पहेला प्रथम आपणा

सौंदर्यनुं पान्सुं बेना विना वासी ते चारित्र प्रथम सजवुं घटे !

निर्गुण उपासना चक्र
ईश्वर
ॐ
विराट
हिरण्यगर्भ
तैजस

मगजमा उठती लागणीओ, व्यर्थ उछाळाओ अने आशाअवळा तरंगोने काबुमां लेवा माटे आपणे तेमना पर सख्त चोकी राखवी खास जरुरी छे

A calm mind is the absolute necessity

डोळायला पाणीमा जेम प्रतिबिंब पडी शकतु नथी, तेमज आडीअवळी व्यर्थ उपाधिओथी डहोळाइ रहेला चित्तमा कोइ सुंदर वस्तु टकी शकती नथी जेथी मननी एवा प्रकारनी शांत स्थिति बनाववी जोइए के जेमा आत्मानु प्रतिबिंब पडे: जेवी रीते तरंग रहित सरोवरमां ज सूर्यनु स्पष्ट प्रतिबिंब पडे छे, तेवीज रीते शांत, निर्विकारी ने तरग रहित मनमां ज आत्मानुं—अर्थात् आदर्शनुं प्रतिबिंब पडे छे

A calm mind is a successful mind, if calmness is one of the strength, not Exhaustion. अने ए चित्तनी शांति ए कोइपण प्रकारना थाक रूप नहीं परतु प्रबळ "शक्ति" रूपे ज प्रगटाववी कामनी छे

मनमा उठती आडीअवळी लागणीओने चित्तनी बहार काढी मुकवी, ए एक प्रकारनी शक्तिनु सुंदर स्फुरण छे तेथी (Separate the emotions from the mind.) मन अने उछाळाओने कांइ संबंध ज न होय तेवु मानसिक पृथक्करण करवाथी लागणीओ पर आपणो काबु क्रमशः आवी शकशे अने

प्रेम त्यां प्रभुतानो निवास जींदगीनो त्यां वसी छे मीठाश!

आयो काबु मेळववा माटे प्रारम्भमां केटलीक Tact चतुराइओनो उपयोग करवाथी 'मथन 'मां ते बहुज मददगार निवडशे.

आवी चतुराइओ दरेक मनुष्ये शिखी लेवी घटे छेः—

सदाय सादा, चोख्खा अने स्पष्ट रहो !

आनंदी अने हसमुखा रहो ! एवी ज रीतमात राखो !

बनी शके तेटलां नम्र बनवा कोशीष करो, कारण के नम्रता ज घणाने नमावे छे

क्षुद्र के तुच्छ 'घमंड'नो सर्वो सरखोय तमारा उच आत्माने ना थवा देशो गुस्सो, चिंता, भय अने थाकनी लागणीओनो नाश करो! क्वापि वार्णी के वर्तनथी मगज परनो काबु—मीजाज खोशो ना, सहृदय अने उपकार करवानी वृत्तिवाळा बनो, अने पोताना हृदयने अथवा आदर्शने संपूर्ण वफादार रही जे वस्तु तरफ तमे प्रेम धरावो त्यां खुब श्रद्धा—अंतरनी मुलोमख श्रद्धाथी झुकी पडो ! चित्तने प्रशांत करवानी आ चावीओ छे

आ बधी 'चातुरीओ' धीरज अने ठंडाशथी सहेजे प्राप्त थशे

आ 'चातुरीओ' देखाय छे साथी पण जे तेने मेळवे छे ते स्वाभाविक रीते ज मन उपर पोताना आत्मानु आधिपत्य जमावे छे आवुं आधिपत्य बराबर जामी गया पछी मगदूर नथी कोइ विचारनी के जे विचारने तमे अंतःकरणथी नापसंद

'समता' ने संयमना प्याला पीनार जीवनसौंदर्यथी छलछल्य थाय.

करता हो, दूर करवा चाहता हो, ते ज विचार तमारा मनो-राज्यमा भाववानी के पासेथीय पसार थई जवानी हीमत करे !

' सहनशीलता ' ए चतुराइओनु मूळ छे तेथी जेणे पोतानी आदर्शसिद्धि माटे 'सहनशीलता'ने परम गुण मानी पूज्यो छे, तेने ज सिद्धि अने शांति मळी शके छे, तेथी सहन-शीलताने एक टेवनी माफक केळववी जोइए. आ टेवथी मननी शांति स्वय वधती जाय छे

बाळक जेवा निर्दोष ने कोमळ हृदय ज्यां होय छे, या थववामां आवे छे, त्यां ज शांत मननो स्वाभाविक वास होय छे अने शांत मन एटले ध्याननी फळद्रूप भूमिका !

∴ ∴

We must think always that we are graceful, enocent and every movement of ours has a harmonic poise.

जेम जेम निर्दोपता रुपी भावनाओ भाववां अइशुं, तेम तेम आपणां कार्योमा ने वर्तनमां निर्दोपता स्हेजे आववां आपणे सुद निर्दोप बनी जइशु—गौरववता अने आनंदी बनी जइशुं

प्रतिपळे मात्र 'शुभ'नुं ज चिंतन करो, शुभ, शुभ अने सुंदर वस्तुनो ज तमे द्रष्टा हो .. ए वाचने हृदयना वंतुए वंतुमां वणी यो ..! कदापि कोइ अशुभ भावना के अशुभ विचारने तमारा

' स्वगौरव मी ज्योतिमां जीवे छे तेज ' महत्ता शाळी हृदयवाळो छे.

मनमां ने दृष्टिमां य प्रवेशवा ना घो ! जेथी परिणामे तमारी सामे अशुभना एकरवाओ पण शुभरूप बनी जशे, ने शुभ, शुभनुं ज तमने मगळकारी-प्रियदर्शन थशे

पवित्रता तननी, मननी ने भावनानी पवित्रता ए ध्याननी भूमिका छे तेथी शरीर चोख्खां राखो, मनने पवित्र राखो ने भावनाने य तत्र-पवित्र राखो, तो सिद्धि जरुर तमारी छे.

" विवेक बुद्धि, " तुच्छ विलासो प्रति वैराग्य, विचारोनुं नियमन, रीतमातमा सयम, धीरज, सहनशीळता, सतोष, प्रेमभाव, श्रद्धा, समतोळवृत्ति अने आत्मानी स्वतन्त्रता अनुभववानी प्रबळ लालसा, आ बधा सुदर गुणो जेम जेम आपणामां वधारे वधारे खीलवता जइए तेम तेम साधनानुं लक्ष नजीक नजीक चाल्युं आवे छे, अर्थात् साधक वेगभर्या कदमे वरे छे

प्रवृत्ति वच्चे पण निवृत्ति-अखड निवृत्ति साधी शके तेवा चित्तनी ध्यानमा बहु जरुर छे कारणके तेवा एकांत मनो हर फुरसदीया मनमां ज ' ध्यान ' नां बीयां रोपाइ शके छे एकांतमां ज आंतरमन-के ज्यांथी बधी जातनी शक्तिना झरणा वहे छे ते सर्जनात्मक शक्तिओनो स्पर्श थवा पामे छे ! तेथी मननी दशा (Attitude) एवी बनावो-बनाववा खुब प्रयत्न करो, के जे स्थिति ए चाहतुं होय-हतु तेने माटे पोतानी क्रियात्मक उत्सुकता दर्शावी शके., ने तेमा ज वही शके ! आ माटे मनने कोलाहलमय बनावी मुके तेवा कारणोथी सदाय दूर रहवु घटे

चारित्रनी अजब मोहकता पाथरी दे तेज शुरो सैनिक छे.

आंतरमन रुपी सफेद पडदा पर जो आपणा प्रिय आदर्शोनी मजबुत ने पाकी छाप मारवामां आवे तो ते कदापि भूसाइ शकती नथी कारणके केमेरानी फील्म माफक ए बहुज (Sensitive) चपळयी पकडी शके तेवी होय छे तेथी मात्र बाह्यमनरुपी बचमां रहेला चोकीदारोने साधी लेवा खास जरुरी छे

बाह्यमनने वींधीने आंतरमन पर वस्तुनु सीधु 'फोक्स' नाखवा जो आपणामां (Natural power) कुदरती शक्ति न होय तो (Cultivated power) नवी शक्ति उत्पन्न करीने ते कार्यमां मुकवी जोइए. जे 'पावर'—शक्ति पछी पोतानां आंतरमन सुधी (Suggestion) सूचनाने पहोंचाडवामां खुब जोरथी आगळ वधवा फतेह पामी शके छे, ने धारेली 'वस्तु' होय त्यां मुकी ये छे

धीरज अने सत पहाडोने पण तोडी शके छे तेथी आपणां ध्यानमां आ बे वस्तुने कदापि लक्ष्य बहार न रहेवा देवी घटे

आपणामां (Will & Confidence) मजबुत इच्छा अने अचळ श्रद्धा होवी ए आपणां कार्यनी शरुआतनी अरधी फतेह छे तेथी भलेने हिमालय डगी जाय परतु श्रद्धाने चळवा न देवी जोइए! ने ते द्वाराज (Will) इच्छाशक्तिनी विचळीन पोतानुं कार्य स्वतंत्रपणे अंदर करवानी छूट मळी शके छे

'युद्ध ने 'शांति बन्नेने साथे राखे, तेज साची रक्षक शक्ति छे.

'ध्यान' मा ए भावनो ख्याल सदाय राखजो के एक वस्तुमां स्थिर थया पछी—एक पगलुं निश्चित थयों पछी ज बीजु पगलुं आगळ भरो । कदापि उतावळ के घांघलमां 'वस्तु' ने गुगळावनारी मनोदशा ना सेवशो । पोतानी आत्मिक अने मानसिक महान् शक्तिओमां संपूर्ण विश्वास (Confidence) राखो, अने आटलुं थता त्हमारामां—त्हमे पोते पण न जाणो तेवी नवी नवी शक्तिओ अवश्यी जागशे अवनवित शक्तिओनो संचार थशे त्हमने प्रगति करवा अत्यंत स्फुरणा थशे प्रफुल्लतानो म्होटो अंदरथी वहीने तमारा नर्वा आत्मप्रदेशने प्रफुल्लताथी भींजवी देशे । अने एक दिन एवो आवशे के ज्यारे तमे " शक्ति अने पोताने " भिन्न मानवा छता तेने स्थाने पोतेज शक्तिरूपे या शक्तिज पोतारूपे प्रगटेली त्हमारामां अनुभवशो ।

* * *

सजोगवशात् केंक नबळाइओथी सफळ थवामां वार लागे तो हतारा थवामां सार नथीः (Keep on trying,) उपरा उपरी यत्न चालु राखो, उत्साहथी आगळ धपो तो जरूर ए नबळाइओनां पडवा भिगाइ जशे त्हमारी सफळतानु त्हमने संगळ दर्शन थशेज । थशे ।

नबळाइओ चाली जशे, अने त्हमारी (Will) इच्छाशक्ति ठेकाणे आवशे एटले हरहमेश ए Will—इच्छाशक्तिने सतेज बनाववा त्हमारे अनुकूळ भावनाओ भाववी जोइए : तेवी रीते के :—

हृदयनी 'निबळता' पर जय मेळववो एज वीर्यरक्षणनुं प्रथम कार्य छे

(1) My Will is strong, Nobody can resist a strong Will. I have a strong will

(2) I am power I admit no limitation, Things must go as I will.

(3) I claim all from infinite substance I demand and all things come to me at my will for I have an indomitable will

अर्थात्

(१) म्हारी इच्छा–(जे द्वारा हुं पोते काइपण कार्य करवा मागु छु ते) मजबुत छे कोइ तेने रोकी शके नहीं, म्हने 'मजबुत मन'नी बक्षीस थयेली छे

(२) हु स्वय शक्ति छु, म्हारी शक्ति अमर्यादित छे, तेथी हु जे धारुं ते थवानुज

(३) अनन्ता दिव्य खजानानो हु मालीक छु म्हारी इच्छा मुजब बधी चीजो खेंचाइने चाली आवे छे कारण के अजेय अने अभेद्य एवी इच्छाशक्तिनो हुं मालीक छु

आ भावना निरंतर भाववाथी सूतेली 'इच्छाशक्ति' पण जागी उठे छे, तो अर्धजागृत इच्छाशक्तिनुं तो पूछवुज शु ? तेनी शक्ति प्रतिपळे वधती ज चाले छे

' मन के लौकिक भावरूपी पर होम तेज आनंद दिव्य है. भव्य है:

आवी भावनाओ पण अमुक समये अने अमुक सञोगोमां स्फुरे छे तेथी पोतानी आसपासना सयोगोने ज एवा सुंदर ने स्पष्ट बनाववी स्यो के तेमांथी आपोआप आवु स्फुरण थवा पामे ते माटे सादु छतां प्राणदायक भोजन, योग्य आराम, निर्दंभी रहेणीकरणी, अने उच्च विचारोनु वातावरण सर्जावर्वु जोइए. दूरामांथी पण 'भलु' शोधी लेवा जेवी मनोवृत्ति केळववी जोइए. जरुर पूरती निद्रा, स्वच्छ हवा अने मननी समतोलवृत्ति जाळववा मथवु जोइए. दुकमां चित्तरुपी सरोवरमां कइए सळभळाट थाय तेवां कारणोनो नाश करवो घटे

Whatever powers we have and whatever powers we cultivate, we cannot become great unless we have the powers to control ourselves

केवळ शक्तिओ होवी के शक्तिओ केळववी एटला मात्रथी महान् बनी शकातुं नथी परंतु महान् थवा माटे तो आपणी पोतानी पर राज्य करे तेवी शक्तिओ होवी जोईए आमज–

One cannot concentrate upon a certain Subject unless he has a power to make his own Objective Mind quiescent while the power of concentration is put into action.

ज्या सुधी त्हमारा बाह्यमनने एकज वस्तु पर ध्यान लगावी राखवानु बळज त्हमारी पासे न होय त्यां सुधी त्हमे कोइ चीज

'चूकी जवुं' के फुलावुं' आ कमजोरीओ पर जय मेळवे तेम विजेता छे.

प्रत्ये चोंटी राकोज नहीं आयी 'ध्यान' लगाववानुं कार्य ज्यारे क्रियामा मुकाय त्यारे ते ध्यान मजबूत ने अतूट बने ते सारु तमारे तमारी बधी शक्तिओनो संचय करीने—बाह्यमनने काबुमा लइ—ते दिशा तरफ दोरववी जोइए

आटलु न बने तो 'ध्यान' नो हेतु सघाय नहीं, तेमज आत्मशक्तिना विकासनो मार्ग रुधाइ जाय छे तथा दरेक साधके साधना करतां पहेलां—कोइ पण 'ध्यान'मां मस्त थतां पहेलां, ध्यान वधारे केम चाले, वधारे स्थिर अने उडुं केम बने तेनो विचार अगाउथी करीने तेने लगती बधी शक्तिओने प्रथमथी ज कामे लगाडी देवी जोइए.

बाह्यमन बहुज अवळचडु छे तेनां तोफानो भयंकर होय छे जेथी ते घणीये वार आंतरमन (Subjective mind)-ना निश्चयोने पण ठगावी नाखे छे तेथी सौथी प्रथम बाह्यमनने साथे राखी शके तेवो प्रभाव ने शक्ति आंतरमनमां जगाववानी अत्यंत जरुर छे

Sadhak ! **Mind** well, you can never reach the place of peace (where you want to go) until the conquest of self is made. Technically Speaking, self-control is the control of the objective mind by the subjective mind, or in other words, the control

---

मस्तक निरंतर हाथमां लइ सूझे तेम मोक्षनां दर्शन करे छे.

of the emotions by the Higher mind. Once you have conquered your emotions or the objective mind, your self-mastery is assured.

शान्तिना धाममां प्रवेशवा माटे आत्मविजय याने 'बाह्यमन' पर अने लागणीओना टकोरा पर आंतरमननुं प्रभुत्व जमाववुं जोइए के आ प्रभुत्व जमाववा माटे निश्चय अने निर्भयतारूपी गुणने खूब केळववा जोइए. कारण के संशय ने भय ए मनुष्यना मगजमां खळभळाट मचावनारा महान् तत्त्वो छे ए अने एवा बीजा अनेक विनाशक तत्त्वो पर विजय मेळवो तो तमारा 'ध्यान' नी जरूर फतेह छे

'डर' प्रगतिनो महान् विरोधी छे' तेथी प्रगति इच्छुक साधके पोताना मनोमंदिरमां सदाय गर्जना करवी जोइए के:—

(1) I am fearless I will not fear at any time.

(2) I am a part of divine self Nobody shall hurt me therefore there is no fear from any.

(3) I shall not fear I am completely at home always.

(4) I am not afraid of the creticism of any I am dependent of my own self. The approval and disapproval of other persons are alike to me.

'मुक्ति' ए शान्तिनुं संतान छे : मुमुक्षोने 'मुक्ति' हो ! हो !

हु निर्भय छु, निवर छु, मने कोई के कशानो डर नथी. हुं दीव्यवानो महान् अंश छु, मने कोइनी टीका के प्रशंसानी परवा नथी आ भावनाथी माणस साव निर्भय बनी जतां, तेना बाह्यमन पर असर करनारु, एक ए तत्त्व नाबुद थाय छे

बुरी वासनाओ अने विकारोने तो कोइ पण पवित्र कार्यमां स्थान ज न होय तेथी तेनो नाश भावनाबळथी करवो घटे

हवे चतुर्थ तत्त्व अहं ' आ ' अहं ' रुपी शिला माणसना साचा प्रकाशने बहार आवता रोके छे आमाथी अजाणतां पण बीजा प्रत्ये तिरस्कार झरे छे तेथी साधके कदापि कोइ जातना एवा तुच्छ अभिमाननी छाया नीचे न आववा —

I am one with all and
All are one with me.

हु बधामा छु, ने बधा मारामा छे, एम ज पोतानुं दर्शन शोधवुं

बधां मनुष्यो ने जीवो साथे एकत्वभाव साधवो जोइए

साधक एक वात स्वप्नमां पण कदापि न भूले के—मात्र 'साधना'ना समय पूरतु ज मन स्वच्छ राखवु, ने बीजा समये गमे त्यां कचरापट्टीमां रखडवा देवुं, तेनो अर्थ कांइ ज नथी

' बुकळ ने जीतवा करतां समयने हाथे खोवेली हार ' अम्य छे

हरेक कार्यमां अने हरेक पळे....तेनु जीवन साचा साधक जेवुं पवित्र होवु घटे ते गमे त्यां हो ! पण तेनां प्रत्येक कार्य पाछळ आतरमननो पवित्र आदेश होवो जोइए. नहिंतर साधना ए स्वाभाविक मटी जइ कृत्रिम बनशे नाटकना एकटरो माफक मात्र घडीभरनां तमासा करवा जेवु लागी आवशे, ने आत्मसंतोष जेवी वस्तु तो भाग्ये ज तेमने सांपडशे

The right control of thoughts & desires promotes your present as will as your future life, Therefore educate your mind and Will thoroughly and follow the dictates of your conscience- The ruler of the heart —

इच्छाओ अने वासनाओ पर करेला साचा नियमनथी, वर्त्तमान अने भावि जीवन पर खूब प्रकाश पडे छे तेथी मनने खूब सस्कार आपवा जोइए, अने पछी अंतःकरण जे तरफ दोरी जाय ते तरफ श्रद्धापूर्वक गमन करवामा ज सफळता छे तेने माटे सत्यता, मायाळुता, निश्चळता, निर्भयता अने स्वतंत्रता केळववी जरुरी छे नित्य जीवनमां आ सद्गुणोने वणी लेवा जोइए, अने तो ज तेनो प्रभाव साधकदशा पर आबाद पडी शके छे. एक स्थळे देव अने बीजे स्थळे दानववृत्तिनो मेळ एक जीवनमां कदापि न ज बने ..ने ना शोभे !

'समर्थ' नी क्रिया प्रचंड 'मस्ती भी मेरेली होम' पराक्रमेनी तृष्ण !

क्षमारूपी मीठा अमृतने पीवानी टेव पाडशो तो दिलमां कदापि वैरवृत्तिने जन्मवानो अवकाश ज नहीं मळे कोइ दुश्मन रहेवा नहीं पामे, नबळाइने स्थाने सबळता अने हिम्मत आवशे, तिरस्कारवृत्तिने बदले करुणभाव उभराशे, संकुचितताने स्थाने उदारता ने उच्चता स्थपाशे, शुद्ध ने पवित्र विचारो वधशे, दुर्गुणो पर तह्मे राज्य करशो, अने बधानां प्रेमी—विश्वप्रेमी स्वाभाविक रीतेज बनवा पामशो ! गुस्सानुं के कचवाटनु स्थान ज तह्मारा दिलमा न रहेता आखु जगत् तमने आत्मवत् देखाशे. एटले ज्ञाननो समुद्र तह्मारो ज—तह्मारो ज—अने तमे ज्ञानना सूर्य सरीके झळकी उठशो !

खोटी खोटी शंकाओथी सफळता (Success) दूर जाय छे तेथी तमारा कार्यनी सफळतानां आशाजनक स्वप्नांओ सदाय जोया करो, अने उत्साहथी मनमां कहो—भारपूर्वक निश्चयतायी भावो के—

(1) I am made of success, my goal is success.
(2) All success ! There is no failure with me.
(3) I will have perfect success in all my undertakings. I know not failure I cannot fail, I shall succeed, I will succeed

हु फत्तेह करवा सर्जायो छु, तेथी निष्फळता जेवी कोइ चीजनुं अस्तित्व ज हु जाणतो नथी, हु सफळ थइश ज

आ भावनाथी आपणा आंतर—मनमां सफळतानां बीयां सुंदर रीते रोपाइ जाय छे, जे सफळताने ज खेंची लावे छे

. . .

चित्तने गमे तेवा प्रसंग बनवा छतां शांत, आनंदी अने प्रफुल्ल राखो

चित्तने 'ग्लानि'मां सरकतु बचाववा अने प्रफुल्ल राखवा माटे मनमां भावो के—

(1) I am all joy No anxiety can touch me and I have no worry

(2) All is harmony, intense harmony

(3) I am radiating happiness : I am content All is mine I am happiness it self.

सुखनी 'भावना'ओ ज माणसने सुखी बनावेछे, कारण के सुख–दुःख जे कांइ छे ते वस्तुमा नथी, पण विचारमां ज छे तेथी पोताने ज "हुं सुखी, संतोषी, आनंदी ने बेफीकरो छुं : हुं ज पोते सुखनु स्वरुप छुं" एवो मानवो जरुरी छे

हवे सो वातनी एक वात!

हमारा "पावर हाउस" रुपी मनने कदीय नबळु पडवा देशो नहिं, कारण के तेनी मक्कमता ने सफळता पर ज हमारी

'असंतोष' मां धूंधवाता करतां निर्दोषभावे ओछम रेडवु वधारे सारं!

सफळतानो मुख्य आधार छे तेथी तमारा प्रत्येक विचारमां प्राण रहेलो छे, ने तेना जोरे ज तमारी 'साधना'नु कार्य आगळ धपे छे, ए सत्य कदापि ना भूलवुं जोइए.

Man is what he thinks he is.

मनना विचारो ज मूर्तस्वरूप पामे छे, तेथी विचारोने केळवो, सस्कार आपो, पोतामा अने पोतानी शक्तिमां संपूर्ण विश्वास राखो, अने पोते महान् थवाने ज सर्जायो छे, एवी अचळ श्रद्धाथी पोताना मानसिक वातावरणने अहर्निश उत्साहमयुं राखो ने ते मार्गे सक्रियता सेवो एटले जरुर तमारी फतेह छे

आशावाद ! आशावाद ! प्रचड आशा तमने वरो !

निर्भयता ! निर्भयता ! तमे सदाय निर्भय रहो !

प्रेम ! प्रेम ! तमारा आत्मामां प्रेमनी गंगा वहो !

सुखशांति ! तमारा अतःकरणमां तमने खूब मळो !

मस्ती ! 'स्व'स्वभावमां रमण करवानी तमारामां मस्ती प्रगटो !

नैतिक निर्बळता ! तमाराथी लाखो कोश दूर हो !

प्रसन्नता ! तमारा आत्मानी प्रसन्नता चिरकाळ खीलती रहो !

सत्य ! सत्यनी शोध माटे तमारु जीवन कुरबान हो !

पोतानां 'हृदय 'ने आपेला 'वचन ' नी किंमत समजे तेज वीरपुरुष.

गुणदृष्टि ! तमारामां पराया दोषोने स्थाने 'गुणो' शोधवानी सद्वृत्ति विकसो ! जागो ! खीलो !

एकांत ! एकांतमां तमने " तमारुं सुंदर दर्शन " हो !

संतोष ! तमारा कुपखानी मूडीमां तमने सतोष हो !

सात्विकता ! ठंडी छतां मानवी ने भव्य सात्विकता तमने वरो !

व्यर्थ आवेश ने लागणीओ ! तमारी शांत हो ! प्रशांत हो !

अने

शांति ! रसमय, भव्य ने चैतन्ययुक्त शांति तमने मळो !!

अने तमारुं सत्व ने तेजीलु वीर्य,

आत्मानो आनंद—

परमानंद प्राप्त करवा

अहोनिश शुभ "ध्यान"मां

डोलतु हो ! मग्न हो !

' विपश्री ' सदाय विमळ हाम: महामङ्गल धीर, गंभीर होय !

अहो हो !

ओ नसनसमां दैवतवाळा

मानवप्राण !

तु भव्य छो   महान् छो,

दीव्य छो !

आ 'दीव्यता'नो खजानो त्हारो ज छे

तेथी त्हारी संपत्ति

त्हने ज मळो !

ए शुभाभिलाष !

सफळ हो ! सफळ हो !

उच्च भावनाओमां 'रमण' करवु एज, उच्च जीवननी दीक्षा छे.

संक्षेपमा

ए महामंत्र

ॐ अर्हं

ने

स्मरवा माटे—

तेना ध्यानमां मस्त रही जीवनसिद्धि वरवा माटे केटलीक वस्तुओ हृदयीय खास समजी लेवी आवश्यक छे साधक सावधेती पूर्वक नोंधी ल्ये

(१) श्रद्धा एज सफळतानी चावी छे, ने सामर्थ्य-शक्तिनी एज जननी छे

जीवनना महा आकरा 'आदर्शो' घडनारा ज साचा दीपित के.

(२) ससारमां जे जे दुःखदांओ, दरिद्रता, आधि, व्याधि, उपाधि, रोग, शोक, कलह, सताप, परिताप, लडाइ, झगडा, कजीया, स्वार्थपता, द्वुपद, 'अहं मम' अने अशांतिनु दुषित वायुमडळ फेलायलुं होय, तेमांथी पोताने मुक्त करवा माटे साधके पहेला तेमाथी पोतानी मानसिक मुक्तिनी कल्पनाओ रचीने तेमां वसवु जोइए.

(३) एटले ससारमां पोतानाथी अने तेटला विशेष प्रेमनां, सुखनां, शांतिनां, आरोग्यताना, आनदनां, सुलेहशांतिनां, निःस्वार्थतानां, विशाळतानां अने भ्रातृभावनानां विचार– आदोलनो फेलावथा घटे

(४) कारणके अेवा विचारो पोते फेलावशे एवा ज विचारो– के वातावरणनो पडघो ए सूक्ष्म वायुमडळमांथी साभ- ळशे ! जे चीज पोते इच्छता ज नथी, तेनी कल्पना सरखी मनमां न थवा देवी, अने इच्छित वस्तु तरफ पूर्ण प्रेमथी चित्तने 'जोडवुं'—

(५) पछी स्थिरभावे पवित्र मनोदशामां रही आपणां चेतनने ॐ प्रर्हं समजीने तेनु चित्र हृदयमां दोरखु अने मनना बधा 'व्यापारो' ने हृदयनी बधी भावनाओने तेना पर एकाग्र करवी जोइए.

(६) आ समये साव कोरा–खाली मगजे बेसवुं जोइए. बधी

सिद्धांत खातर फना थवामां खानदान Noble स्पीरीटनो फुवारो छे.

प्रकारनां दुषित विचारोथी, या विरोधी वातावरणथी मनने खाली करीने ज शुद्धिपूर्वक ॐकारनी मनोमंदिरमां गवेषणा करवी

(७) आपणी हवामां एवां ज सुंदर पुद्गलो रचाय छे ॐना स्मरण अने ॐना रमण करवाथी ॐकारमय बनी जवाय छे जेम एक दिवसनो विद्यार्थी मोपाट थइ थइने सेवा सेवां ..हुशीआर थइने बीजे समये मास्तर बने छे, तेमज ॐअर्हनी मोपाट लीधा कर्याथी आपणे एक दिन ॐकारमय बनीए छीए तेनी श्रद्धा राखवी

(८) ए पुद्गलो जे आपणी अंदर ने बहार रचाय छे, तेमां महाशक्ति—वेधकशक्ति होय छे ज्यां ज्यां ते जाय छे त्यां त्यां सफळता ज पामे छे

(९) आ स्मरण वखते साधके पोताने "हुं सत्यस्वरुप छुं....हुं बळवान छुं सर्वशक्तिमान छुं श्रद्धापूर्वक हुं आगळ धपु छुं सुखशांति ने प्रेमनो हुं महासागर छुं, अने हुं विश्वनु संचालन करनारु महान अंग छुं, अने म्हारी सफळता चोक्स छे " आ भावनानुं बळ पोतानी आस पास बांदवु जोइए, अर्थात् विचारनी प्रत्येक लहरीमां ए भावनाने वणी नाखवी जोइए. कारण के जेनी सतत् विचारणा के जखना थाय छे, ते ज जीवनमां उगी नीकळे

छे ए विज्ञानपर अचल विश्वास राखवो घटे छे दुकमां व्यक्ति मटी समष्टिमय जीवन वितावचा विश्वप्रेमनी मगळ गंगामां पोताने तरबोळ बनाववा घटे

(१०) पोतानी जातनु भान भूली, अरे ! पोतानां अस्तित्वना विचारोने य दूर करी (Unsteadiness of mind) चित्तनी अस्थिरताने कायुमां लेवी जोइए

(११) पछी प्रसन्नतापूर्वक शरीरनु भान भूली स्वाभाविक रीते सीधा टट्टार बेसी इंद्रियोना विषयोनां द्वारो बध करी, प्राणवायुने मगजमां, ने मगजने हृदयमा स्थापी–स्थिर करी ॐ अर्हंनु मनोहर चित्र के जे हृदयमा दोरी राखेलुं होय तेनी मनोहरतामा–तेना स्मरणमां गुल्तान थवुं

(१२) नाकेथी श्वास लेवो ! मुखने बध करवु स्वाभाविक रीते छाती बहार काढी चक्षुओ नासिकाग्रपर स्थिर करवी (जो के पछी तो (अंतर) चक्षुओने कपाळमां ज स्थिर करवानी होय छे) बस ! पछी ॐ अर्हनां विचार सहित श्वास खेंचवो, धीमे धीमे प्राणने अंदर खेंचवो, फेफसां श्वासथी भराइ जाय त्यां सुधी–वधु अंदर न जइ शके त्यासुधी–खेंचायला प्राणने। बनी शके त्यांसुधी अंदर रोकवो–रोकी राखवो, अने पछी धीमे धीमे बहार काढवो आनु नाम एक प्राणायाम, या प्राथमिक

निर्भय ! निर्भय जे होय तेज निजानंद 'नी मजाओ माणी शके छे.

ज्ञान माटे ॐ अर्हंनो प्रथम पाठ। आ बधुं धीमे धीमे क्रमशः बनुं घटे। प्रारभमां ॐकारमो रहेलां त्रण मुख्य शब्दो आ, उ, म् अक्षेने वारा फरती वापरीए, एटले श्वास लेती वखते आ, स्थिर करता उ, ने छोडती वखते म्, ना विस्तारथी आखा ॐ नो ध्वनी मगजमां पहोंचाडवा होइए तेम पुरो करवो एटले ॐ अर्हं मंत्रनो एक प्राणायाम पुरो थशे अने ते पछी हृदयमां अर्हं नो पडघो पाडवो (आ तो केवळ प्रारभ करनारनेज कामनुं छे स्वाभाविक रीते बेठां बेठां चिंतवन करवामां पण वांधो नथी तेनी पण अवरी असर थाय छे) पछीनी क्रिया स्वयं समजाशे—

(१३) "प्रत्येक विचार, क्रियाना रुपमा परिणमे छे" ए मनोविज्ञाननुं सुत्र श्रद्धापूर्वक हृदयमां ठसावी लेवु जोईए.

(१४) जगतनो सर्व व्यवहार अनवरत स्फुरण अथवा कंप के धृजारी ने आधारे ज चाली रह्यो छे नानामां नाना परमाणुओथी मांडी म्होटामां म्होटां पहाडो अने तेथीय म्होटी वस्तुओ कंपमय अवस्थामां छे अने ते सघी चीजोने हलावत्रानी—डोलाववानी शक्ति पोताना विचारमां छे एवी मान्यता दृढतापूर्वक धारीने पोतानां विचारोने जेम बने तेम वधारे मजबूत, तालयुक्त—कंपमय बनाववा लक्ष राखवुं

महापुरुष थवा सर्वोदयनी रहेणीकरणी प्रायः विचित्र ज होय छे.

(१५) श्वास लेम यने लेम वधारे समय अदर रोकवो-(लेथी श्वासमां जे वस्तु अने जे भावना अदर खेंची गया होइए तेने त्यां पोतानु कार्य करवानो वधारे अवकाश मळे) श्वास ले करता वधारे ध्यान श्वासने वधारे तालयुक्त करवा तरफ लक्ष्य देवु—धीमे धीमे पण अटल निश्चये प्रयत्न करवो थोडाज अभ्यास अने धैर्यथी आ वात केळवाशे

(१६) विचारोनु मक्कमपणु आळवी राखशोः कदिय अधीरा के उतावळा थशो ना, कारण के महान् सिद्धि माटे महान् केळवणीनी आवश्यकता होय छे बीजी जे काइ इच्छा के गुस्साओ होय तेने मगजनी बहार हांकी मूकशो नहिंतर (Law of attraction) खेंचाणना नियममां ए विचारो बाधा नाखशेः स्वभावने शांत अने 'इच्छाशक्ति (Will power)नो अग्नि सदाय सळगतो राखजो एकाग्रता (Concentration) एज आ ध्याननु मध्यबिंदु छे ते जाणजो नानी नानी लालचो, माया के मोहमा पडी 'ध्यान'ने—चिंतनने न चूकशो अने आटलु करशो एटले तमे स्वय लोहचुबक माफक बनशो, ने ॐने वरशो

(१७) उच्च भावनाओमां सतत् रमण करवु एज उच्च जीवननी दीक्षा छे अने ॐ अर्ह ए मंत्रामां तत्त्व छे तेथी नवु जीवतर, नवु जोम अने दिव्य सुख आपनारी एज विद्यात्री छे एम चोक्कस दिलमां ठसाववु

पोताना 'धर्मिष्ठ पणानुं 'धमंड' एज नर्यु 'अधार्मिकपणुं छे.

(१८) ध्यान केम करवु ने शी शी वस्तुनो ख्याल राखवो, ए तो मात्र सामान्य क्रिया छे परतु आ सामान्य क्रियाने पहेली थके केळववी जोइए. तेथी शु थने छे ? एज के ध्यान भरनारना चित्तमां मंत्रनी मूर्ति घडाइ जाय छे एना चित्तमां ने श्वासोश्वास साथे मत्रनी शक्तिनु चित्र रचाय छे एनो फोटो हृदयपर पडे छे, अने पछी आत्म-स्वरूप पामवानो तेने पथ नजरे पडे छे ने पछीथी तो ध्यान स्वाभाविक रीते चित्तमा सूता जागता चन्ये जाय छे पछी त्यां नथी रहेती जरुर श्वास खेंचवानी के मूकवानी !

(१९) जे मानवप्राणी आ 'ध्यान'नी मजामां डूबे छे ने तेमांज रमे छे ते दिव्यधाना धामप्रति प्रयाण करे छे तेनो विहार स्वतन्त्र थने छे ए पोतानां उत्कृष्ट मगळ मार्ग तरफ आस-पासना वायुने पण खेंचे छे ए ॐ अर्हं मत्रनो महिमा महान् छे जागतां, उघतां, सूतां, बेसता के चालतां, ज्यां ठीक पडे त्या तेने मनमा स्मरी शकाय छे एना उच्चारनो एक पण शब्द अफळ जतो नथी गमे त्यां बोलशो ! हवामां ने हृदयमा कै ने कैक तो ते जरुर परिवर्तन लावे ज छे

(२०) ॐ अर्ह नो जाप करतां करतां सुवाथी आखी रात्री ए जाप मनमां स्वाभाविक रीते चाल्या करे छे तेथी आत्मिकशक्ति घणु ज शीघ्र जागृत थाय छे

भेदबुद्धि ज धूंधाय ' पेदा करे छे. अभेदतामां सघुं साफ छे.

(२१) Oum

ओम् ! ओम् ! ओम् ।

ओम् अर्ह ! ओम् अर्ह ! ओम् अर्ह ।

प्रतिश्वासमा वस ! ॐ ह्रो !

योगनी भाषामां आ मन्त्रनी गर्जनाथी आत्मानी प्रचण्ड शक्तिओना झरा समी—शरीरमा सर्पाकारे सुवेली कुण्डलिनी जागी उठे छे ते अधोमुख मटी उर्ध्वमुख बने छे ते जोर करीने सफाळी जागी उठे छे अने ते जागृत थतां अदरनी शक्तिओ उछाळा मारवा लागे छे तेथी तेनी उपरनी सुषुम्णा नाडी खुली जाय छे एटले शक्ति–माया उंचे ने उंचे उडवा मांडे छे

आ समये विविध प्रकारना नादो आपणां सांभळवामां आवे छे ने छेवटे एक निर्वेद नाद Voice of Silence नां मधुर सूर सभळाता आपणु मन 'बुद्धिनी पेली पारनी' बधी वस्तुओ ने वस्त्योनु दर्शन करवा सुभाग्यशाळी नीवडे छे एटले सुख ! शांति, प्रकाश, ज्ञान, आनंद, सौंदर्य ने प्रेम ए बधो दिव्य खजानो साधकनी दृष्टिमां आपोआप उभराय छे साधक स्वयं दिव्यताना धामरुप बनी जाय छे

अनुभवेज 'आधी वधारे' समजाशे के त्यारपछीनो आनंद केटलो भव्य अने दिव्य हशे !

कुदरती दुनिया ने अंदर नी दुनियाना मंथनमांथी मोती नीकळे छे.

भाषा ए मनोहर स्थितिने वर्णववाने असाक्त छे !

ओ पवित्र आत्माओ !

तमे सदाय आ तानमा मस्त रहो !

सुख ने शांति तमाराज छे.

तमे पोतेज देवना देव अने सर्वे सुखना स्रष्टा छो !

अस्तु

सौनुं कल्याण हो !

साराय विश्वनु कल्याण हो !

शिवमस्तु सर्व जगतः

एज भावना ! एज भावना !

ॐ अर्ह !

(योगनिष्ठ श्री शांतिविजयजीना पुण्य समागमना प्रसंगमां प्रथम प्रसंगे मळेली माहितीओमांथी सुधारा वधारा सहित करेली पुरवणी:)

संपादक—वसी

'ज्ञाननो किंमती खजानो सप' ने पुरुषार्थथी ज प्राप्त थाय छे.

ॐ शान्तिः

वाचकनी नोंध.

जगतनी 'सार्वभौम' सत्ता 'हुं' पर राज्य करे तेम समजवुं छे.

वाचकनी नोंध.

'हुं' ने जे जाणी शके तेम आ विश्वनो महान् विजेता छे.

वाचकनी नोंध.

ॐकार स्तोत्र.

(राग गान वंदेमातरम्)

सिद्धिदायक हर्षप्रेरक मंत्र ए ओंकार छे,
सौ दुःखनाशक औषधी सम एक ए ओंकार छे,
वांछना दीलनी पूरे ते एक ए ओंकार छे,
सर्वांगविना आत्मानो दीप ए ओंकार छे

शांतिना साम्राज्यनो शूर वृक्ष ए ओंकार छे,
शुद्ध ने पावक जीवननुं पेट ए ओंकार छे,
सृष्टिना कल्याण वत्ये सत्य ए ओंकार छे,
पुण्यगठडी बांधनारो एक ए ओंकार छे

ज्ञान तप चारित्र दर्शन-रत्न ए ओंकार छे,
जीवनो ते शीव सरजे एक ए ओंकार छे,
पावन करे जे जींदगीने एक ए ओंकार छे,
सहु धर्मनो सहु कर्मनो ध्रुव मंत्र ए ओंकार छे

साधु अने संन्यासीनो प्रिय जाप ए ओंकार छे,
अवधूत ने योगीजनोनुं गान ए ओंकार छे,
संसार व्याख्यामां हिमाळय एक ए ओंकार छे,
चिरशांति सुख विश्राममंदिर एक ए ॐकार छे

देहना चोर' भूवम साथे तेज किल्लानो चोर 'राजलोक' पर राज्य करे.

सौ मंगळोमां प्रथम मंगळ एक अे ओंकार छे,
सौ मंत्रनो राजा समो जे एक ते ओंकार छे,
भावनानी उच्चतानु शीखर अे ओंकार छे,
' वेद ' नो पण वेद अेवो एक अे ओंकार छे

अज्ञान अंधारे चमकतो सूर्य अे ओंकार छे,
सात्त्विकतानो चंद्र मीठो एक अे ओंकार छे,
विश्वप्रेमे बांधनारो वावटो ओंकार छे,
भंडार गुणनो ज्यां भरेलो एक अे ओंकार छे

सुख शांतिना झरणां वर्षुं सुख एक अे ओंकार छे,
आनंदनो उडतो फुवारो एक अे ओंकार छे,
कल्याणनी वहेती सरिता एक अे ओंकार छे,
शक्ति अने सामर्थ्य—जननी एक अे ओंकार छे

ओंकार छे ! जे हृदयमां वस ! गान अे ओंकार छे,
नजर नाखो ज्यां जुओ त्यां एक अे ओंकार छे,
संगीत वाजे श्वासमां प्रति रोममां ज्यां ओम् छे,
ज्यां ओम् छे प्रति रोममां आनंद वस ! आनंद छे॰

प्रभुदास

' समष्टि 'नी प्रेरणाथी करेलुं ' व्यष्टि 'ए आम सर्जन सौम्य ' छे.

साचवणी नोंध.

ॐकार स्तोत्र.

(राग गान वंदेमातरम्)

सिद्धिदायक हर्षप्रेरक मंत्र अे ओंकार छे,
सौ दुःखनाशक औषधी सम एक अे ओंकार छे,
वांछना दीलनी पूरे ते एक अे ओंकार छे,
ऊर्ध्वगतिना आत्मानो दीप अे ओंकार छे

शांतिना साम्राज्यनो शूर दूत अे ओंकार छे,
शुद्ध ने पावक जीवननुं पेट अे ओंकार छे,
सृष्टिना कल्याण तत्वे सत्व अे ओंकार छे,
पुण्यगठडी बांधनारो एक अे ओंकार छे

ज्ञान तप चारित्र दर्शन—इष्ट अे ओंकार छे,
जीवनो ओ शीव सरखे एक अे ओंकार छे,
पावन करे जे जींदगीने एक अे ओंकार छे,
सहु धर्मनो सहु कर्मनो श्रेष्ठ मंत्र अे ओंकार छे

साधु अने सन्यासीनो प्रिय जाप अे ओंकार छे,
अवधूत ने योगीजनोनुं गान अे ओंकार छे,
संसार ज्वाळामां हिमाळय एक अे ओंकार छे,
चिरशांति सुख विश्राममंदिर एक अे ॐकार छे

देहना 'चीद' भूवन साधे तेज विश्वनां चौद 'राजलोक' पर राज्य करे.

सौ मगळोमां प्रथम मगळ एक ए ऑंकार छे,
सौ मन्त्रनो राजा समो जे एक ते ऑंकार छे,
भावनानी उच्चतानु शीखर ए ऑंकार छे,
'देव' नो पण देव जेवो एक ए ऑंकार छे

अज्ञान अंधारे चमकतो सूर्य ए ऑंकार छे,
सात्विकधानो चन्द्र मीठो एक ए ऑंकार छे,
विश्वप्रेमे पोषनारो साथणो ऑंकार छे,
मधार गुणनो ज्या भरेलो एक ए ऑंकार छे

सुख शांतिना झरणा वर्षु सुख एक ए ऑंकार छे,
आनंदनो उछळतो फुवारो एक ए ऑंकार छे,
कल्याणनी वहेती सरिता एक ए ऑंकार छे,
शक्ति अने सामर्थ्य—जननी एक ए ऑंकार छे

ऑंकार छे! जे हृदयमां बस! गान ए ऑंकार छे,
नजर नाखो ज्यां जुओ त्यां एक ए ऑंकार छे,
संगीत चाले श्वासमां प्रति रोममां ज्यां ओम् छे,
ज्यां ओम् छे प्रति रोममा आनंद बस! आनंद छे

प्रभुदास

समष्टि 'नी प्रेरणापी कोश 'व्यक्ति'ए आम सदाय दीप्त' छे.